अभियुक्त

(अंग्रेज़ी की प्रसिद्ध पुस्तक THE ACCUSED का हिन्दी अनुवाद)



लेखक

ए० से० वाइज़बर्ग





सिद्धार्थ पब्लिकेशन्स लिमिटेड
३५, फैज़ बाज़ार
दिल्ली—७

प्रथम मुद्रण : १९५२
५००० प्रतियाँ

मूल्य—एक रुपया आठ आना

सिद्धार्थ पब्लिकेशन्स लिमिटेड, दिल्ली द्वारा प्रकाशित
और नया हिन्दुस्तान प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

भूमिका

मनुष्य जाति के इतिहास में कई युग ऐसे आये जब मनुष्य ने अपने भाई को चरम कोटि की यातना दी—केवल व्यक्तिगत क्रूरता के कारण नहीं, एक संगठित शासन-सत्ता की ओर से, न्याय और व्यवस्था और देशरक्षा के नाम पर। इतिहास का क, ख, ग पढ़ने वाले भी इस बात से परिचित होंगे।

पर मानव कितना नृशंस हो सकता है, इसके संकेत इतिहास से पाकर भी हम अभ्यासवश यह सोच लेते हैं कि वे दूर की बातें हैं—क्योंकि हमें यही मानने का अभ्यास है कि मानव निरन्तर सभ्यतर होता हुआ अब सभ्यता के चरम शिखर पर नहीं तो उसकी ढाल पर काफ़ी ऊँचे पर तो अवश्य पहुँच गया है। एक दृष्टि से हमारा ऐसा मानते रहना अच्छा भी है, क्योंकि यह मानव मात्र की मूल सद्भावना और सहृदयता का ही सूचक है—साधारण स्वतन्त्र मानव न नृशंस होता है, न नृशंसता को सह सकता है।

किन्तु इस बात को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता कि सभ्यता के विकास ने ही अत्याचार के भी नये साधनों का विकास किया है, और मानवीय नृशंसता के पुराने कोई भी उदाहरण उस नृशंसता को मात नहीं करते जो हमारे ही काल में देखी गयी है, अभी हाल तक देखी जाती रही है और—क्या जाने—आज भी बरती जा रही है।

हमने कहा कि साधारण स्वतन्त्र मानव न नृशंस होता है, न नृशंसता को सह सकता है। तब वह क्या चीज़ है जो आज के सभ्य सामाजिक

प्रथम मुद्रण : १९५२
२००० प्रतियाँ

मूल्य—एक रुपया आठ आना

सिद्धार्थ पब्लिकेशन्स लिमिटेड, दिल्ली द्वारा प्रकाशित
और नया हिन्दुस्तान प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

भूमिका

मनुष्य जाति के इतिहास में कई युग ऐसे आये जब मनुष्य ने अपने भाई को चरम कोटि की यातना दी—केवल व्यक्तिगत क्रूरता के कारण नहीं, एक संगठित शासन-सत्ता की ओर से, न्याय और व्यवस्था और देशरक्षा के नाम पर। इतिहास का क, ख, ग पढ़ने वाले भी इस बात से परिचित होंगे।

पर मानव कितना नृशंस हो सकता है, इसके संकेत इतिहास से पाकर भी हम अभ्यासवश यह सोच लेते हैं कि वे दूर की बातें हैं—क्योंकि हमें यही मानने का अभ्यास है कि मानव निरन्तर सभ्यतर होता हुआ अब सभ्यता के चरम शिखर पर नहीं तो उसकी ढाल पर काफ़ी ऊँचे पर तो अवश्य पहुँच गया है। एक दृष्टि से हमारा ऐसा मानते रहना अच्छा भी है, क्योंकि यह मानव मात्र की मूल सद्भावना और सहृदयता का ही सूचक है—साधारण स्वतन्त्र मानव न नृशंस होता है, न नृशंसता को सह सकता है।

किन्तु इस बात को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता कि सभ्यता के विकास ने ही अत्याचार के भी नये साधनों का विकास किया है, और मानवीय नृशंसता के पुराने कोई भी उदाहरण उस नृशंसता को मात नहीं करते जो हमारे ही काल में देखी गयी है, अभी हाल तक देखी जाती रही है और—क्या जाने—आज भी बरती जा रही है।

हमने कहा कि साधारण स्वतन्त्र मानव न नृशंस होता है, न नृशंसता को सह सकता है। तब वह क्या चीज़ है जो आज के सभ्य सामाजिक

प्राणी के लिए सम्भव बनाती है कि वह नृशंसता बरते, नृशंसता देखे और सहे—इतना ही नहीं, उसका समर्थन भी कर जाय ?

सिद्धान्ततः इसका उत्तर हम जानते हैं : कि मानव का साधारण और सभ्य होना काफ़ी नहीं है—असली शर्त यह है कि वह स्वतन्त्र भी हो। बल्कि यही सब से मौलिक बात है, क्योंकि जो मानव स्वतन्त्र नहीं है, उसकी साधारणता और सभ्यता ही उसकी शत्रु हो जाती है और वह स्वयं नृशंस न होकर भी नृशंसता को प्रश्रय और प्रोत्साहन देता है।

एलेग्ज़ेंडर वाइज़बर्ग के अनुभव इस सिद्धान्त के ज्वलन्त प्रमाण हैं। रूसी खुफ़िया पुलिस के चंगुल में पड़कर उसने जिन लोगों के हाथों नारकीय यन्त्रणाएँ सहीं, वे सब उदार और सहृदय रहे हों ऐसा तो नहीं है, और निरन्तर अत्याचार करते रहने से आत्मा कुंठित होती ही है—लेकिन उनमें से अनेकों स्वयं अपने कर्म के बारे में अनाश्वस्त और किसी हद तक लज्जित भी थे। फिर भी वे स्वयं असहाय और अत्याचार करते रहने को लाचार थे—क्योंकि वे एक ऐसे यन्त्र के पुर्ज़े बन गये थे जिसमें नैतिक भावना को कोई स्थान नहीं था क्योंकि उसमें स्वातन्त्र्य को कोई स्थान नहीं था। व्यक्तिगत नैतिक-बोध का विनाश, और राजनीतिक सिद्धान्त या दल को सम्पूर्ण आत्म-समर्पण मानव को किस अतल गर्त्त में ले जा गिराता है, इसका भयंकर उदाहरण प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के सह बन्दी रोज़िंस्की के कथन में मिलता है :

> "मैं पार्टी का वफ़ादार सदस्य होने की हैसियत से अपना यह कर्त्तव्य समझता हूँ कि मुझको कैसा भी अपराध स्वीकार करने को कहा जाय तो उसको चुपचाप स्वीकार कर लूँ।"

इस उक्ति पर जब वाइज़बर्ग उससे पूछता है : "कामरेड रोज़िंस्की. क्या वास्तव में तुम्हारा विचार है कि कभी ऐसा भी समय आ सकता है कि पार्टी के सदस्य पार्टी के लिए झूठे आरोपों ही को अपना अपराध मानने को विवश हो जायें ?" तो रोज़िंस्की कहता है :

"मेरी तो यह धारणा है कि प्रत्येक स्थिति में पार्टी के सदस्यों को अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं को पार्टी के लिए कुरबान करने को तैयार रहना चाहिए।"

वाइज़बर्ग को जो यातनाएँ दीं गयीं, और जो दृढ़ जिजीविषा और अदम्य लचकीलापन उसे टूटने से बचाये रख सका, उसके प्रति हमें गहरी सहानुभूति होती है, लेकिन उससे भी अधिक समवेदना रोज़िस्की जैसे उन असंख्य व्यक्तियों के प्रति होती है, जिन्हें इस दूषित तर्क ने इतना कुचल दिया कि अब जो लात उन्हें ठुकराती और रौंदती है, उसी को चूमने को वे बढ़ते हैं—अहिंसा के 'दूसरा गाल बढ़ाने' के सिद्धान्त को लेकर नहीं, भग्नाशा और पराजय की कीच में डूब जाने के कारण...।

एलेग्ज़ेंडर वाइज़बर्ग, आस्ट्रियावासी वैज्ञानिक, कम्युनिस्ट पार्टी का एक सदस्य था और नवनिर्माण का उत्साह लेकर ही रूस की सेवा में गया था। सन् १९३७ में विदेशी वैज्ञानिकों की सामूहिक धरपकड़ के समय उसे भी गिरफ़्तार किया गया। उस पर आरोप यह लगाया गया कि वह नात्सी आतंकवादियों का एक दल संगठित कर रहा था जिसका उद्देश्य स्टालिन और वोरोशिलोफ़ की हत्या करना और युद्ध काल में यूक्रेन के मुख्य औद्योगिक कारखानों को उड़ा देना था। गिरफ़्तारी के बाद उस पर क्या बीती, 'पूछताछ' के लिए क्या साधन बरते गये, और किस प्रकार उससे झूठा बयान लिया गया—इसी का ब्यौरा प्रस्तुत पुस्तक में है। सरसरी तौरपर सोचने से ऐसे वृत्तान्त को प्रोपेगेण्डा समझ लिया जा सकता है, लेकिन वाइज़बर्ग के साक्ष्य की गहरी मानवीयता और उसका मर्मस्पर्शी सीधापन उसे इस आरोप से बचा लेता है। उसकी कथा में मंडन तो नहीं है; उसे यह भी चिन्ता नहीं है कि पाठक ज़रूर उसकी बात से प्रभावित ही होता चले : न कहीं वह अपनी दुर्बलता की सफ़ाई देता है, न कहीं भावुक होता है, न आक्रोश प्रकट करता है। सत्य घटना के

खरे वर्णन के आग्रह ने उसे मानों स्वयं अपनी यातना से तटस्थ कर दिया है, मानों वह एक निर्लिप्त तथ्यदर्शी यन्त्र भर रह गया हो।

और इसी निर्लिप्त सत्यपरता से उसके वृतान्त में प्रभावोत्पादकता आती है। पढ़ते-पढ़ते धीरे-धीरे उसका असर गहरे में कहीं होता चलता है। अन्त तक हम उसके साथ जा खड़े होते हैं—क्यों कि वह व्यक्ति ऐसा ही है कि उसके साथ खड़ा होना ही एकमात्र सम्भव प्रतिक्रिया है : वह अतिमानव नहीं है, कोई सूरमा नहीं है, शहीद नहीं है—वैसा कुछ नहीं है जिसकी हम प्रशंसा करें तो ईर्ष्यावश, या यह मान कर कि हम तो ऐसे हो ही नहीं सकते। वह बस ऐसा है जैसे हम सभी हो सकते हैं—उसमें दुर्बलताएँ हैं, वह लड़खड़ाता भी है, गिरता-पड़ता भी है; लेकिन गिरकर फिर पल्ला झाड़ कर उठ भी खड़ा होता है क्योंकि उसमें वह लचकीलापन है जो जीवन की एक बुनियादी शर्त है। कहने को रोज़िस्की कहता है :

> "कभी तुमने तूफान से भी यह पूछा है कि वह कहाँ से उठा, क्यों उठा और किधर को जायगा? और यदि तुम पूछने की धृष्टता भी कर बैठो तो क्या वह तुम्हारे इन प्रश्नों का उत्तर देगा? बात तो यह है कि तुम ऐसा प्रश्न कभी पूछोगे नहीं। तूफ़ान के समय तुम्हारे सामने केवल एक समस्या होती है : इससे स्वयं किस प्रकार बचा जाय? बड़े बड़े वृक्ष गिर जाते हैं; किन्तु सरकंडा जो अपना सिर झुकाना जानता है बच जाया करता है। तूफ़ान आता है और चला जाता है, घास और सरकंडे फिर अपना सिर ऊँचा करके खड़े हो जाते हैं। अगर तुम मेरी बात मानो तो घास का अनुकरण करो। प्राण बचाने का इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।"

पर रोज़िस्की का तर्क केवल पराजय का तर्क है : उसके लिए प्राणरक्षा ही चरम इष्ट है और 'सम्मानपूर्वक प्राणरक्षा' की शर्त

बेमाने हो गयी है। इसलिए घास की तरह जीनें की बात उसके मुंह से केवल एक मुहावरेबाज़ी लगती है—वह वास्तव में मिट्टी की तरह जीना चाहता है, घास का लचकीलापन उसमें नहीं है। इसीलिए वह अत्याचार को 'एक राजनीतिक महामारी' कह कर भी अविरोध की वात कह सकता है—सभी जिस महामारी में फंस गये, उससे बचाव की कोशिश क्या करनी! स्पष्ट है कि यह घास का तर्क नहीं है। घास का तूफ़ान के आगे झुकना स्वतन्त्र अस्तित्व की रक्षा का साधन है, मानव का महामारी के आगे पस्त हो जाना उस स्वतन्त्र अस्तित्व के अधिकार को स्वयं जलांजलि दे देना! यों वाइज़बर्ग के बच कर लौटने में वाह्य कारण भी सहायक हुए: उसकी विदेशी नागरिकता, एक प्रमुख वैज्ञानिक के नाते उसकी ओर से आइन्स्टाइन और ज़ोलियो-क्यूरी जैसे अन्य प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की अपील (दोनों ने स्टालिन को निजी पत्र लिखे थे), और रूस-जर्मनी की वह सन्धि जिसके कारण उसे अन्ततोगत्वा रूस से निकाल कर नात्सियों को सौंप दिया गया।

वाइज़बर्ग का वृत्तान्त सन् १९३७–४० का है। उस समय स्टालिन जीवित था। यह भी कहा जा सकता है कि उस समय रूस की स्थिति विशेष संकटापन्न थी। किन्तु क्या बाद में ऐसी घटनाएं नहीं हुईं? गिरफ़्तारियों के उस दौर के लगभग १ करोड़ व्यक्ति शिकार हुए थे। स्टालिन की मृत्यु के बाद भी एक दौर शुरू हुआ है। यह उस पैमाने पर तो नहीं है, किन्तु यह भी है कि वहाँ नया आन्दोलन अभी पूरे वेग पर नहीं आया है। इस तरह के अत्याचार अधिकारी व्यक्तियों पर निर्भर नहीं करते, वे उन परिस्थितियों से, उस संगठन और पद्धति से जन्म लेते हैं जिनके कि अधिकारी व्यक्ति केवल प्रतीक होते हैं। स्टालिन आज नहीं है, लेकिन पद्धति आज भी वही है, यन्त्र के भीतर कल-पुर्जों की सत्तालोलुपता भी वही है—इस स्थिति से पैदा होने वाले आन्तरिक विरोध और तनाव भी वैसे ही हैं। 'इतिहास की आवृत्ति होती है'—लेकिन प्रत्येक आवृत्ति पहले से भिन्न होती है; अत्याचार जब परिस्थिति-

वश दोहराया जाता है तब अधिक भयंकर होता है, क्योंकि दोहराने वाला आततायी पहले अनुभवों से लाभ उठाना और आगे बढ़ना ही चाहता है।

मानव है, तो आशा भी है। लेकिन आशा मूढ़ विश्वास में नहीं, सतर्क दृष्टि और विवेक में है। 'स्वाधीनता का मूल्य क्या है? अनवरत जागरूकता।'

—प्रकाशक

दो शब्द

इस पुस्तक को लिखने का एकमात्र उद्देश्य कुछ ऐसी घटनाओं का उल्लेख करना है जिनका उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता। रूस में अधिनायकवाद की स्थापना पूरी तरह से सन् १९३६ ई० के जून मास और सन् १९३८ ई० के दिसम्बर मास के बीच में हुई। उन ढाई वर्षों में रूस के विभिन्न नगरों और गाँवों से लगभग ८० लाख स्त्री पुरुष खुफ़िया पुलिस द्वारा गिरफ़्तार किये गये थें। गिरफ़्तार हुए व्यक्तियों पर नाना प्रकार के आरोप लगाये गये, जैसे देशद्रोह, जासूसी, तोड़फोड़, सशस्त्र विद्रोह की तैयारी और सोवियट रूस के नेताओं की हत्या करने का षड़यन्त्र। खुफ़िया पुलिस के हाथों में कुछ दिन रहने के पश्चात्—कभी कभी तीन मास से भी कम ही में—इनमें से प्रायः सभी व्यक्तियों ने अपराधी होना स्वीकार कर लिया। इतना ही नहीं, उनमें से जिनको अदालत में पेश किया गया उन्होंने वहां पहुँच कर भी अपनी अपराध स्वीकृति-पत्रों की पुष्टि की; वे इकबाली गवाह बन गये। उन सब व्यक्तियों को कठोर कारावास का दण्ड मिला; प्रायः सभी को सुदूर उत्तर में या केन्द्रीय एशिया के रेगिस्तान के कैम्पों में अपनी अपनी सज़ाओं को भुगतने के लिये भेज दिया गया।

और इनमें प्रायः सभी निर्दोष थे।

बात पुरानी हो गई है, पर आज भी दुनिया में उन घटनाओं के विषय में पर्याप्त जानकारी नहीं है। जब रूस में धर-पकड़ जारी थी, और स्टालिन की सरकार देशद्रोह आदि आक्षेपों को सिद्ध करने के लिये नित्य प्रति मुकदमें चला रही थी, यूरोप और अमरीका के समाचार-

पत्रों में उनका उल्लेख पाया जाता था। जो लोग अभियुक्तों पर लगाये गये आरोपों को और अभियुक्तों द्वारा स्वीकार किये गये अपराधों की कहानी को सत्य मानते थे, वे भी बड़े आश्चर्य और विस्मय में पड़कर अपने आपसे यह पूछा करते थे कि यह कैसी पहेली है कि जिन लोगों ने किसी समय रूस की क्रान्ति को जन्म दिया और संगठित किया, वे ही आज शत्रु से मिल गये हैं, अपने देश के विरुद्ध निकृष्टतम कार्य करने लगे हैं, अपने साथियों और अपने उन विचारों के प्रति जो उनके जीवन का अंग बन गये थे विश्वासघात करने लगे हैं और केवल इसलिये कि वे उसी पूंजीवाद को, जिसको समूल नष्ट करने के लिये ही उन्होंने कभी अपने जीवन की बाजी लगाई थी, फिर से रूस में प्रस्थापित कर सकें ?

जो लोग उन पर स्टालिन की सरकार द्वारा लगाये गये आरोपों को झूठ मानते थे और मुकदमों को एक निरा स्वांग समझते थे, वे भी आश्चर्य के साथ एक दूसरे से पूछते थे कि "ऐसा कैसे हो सकता है कि कोई व्यक्ति निर्दोष होते हुए भी अपने ऊपर लगाये गये आरोपों को अपराध मान ले ?"

एक दो अपवादों को छोड़ कर, साधारणतः बाहरी दुनिया के लोगों का ध्यान उन मुकदमों ही पर लगा हुआ था जिनमें स्टालिन से मतभेद रखने वाले पुराने कम्यूनिस्ट फँसे हुए थे। उन मुकदमों का अध्ययन करने वाला कोई पूंजीवादी हो तब और पूंजीवाद विरोधी हो तब ध्यान सबका केवल दण्डविधान सम्बन्धी विषयों तक ही सीमित रहता था। सामने जो कुछ दिखाई देता है, उसके पीछे भी कुछ है, इस पर किसी का भी ध्यान नहीं गया था। रूसी समाज के हृदय में जो उथल-पुथल मची हुई थी; उसको जो व्यथा आन्दोलित किये हुए थी, उस पर किसी की दृष्टि नहीं पड़ी थी।

सोवियट समाज में जितने भी ऐसे व्यक्ति थे जो राजनीतिक चेतना रखते थे, वे सभी स्टालिन की दमनाग्नि के शिकार हो गये; पर आगे चलकर जो वर्णनातीत बुद्धिहीन घटनायें घटीं और जिनको आज भी सभ्य पाठक स्वीकार करने में कठिनाई का अनुभव करता है, उनका दमन और विनाश तो उनके लिए भूमिका मात्र ही थे। पुलिस ने सहस्रों पुराने क्रान्तिकारियों और बोलशेविक पार्टी के सदस्यों को गिरफ़्तार किया, जिनके कारण सोवियट राज्य की नींव तक हिल गई थी। किन्तु साधारण जनता तब भी यही समझती थी कि ये घटनायें शासक वर्ग के आंतरिक कलह ही की द्योतक हैं। सन् १६३७ ई० के जून मास से इन घटनाओं का स्वरूप बदलने लगा। अब पुलिस के चंगुल में फंसकर यातनायें भोगने के लिये ऐसे लाखों नर-नारियों की बारी आ गई जिनका राजनीति से कभी किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रहा था। पुलिस की लारियां रात दिन नगरों और गांवों की सड़कों और रास्तों पर दौड़ लगाती फिरती थीं। लोगों को उनके घरों से, कलकारखानों से, विश्वविद्यालयों से, शोधशालाओं से, बारकों और सरकारी दफ़्तरों से निकाल कर उन पर लाद दिया जाता था। उस समय रूस में ५० प्रादेशिक सरकारें थीं; और ५०० राजनीतिक कमीसार* थे। जब धर-पकड़ का तूफ़ान आया तो इन ५०० कमीसारों में से शायद कोई भी न बच पाया। जितने भी सरकारी कारखाने थे, उनमें से किसी का व्यवस्थापक या इंजीनियर जेल की हवा खाने से न बचा। पुराने व्यवस्थापकों और इंजी-

---

* वैसे तो सोवियट रूस में विभिन्न विभागों के अध्यक्षों ही को 'कमीसार' कहते हैं। किन्तु प्रत्येक विभाग में ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो राजनीतिक विचारधारा को कार्यान्वित कराने के लिये उत्तरदायी हैं। इस प्रकार ये राजनीतिक अधिकारी साधारण अधिकारियों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होते हैं। उन्हीं को "राजनीतिक कमीसार" कहा जाता है। —अनुवादक

नियरों का स्थान नये व्यवस्थापक और इंजीनियर ले लेते; किन्तु वे स्वयं भी पुराने होने से पहिले ही जेल भेज दिये जाते; उनके स्थान में जो लोग नये आते, उन पर भी यही बीतती।

मार्शल टुखाचेविस्की तथा लालसेना के अन्य आठ जनरलों की गिरफ़्तारी से मानो बांध ही टूट गया। गिरफ़्तारियों की बाढ़ आ गई। रूसी सेना के सभी जिला अफ़सर पकड़ लिये गये; अति महत्वपूर्ण सैनिक टुकड़ियों के अधिकारी अब कैदी बन गये; उनका स्थान जिन्होंने लिया वे भी शीघ्र ही उनके पास जेलों में आ पहुंचे। कुछ महीनों ही में जिला कमांडों के अधिकारियों को छः छः बार बदला और पकड़ा गया। यहाँ तक कि इस निरन्तर धर-पकड़ के कारण सेना में जनरलों की संख्या इतनी कम हो गई कि उनका स्थान अब कर्नल लेने लगे; जब कर्नलों की भी संख्या क्षीण होने लगी तो उनका स्थान मेजरों ने ले लिया; अवस्था यहाँ तक बिगड़ी कि बहुत से रेजीमेंटों की कमांड लेफ़्टिनेंटों ही को सौंपनी पड़ी।

पार्टी और ट्रेड यूनियनों के उच्च स्तरों पर दमन का जो प्रहार हुआ उसको तो प्रलय ही समझा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। संभवतः कोई भी उच्च अधिकारी न बच पाया। कम्यूनिस्ट पार्टी की सबसे बड़ी संस्था केन्द्रीय समिति होती है। उस समय रूस की कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के ७१ सदस्य तथा ६१ उपसदस्य थे। और बीसियों बार ये लोग अपनी क्रान्तिकारी-लगन को सिद्ध कर चुके थे, अनेक परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो चुके थे। उनको उनकी विशेष योग्यता और चरित्र ही के कारण इतना ऊँचा स्थान प्राप्त हुआ था। पार्टी की विभिन्न अनुशासन समितियां और खुफ़िया पुलिस उनके जीवन के प्रत्येक दिन और घड़ी का हिसाब रखे हुए थी और किसी को कभी यह संदेह नहीं हुआ था कि उनके जीवन में भी कोई अवांच्छनीय बात हो सकती है। पर इन्हीं चिर-परीक्षित क्रान्ति-योद्धाओं में से लगभग

तीन चौथाई सदस्य उस धर-पकड़ में फंस गये। पार्टी की पालिटब्यूरो नामक संस्था केन्द्रीय समिति से भी ऊपर की एक संस्था है। उसमें उस समय १० सदस्य थे और पांच उपसदस्य। पालिटब्यूरो डिक्टेटर के हाथ में एक शक्तिशाली शस्त्र है; वास्तव में उसी को देश की सरकार कहना चाहिये। तिस पर भी उनमें से कम से कम पांच व्यक्तियों को खुफ़िया पुलिस ने अपने पंजों में जकड़ लिया। कहने के लिये, 'कमिन्टर्न' नाम की वह संस्था जो विश्व भर की कम्यूनिस्ट पार्टियों का हैडक्वार्टर्स समझी जाती थी, रूसी शासन और रूसी कानून की परिधि में न आती थी। वैधानिक दृष्टि से रूस की कम्यूनिस्ट पार्टी भी जिसके हाथ में रूस की सरकार की बागडोर थी उसके अनुशासन में आती थी; दुनिया में कहीं भी कोई कम्यूनिस्ट हो उसके अनुशासन में आता था, कम से कम वैधानिक स्थिति तो यही थी। इस दृष्टि से रूस की खुफ़िया पुलिस के अधिकारी भी जो प्रायः सभी कम्यूनिस्ट थे उसके नियंत्रण में होने चाहियें थे। किन्तु वास्तव में हुआ यह कि खुफ़िया पुलिस ने कमिन्टर्न की उड़द की सफेदी के बराबर भी परवाह न की; इतना ही नहीं उसने इसके उच्च अधिकारियों को भी जेलों में ठूंस दिया। बेलाकुन जैसे विश्व विख्यात् क्रान्तिकारी उसके कोप भाजन हो गये; उन पर भी क्रान्ति का विरोध करने और अपने आपको शत्रु के हाथ बेच देने का आरोप लगाया गया!

सोवियट के सांस्कृतिक जीवन को लकवा ही मार गया था। कोई भी नया साहित्यिक या वैज्ञानिक प्रकाशन पार्टी की अनुशासन समिति और खुफ़िया पुलिस की नज़र से न बच सकता था; प्रत्येक पंक्ति में उनको "ट्राट्स्कीवाद की गंध" को रोकने की चिंता रहती थी; किसी अभागे लेखक पर यदि यह संदेह हो जाता कि उसकी विचारधारा पर "ट्राट्स्कीवाद" का प्रभाव है तो केवल उसी आधार पर उसका काम तमाम कर दिया जाता था। जनसाधारण की तरह बहुत से लेखक और

विचारक भी जेलों में बंद कर दिये गये थे। जो किसी प्रकार खुफ़िया पुलिस की वक्रदृष्टि से बच गये उन्होंने बिल्कुल ही लिखना-पढ़ना वंद कर दिया; क्योंकि उनको यह भय रहता था कि न जाने किस पंक्ति या शब्द के कारण उनको सीखचों के पीछे डाल दिया जाय। उनमें से कुछ लोगों ने अपनी जान बचाने के लिये अतीत की शरण ले ली—साम्प्रतिक घटनाओं और समस्याओं पर लिखना वंद करके उन्होंने ऐसे विषयों पर ही लिखना श्रेयस्कर समझा जिनपर उनके और सरकार के दृष्टिकोण में कोई अन्तर पड़ने की आशंका न थी। जिनको अपने हलवे मांडे की फ़िक्र थी, उन्होंने सरकार की नई नीति के समर्थन में उद्‌गार व्यक्त किये और अपने आपको कृत्कार्य पाया। ये लोग शासकों के कहने पर दूसरों की निंदा ही न करते थे, वरन् स्वयं अपनी निंदा करने से भी न चूकते थे। ऊपर से इशारा पाने की देर थी। उदाहरण के लिये उन्होंने एक दिन एक बात कही तो दूसरे दिन दूसरी बात कही और स्वयं अपनी ही लेखनी अथवा वाणी से अपना खण्डन करने में किसी प्रकार की लज्जा का अनुभव न किया। इन सब बातों का परिणाम यह हुआ कि साहित्य और विज्ञान में कोई मापदण्ड ही न रह गया; स्तर दिन प्रतिदिन नीचे ही गिरता गया। अब किसी को अपनी कल्पना या प्रतिभा के प्रयोग की आवश्यकता न थी; शासकों की स्तुति करते रहना ही उनका दैनिक कर्तव्य बन गया था। जन साधारण के पास इस मनोवृत्ति को अस्वीकार करने का केवल एक ही साधन था: उसने पत्रों, पुस्तकों और पुस्तिकाओं को पढ़ना ही छोड़ दिया।

खुफ़िया पुलिस की ज्यादतियों के कारण वैज्ञानिक कार्य को बड़ी क्षति हुई। देश में जहां भी कोई बड़ा काम होने वाला था उसी पर आतंक के वातावरण का असर देखने को मिलता था; कोई भी व्यक्ति रचनात्मक कार्य करने का साहस न रखता दिखाई देता था। देश के पुनः निर्माण कार्य के लिये सरकार ने श्रम और धन के रूप में किसी प्रकार की भी कमी न की थी और अनेक प्रयोगशालायें और

वैज्ञानिक संस्थायें खड़ी की थीं। उस समय रूस में विज्ञानवेत्ता होना बड़े गर्व की बात समझी जाती थी और वैज्ञानिकों को अनेक विशेष सुविधायें और अधिकार प्राप्त थे। किन्तु जब स्टालिन का दमनचक्र चला तो वैज्ञानिक भी उसकी लपेट में आने से न बचे रह सके। अनेक प्रमुख वैज्ञानिकों को गिरफ़्तार कर लिया गया। जो जेल के सीखचों से बाहर रह गये थे वे इतने डर गये थे कि रोजमर्रा की साधारण कार्यवाही के अतिरिक्त और कुछ करने को तैयार न थे; क्योंकि जहां तक साधारण दफ़तरी काम था, उसमें उनको भूल करने का कोई डर न था और भूल करना उस समय देशद्रोह था। देश की आवश्यक समस्यायें ज्यों की त्यों पड़ी रह गईं।

सोवियट रूस के बड़े बड़े कल कारखानों में धर-पकड़ का श्रीगणेश पियाटकोफ़ की गिरफ़्तारी से हुआ। वाहन विभाग में लिफ़्चिट्ज़ की गिरफ़्तारी का भी यही प्रभाव हुआ। लिफ़चिट्ज उस समय रेलवे विभाग के उपमंत्री थे। रेलवे और अन्य आवागमन साधनों में काम करने वाले लोगों पर नजर रखने के लिये खुफ़िया पुलिस का एक विशेष विभाग खोल दिया गया था। बात की बात में कगानोविच द्वारा संगठित व्यवस्था मिटने लगी। कगानोविच अभी तक ट्राँसपोर्ट मन्त्री थे। किन्तु वह अपने अधीनस्थ अधिकारियों को बचाने के लिये उतने ही अनिच्छुक दिखाई देते थे जितने वोरोशिलफ़ लालसेना के अधिकारियों को बचाने के लिये थे।

खुफ़िया पुलिस ने जब बुखारिन और उनके साथियों को षड़यंत्र में फंसाने की कोशिश की तो अब दिनोदिन बढ़ती संख्या में किसान भी उसके जाल में फँसने लगे। किसानों को जिस प्रकार गिरफ़्तार किया गया उससे अभियुक्तों की संख्या लाखों में पहुँच गई। किसान स्वभाव से भाग्यवादी होते हैं; पुलिस ने उनसे जो कुछ चाहा उसी पर उन्होंने

हस्ताक्षर कर दिये। रेलगाड़ियां उनसे खचाखच भरी होती थीं, और रात दिन सुदूर उत्तर की ओर जाती रहती थीं।

वैसे तो रूस का कोई भी भाग ऐसा न था जहां से लोगों को पकड़ा न गया हो, परन्तु अल्पसंख्यक जातियों पर ही विशेष कृपा थी, ऐसा दिखाई देता था। प्रत्येक बड़े नगर में कुछ न कुछ ऐसे लोग मिल ही जाते थे जो अल्पसंख्यक जातियों के थे, और जिनके अधिकांश सदस्य बाहर रहते थे—बहुत से नगरों ही के नहीं देश के भी बाहर रहते थे।

खारकोफ़ में आरमीनियन जाति के लगभग ६०० व्यक्ति रहते थे। सन् १९३६ ई० के पतझड़ में एक दिन उनमें से ३०० स्त्री पुरुषों को गिरफ़्तार कर लिया गया। अगले छः सप्ताह में खारकोफ़ में एक भी आरमीनियन न रहा। उनमें से अधिकांश ग़रीब लोग थे; जूतों पर पालिश करके, मोची गिरी करके या छोटे पैमाने पर चोरबाज़ारी करके ही ये लोग अपना पेट पालते थे। उनमें से अधिकांश व्यक्ति अशिक्षित थे। बहुत देर तक इन अभागे लोगों की समझ में यह भी न आया कि उनको क्यों गिरफ़्तार कर लिया गया है। इसी प्रकार ही लेट और जर्मन जाति के लोगों को गिरफ्तार कर के निर्वासित कर दिया गया था। यूनानी और बलगार लोग अपनी बागवानी के लिये प्रसिद्ध थे; वे भी जेल में दाखिल हो गये। उनके बाद पोल, लिथुआनियनों, फिनों, एस्टोनियनों, असीरियनों, उजबेकों, और चीनियों को भी बारी-बारी से पकड़ लिया गया। ऐसा लगता था मानो खुफ़िया पुलिस रूस को भी जर्मनी के नाज़ियों की तरह एक विशुद्ध जाति में परिणत करने पर तुली हुई है।

मैं लगभग तीन साल तक इन लोगों के साथ रूस की विभिन्न जेलों में रहा। उन तीन वर्षों में मैं लगभग १२ विभिन्न कोठरियों में रखा गया। मेरे देखते देखते ही असंख्य बन्दी आये और चले गये। मैं ही रह

गया था। मैं बड़े ध्यान से, आँखें खोल कर, उनकी अवस्था और मनोदशा का अध्ययन करने का प्रयत्न करता रहता था। मैंने सैकड़ों बन्दियों से बातें कीं; उनके मामलों का अध्ययन किया, घटनाओं की रूपरेखा को समझने का प्रयत्न किया। मुझको आशा थी कि एक न एक दिन मुझको अपने अनुभव को संसार के सामने रखने का अवश्य अवसर मिलेगा। न जाने किस प्रकार मेरे हृदय से यह आशा विलुप्त न हुई थी।

—ए० से० वाइज़बर्ग

अभियुक्त

यह रविवार जनवरी २४ सन् १६३७ की बात है। मैं दिन भर के कठिन परिश्रम के बाद कुछ विश्राम पाने की चिन्ता में था। तभी टेलीफोन की घन्टी बजी। आवाज अपरिचित थी।

"जो कुछ मैं कहूँ उसको किसी से दोहराने की आवश्यकता नहीं" अचानक मुझको यह आदेश दिया गया। पर मैं सुनने लगा : "मैं एन० के० वी० डी० (रूसी खुफिया पुलिस) के कार्यालय से बोल रहा हूँ। तुमको ११ बजे हमारे दफ़्तर पहुँचना होगा। वहाँ पहुँच कर कमरा नम्बर २२२ पहुँचने की इच्छा प्रकट करना। तुम्हारे लिए एक पास रक्खा होगा।"

संतरी ने मुझको वहाँ पहुँचा दिया जहाँ पास बनाए जाते थे। जैसा कि अज्ञात वाणी ने मुझे आश्वासन दिया था मेरे लिए एक पास रक्खा हुआ था। जैसे ही मैंने अपना नाम लिया वह मुझको दे दिया गया। उसको लेकर मैं संतरी के पास गया। संतरी ने मेरे पास को बड़ी संदेह भरी दृष्टि से देखा पर मुझको जाने दिया।

जो व्यक्ति मेरे सामने बैठा था वह सूरत से कोई क्लर्क मालूम होता था। बाद में उसने जो कुछ मुझसे कहा और जो कुछ उसने किया उससे उसकी आज्ञापालकता का प्रमाण मिलता था। उससे अधिकाधिक परि-

चय प्राप्त करना मेरे भाग्य में लिखा था। उसका नाम पोलेवेडस्की (Polevedsky) था और अगले दो मास में वही मुझसे निरंतर गहरी पूछ ताछ करता रहा। अब जब उन दिनों की घटनाओं को याद करता हूँ तो मुझको ऐसा लगता है कि मुझको इस क्षेत्र में और जितने व्यक्ति मिले उनमें अपेक्षतया वह एक भला व्यक्ति था। किन्तु जब मैं पहली बार उसको मिला था तो मुझको उसे देखकर एक भेड़िये का आभास हुआ था।

"अच्छा तो आप वापस आगए ?" उसने पूछना शुरू किया।

"जी हाँ, परसों"

"मास्को में क्या करते रहे ?"

"मैं भारी उद्योग धंधों के मंत्रालय में सरकारी काम से गया था।"

"और लेनिनग्राड में क्या करते रहे ?"

"वहाँ मुझको इलेक्ट्रो मोटर और केबिल का एक आर्डर देना था।"

"क्या इसके अलावा वहाँ और कुछ नहीं किया ?"

"नहीं, हाँ, एक दो घरेलू बात मैंने वहाँ अवश्य तय कीं।"

"इतना कहने से काम नहीं चलेगा, आपको अपने विषय में अधिक निश्चित और विस्तृत विवरण देना होगा।"

"यदि ऐसी बात है तो सुनिए मैं सैनिक प्रासीक्यूटर और खुफिया पुलिस के दफ्तर भी गया था क्योंकि मुझको अपनी भूतपूर्व पत्नी के विषय में कुछ कहना था।"

"पर आपकी पत्नी को तो जनता का शत्रु होने के अपराध में गिरफ्तार किया गया था। फिर भी आप उसकी सिफ़ारिश लेकर चले गए। इसका तो यही अर्थ हुआ कि आप जनता के शत्रुओं की तरफ़दारी करते हैं ?"

"मुझको इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि मेरी पत्नी निर्दोष है।"

"तो क्या आपका मतलब यह है कि हम निर्दोष लोगों ही को गिर-फ़्तार करते रहते हैं।"

"नहीं, पर हो सकता है कि इस मामले में कहीं कोई भूल हो गई है, मैं अधिकारियों को उस भूल का निवारण करने ही में सहायता करना चाहता था।"

"हमको आपकी सहायता की आवश्यकता नहीं। सचाई हमसे छुपी नहीं रह सकती। पर आज तो आपको हमने आपकी पत्नी के विषय में नहीं वरन् आपके अपने ही विषय में बात करने को बुलाया है। तनिक मैं सुनूं तो कि अबतक आपका जीवन कैसा रहा है।"

पोलेवेडस्की आधे घन्टे तक ऐसी ही बातें पूछता और लिखता रहा। इसके पश्चात् उसने मुझसे रूस से बाहर के जीवन के सम्बन्ध में एक दो साधारण प्रश्न किए और अन्त में मुझसे एक ऐसा प्रश्न किया जिसके महत्व को मैं वर्षों बाद ही समझ सका। वास्तव में वही सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न था।

"ऐसे आपके कोई मित्र या परिचित व्यक्ति हैं जिनके विरुद्ध सोवि-यट सरकार ने कभी कोई दमनात्मक कार्यवाही की हो।"

"मेरी भूतपूर्व पत्नी ही जो हैं। पर उनके विषय में तो मैं पहले ही कह चुका हूँ।"

"उसके अलावा और कोई ?"

"मित्रों से आपका क्या अभिप्राय है मैं अभी तक समझा नहीं।"

"ऐसे लोग जिनको आप अच्छी तरह जानते हों और जिनसे आपका सम्पर्क रहता हो।"

"जिस सरकारी पद पर मैं हूँ वहाँ अनेक उत्तरदायी व्यक्तियों से मुझे सम्पर्क में आना पड़ता है। यह आपको मालूम है कि मेरे ऐसे परिचितों में से अनेक व्यक्ति हाल ही में गिरफ्तार हो चुके हैं।"

"जिनको आप जानते हों उनके नाम तो बताइये।"

पियाटकौफ़ (Piatkov) बुखारिन, रज़्ज़ाक, पुशीन, नारकीन और और भी बहुत से। किन्तु आप यह तो नहीं चाहते कि सरकारी पदाधिकारी होने की हैसियत से मुझको जिन लोगों से मिलना पड़ा उन सभी के नाम मैं आप को बताऊँ। मुझको कभी इस की कल्पना तक भी न थी कि इनमें से कोई व्यक्ति क्रान्तिविरोधी कार्यवाही का अपराधी हो सकता है। वे मेरे अफ़सर थे इसलिए मुझको उनसे मिलना पड़ता था।"

"हमको कुछ ऐसे व्यक्तियों के नाम चाहिएं जिनसे आपका व्यक्तिगत सम्बन्ध रहा हो।"

"यह बात है तो कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं पकड़ा गया जिसको मेरा मित्र कहा जासके।"

"यह असम्भव बात है। आपको कुछ न कुछ नाम अवश्य ही बताने पड़ेंगे क्योंकि हम जानते हैं कि आपका जनता के शत्रुओं से अवश्य ही सम्बन्ध रहा है।"

"कुछ ऐसे विदेशियों से मेरी दुआ सलाम अवश्य थी जो बादमें गिरफ्तार हो चुके हैं।"

"उनके नाम तो बताइए।"

"हैन्स स्ट्रालर, कैरोला नेहर, लूसी गेहमान, और सम्भवतः अरविन एंडर्स। ये ही कुछ ऐसे नाम हैं जिनसे मैं अपना थोड़ा बहुत परिचय मान सकता हूँ।"

पोलेवेडस्की ने सब नाम लिख लिए। वे कब पकड़े गए, कहाँ पकड़े गए और मेरी उनसे कैसे जान पहचान हुई, इन सब विषयों पर भी उसने एक एक दो दो प्रश्न मुझसे पूछे। मेरे उत्तर लिखने के पश्चात् उसनें उस काग़ज पर मेरे हस्ताक्षर लिए। हस्ताक्षर कराने के पश्चात् उस काग़ज को बड़ी सावधानी से एक ओर रख दिया और मुझको अपने पीछे चलने का आदेश दिया। हम बरामदे में पहुँच गए और उसने अपने कमरे के दरवाजे में ताला लगा दिया। अब मुझको आज्ञा हुई कि जब तक वह वापस न आए मैं वहीं खड़ा रहूँ क्योंकि अब वह अपने अफ़सर से मिलने गया था। आखिरकार पोलेवेडस्की को मैंने तेजी से अपनी ओर आते देखा। उसके हाथ में एक खाली फ़ाइल और बहुत से अलग अलग काग़ज थे। अब उसकी आकृति पहले की अपेक्षा तनिक अधिक भयानक दिखाई दी और मुझको लगा जैसे मेरा दिल धड़क रहा हो। मैंने अपने हृदय की धड़कन को दबाने का प्रयत्न किया और मन को सांत्वना दी कि कुछ भी हो मुझको धैर्य नहीं खोना चाहिए। पोलेवेडस्की ने अपने कमरे का दरवाजा खोला और मुझको अपने कमरे में आकर बैठ जाने को कहा। उसने अपने सब काग़ज संभाल कर एक ओर रख दिए और एक दो मिनट तक खामोशी के साथ मुझको कठोर दृष्टि से देखता रहा और तब अपनी आवाज ऊँची उठाते हुए मुझसे कहना शुरू किया :

"तुमको हमारा यह आदेश है कि तुम सोवियट सरकार विरोधी कार्य-वाही करने का अपना अपराध स्वीकार कर लो।" उसका वाक्य समाप्त भी न हुआ था कि मेरा मस्तिष्क विचार-शृंखला में पड़ गया था। ऐसी स्थिति में मेरे लिए सबसे अच्छा उपाय क्या हो सकता है ? यह मेरा जो अपमान हो रहा है उसका जोरदार शब्दों में प्रतिवाद करूं और यहाँ कोलाहल मचा दूँ ? या शान्ति के साथ सब कुछ सुनता रहूँ ? और यदि शान्त रहूँ तो कहीं इसका अर्थ यह तो नहीं समझा जायगा कि मैं अपने

ऊपर लगाये गए आरोपों को स्वीकार करता हूँ ? मैंने निश्चय किया कि मेरे लिए बीच का मार्ग ही श्रेयस्कर है।

"आप जो कुछ कह रहे हैं मैं उसको समझ नही पाया," मैंने कहा।

"तुम हमारे देश में एक षड़यन्त्र करने आए थे। वर्षों से हम तुम्हारे दूषित कारनामों को देखते रहे हैं। अब हम तुमको आखिरी मौका और देते हैं : अपने विषय में सब कुछ बता दो और जिन लोगों को अब तक तुम अपना एजेन्ट बनाए रहे हो उनके नाम बता दो और हमारे साथ मिल जाओ।"

"कामरेड पोलेवेडस्की..."

"मैं तुम्हारा कामरेड नहीं हूँ।"

'तो फिर मैं आपको किस प्रकार सम्बोधित करूँ ?"

"इन्सपैक्टर साहब कह कर।"

"तो क्या मुझसे तहकीकात की जा रही है ? क्या मेरी गिरफ्तारी हो चुकी है ?"

"नहीं, कम से कम अभी तो नहीं। हमारी बातचीत का जो परिणाम निकलेगा उस पर बहुत कुछ निर्भर करेगा। तुमको अन्तिम अवसर दिया जा रहा है। हमसे मिल जाओ, हमारे साथ काम करो। इसमें तुम्हारी कोई हानि नहीं है।"

"वास्तव में बात तो यह है कि मैं अभी तक आपका अभिप्राय ही नहीं समझा। मैं एक विदेशी कम्युनिस्ट हूँ और रूस में समाजवाद की स्थापना में सहयोग देने के लिए यहाँ आया था।"

"पिछले कई वर्षों से तुम एक ऐसे गुप्त दल के मुखिया रहे हो जो हमारे देश के निर्माण कार्य को नष्ट करना चाहता है।"

"सत्य बिल्कुल इसके प्रतिकूल है। अनेक वर्षों से मैं जी जान से पार्टी और सरकार के आदेशों को कार्यान्वित करने का प्रयत्न करता रहा हूँ।"

"यह निरी बकवास है। तुमने देश और सरकार के लिए जो किया उससे बहस नहीं, क्रान्ति के विरुद्ध जो कार्यवाही की उसी में हमारी दिलचस्पी है। तुमको यह बताना पड़ेगा कि किसके आदेश पर तुम यह सब कुछ करते रहे हो। किसने तुमको यहाँ भेजा और तुम्हारे एजेन्ट कौन कौन हैं ?"

"इन्सपैक्टर साहब आपको मुझसे इस प्रकार की बातचीत करने का कोई अधिकार नहीं है। आप चाहें तो मुझे गिरफ्तार कर सकते हैं किन्तु जब तक मैं स्वतन्त्र हूँ तब तक किसी को इस प्रकार बिना विरोध किये अपना अपमान न करने दूँगा।"

यह सुनकर वह तड़क कर खड़ा हो गया।

"जब तुम कोठरी में पहुँचोगे तो तुमसे दूसरी तरह से बात की जायगी। तुमको शायद अभी तक यह पता नहीं कि तुम किस स्थिति में हो। मैं तुमसे बहस करना नहीं चाहता। अपने प्रश्नों का केवल ठोस उत्तर चाहता हूँ। किसने भेजा तुमको यहाँ ?"

"सोवियट सरकार की सर्वोच्च आर्थिक समिति ने मुझको खारकोफ़ इन्स्टीट्यूट में एक विज्ञानवेत्ता की हैसियत से कार्य करने के लिए आमंत्रित किया था और उसी के आमंत्रण पर मैं यहाँ आया था।"

"मुझको तुम्हारे विज्ञान और विद्या से कोई सरोकार नहीं। मैं तो केवल तुम्हारी क्रान्तिविरोधी कार्यवाहियाँ जानना चाहता हूँ। एक बार और कहता हूँ, तुम सच बोलोगे या नहीं ?"

"जो कुछ मैंने बताया है उसके अतिरिक्त और कुछ सत्य नहीं।"

वह वही प्रश्न बार बार करता रहा और मैं बार बार उसका वही उत्तर देता रहा। आगे चल कर मुझ को पता लगा कि एक ही आरोप को बार बार दोहराते रहना रूस की खुफिया पुलिस के पूछ ताछ करने के कला कौशल का एक आवश्यक अंग है। घंटों तक ऐसा ही होता रहा। अन्त में निराश होकर उसने पूछ ताछ बन्द कर दी और कहने लगा "अच्छा तुम्हारी मर्जी। यह तो तुम नहीं कह सकते कि हमने तुमको कोई मौका नहीं दिया।"

मैं उसके पीछे-पीछे चल दिया। एक लम्बे कारीडोर से होते हुए हम उसके अफ़सर के कमरे में दाखिल हुए जो काफ़ी लम्बा चौड़ा और हवा दार था।

"कामरेड कैप्टैन", पौलेवेड्स्की ने कहा, "अभियुक्त वाइज़बर्ग हाज़िर है"।

पोलेवेड्स्की के अफ़सर यह सुन कर मुस्करा दिये; उनकी मुस्कान से मुझको उनके दो सोने के दांतों की झलक मिली।

"एलेग्जेंडर सेमेनोविच, आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई," वह कहने लगे। "आप तो हमारे पुराने परिचित हैं"।

"कामरेड कैप्टैन," मैंने कहा "मेरे लिये तो सचमुच यह एक नई बात प्रतीत होती है।" पर मैंने देखा कि उन्होंने मेरे उनको "कामरेड" कह कर सम्बोधित करने पर कोई आपत्ति नहीं की।

"हाँ, मैं जानता हूँ कि आप मुझको नहीं जानते लेकिन मैं आपको बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। आप को यहाँ बुलाने से पहले ही से मुझे आपके मामलात से दिलचस्पी रही है।"

"पर ऐसा क्यों, मैं समझ नहीं सका।"

"पर मैं अपना आर्थिक भविष्य नहीं सुधारना चाहता। जिस स्थिति में मैं हूँ उससे मुझे पूर्ण संतोष है। जो काम कर रहा हूँ वह मुझको अच्छा लगता है और मैं उसको छोड़ना नहीं चाहता। पिछले एक वर्ष से मैं अनेक प्रकार के कलुषित लांछनों का शिकार रहा हूँ; अब मुझको लगता है कि इन सब का सूत्रपात अप्रत्यक्ष रूप से आप ही ने किया था।"

"बहस नहीं है। प्रश्न तो यह है कि तुम अपने अपराध को स्वीकार करना चाहते हो या नहीं ?"

"मैं आप से फिर यह दोहरा देना चाहता हूँ कि मैंने कोई ऐसा अपराध नहीं किया जिसको मुझे स्वीकार करने की आवश्यकता हो।"

"तुम जनता के दुश्मन हो, रूस के दुश्मन हो और सोवियट सरकार के दुश्मन हो। एक विदेशी सरकार की ओर से तुम हमारे विरुद्ध गुप्त रूप से षड़यंत्र करते रहे हो।"

यह सब कुछ सुनते सुनते मैं अधीर हो उठा था। अब मुझसे न रहा गया और मैं उठ खड़ा हुआ। मैंने कहा "कप्तान साहब इससे बड़ा झूठ और कोई नहीं हो सकता। आपको इस प्रकार मुझसे अनर्गल बातें करने का कोई अधिकार नहीं है।"

अब मानों अधीर हो उठने के लिए उसकी बारी थी। वह चिल्ला कर कहने लगा "क्या मुझे करना है और क्या मुझे नहीं करना यह मैं तुमसे पूछने वाला नहीं हूँ। यदि यहाँ किसी को ज़ोर से बोलने का अधिकार है तो वह मुझको है। मालूम होता है तुमको यह पता नहीं कि तुम कहाँ हो।"

वह फिर से बैठ गया और एक काग़ज हाथ में लेकर अपेक्षतः अधिक धीरज के साथ कहने लगा :

" 'न' विभाग में तुम्हारा सम्पर्क किससे था ।"

"मुझको इस नाम के विभाग की कल्पना तक भी नहीं है ।"

अब कप्तान प्रश्नसूचक दृष्टि से पोलेवेडस्की की ओर देखने लगा जो इस समय मूर्तिमान निराशा दिखाई दे रहा था और मेरी ओर ऐसे विस्मयपूर्ण दृष्टि से देख रहा था मानों मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। संभवत: यदि मैं कहीं यह कह बैठता कि मुझको अपना नाम भी याद नहीं रहा तो उसको इतना विस्मय न होता । उस बात को बारह साल होगए हैं। किस प्रकार लोगों की धड़पकड़ हुई, किस प्रकार अनेक नर-नारी शूली पर चढ़ा दिए गए और किस प्रकार इस बड़े कांड की रूसी खुफ़िया पुलिस द्वारा रचना की गई इन सब बातों को मैं भुगत चुका हूँ पर आज तक मैं यह नहीं समझ पाया कि कप्तान अब्राक के कार्यालय में उस दिन जो छोटा सा नाटक हुआ था उसका क्या अर्थ था । मुझको इसमें तनिक सन्देह नहीं कि रूसी खुफ़िया पुलिस के ये दोनों अधिकारी इस बात से भली भांति परिचित थे कि मैं निर्दोष हूँ । वे यह भी जानते थे कि मैं रूसी सरकार और समाजवाद का सच्चा समर्थक रहा हूँ और किसी विदेशी सरकार से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। तिस पर भी मज़ेदार बात यह है कि एक दूसरे के सामने वे दोनों ही मुझको अपराधी मानने का पाखंड रच रहे थे। लगता था कि दोनों एक दूसरे के सामने स्वांग रच रहे हैं और इस आशा में लटके हुए हैं कि मैं अवश्य ही अपने काल्पनिक अपराध को स्वीकार कर लूँगा ।

"एलेग्जैण्डर सेमोनोविच, इस तरह काम नहीं चलेगा। तुमको बताना ही पड़ेगा"।

"अब तक जो कह चुका हूँ उससे अधिक मेरे पास बताने के लिए कुछ नहीं है ।"

"सुनो, अभी तक हम अन्तिम रूप से तुम्हारे विषय में कोई निश्चय नहीं कर सकते हैं; अभी तक हम स्वयं यह नहीं जानते कि तुम्हारे साथ क्या बर्ताव किया जाय। अभी तक तुम गिरफ्तार भी नहीं किए गए हो। यदि तुम्हारे अपराध के विषय में हमें तनिक भी संदेह होता तो अभी हम तुमको बुलाते ही नहीं और निगरानी करते रहते। अब हम तुमको एक बार और मौका देना चाहते हैं। अब घर चले जाओ और परसों हमारे पास फिर वापस आ जाओ। इस समय में अपनी भलाई बुराई अच्छी तरह सोच लेना। मुझको विश्वास है कि तुम अवश्य यह अनुभव करोगे कि हमारे साथ मिल जाने में ही तुम्हारा कल्याण है। बस आज यहीं पर मैं बात खतम कर देता हूँ।"

पौलेंवेड्स्की को सम्बोधित करते हुए उसने आज्ञा दी, "और जो छोटी मोटी आवश्यक बातें रह गई हैं उनको नागरिक वाइज़बर्ग के साथ तुम तय कर लेना"।

पौलेंवेड्स्की और मैं एक साथ उस कमरे से बाहर निकले और उसके कमरे में जा पहुँचे। पौलेंवेड्स्की ने कुछ साधारण उत्साह के साथ मुझको फिर मेरी भलाई की चिन्ता का आश्वासन दिया।

"अच्छा तुम्हारी मर्ज़ी" उसने अन्त में कहा, "लेकिन एक बार फिर सोच लो। अगर मेरी सलाह मानो तो भला-इसी में है कि कप्तान साहब की बात मान लो। इससे अच्छा सौदा और कोई नहीं हो सकता। अपनी ज़िद पर अड़े रहे तो मामला बिगड़ेगा ही"।

यह कहते हुए उसने मुझको एक टाइप किया हुआ कागज़ दिया और दस्तखत करने के लिए कहा। उस कागज में लिखा हुआ था "कि मैं, एलेक्जेण्डर वाइज़बर्ग, यह घोषणा करता हूँ कि मैं यह जानता हूँ कि आज मुझसे जो प्रश्नोत्तर हुए हैं उनके विषय में किसी तीसरे व्यक्ति या दल को

कुछ बताना कानून की दृष्टि से अपराध है। मैं यह भी जानता हूँ कि यदि मैंने इस नियम का उल्लंघन किया तो मैं राजकीय भेद खोल देने का अपराधी ठहराया जाऊँगा और धारा नम्बर...के अनुसार पाँच वर्ष कठोर कारावास के दण्ड का भागी बनूंगा"।

मैंने हस्ताक्षर कर दिए।

"परसों प्रातःकाल एक बजे फिर यहाँ हाज़िर होना। मुझे अपना पास देना।"

मैंने अपना पास उसको दे दिया। उसने हस्ताक्षर करके मुझको उसे लौटा दिया और आदेश दिया कि मैं अब जा सकता हूँ।

× × ×

"एलेग्ज़ैण्डर सेमोनोविच बैठिए और अपना अपराध स्वीकृति-पत्र लिख दीजिए" पौलेवेड्स्की ने बड़े मित्रतापूर्ण ढंग से कहा। "मुझे आशा है कि आज तो सब बात तय ही हो जायगी।"

"किन्तु इन्स्पैक्टर साहब मुझको कुछ नहीं लिखना है।"

"मैं कहता हूँ कि आप अपना अपराध स्वीकार कर लीजिए अक़्ल से झगड़ा करने में कोई फ़ायदा नहीं।"

"मुझको खेद है, किन्तु अनेक बार मैं आपको यह बता चुका हूँ कि मैंने ऐसा कोई कार्य नहीं किया जिसको अपराध माना जा सके।"

"जिसने आपको भर्ती किया उसका नाम लिखा दीजिए।"

"मुझको किसी ने भर्ती नहीं किया।"

"एलेग्ज़ैण्डर सेमोनोविच आपका दिमाग खराब तो नहीं हो गया है, क्या आपका ख्याल है कि आप हमको धोखा दे सकते हैं?"

"इन्स्पैक्टर साहब मेरा आपसे कोई झगड़ा नहीं है, पर यह सारा मामला मेरे लिए एक पहेली बनता जा रहा है।"

"आपको एक विदेशी सरकार ने इस देश में भेजा। आपने हमारी सरकार के विरुद्ध षड़यन्त्र रचा और जासूसी का जाल बिछाया। आप सोचते रहे होंगे कि आपकी कार्यवाही का हमको पता न लगेगा पर हम तो जिस क्षण से आपने इस देश की भूमि पर कदम रखा तभी से आपके ऊपर आँखें रखे हुए थे। अब बहुत हो चुका। आपको आत्म-समर्पण करना होगा। अपना विदेशी आकाओं से सम्बन्ध विच्छेद करना और जो लोग आपके साथ मिल कर काम करते रहे हैं उनका पता देना होगा।"

"जो कुछ आप कह रहे हैं उसके एक शब्द का भी मुझसे कोई संबंध नहीं है।"

"किसने भर्ती किया आपको?"

"किसी ने नहीं।"

"मैं पूछता हूँ किसने भर्ती किया आपको?"

"किसी ने नहीं।"

"किसने भर्ती किया आपको?"

इस बार मैंने देखा वह चिल्ला रहा था। मैंने उसके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया।

"हमारे कारावास की कोठरी में जब पड़ोगे तो पता चल जायेगा, जवाब न देने का क्या अर्थ होता है। तुमसे भी अधिक दृढ़ व्यक्ति हमारे हाथों से निकल चुके हैं। एक सप्ताह की बात और है तुम्हारी तो हड्डियाँ भी बोल उठेंगी।"

"मेरे पास बोलने के लिए कुछ है ही नहीं ।"

"हम तुम्हारे संगठन का पता लगाना चाहते हैं ।"

"कौन से संगठन का ?"

"विदेशी सरकार की ओर से तुमने इस देश में तोड़ फोड़ करने के लिए जिस क्रान्तिविरोधी दल को संगठित किया उसका ।"

"मैंने ऐसा कोई दल तैयार नहीं किया ।"

"किसने भर्ती किया तुमको ?"

"किसी ने नहीं ।"

"तुमने किसको भर्ती किया ?"

"किसी को नहीं ।"

"मैं तुमको चेतावनी दिए देता हूँ कि हमारे पास तुम्हारी ज़बान खोलने के साधन हैं । तुमको बताना तो पड़ेगा ही पर देर में बताने से क्या लाभ ?"

"जो कुछ मैं कह चुका हूँ उसके अतिरिक्त मुझे कुछ नहीं कहना । आप लोगों के पास कैसे ही साधन क्यों न हों उनसे सचाई नहीं बदल सकती । और मैं मन से घढ़ कर कोई बात कहूँ भी तो उससे लाभ क्या ?"

"हमने तुम्हें मनसे बातें घड़ने के लिए नहीं कहा । हम सचाई ही चाहते हैं । किसने भेजा था तुमको यहां ?"

"सोवियट सरकार ने समाजवादी रचना में सहयोग देने के लिए मुझको यहाँ आमंत्रित किया था ।"

"इन सुन्दर शब्दों को अपने पास ही रक्खो। जो क्रान्तिविरोधी संगठन तैयार किया था उसी के विषय में हमको जानकारी चाहिए ।"

"मैंने ऐसा कोई संगठन तैयार नहीं किया।"

"अपने एजेंटों का नाम बताओ ?"

"मेरा कोई एजेंट नहीं है।"

"तुम्हारे मुँह पर विदेशी सरकार की ओर से षड़यंत्र करने की कालिमा लग चुकी है।"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया।

"किसने भर्ती किया तुमको ?" उसने फिर पूछा।

" किसी ने नहीं" मैंने फिर वैसे ही उत्तर दिया।

"तुमने किसको भर्ती किया ?"

"किसी को नहीं।"

"यदि आवश्यकता पड़ी तो हम तुम्हारी हड्डियां तक चकनाचूर कर देंगें किन्तु तुमको बुला कर छोड़ेंगें।"

अब उसका रोष बढ़ता जा रहा था। मेरे मन पर भारी बोझ था और मैं बेबसी का अनुभव कर रहा था इसलिए शुरु में मैं यह नहीं समझ सका कि इस प्रकार चिल्लाने से उसको अपनी कितनी शक्ति का व्यय करना पड़ रहा है। वह कोई ऐसा क्रूरता-प्रेमी व्यक्ति था जो किसी बेबस क़ैदी पर आतंक जमाना चाहता हो सो भी बात न थी। मेरे विचार में वह जो कुछ कर रहा था वह उसके लिये भी उतना ही अरुचिकर था जितना मेरे लिए। किन्तु वह भरसक प्रयत्न करने से कैसे बचा रह सकता था !

लगभग आठ घंटे तक इसी प्रकार प्रश्नोत्तर—यदि इस प्रक्रिया को प्रश्नोत्तर कहा जा सके तो—चलता रहा; कभी-कभी बीच-

बीच में तूफ़ान रुकता सा दिखाई देता था; पर आठ घंटे की चिल्लाहट और अपेक्षतया मौन के उस द्वन्द का परिणाम कुछ न निकला। हम दोनों ने जहाँ से बात शुरु की थी, आठ घंटे के पश्चात् भी उसमें कोई प्रगति होती नज़र न आई। वह मुझसे वही पुराने प्रश्न करता रहा और मैं भी वही पुराने उत्तर देता रहा। हाँ, अब मैंने उसको अपने निर्दोष होने का विश्वास दिलाने का प्रयत्न छोड़ दिया। मुझको यकीन हो गया था कि इसमें उसको भी कोई संदेह न था। एक बार भी उसने मेरे ऊपर कोई ठोस आरोप नहीं लगाया। सात बजे तक मैं प्रायः थक गया था। उसकी अवस्था भी मुझसे अधिक अच्छी न थी। अब वह अपना कमरा छोड़कर मुझे कारीडोर में खड़ा करके कहीं चला गया। अब मुझको यह सोचने की अवश्यकता न रह गई थी कि मुझ पर क्या बीतने वाली है। यह स्पष्ट ही था कि मैं गिरफ़्तार कर के किसी जेल की कोठरी में बंद कर दिया जाऊँगा।

कुछ क्षण बाद ही वह वापस आगया।

"अभियुक्त नागरिक", वह कहने लगा, "मेरे अफसर ने फ़ैसला किया है कि तुमको अभी गिरफ़्तार न किया जाय। वह तुमको ४८ घंटे का समय और देना चाहते हैं ताकि तुम अच्छी तरह अपनी भलाई बुराई समझ सको। अब शनिवार को फिर आना।"

मेरा सिर घूमने लगा था। उसी स्थिति में वहाँ से चल पड़ा। इस बार स्वतन्त्रता की जो थोड़ी घड़ियां मिली थीं उनको पाकर मुझको खुशी नहीं हुई। मुझको अब पूर्ण विश्वास हो गया था कि मेरे भाग्य पर मुहर लग चुकी है। यह भी विश्वास था कि वे मुझको विदेशी जासूस कह कर किसी काल्पनिक अपराध को स्वीकार करवाना चाहते हैं और इसके लिए किसी भी साधन को उठा न रखेंगे। क्या मैं उनके सामने खड़ा रह

सकूँगा ? अब मनकी नहीं अपितु शारिरिक शक्ति का प्रश्न था। सैकड़ों ही व्यक्ति आये दिन गिरफ्तार किये जा रहे थे। मैंने कभी नहीं सुना था कि उनमें से कभी कोई वापिस लौट कर आया—हाँ कभी-कभी यह अवश्य सुनने को मिलता था कि कुछेक ने अपना "अपराध" स्वीकार कर लिया है। उनमें से बहुतसों से मेरा परिचय था; मैं जानता था कि प्रायः सभी ने अपने जी जान से सोवियट सरकार की सेवा करने की कोशिश की थी। पर इससे क्या उनको कुछ मदद मिली थी ? तो मुझको भी उससे क्या सहायता मिल सकती थी ?

(२)

"क्या आप ही का नाम एलेग्जैण्डर सेमोनोविच वाइजबर्ग है ?" यूनीफार्म पहने एक व्यक्ति ने मुझको सम्बोधित करके कहा।

"जी हाँ" मैंने उत्तर दिया।

"जन्म दिन ८ अक्तूबर सन् १६०१, ठीक है न ?"

"जी हाँ।"

"हमको आपके मकान की तलाशी लेने की आज्ञा हुई है।"

"क्या मैं वारंट देख सकता हूँ?"

"निस्सन्देह।"

उसने मुझको एक कागज दिखाया जिसमें उसको मेरे घर की तलाशी लेने की आज्ञा लिखी थी। उसमें कुछ और भी लिखा था पर उसको मैं नहीं पढ़ सका क्योंकि वह उस भाग पर अपना मोटा अंगूठा जमाए हुए था। इसलिए मैं यह न तय कर सका कि अग्र्या वारंट केवल तलाशी के लिए है या तलाशी और गिरफ्तारी दोनों के लिए है।

डेढ़ बजे तक तलाशी समाप्त हुई। जो कुछ कागज उनके हाथ पड़े

वे सब और कुछ किताबें और कुछ विदेशी समाचार-पत्र और मेरा पास-पोर्ट उन्होंने एक बंडल में बांध लिये और मेरे घर से जितनी चीजें बरामद की थीं उनकी एक सूची बनाकर मुझसे हस्ताक्षर करा लिये।

तलाशी लेते समय उनको मेरे घर में जो भी चित्र दिखाई दिया उसकी उन्होंने बड़े गौर से जाँच की। मेरे घर में एक चित्र ऐसा भी लगा था जिसमें मेरी पत्नी युद्धमंत्री वोरोशिलोफ के साथ खड़ी थी। यह चित्र वे अपने साथ लेते गए। मेरी पत्नी ने एक बार एक प्रदर्शनी का आयोजन किया था, उसी समय का यह चित्र था। वोरोशिलोफ को सुन्दर स्त्रियों के साथ चित्र खिचवाने का शौक था।

"अपनी दैनिक आवश्यकताओं की जो चीजें हैं उनको बाँध लीजिए।"

उनके इस आदेश का अर्थ स्पष्ट ही था। जितना मुझसे हो सकता था उतने ही मैंने नीचे पहनने के कपड़े संभाल लिए। गरम मौजे लिए और एक जोड़ी फर लगे हुए गरम जूते लिए जिनमें फीतों की जगह जिप लगा था। पिछली बार जब मैं प्राग गया था तो वहीं मैंने ये जूते बाटा के यहाँ से खरीदे थे। मुझको याद है जब मैं उनको लेकर सोवियट यूनियन आया था तो मेरे आस पास के लोगों में एक सनसनी सी मच गई थी। इन चीजों के अतिरिक्त मैंने एक पलंगपोश एक भारी कम्बल और एक तकिया भी ले लिया।

"लेकिन नागरिक वाइजबर्ग इन सब चीजों की आवश्यकता ही नहीं है", उस यूनीफार्म वाले अधिकारी ने मुझसे कहा। "जरूरत की सब चीजें वहीं मिल जाती हैं और यदि उनके अतिरिक्त और किसी चीज की आवश्यकता होगी तो आपके मित्र पहुँचा देंगे।"

"यदि कोई चीज अनावश्यक सिद्ध हुई तो क्या उसको वापस ले जाने की उनको सुविधा न होगी ?"

"अवश्य ।"

"यदि ऐसी बात है तो मैं इनको अपने साथ ले जाना चाहूँगा ।"

मैं नहीं जानता किस भावना के अधीन मैं इतना साहस कर बैठा था किन्तु यह निश्चय है कि यदि इनमें से कुछ चीजें मेरे पास न होतीं तो मैं कारावास से जीवित बचकर न लौटता । बहुत से अभागे बन्दी केवल इसीलिए मर गए थे कि गर्मियों में पकड़े जाने के कारण वे अपने साथ सर्दियों का कोई कपड़ा न ले जा सके थे । कारावास में जो चीजें सरकार की ओर से मिलती थीं उनसे तो किसी का काम ही क्या चल सकता था !

विदा का समय आया और मैंने अपने हृदय को दृढ़ करके कहा कि "मैं जल्दी ही वापस आ जाऊँगा । सोवियट रूस में निरपराध लोगों को देर तक जेल में नहीं रहना पड़ता ।"

मैंने यह बात खुफिया पुलिस के लोगों को ध्यान में रखते हुए कही थी । मेरे मन में तनिक भी यह सन्देह न था कि ऐसा विश्वास रखना निरी भ्रान्ति है ।

हम बाहर निकले । रात्रि देदीप्यमान थी । हम पार्क से होकर निकले और एक ट्राम में जाकर सवार हो गए । स्पष्ट ही था कि अब उनकी नजर में मैं इतना बड़ा आदमी न था कि कार का इन्तजाम किया जाता ।

इस बार खुफ़िया पुलिस की इमारत में मुझे किसी पास की आवश्यकता नहीं थी । अब उन्होंने मेरे पास जो रुपया पैसा था वह, फाउण्टेन पैन,

और जेबी चाकू, घड़ी, गेलिस और जूतों के फीते अपने हाथ में ले लिए। एकाध बार मन में आया कि इन बेचारों को मेरे जीवन को सुरक्षित रखने की कितनी चिन्ता है ! मुझको दो रसीदें दी गईं। एक रुपये पैसे की और दूसरी मेरे सन्दूक की। सन्दूक अब सरकारी गोदाम में पहुँचा दिया गया। मैं पलंगपोश और एक दो चीज़ें और अपने साथ रखना चाहता था पर ऐसा करने की अनुमति नहीं मिली।

"आपको बाद में जिस चीज़ की आवश्यकता होगी मिल जायगी। पहले इन सब चीज़ों की जाँच की जायगी।"

एक संतरी मुझको अपने साथ तिमंजले पर ले गया जहाँ मुझको एक वार्डर के हवाले कर दिया गया। अब मैं एक छोटी सी कोठरी में बन्द था जिसका दरवाजा कसकर बन्द कर दिया गया था। अब मैं एक बन्दी था। मेरी कोठरी में दो खिड़कियाँ थीं और उसका फर्श और दीवारें बिल्कुल साफ़ थी। एक मामूली चारपाई और छोटी सी अल्मारी उस कोठरी का समूचा फर्नीचर थी। कोठरी में दूसरा कोई न था। मैं चारपाई की पट्टी पर बैठ गया। अब तक की सारी घटनायें और भविष्य के सम्बन्ध में आने वाले विचारों से मस्तिष्क भरा था। धीरे-धीरे मेरा मन शांत होता दिखाई दिया। मैं सोचने लगा कि ये लोग कभी न कभी तो मुझ पर कोई निश्चित आरोप लगायेंगे; तब मेरा मौका आयेगा; मैं अपने चारों ओर फैलाये गये मिथ्यारोपों और सन्देह के जाल को अवश्य छिन्न-भिन्न करने में समर्थ हो सकूंगा।

मुझको वहाँ बैठे हुए अभी आधा घंटा ही हुआ होगा कि द्वार के ऊपर के झरोखे में वार्डर का सिर दिखाई दिया। उसने मेरी ओर संकेत किया।

"क्या बात है ?" मैंने पूछा।

"सस्स" उसने मुझको खामोश रहने के लिये संकेत किया। "यहाँ धीरे से ही बोलना चाहिए। अब लेट जाओ। रात के समय किसी बन्दी को चारपाई से दूर नहीं रहना चाहिए। तुमको छः बजे उठना पड़ेगा और अब तीन बज चुके हैं।"

आज्ञाकारी शिशु की भाँति मैंने कपड़े उतारे और चारपाई पर लेट गया।

रूसी जेलों में बंदियों को एकाकी रखने की प्रथा केवल इसीलिए नहीं है कि बन्दियों का बाहर की दुनिया से सम्पूर्ण सम्बन्ध विच्छेद रहे बल्कि इसलिए भी है कि वे एक दूसरे के विषय में कुछ जान न सकें। इस नीति को बरतने में वहाँ के अधिकारियों को जो चातुर्य और सफलता प्राप्त है उसकी कल्पना तो केवल भुक्तभोगी ही कर सकते हैं। यह कारागार एक विशेष विभाग के अधीन था और इसके अधिकारी अपनी नीति को अधिकाधिक प्रभावकारी बनाने की नित्य नई तरकीबें निकालते रहते थे। प्राय: सभी रूसी नगरों में दो जेलें होती हैं। एक खुफिया पुलिस के कार्यालय के साथ लगी हुई जो प्राय: शहर के बीच में होती है और दूसरी जो बड़ी होती है शहर से बाहर। 'अन्दरूनी जेल' में कुछ सौ विशेष श्रेणी के बन्दी रखे जाते हैं। विशेष श्रेणी से अभिप्राय उन बन्दियों से है जिनको खुफिया पुलिस पूरी तरह से सम्पर्कहीन रखना चाहती है। बड़ी जेलों में अनुशासन इतना कठोर नहीं होता। सन् १९३७ ई० की हेमन्त ऋतु की भारी धर पकड़ के समय इस कठोर व्यवस्था में भारी ढील आ गई थी। जिन जेलों में केवल आठ सौ बन्दी रखे जा सकते थे वहाँ अब बारह हजार रखने पड़ रहे थे और तिसपर भी निरंतर आवागमन बना रहता था। खारकोफ़ की जेल में एक कैदी औसतन तीन चार मास रखा जाता था। जब नए कैदी आते थे तभी बाहर का कोई

समाचार मिलता था। १९३९ तक बन्दियों को सम्पूर्णतः सम्पर्कहीन रखने की व्यवस्था पुनः सुदृढ़ कर दी गई थी। खुफ़िया पुलिस की अपनी अन्दरूनी जेलों में तो इस व्यवस्था में कभी भी कमी नहीं आई थी।

जेल में पहुँचने पर मुझको एक खुशी अवश्य हुई। अब मैं समाचार पत्रों के पढ़ने से बच गया था। जबतक बाहर था तो नित्यप्रति एक ही प्रकार के रोषपूर्ण नारे पढ़ने को मिलते थे : 'जनता के शत्रुओं का नाश करदो, ट्राट्स्की वादी कीड़ों को कुचल डालो'। इस प्रकार की भाषा पढ़ते-पढ़ते मैं अपने आप को रुग्ण सा महसूस करने लगा था। परन्तु अब इस रोग से छुटकारा मिलगया था तो मेरे पास समय इतना हो गया था कि समझ नहीं पाता था कि क्या करूं। आत्मचिन्तन में ही समय बिताता रहूँ, ऐसा अभ्यास अभी मुझको नहीं हुआ था। रात दिन के चौबीस घंटे में मुझको सात घंटे सोने की आज्ञा थी। दस मिनट तक व्यायाम करना पड़ता था; पाँच मिनट प्रातःकाल और पाँच मिनट सायंकाल शौचालय के लिए मिले हुए थे; और पाँच-पाँच मिनट कलेवे, मध्यान्ह काल के और सायंकाल के भोजन के लिए मिले थे; १५ मिनट मे अपनी कोठरी को साफ़ करना पड़ता था। यह सब मिलाकर एक घंटे से भी कम ही तो हुआ। १६ घंटे और दस मिनट जो शेष रह जाते थे उनको केवल जम्भाइयाँ लेते रहने ही में तो पूरा नहीं किया जा सकता था।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया एकाकीपन का भार भी बढ़ता गया। अधिकांश समय मैं खिड़की के सीखचों के पास ही खड़ा रहता था। खिड़की से बाहर देखने की मुझको आज्ञा न थी, परन्तु मेरे इस दैनिक नियम में किसी ने हस्तक्षेप नहीं किया। मेरी कोठरी की बाहर की दीवार पूर्व से पश्चिम की ओर जाती थी। प्रातःकाल सारे सहन में साया होता था। ज्यों-ज्यों दिन बढ़ता जाता था साया घटता जाता था और अन्त

में तीन चौथाई सहन में धूप छा जाती थी। मैंने यह अनुमान लगाया था कि संतरी अमुक समय बदला जाता है। उसी के हिसाब से साए के घटने बढ़ने को देख कर मैं यह हिसाब लगा लिया करता था कि अब दोपहर हुआ होगा। आत्मतुष्टि के लिए ही सही पर इस प्रकार मैं दिन को दो भागों में विभक्त कर पाता था।

अपनी गिरफ़्तारी के दिन और नियमित पूछ-ताछ प्रारंभ होने के समय तक मैं इसी प्रकार की धीमी-धीमी यातना का अनुभव करता रहा। मेरा समूचा जीवन, मेरी धमनियाँ, मेरा मस्तिष्क, कुछ न कुछ करने के लिए छटपटा रहा था। मैं कुछ अनुभव करना चाहता था; किसी मानव प्राणी से बात करना चाहता था; कभी एक काग़ज़ पैन्सिल लेकर कुछ लिखने ही को मन करता था। कभी मन में आता था कि कितना अच्छा होता यदि कोई पुस्तक मेरे पास होती तो उसको पढ़कर ही कालयापन कर पाता। किन्तु ऐसी कोई बात होने वाली न थी। मुझको लगता था कि मेरा जीवनपक्षी कोठरी की सफ़ेद दीवारों और उन दो छोटी खिड़कियों के बीच ही अनन्त काल से बंधा आया है और बंधा रहेगा। बाहर सहन में सूर्य देवता का प्रसाद फैला पड़ा होता था। उस सुन्दर मौसम के कारण मुझको अपना एकाकीपन और भी उग्र-रूप धारण करता हुआ दिखाई देता था। उस समय की सभी बातों, आकांक्षाओं और चिन्ताओं को मिलाकर याद करता हूँ तो ऐसा प्रतीत होता है कि अभी मेरे मन से आशा सम्पूर्ण रूप से विनष्ट नहीं हुई थी। बहुदा मैं सोचा करता था कि एक न एक दिन सत्य की विजय होगी। जब अधिकारी सारी बातों से परिचित हो जायंगे तो उनको मेरी दोषहीनता पर कोई संदेह न रहेगा और मैं छोड़ दिया जाऊँगा। इसी कारण मुझे भविष्य से इतनी आशंका नहीं थी जितनी कि नित्यप्रति के अवकाशप्राचुर्य से। किस प्रकार इतने लम्बे चौड़े दिन को बिताऊँ; किस बात में मन लगाऊँ; क्या सोचूँ और क्या करूँ

ताकि वे लम्बे सोलह घंटे किसी प्रकार काट सकूँ ? इसी प्रकार की उधेड़ बुन में मन उलझा रहता था।

दिन में सबसे अधिक विडम्बना और भय का अनुभव मुझको प्रातःकाल हुआ करता था और ज्यों-ज्यों दिन घटता जाता था तो मेरे मन को एक विचित्र प्रकार की सांत्वना का अनुभव होता था। दिन भर कोठरी में इधर से उधर पाँव पटकते रहने के बाद या कहिये कि अपना नित्य का कार्य-क्रम पूरा करने के पश्चात् मैं शान्त होकर चारपाई पर बैठ जाया करता था। इस सांत्वना का कारण रात्रि का आगमन था; निद्रा की लोरियों की आशा थी, या निरी थकान यह मैं नहीं जानता। कभी-कभी किसी नशेवाली वस्तु का सेवन करने के कारण बाद में भी मुझको इसी प्रकार का अनुभव हुआ है।

धीरे-धीरे दिन बीतते जारहे थे। शुरू में मेरा बिचार था कि मैं दो चार सप्ताह में अवश्य छूट जाऊँगा। बाद में कारावास से मुक्ति की आशा दुर्बल पड़ने लगी और मेरी एक मात्र आकांक्षा यही रह गई कि किसी प्रकार मेरा एकाकीपन समाप्त हो जाय।

१६ मार्च को आखिर वह घड़ी आही गई। जिस समय मैं सोने का विचार कर रहा था मुझको अधिकारियों का बुलावा आगया। पोलेवेड्स्की ने मुझसे बातें कीं और क्षण भर के लिए भी यह आभास न होने दिया कि उसको मेरी परिवर्तित परिस्थितियों से परिचय था। वह ऐसे बातें कर रहा था जैसे कि मेरे जीवन में कोई परिवर्तन ही न आया हो। बैठने के लिए एक कुर्सी मुझको दे दी गई थी और पोलेवेड्स्की सामने की कुर्सी पर बैठ गया था। इसके पश्चात् उसने एक साफ़ काग़ज निकाला और "प्रश्नावली क्रम नम्बर १" शीर्षक देकर मुझसे पूछना शुरू किया :

"नागरिक तुम्हारा नाम ?"

"वाइज़बर्ग"

"पहला नाम और पिता का नाम ?"

"एलेग्ज़ैण्डर सेमेनोविच"

"जन्म-तिथि ?"

इस प्रकार की निरर्थक पूछताछ बड़े स्निग्ध ढंग से चलती रही पर एक प्रश्न पर आकर विघ्न उत्पन्न हो गया। प्रश्न था "किस पार्टी के सद-स्य हो तुम ?" तो मुझ से पूछे बिना ही वह इस प्रश्न के उत्तर में लिख देना चाहता था "किसी पार्टी का नहीं" अथवा "पार्टी से निकाला हुआ"। मैंने इसका जोरदार विरोध किया और आग्रह किया कि मैं अभी तक कम्यूनिस्ट पार्टी का मेम्बर हूँ और मुझको किसी ने नहीं निकाला। इस पर पोलेवेड्स्की बोल उठा कि "हमारे कैदियों में कोई कम्यूनिस्ट नहीं है।"

"यह भी विचित्र बात है" मैंने कहा, "मैं आस्ट्रिया और जर्मन कम्यू-निस्ट पार्टी का सदस्य था।"

"क्रान्तिविरोधी कभी कम्यूनिस्ट नहीं हो सकते। यदि तुम कम्यूनिस्ट पार्टी में शामिल हो जाओ और उसकी जड़ें खोखली करने लगो तो पार्टी तुमको अपने संगठन से निकाल बाहर करेगी।"

"पार्टी ने मुझको कभी नहीं निकाला।"

"यदि तुमको ऐसी जानकारी नहीं भी है तो भी यही समझो कि तुमको कम्यूनिस्ट पार्टी से निकाल दिया गया है।"

इस प्रकार का औपचारिक विवरण लिखने के पश्चात् पोलेवेड्स्की ने मेरी जीवनी के विषय में पुनः पूछताछ प्रारम्भ कर दी। अब तक प्रत्येक

बात मेरे हृदय के पट पर अंकित हो चुकी थी। इस पूछताछ के समाप्त होने पर पहले परिच्छेद की इतिश्री हो गई और पोलेवेड्स्की ने सन्तरी को बुलाने के लिए घंटी बजाई।

अगले दिन शामको पूछताछ का दूसरा चरण प्रारम्भ हुआ।

"अभियुक्त तुम क्रान्तिविरोधी कार्य करते रहने के अपराध को स्वीकार करते हो या नहीं?"

"क्या आप मुझको बतायेंगे कि वास्तव में मैंने क्या किया है?"

"अगर तुम अपना अपराध स्वीकार करना नहीं चाहते तो न करो और ऐसा ही जवाब दो और मेरा समय नष्ट न करो।"

मैंने कहा "अच्छी बात है मैं अपराधी नहीं हूँ।"

उसने जो कुछ मैंने अपने पक्ष में कहा लिख लिया और पूछा "एरिक हरमान के बारे में तुम क्या जानते हो?"

यदि कोई मुझ से सौ ऐसे आदमियों के नाम पूछता जिनको मैं जानता होता और जिनका किसी प्रकार मुझ से की जाने वाली पूछ-ताछ से सम्बन्ध होता तो भी एरिक हरमान का नाम मेरे दिमाग में कभी न आता। जिस समय मैं वियना विश्वविद्यालय में पढ़ता था उस समय हरमान भी वहाँ पढ़ा करता था। संयोगवश उससे मेरी थोड़ी बहुत जान-पहचान हो गई थी। वह पोलेंड की कम्यूनिस्ट पार्टी का सदस्य था। देखने में अति-सुन्दर और पुस्तकों में रूस के कृषि-क्रान्तिकारियों का जो विवरण मिलता है वैसा ही था हरमान। इसके अतिरिक्त मुझको उसके विषय में कुछ न मालूम था। एक बार संयोगवश मुझको खारकोफ़ में फिर उससे मुठ-भेड़ हो गई थी। मैंने सारी परिस्थितियाँ समझाईं।

"अच्छा एरिक हरमान से तुम्हारी जान पहचान किसने कराई थी?"

"सम्भवतः कैरल लांग नामक व्यक्ति ने।"

मेरी स्मरणशक्ति अच्छी थी इसीलिए मैं उसका नाम बता सका। समाजवादी युवक आन्दोलन के सिलसिले में मुझको सैकड़ों व्यक्तियों को नमस्कार करने का अवसर मिला था। साधारणतः इस प्रकार की जान-पहचान देर तक याद नहीं रहा करती किन्तु हरमान की आकृति न जाने किस कारण मेरे मस्तिष्क में पुनः सजीव हो उठी। विश्वविद्यालय में एक बार फासिस्ट विद्यार्थियों ने एक प्रदर्शन किया था उस समय विश्व-विद्यालय की सीढ़ियों पर हरमान के साथ मेरी भेंट हुई थी। कैरल ने हम दोनों का एक दूसरे से परिचय कराया था।

"यह कैरल लांग कौन है?" पोलेवेड्स्की ने पूछा। "और पिछली बार तुम उससे कब मिले थे?"

"सन १९३२ ई० में बर्लिन में", मैंने उत्तर दिया।

"उसके बाद लांग का क्या हुआ यह भी पता है?"

"जहां तक मुझे मालूम है वह वहां की सरकार के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए पोलेंड वापस चला गया था। एक दिन वह किसी चाय घर में पौलेंड की कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के एक प्रमुख सदस्य के साथ बैठा हुआ था कि उस समय एक सरकारी भेदिये ने उसको देख लिया। यह भेदिया इसको पहचानता था। लांग ने भेदिये को देख लिया किन्तु दूसरा आदमी उसकी ओर पीठ किए बैठा था और वह उसको न देख सका। ये दोनों खिड़की के पास बैठे थे। कैरल ने खिड़की को तोड़ कर केन्द्रीय समिति के सदस्य को बाहर कुदा दिया था। इसी अपराध में पुलिस ने उसको गिरफ्तार कर लिया था।"

"उसके विषय में बाद में कुछ सुना?"

"हाँ ! उसको पाँच वर्ष के कारावास का दंड मिला था। पहले तो पुलिस उसके बारे में सही बात न जान सकी थी क्योंकि उसके पास किसी दूसरे व्यक्ति के पासपोर्ट आदि कागज़ थे। किन्तु उसके दो वर्ष जेल में रहने के पश्चात् उसके असली नाम और ठिकाने का पता लग गया था और इस कारण उसको तीन साल कारावास का दंड और मिल गया था। जेल में उसको नेत्र रोग हो गया था; सम्भवतः उसको टी. बी. हो गई थी और वह अन्धा हो गया। वियना के उसके कुछ मित्रों ने अभी कुछ दिन पहले एक पत्र लिखा था और मुझको सलाह दी थी कि कमिन्टर्न से कह कर मैं उन बंदियों की सूची में उसका नाम लिखवा लूं जिनकी अदलाबदली के लिए रूस और पोलेंड की सरकार में बातचीत चल रही है ताकि वह रूस आ सके।"

"किसने तुमसे यह प्रार्थना की थी ?"

"लालेक नाम के केरल के एक मित्र ने।"

"तो क्या वास्तव में तुमने उसके लिए कुछ किया ?"

"नहीं ! मैं कर ही क्या सकता था ? पहली बात तो यह थी कि मेरा पोलेंड की कम्यूनिस्ट पार्टी से कोई सम्पर्क न था और दूसरी बात यह थी कि अब चूंकि मेरी पत्नी गिरफ्तार हो चुकी थी मेरे हस्तक्षेप करने से कोई लाभ हो भी नहीं सकता था।"

"गुस्ताफ़ वैंगरर उर्फ़ शिलर के विषय में तुम क्या जानते हो ?"

पोलेवेडस्की ने मुझसे उसकी लम्बी और पेचीदा कहानी बड़े विस्तार के साथ सुनी। मैंने देखा कि अब वह इस कहानी का मेरे ऊपर लगाए गए अभियोगों से किसी प्रकार का सम्बन्ध जोड़ने का यत्न नहीं कर रहा था। सम्भवतः वह व्यक्तिगत रूप से उस अतिरोचक कहानी में दिल-

चस्पी रखता था। इस विषय में मैंने जो कुछ उसको बताया उसमें से उसने प्राय: कुछ भी नहीं लिखा।

निरन्तर दो दिन तक शाम को कई घंटे तक यही कहानी चलती रही। पोलेवेड्स्की ने एकाग्र चित्त होकर एक एक बात ऐसे सुनी मानों कि गाँठ बांध रहा हो और क्षण भर के लिए भी उसने मेरे वृत्तान्त में विघ्न नहीं डाला। इन दो दिनों में हम दोनों के बीच का पारस्परिक रवैया भी बदला। अब वह अतिक्रमणकारी धूर्त नहीं दिखाई देता था। यह कहानी सुनकर उसका भाव मेरे प्रति कुछ ऐसा बदला कि उसने मुझको अपनी कोठरी में पढ़ने के लिए एक समाचारपत्र भी दे दिया था यद्यपि अगले ही दिन उसने उसको वापस भी करा लिया था।

(३)

अब मुझको जेल में आए एक महीना हो चुका था तिस पर भी मेरी जानकारी में कुछ वृद्धि हुई हो ऐसी बात नहीं थी। हाँ, अब मैं शान्तचित्त था और बात बढ़ाने की मेरी नीयत बिल्कुल न थी। अभी तक मेरा यह विचार था कि पोलेवेड्स्की मेरे विषय में अपनी तहकीकात को अधूरी छोड़ देगा और मुझको छुड़वा देगा या मुझको अपने देश लौट जाने की अनुमति दिलवा देगा। मैं यह निश्चय कर चुका था कि मुझको सोवियट रूस में नहीं रहना है। इसी अनुमान की आधारशिला पर मैंने अपनी समस्त योजनाओं का भवन तैयार कर रखा था।

किन्तु अगले दो सप्ताह में मैंने देखा कि पोलेवेड्स्की का तर्ज फिर बदलने लगा है यद्यपि मेरे प्रति उसका साधारण व्यवहार मानवोचित ही रहा। अब जेल की कोठरी में अकेले बैठे रहने में मुझको पहले जैसा डर भी नहीं रह गया था। एकाकीपन को सह लेने का सामर्थ्य अब मुझ में था। अब तक मुझको छः किताबें मिल चुकी थीं और दो या तीन समाचार पत्र।

साथ ही पूछताछ जारी थी इसलिए मेरा मस्तिष्क अब सूना नहीं था। अप्रैल के शुरू में मुझे ऊपर से हटा कर नीचे की मंजिल की एक और भी छोटी कोठरी में बन्द कर दिया गया। यह कारीडोर के दूसरी तरफ थी और इसमें एक छोटी खिड़की थी जो छोटे सहन की ओर खुलती थी। दुर्भाग्यवश यह शौचालय के निकट थी और मक्खियों का झुण्ड उसमें आता जाता रहता था। मैंने शिकायत की और उन मक्खियों का खास तौर से ज़िकर किया। अब मैं जब इन सब बातों को याद करता हूँ तो हँसी आती है। वास्तव में जो कुछ आगे होने वाला था उसके मुकाबले में यह समय सुख-स्वप्न सा था। अब दिन में भी मुझे बिस्तरे पर लेट जाने की आज्ञा थी यद्यपि मैं सोना चाहता तो मुझे सोने नहीं दिया जाता था। मुझको कहीं से लकड़ी का एक टुकड़ा मिल गया था जिससे मैं दीवार पर आँकड़ें खोद कर हिसाब लगाता रहता था। खिड़की के दरवाजे के झरोखें से यदि वार्डर देखने की कोशिश भी करता तो भी मुझको देख नहीं पाता था क्योंकि मैं लेटा हुआ ही अपने गणितशास्त्र का अभ्यास किया करता था। यद्यपि दिन में सोनें पर प्रतिबन्ध लगा हुआ था तब भी मैं सो लिया करता था क्योंकि कोई भी वार्डर मुझको ऐसा करने से न रोकता था। साधारणतः मैं आसानी से नहीं सो सकता हूँ और मुझको अधिक नींद की आवश्यकता भी नहीं है। रात में पाँच छः घण्टे सो लूँ तो काफी है। पर इतनी नींद भी मुझको नहीं मिलती थी क्योंकि मैं अनुकूल परिस्थितियों में ही सो सकता हूँ। किन्तु न जाने किस प्रकार उस छोटी कोठरी में सोने की कला मैंने सिद्धहस्त कर ली। वहाँ में इतना सोया जितना न उससे पहले कभी सोया था और न उससे बाद में।

मुझसे की जानेवाली पूछताछ मे एक सप्ताह की रुकावट आ गई। उसके पश्चात् पोलेवेड्स्की ने मास्को लेनिनग्राड और खारकोफ़ के

विभिन्न सरकारी अधिकारियों से मेरे किस प्रकार के सम्बन्ध थे इस विषय में अनेक प्रश्न किए और यह भी जानना चाहा कि रूस में आने से पहले मेरा जीवन किस प्रकार का रहा था। ऐसा लगता था मानों कि अधिकारी इस बीच मे मेरे पत्रव्यवहार का अध्ययन करते रहे थे और एक दो गुत्थियाँ सुलझाना चाहते थे। अभी तक उनकी रीति-नीति को मैं भली प्रकार नहीं समझ पाया था। अभी तक मेरा यह विचार था कि ये लोग वास्तव में सत्य की खोज में हैं। पोलेवेड्स्की जबतक रहा तबतक यह बात कुछ हद-तक सच भी थी। खुफ़िया पुलिस के अधिकारी इतने मूर्ख तो थे नहीं कि यह मान लेते कि जो लोग षड़यंत्र रचते रहे हैं वे ऐसे पत्र पीछे छोड़ देंगे जिनसे उनके षड़यंत्र का पता लग जाय। मैंने सोचा उनकी तो एक-मात्र चिन्ता यही हो सकती है कि किसी प्रकार ऐसी स्थिति पैदा करदी जाय कि मेरे प्रति सन्देह उत्पन्न हो जाय। उनके असह्य दवाब के कारण यदि कोई व्यक्ति झुक जाता था तो उसको अपने अपराध का भी आविष्कार करना पड़ता था। महीनों बाद मुझको यह पता लगा कि उनका दबाव कितना गहरा और कितने प्रकार का हो सकता है। किसी से जब इस प्रकार का काल्पनिक अपराध स्वीकार करवा लिया जाता था तो यद्यपि अपराध का आधार और रूप सर्वथा यथार्थताहीन होते थे उसको बड़ी चतुराई से ऐसी परिस्थितियों और घटनाओं से मढ़ दिया जाता था कि वह वास्तविक सा दिखाई देने लगता था। अपराध किसी ने किया हो या न किया हो, रूस की खुफ़िया पुलिस अपराधियों की खोज में थी। साधारणतः खुफ़िया पुलिस के अधिकारी उस अपराध का जिसका वे किसी अभागे स्त्री या पुरुष से इकबाल करवाना चाहते थे ब्यौरा नहीं दिया करते थे बल्कि उसको अभियुक्त की अपनी ही कल्पना पर छोड़ दिया करते थे। किसी व्यक्ति विशेष के जीवन की वास्तविक घटनाओं के विषय में बार-बार प्रश्न करते रहने का एक मात्र उद्देश्य यह था

कि अभियुक्त स्वयं अपने विषय में यह समझने लगे कि न जाने वे छोटी छोटी घटनाएं कितने बड़े अपराध की द्योतक हैं। यह समझिए कि इन छोटी-छोटी घटनाओं को ऐसी ईंटों के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था जिनसे कि खुफ़िया पुलिस के अधिकारी अपना मन चाहा भवन तैयार कर सकें। एक बार किसी के जीवन की ऐसी नगंण्य घटनाओं से परिचय प्राप्त करने के पश्चात् कभी वे अभियुक्त का उनकी ओर स्वयं ध्यान आकर्षित करते थे तो कभी अभियुक्त से स्वयं ही उनका उल्लेख करने की आशा रखते थे। अधिकारियों का सम्भवत: यह विचार था कि यदि अभियुक्त स्वयं ही अपने जीवन सम्बन्धी घटनाओं का उल्लेख करे तो उनके आधार पर वास्तव में प्रभावशाली ढांचा तैयार किया जा सकता है। यदि अभियुक्त सचेत न होता और विभिन्न प्रश्नों के निहित मन्तव्य का विरोध न करता तो खुफ़िया पुलिस की इससे बड़ी और विजय हो ही क्या सकती थी ? वास्तव में कुछ मुट्ठी भर लोगों ही को उसके गूढ़ मन्तव्य को समझने और उसका विरोध करने का साहस और सामर्थ्य होता था। यदि बंदी आत्मसमर्पण कर देता तो वह अपने काल्पनिक अपराध का ऐसा भयंकर चित्र तैयार कर लेता था कि आश्चर्य होता था क्यों कि इस चित्र के पीछे वास्तविक घटनाएं और एक विशेष प्रकार का तर्क होता था। इन दोनों के समावेष से जो परिणाम निकलता था वह खुफ़िया पुलिस के अधिकारियों के लिए विशेष संतोष का विषय हो सकता था।

इसके अतिरिक्त अभियुक्त के इस प्रकार स्वयं सहायता करने से बहुत सा समय बच जाता था। बन्दी को तो अपने विषय में केवल एक ही अपराध-भवन की रचना करनी पड़ती थी और बेचारे पुलिस अधिकारी को एक वर्ष में न जाने कितने अपराध भवनों की ! इस प्रकार के काल्पनिक अपराधों की गल्पगुच्छियों में वास्तविक नर-नारी और वास्त-

विक घटनाएं एक विचित्र, नया रूप धारण कर लेती थीं। अभियुक्त की बिना सहायता के अधिकारी कोई जाल रचते भी थे तो उसकी बहुत सी कड़ियाँ कमज़ोर और बेजोड़ रह जाया करती थीं। 'होटल ब्रिस्टल' की प्रसिद्ध कहानी सबको ही मालूम है।

ट्राट्स्की के विरुद्ध स्टालिन की सरकार ने जो मुकदमा चलाया था उसमें बड़े ज़ोर के साथ यह बात कही गई थी कि रूस की क्रांति का यह नेता सन् १६३२ ई० में कोपेनहेगेन के इस नाम के होटल में गोल्ज़-मान नामक व्यक्ति से मिला और वहीं उसने स्टालिन और उसके दूसरे साथियों की हत्या करने के विषय में षड़यन्त्रकारियों को हिदायतें दीं। बेचारे खुफ़िया पुलिस के अधिकारियों को यह न मालूम था कि सन् १६१७ ई० में ही इस नाम का होटल तोड़ दिया गया था और उसके बाद इस नाम का होटल कोई नहीं रहा था। इतनी भयंकर भूल किस प्रकार हो गई यह स्पष्ट है। गोल्ज़मान का कोई इरादा नहीं था कि वह रूस की खुफिया पुलिस को धोखा दे। उसको अधिकारियों ने यह आदेश किया था कि वह यह कल्पित अपराध स्वीकार करले कि वह ट्राटस्की जैसे गद्दार से कोपेनहेगेन में मिला था। पुलिस के दबाव में आकर और अपना पिण्ड छुड़ाने के लिए उसने इक़बाल करना स्वीकार कर लिया था। वास्तव में वह ट्राट्स्की से अपने जीवन में कभी नहीं मिला था इसलिए उसको इस कल्पित भेंट के समय स्थान और परिस्थितियों के विषय में मनघड़न्त कथा कहनी पड़ी।

यदि खुफ़िया पुलिस सारे मामले को अपने आप ही घड़ ले तो हमेशा यह ख़तरा रहता है कि उसकी अभियुक्त के प्रति अपूर्ण जानकारी के कारण कोई भयंकर भूल हो सकती है; कल्पित अपराध का स्थान और परिस्थितियाँ ग़लत साबित हो जायें तो उनके आधार पर आगे चलकर अभियुक्त अपने निर्दोष होने का आग्रह कर सकता है। इसीलिए अभि-

युक्त को अपने हाथों ही अपने लिए जाल रचने का प्रोत्साहन दिया जाता है। मास्को में जो बड़े बड़े मुकदमों का स्वाँग रचा गया रूस के डिक्टेटर को उनकी बड़ी आवश्यकता थी। उनका सहारा लेकर बड़े भारी दमन-यंत्र को संचालित किया जा सका और अपने हर प्रकार के झूठ को छिपाने का साधन प्राप्त हो गया। तिस पर भी तीन ऐसी भयंकर भूलें हो गईं जिनसे डिक्टेटर का मन्तव्य पूरी तरह सिद्ध न हो सका।

यदि रूस के बड़े बड़े मुकदमों के स्वाँग में जिनका संचालन खुफ़िया पुलिस के उच्चतम अधिकारियों, बड़े सरकारी वकील, और कम्यूनिस्ट पार्टी की उच्चतम प्रबन्ध-कारिणी समिति के हाथों में था ऐसी भारी भूलें हो सकती थीं तो मुझ जैसे छोटे छोटे ८००००० अभियुक्तों के मामलों में होने वाली भूलों का अनुमान ही नहीं किया जा सकता। गोल्ज़मान के मामले में किसी बड़ी भूल हो जाने की सम्भावना बहुत कम थी पर मुझ जैसे व्यक्तियों के मामले में तर्क और तिथियों की दृष्टि से भयंकर भूलों का हो जाना साधारण बात थी।

मुझसे होने वाली पूछ-ताछ फिर कुछ दिन के लिए रुक गई। इस बार पूछताछ का सूत्रपात जब पुनः प्रारम्भ हुआ तो पहली बार पुलिस ने मेरे ऊपर ऐसे आरोप लगाने शुरू किए जिनको अपेक्षतया ठोस कहा जा सकता है। यह क्रम इस तरह से शुरू हुआ कि एक दिन सायंकाल को मुझको बुलाया गया। तहकीकात करने वाले इन्स्पैक्टर ने बड़ी गंभीर मुद्रा में मुझको सम्बोधित करते हुए कहा कि "नागरिक वाइज़बर्ग, तुम्हारे अपराध का प्रमाण हमारे पास है; अब तक तुम निर्लज्जतापूर्ण ढंग से झूठ बोलते रहे हो। पेश्तर इसके कि मैं तुम्हारे अपराधी होने का प्रमाण पेश करूँ मैं चाहता हूँ कि तुम अब भी अपना दोष स्वीकार कर लो। बस यह आखिरी मौका है। यदि तुमने ऐसा किया तो बिल्कुल सम्भव है कि तुम क्षमादान प्राप्त कर सको।"

"किन्तु मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया है जिसको मैं पाप मानकर स्वीकार करूँ।"

"अच्छा तो तुम चाहते हो कि तुम्हारे बच निकलने के सभी मार्ग बन्द कर दिए जाएं। तुम्हारी इच्छा। रूडाल्फ़ एंडर्स नामक व्यक्ति से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ?"

"मैं उनको अच्छी तरह जानता हूँ।"

"इस क्रान्तिविरोधी व्यक्ति से तुम्हारा किस प्रकार का सम्बन्ध रहा है ?"

"मेरी राय में रूडाल्फ़ को क्रान्तिविरोधी नहीं कहा जा सकता। उसने तन मन लगाकर अपना काम किया है। वास्तव में वह अपने कर्तव्य-पालन में अपनी जान तक की बाजी लगा चुका था।"

"हाथी के दाँत खाने के और होते हैं और दिखाने के और। सत्य तो यह है कि इस देश की धातु की खानों में शत्रु की ओर से तोड़-फोड़ करने वाले एक भयंकर गुट का सरदार रूडाल्फ एंडर्स ही रहा है। जैपरोजाई के इस्पात के कारखाने में उसने एक ऐसी भयंकर दुर्घटना करा दी जिससे सरकार को बड़ी हानि हुई और बहुत से आदमियों की जानें गई और फिर वह तो अपना अपराध स्वीकार भी कर चुका है।"

"अपराध स्वीकार कर चुका है ?" मैंने बड़े आश्चर्य के साथ पूछा "ऐसा कैसे हो सकता है ? उसके अपने साथ जो दुर्घटना हुई उससे पहले जैपरोजाई में कभी कोई दुर्घटना नहीं हुई थी; अपने साथ दुर्घटना होने के दिन से वह हस्पताल में पड़ा हुआ है; इसलिये उसके अपराधी होने का प्रश्न ही नहीं उठता।"

"तुम्हारा मतलब यह है कि हस्पताल के बिस्तरे में पड़े रह कर कोई षडयन्त्र का संचालन नहीं कर सकता ?"

मुझको उसकी दन्तकथा के एक शब्द पर भी विश्वास न था, पर मैं बेबस था, चुप हो रहा। दूसरों की ओर से संरक्षण-संघर्ष करना मेरे सामर्थ्य के बाहर की बात थी। फिर खुफिया पुलिस के अधिकारियों की ईमानदारी पर स्पष्ट रूप से सन्देह प्रकट करना मेरे लिये श्रेयस्कर न था। ऐसा करने से मैं क्रान्ति का शत्रु होने का अपराधी ठहराया जा सकता था। और यह बिल्कुल संभव था कि कि एण्डर्स ने अपना "अप-राध" स्वीकार ही कर लिया हो।

पुलिस अधिकारी ने कुछ देर तक अपने काम के काग़जों को इधर उधर बदला; तब उसने गरदन ऊपर उठाई और कठोर एवं निश्चयात्मक शब्दों में कहने लगा :

"ट्राट्स्की का गुर्गा एण्डर्स इस समय नीपरोपेट्रोवस्क की जेल में बन्द है। उसने अपने सभी पापों को मान लिया है। साथ ही उसने तुम्हारे विषय में, तुम्हारी राजनीतिक गतिविधि के विषय में, और तुम्हारे तोड़ फोड़ सम्बन्धी षड़यन्त्र के विषय में बड़ा मनोरंजक रहस्योद्घाटन किया है। मैं स्वयं उससे पूछताछ करने जा रहा हूँ। अब भगवान तुम्हारा भला करे।"

"मैंने एण्डर्स से साधारण पारिभाषिक एवं यांत्रिक बातों के अति-रिक्त कभी कोई बात नहीं की। वह एक अनुभवी व्यक्ति था, और जब मैं आया था मैं निरा अनुभवशून्य व्यक्ति था। उसके परामर्श से मुझको बड़ी सहायता मिली थी। हमारे विचारविमर्श का एक मात्र विषय अपने अपने कार्य को निरन्तर सुधारते रहना ही था। यदि इसी को क्रान्ति के प्रति वैर समझा जाता है तो वास्तव में हम क्रान्तिविरोधी थे।"

"ट्राट्स्की का गुर्गा और डाकू होने पर भी तुम्हारा यह साहस कि तुम मुझसे ऐसी बातें करो। इसी के लिये तुमको तीन दिन तक दण्ड

वाली कोठरी में बंद रखा जायगा। शायद तब तुम्हारा तौर-तरीक़ा कुछ सुधर जाय।"

"मैं किसी प्रकार भी आपका अपमान नहीं करना चाहता था, श्रीमान् ! मैं तो केवल अपने मान और ख्याति की रक्षा के लिये चिंतित मात्र हूँ।"

इंस्पेक्टर शांत न हो सका; उसका रोष बढ़ता ही गया और अब वह अपशब्दों पर उतर आया। उसने मेरी माँ और दादी की स्मृति पुनः जीवित कर दी और मुझको "फ़ासीस्ट कुत्ता" तक कहा और कड़क कर बोला, "कब तक तुम हमको इस प्रकार चकमा देते रहोगे ? अब फ़ौरन ही अपने पाप को स्वीकार कर लो। किसने भरती किया था तुमको ?"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया।

"तुम समझते होगे कि तुम हमारी नकेल हो; जहाँ तुम चाहो वहीं हम तुम्हारे पीछे-पीछे चलते रहेंगे। जहाँ तक तुमको हम लाना चाहते थे, ले आये हैं। किसने भेजा था तुमको यहाँ ?"

मैं खामोश बैठा रहा जिस पर वह और भड़का और उठ खड़ा हुआ और क्रोध के मारे काँपने लगा।

"किसके मार्फ़त तुम इतना घृणित कार्य करते रहे हो ? ट्राट्स्की के गुर्गे प्लाट्सचैक ने तुमको क्या-क्या सिखा कर यहाँ भेजा था ?"

अब मैं समझा कि इनकी दृष्टि में प्लाट्सचैक भी ट्राट्स्की का ही एजेंट था, पर मैं बोला नहीं। मेरे पास कुछ कहने को था भी नहीं। कुछ देर के पश्चात् वह फिर शांत होता हुआ दिखाई दिया और कहने लगा :

"अभियुक्त वाइजबर्ग यदि तुम इसी प्रकार हमारे प्रश्नों का उत्तर देने में आनाकानी करते रहे तो तुमको मालूम होना चाहिए कि तुम सोवियट राज्य के एक और कानून भंग करने के भारी अपराधी ठहरा दिए जाओगे और उसके लिए यहाँ बड़ा कठोर दण्ड मिलता है। हमारी पूछताछ में जो लोग विघ्न डालने का यत्न करते हैं उनके इलाज के लिये हमारे पास अनेक प्रभावकारी साधन हैं।

"इन्स्पैक्टर साहब मैं आपकी पूछताछ में विघ्न डालना नहीं चाहता बल्कि मैं तो यही प्रयत्न करता रहा हूँ कि पूछताछ अबाध रूप से चलती रहे। पर आपने अब तक भी मुझसे कोई ऐसा प्रश्न नहीं किया जिसका मैं कोई निश्चित उत्तर दे सकूँ।"

अब प्रश्नोत्तर का क्रम फिर रसहीन हो चला। वह वही पुराने प्रश्न करने लगा और मैं भी वैसे ही पुराने उत्तर फिर से देने लगा। अन्त में मैं इतना थक गया कि अब बोलना कठिन था। अब उसने प्रश्नों का ताँता बन्द कर दिया और मुझको अपनी कोठरी में वापस भेज दिया। कपड़े बदल कर मैं अपनी चारपाई पर लेट गया। रात के कोई ग्यारह बजे होंगे उस समय की बात है कि वार्डर ने मेरी कोठरी की द्वार की खिड़की खोली और मेरा नाम पूछने लगा।

उसके हाथ में वही पर्चा था जो कैदियों से पूछताछ करने के समय लोगों के पास हुआ करता है। मैंने सोचा कुछ भूल हो गई है। अभी-अभी तो छः घंटे की पूछताछ के पश्चात् मैं लौट कर आया हूँ। पर वह नाम पूछता था मैंने बता दिया। इस पर उसने मुझको कपड़े पहनने का आदेश दिया और बताया कि पूछताछ अभी बाकी है।

मैंने कपड़े पहने और उसके पीछे हो लिया। अभी मेरा मस्तिष्क चक्कर सा खा रहा था। उसी स्थिति में मैं इन्स्पैक्टर के सामने जा पहुँचा। प्रश्न

हुआ कि "अब भी तुम अपना अपराध स्वीकार करना चाहते हो या नहीं या वैसे ही अपनी ज़िद पर अड़े हो ?"

मैंने उत्तर नहीं दिया।

इस पर वह मुझे "फ़ासीस्ट" और "सूअर" कहकर सम्बोधित करने लगा और गरज कर बोला "तुम कब तक यह आँख मिचौनी हमारे साथ खेलते रहोगे ?"

मैं फिर भी चुप बैठा रहा।

"अब तनिक सावधान रहना, हमारी कोठरियों में तुम देर तक अपनी शब्दहीन धृष्टता को बनाए न रह सकोगे। मैं एक बार फिर कहता हूँ कि जो कुछ बात है सच सच बतादो।"

मैं अब भी चुप था।

"एलेक्जैण्डर सेमोनोविच वाइज़बर्ग, हम अब तक तुम्हारे साथ इन्सानियत का बर्ताव करते रहे हैं। हम तुमको कोई कष्ट नहीं देना चाहते थे। लेकिन तुम यह न भूल बैठना कि दुर्दमनीय बंदियों को ठीक करने के साधन हमारे पास हैं। तुमको अदालत के हवाले कर देने के लिए हमारे पास पर्याप्त सामग्री है। प्लाट्सचैक, एंडर्स और कोमारोफ़ से तुम जो कुछ बातें करते आए हो उन सबका हमको पता है।"

"कोमारोफ़ !" मैं चौंक कर बोला "कोमारोफ़ को क्या हो गया है ? वह तो हमारी पार्टी का सेक्रेटरी था।"

"उस विषय में हम बाद में बात करेंगे। यह पर्चा तुम्हारे सामने रखा है इस पर हस्ताक्षर कर दो।"

उसमें प्लाट्सचैक के विषय में जो कुछ मुझसे पूछा था और मैंने जो कुछ बताया था उसको ऐसे ढंग से लिखा गया था कि उसके प्रत्येक

वाक्य के विषय में संदेह होता था। उसमें कोई स्पष्ट असत्य बात लिखी गई थी ऐसा नहीं था। किन्तु प्रत्येक वाक्य को ऐसे तोड़-मरोड़ दिया गया था कि समूची कहानी को पढ़ने के पश्चात् कोई भी साधारण व्यक्ति यही समझता कि वास्तव में सरकार के विरुद्ध कोई षड़यंत्र रचा गया था। वास्तव में मुझको इस विषय की छोटी-मोटी बातों की याद भी नहीं रही थी। इस विषय में मुझसे जो पूछताछ की गई थी वह उस समय की थी जब मेरे प्रति इन्सानियत के बर्ताव का दौर जारी था। बाद में सवाल करने का तरीका दिन प्रति दिन बिगड़ता गया था। अब इन्स्पैक्टर किसी के वक्तव्य को असत्य के रंग में रंगने की अपेक्षा असत्य वक्तव्यों को बलपूर्वक स्वीकार करवाने का यत्न करता था। ऐसा ही प्लाट्सचैक के साथ भी हुआ होगा। मैंने उसके बयान को पढ़ना शुरू किया। उसके कुछ वाक्य पढ़कर मैं रुक गया। मैंने कहा कि "इस स्थान पर आपको यह भी कहना चाहिए था कि मैंने प्लाट्सचैक को अपने कमरे से बाहर निकल जाने को कहा था।"

"तुम्हारी मनघड़न्त से मैं अपना कागज खराब नहीं करना चाहता।"

प्लाट्सचैक के कमरे से निकाल दिए जाने की बात मेरे पक्ष में थी और इसी लिए वह उसको अपने कागज़ में दर्ज नहीं करना चाहता था। मैंने कहा "इन्स्पैक्टर साहब, मैं आपको बडी सावधानी और स्पष्टता के साथ यह बता चुका हूँ कि किस कारण प्लाट्सचैक को मेरे कमरे से निकल जाना पड़ा था। मै चाहता हूँ कि वह कारण भी यहां लिखा जाना चाहिए।"

"तुम फासीस्ट गुण्डे हो।" वह बरस पड़ा और चिल्ला कर बोला "तुम मेरे लिए नियम निर्धारित करने वाले कौन होते हो?"

"आप अपने सवाल जिस ढंग से पूछना चाहें पूछ सकते हैं" मैंने तनिक दृढ़ता के साथ कहा। "किन्तु मैं जो कुछ उत्तर देता हूं उसको मेरी ही भाषा में लिखा जाना चाहिए।" पोलेवेडस्की कुर्सी से उछल पड़ा और उसने दौड़ कर मेरा गला पकड़ लिया। "इन्सपैक्टर साहब आपको मेरे विरुद्ध हिंसा का प्रयोग करने का कोई अधिकार नहीं है।"

"अच्छा यह बात है!" उसने बड़े व्यंग के साथ कहा।

"मैं तो तुम्हारी मांस-मज्जा एक कर देना चाहता हूँ", यह कहता हुआ वह कमरे से बाहर जाकर एक वर्दी पहने पहरेदार को बुला लाया और कहने लगा कि "यह कैदी उद्दण्ड है और इसने मेरा अपमान किया है। इस प्रकार के व्यवहार का जो परिणाम हुआ करता है वह इसको समझा दो।"

पहरेदार ने अपनी जेब से एक खरीता निकाला और उसमें से जेल के नियमों और उपनियमों को पढ़ कर सुनाने लगा, इस के पश्चात् उसने मुझको चेतावनी दी कि यदि मैंने इन्स्पैक्टर साहब का फिर अपमान किया तो मुझ को कठोर दण्ड भोगना पड़ेगा। पर यह सब कुछ होने पर भी मैंने इकबालनामे पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया। इस पर पोलेवेड्स्की तनिक झुका और जिन वाक्यों पर मुझ को आपत्ति थी उनमें थोड़ा हेर फेर करने को तैयार हो गया। किन्तु मैंने देखा किसी वाक्य विशेष ही का दोष न था वरन समस्त वक्तव्य ही ऐसा था जिसमें यदि किसी वाक्य को तोड़ मरोड़ दिया गया था तो किसी में असत्य का संमावेश कर दिया गया था और कहीं कहीं आवश्यक बातों को बिल्कुल ही गायब कर दिया गया था। इसमें संतोषजनक संशोधन किए जाने की कोई सम्भावना न थी। मैंने कहा कि "जब तक समूचा वक्तव्य सचाई के साथ फिर से न लिखा जायगा तब तक मैं उस पर हस्ताक्षर नहीं करूंगा।" इसके पश्चात् जो कोलाहल मचा उसका वर्णन करना सम्भव नहीं। अगले तीन

घन्टे तक वे दोनों मुझ पर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते रहे। तीन घन्टे के इस कठोर परिश्रम के पश्चात् भी काम बनता न देख, पोलेवेडस्की ने पूछ-ताछ स्थगित कर दी और पहरेदार को आदेश दिया कि "इस नारकीय कुत्ते को इसकी कोठरी में वापस ले जाओ। जब तक इसकी हड्डियां चकना चूर न करदी जायँगी तबतक काम नहीं बनेगा।"

, जब मैं अपनी कोठरी में वापस आया तो पूर्व में प्रभात की लालिमा छाई हुई थी। सोचता था कि अब भी सम्भवत: दो घन्टे तो सो ही सकूँगा मैं कपड़े पहने हुए ही चारपाई पर लेट गया और तुरन्त ही सो गया। लगभग एक घन्टे पश्चात वार्डर फिर मौजूद था, "पहनो कपड़े", उसने कहा, "और चलो मेरे साथ, अभी तुम्हारी पूछताछ बाकी है।"

कपड़े मैं पहने हुए ही था। लड़खड़ाता हुआ नशे जैसी हालत में मैं उसके पीछे-पीछे चल दिया। मेरे वहाँ पहुँचते ही पोलेवेड्स्की ने मुझसे कहा कि "मैंने सारे वक्तव्य को दुबारा लिख दिया है। यदि अब भी तुमने इस पर हस्ताक्षर नहीं किए तो तुमको कठोर दण्ड की कोठरी नम्बर तीन में भेज दिया जायगा। अब तुम्हारे ऊपर नष्ट करने के लिए मेरे पास समय नहीं है।"

मैं किसी तरह उस वक्तव्य को पढ़ गया। मैंने देखा एक दो स्थान पर साधारण संशोधन अवश्य कर दिए गए थे किन्तु वक्तव्य की मूल शैली और अभिप्राय: ज्यों के त्यों थे। अब संघर्ष करता रहूँ इस के लिए मेरे शरीर में सामर्थ्य नहीं रह गया था। मैंने हस्ताक्षर कर दिए।

अगले दिन मुझको कप्तान अज़ाक का बुलावा आगया।

"कब तक तुम इस तरह टालमटोल करते रहोगे एलेग्जेण्डर सेमो-नोविच? पहले तुम कहते थे कि जबतक कोई ठोस बात नहीं पूछी जायगी

तुम जवाब नहीं दोगे। अब हमने तुम्हारे सामने ठोस बात रखी तिस पर भी तुम संतुष्ट नहीं हो। हमारे दृष्टिकोण से तुम्हारी ट्राट्स्की के गुरगे प्लाट्सचेक से जो दोस्ती रही है वही काफ़ी है। अब भी अपनी ज़िद पर अड़े रहना मूर्खता है।"

"कप्तान साहब मैंने प्लाट्सचेक के विषय में सब बातें बता दी हैं। मेरा उससे जिस प्रकार का सम्बन्ध रहा है वह भी मैं बता चुका हूँ। उसके आगे तो मुझे कुछ कहना ही नहीं है।"

"जब तुम्हारी प्लाट्सचेक से बात-चीत हुई थी तो उसके तुरन्त पश्चात् ही तुमने हमको यह खबर क्यों नहीं दी कि ट्राट्स्की का एक दूत खारकोफ़ में मौजूद है ?"

"इसलिए कि प्लाट्सचेक ट्राट्स्की का दूत नहीं है। वह राजनीति समझता भी नहीं है। वह तो स्वभाव से एक निरा मसखरा ही है।"

" इस प्रकार बातें बनाने से काम नहीं चलेगा, एलेग्ज़ेण्डर सेमोनोविच। यदि प्लाट्सचैक वास्तव में इतना भोला है कि राजनीति नहीं समझता तो उसने ट्राट्स्की के दल चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय संघ, (Fourth International) की ही प्रशंसा क्यों की ? पहले या दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय संघ को क्यों नहीं सराहा ?"

"इस सवाल का जवाब मेरे पास नहीं है।"

"तुम्हारे खिलाफ़ सब से बड़ी बात यह है कि तुमने उसकी मौजूदगी की हमको सूचना नहीं दी और इस प्रकार शत्रु को निकल भागने का मौका मिल गया।"

"किन्तु मैंने कोमारोफ़ को तो उसकी सूचना दे दी थी और कोमारोफ़ उस समय हमारी पार्टी के सेक्रेटरी थे। यह कोमारोफ़ का काम था कि वह आपको खबर करता और उन्होंने खबर की भी।"

"कोमारोफ़ भी ट्राट्स्की का उतना ही बड़ा गुरगा है जितने तुम हो। अगला नम्बर उसी का है और जल्दी ही। कई बार ऐसा होता है कि हम अपने शिकार को पर फड़फड़ाने देते हैं पर अन्त में वह हमारे जाल से नहीं निकल सकता।"

मैंने यह बताना मुनासिब नहीं समझा कि ट्राट्स्की का जिसको सबसे बड़ा दूत समझा जाता था वह तो इस समय रूस से बाहर कहीं आराम से रह रहा था।

"हम शीघ्र ही गवाह तलब कर रहे हैं। वे जो कुछ बतायेंगें उससे तुमको पता लगेगा कि हमसे भेद छुपाना नामुमकिन है। अभी तक तुमको मौक़ा है चाहो तो आसानी से छुटकारा पा सकते हो। किन्तु यदि इसी प्रकार हमारे खिलाफ़ हाथ पांव पीटते रहे तो हमको कड़ी कार्यवाही करनी पड़ेगी।"

उसके इस अभिभाषण के पश्चात् मैं अभनी कोठरी में पहुँचा दिया गया।

मैंने निश्चय कर रखा था कि जबतक बस चलेगा अपने वक्तव्य के एक एक शब्द के लिए लड़ता रहूँगा। जो कुछ सोच रखा था उसका इन तहकीकात करने वालों से कोई मतलब न था। यह तो डिक्टेटरी की करामात है कि लोग स्पष्ट भाषा छोड़ कर पहेलियों की भाषा अपनाने लगतें हैं। यदि डिक्टेटर अपने देश की जनता को जिसका सत्यप्रेम किसी भी देश की जनता के सत्यप्रेम से कम नहीं झूठ बोलने और मक्कारी करने के लिए मजबूर कर सकता है तो हमको उसकी जेल में पड़े रह कर अपना सच्चा मत प्रकट करने के लिए कोई नैतिक मजबूरी नहीं दिखाई देनी चाहिये।

मैंने कोई ऐसी बात नहीं कही थी जिसके आधार पर मुझको देश-

द्रोही ठहराया जाता और मैंने कोई ऐसी बात नहीं की थी जिसके आधार पर कोई न्यायाधीश मुझको अपराधी ठहरा सकता। मेरे विरुद्ध इन लोगों ने जो आरोप लगाए थे वे सर्वथा सारहीन थे और सत्य की आँच लगते ही छिन्न-भिन्न हो जायेंगे ऐसा मैं सोचता था। मन ही मन इस प्रकार तर्क-वितर्क कर के मैं इस मत पर पहुँचा था कि कुछ भी हो मुझको संघर्ष करते ही रहना चाहिए क्योंकि मेरी राय में छुटकारा पाने का यही एक मात्र मार्ग था।

अपनी इस धारणा का सहारा लेकर मुझको बड़ी सांत्वना मिली। अगले कुछ दिन तक मुझसे किसी ने कुछ नहीं पूछा। मैं अपनी किताब पढ़ता रहा और दीवार पर गणित का अभ्यास करता रहा। कभी कभी ऐसा लगता था जैसे कि मुझको अपने आप से पूर्ण सन्तोष प्राप्त हो गया है।

तब एक दिन मुझको पूछताछ का फिर बुलावा आ गया। इस बार पोलेवेड्स्की उस झगड़े के विषय में जानकारी चाहता था जो किसी समय हमारी संस्था में हो गया था। उसके प्रश्नों से मुझे मालूम हुआ कि वह यह साबित करना चाहता है कि मैंने अपनी उस संस्था में विज्ञान सम्बन्धी काम करने वालों का एक क्रान्तिविरोधी गुट तैयार कर रखा था और यह गुट रूस की वैज्ञानिक प्रगति में विघ्न डालने पर तुला हुआ था और इस प्रकार मैं देशद्रोह का अपराधी था। यह वास्तव में बड़ा भयंकर आरोप था। पोलेवेड्स्की चाहता था कि मैं उसके इस आरोप को सत्य मान कर नतमस्तक हो जाऊँ। साधारणतः बातचीत के समय पोलेवेड्स्की शिष्टता और नियम को भंग नहीं करता था परन्तु अब वह इतने रोष में था कि भेड़िये की तरह चीख रहा था और मेरे प्रति ऐसे शब्दों और वाक्यों का प्रयोग कर रहा था जो उल्लेखनीय अथवा प्रकाशनीय नहीं हैं। यह देखकर मुझको बड़ा

दु:ख हुआ। किन्तु मैं सहमा नहीं। मैंने उसकी हर एक बात से इन्कार कर दिया।

अब उसने एक नई चाल चली। अब वह प्रत्येक रात को मुझे एक घंटे के लिए बुला लेता और नाना प्रकार के सवाल करने के पश्चात् मुझको मेरी कोठरी में वापस भेज देता। मैं जब कोठरी में पहुँच जाता और कपड़े उतार कर चारपाई पर लेटने का यत्न करता त्यों ही वह मुझको फिर वापिस बुला लेता। एक ही रात में छ: छ: बार यह घटना होती। तिस पर भी क्योंकि उसकी सहायता करने के लिए उसको कोई सहायक नहीं मिला हुआ था वह स्वयं भी इस कार्यवाही से ऊब गया। अन्त में उसने मेरे लिए एक ऐसा वक्तव्य तैयार किया जिसमें झूठ और वाक्यों और घटनाओं के तोड़-मरोड़ की भरमार थी। मैंने उसे पढ़ना शुरू किया। यह वक्तव्य रूसी भाषा में था और हाथ से लिखा हुआ था। अब मेरी कठिनाई यह थी कि यद्यपि मैं रूसी भाषा अच्छी तरह बोल और समझ सकता था फिर भी वह मेरी मातृभाषा न थी। फिर पढ़ने में कुछ समय भी लगता था, विशेषत: इस कारण कि वह मुझको बीच बीच में रोक कर हस्ताक्षर करने का आदेश करता रहता था। उसका प्रयत्न सम्भवत: यह था कि मुझको सोचने का समय न मिले ताकि मैं उसके झूठ-सच के समिश्रण को समझ न सकूँ। उसके बार बार रोकने पर एकबार मैं झल्ला उठा और मैंने कहा कि बिना सोचे समझे मैं इस काग़ज पर हस्ताक्षर कर दूंगा ऐसा समझने का आपको कोई अधिकार नहीं है। अब क्या था वह बिगड़ गया। कभी उसने मुझको फ़ासीस्ट कुत्ता कहा और कभी कुत्ते की औलाद और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगा कि "क्या मैं तुमसे सीखूँगा कि मेरे अधिकार क्या हैं और क्या नहीं?"

इस प्रकार की विभीषिका की यह तीसरी रात थी। वह इस बात

पर तुला हुआ था कि मुझसे अपने तैयार किए हुए वक्तव्य पर हस्ताक्षर कराले। दो रात बीत चुकी थी और मैं एक क्षण के लिए भी नहीं सो सका था। सारा शरीर टूट सा रहा था। सम्भवतः वह स्वयं दिन में सो लिया करता था। क्योंकि रात्रि के समय जब मैं उससे भेंट करता था तो वह तनिक भी थका हुआ नहीं दिखाई देता था। मेरे वार्डर को सम्भवतः हिदायत कर दी गई थी कि दिन में सोना तो क्या मैं चारपाई पर लेट भी न सकूं। हर पाँच मिनट के बाद वह दरवाज़े के झरोखे में से झाँक कर देख लेता था और यदि वह समझता कि मैं ऊंघने लगा हूँ तो वह मुझको खड़ा कर दिया करता था। रात को प्रत्येक दो घंटे की पूछताछ के पश्चात् दस मिनट के लिए कार्यवाही बन्द कर दी जाया करती। तीन दिन की इस कठोर अग्निपरीक्षा के पश्चात् मैं पूरी तरह थक चुका था और विरोध करते रहने की शक्ति मुझमें नहीं रह गई थी। मैं अब खड़ा न रह सका और सोचने लगा कि यदि वक्तव्य पर मैंने हस्ताक्षर कर ही दिए तो क्या बिगड़ जायगा। छोटी-छोटी बातें ही तो थीं जिनको तोड़ा मरोड़ा गया था। इसस ज्यादा से ज्यादा यही होगा कि मेरे प्रति संदेह उत्पन्न हो जायगा। पर इसके आधार पर कोई मुझको अपराधी तो नहीं ठहरा सकता। यही सोच कर मैंने हस्ताक्षर कर दिए।

अप्रैल के अन्तिम सप्ताह तक पूछताछ फिर बंद रही।

जब पूछताछ का क्रम पुनः जारी हुआ तो पोलेवेडस्की पुनः सुधरा हुआ दिखाई दिया। अब उसके पुराने घमंड और अतिक्रमण प्रायः विलीन हो चुके थे। उसने मुझसे बहुत से व्यक्तियों और घटनाओं के विषय में प्रश्न किये और जो कुछ मैंने बताया उसको बिना किसी अतिरंजन और लपेट के उसने दर्ज कर लिया। कम से कम यह तो स्पष्ट ही था कि अब हमारे पारस्परिक सम्बन्ध बहुत कुछ सुधर गये थे। एक

दिन उसने मुझको सूचना दी कि अब शीघ्र ही मेरी परीक्षा समाप्त होने वाली है।

"नागरिक पोलेवेड्स्की बताइये तो सही मेरा क्या होने वाला है ?"

"इसका दारोमदार सरकारी वकील पर है। शायद तुमको इस देश से निकाल दिया जाय।"

"इसका तो मतलब यह हुआ कि मेरा जीवन समाप्त हो गया।"

"वह कैसे ? तुम तो पेशे से इंजीनियर हो। तुमको कहीं भी काम मिल सकता है।"

"नागरिक पोलेवेड्स्की, आप यह क्यों भूल जाते हैं कि मैं पार्टी का सदस्य भी तो हूँ। अब जब मैं घर पहुँचूंगा तो पार्टी और सोवियट रूस से निकाल दिए जाने का कलंक मेरे माथे पर लगा होगा। मेरे पुराने मित्र और सहयोगी सभी मेरे प्रति उदासीन रहने लगेंगे। मेरा समस्त जीवन क्रान्तिकारी आँदोलन के साथ आबद्ध रहा है। उससे बाहर पड़कर मैं क्या कर सकूंगा ! एक बार सोवियट विरोधी व्यक्ति उद्घोषित हो चुकने के बाद मेरे देश की पार्टी भी मेरे लिए द्वार बंद कर देगी। जब मैं यह कहता हूँ कि मेरा जीवन समाप्त हो गया तो उससे मेरा अभिप्राय यही है।"

"एलेग्ज़ैण्डर सेमोनोविच तुम व्यर्थ ही निराश हो रहे हो। स्थिति इतनी खराब नहीं है जितनी दिखाई देती है। क्रान्ति कोई रातों-रात तो सफल होने से रही; अभी तो बहुत से युद्ध करने हैं। तुम उनमें सम्मिलित होकर अपनी क्रान्तिकारी लग्न को सिद्ध कर देना।"

पीछे की उन सब घटनाओं को जब याद करता हूँ तो ऐसा लगता

है कि पोलेवेड्स्की कम से कम उस दिन तो अवश्य ही मेरी पूछताछ को समाप्त करके मेरी रिहाई की सिफ़ारिश कर देना चाहता था किन्तु बाद में ऐसी परिस्थिति उत्पन्न गई जो उसकी और मेरी दोनों की शक्ति के बाहर थी। परिणाम इसका यह हुआ कि आगे चल कर मुझको तीन साल और कारावास में काटने पड़े।

अप्रैल के अन्त होने पर पूछताछ बिल्कुल बन्द हो गई। मेरी कोठरी का अनुशासन भी कम कठोर हो गया। अब मैं दिन में भी चारपाई पर लेट सकता था। मेरे मस्तिष्क में बाहरी दुनिया के विषय ही में विचार चक्कर काटते रहते थे। कभी मैं सोचता था कि यदि वास्तव में ये लोग मुझको रूस से निकाल देना चाहते हैं तो कहीं ऐसा तो नहीं है कि मुझे जेल से निकाल कर सीधे सीमा पर ले जाकर छोड़ दें; तो कभी सोचता था कि यदि कुछ दिन की मोहलत मिल जाय तो मैं अपने घर-बार को समेट लूं और मित्रों और सहयोगियों से विदा ले लूं; और यहाँ से जाना ही पड़ा तो मैं आस्ट्रिया ही क्यों जाऊँ, फिनलैंड या स्वीडन ही क्यों न चला जाऊँ या अपने अंग्रेज़ मित्रों ही से क्यों न जा मिलूं? अब पार्टी के प्रति मेरा क्या व्यवहार रहेगा?

दिन के अधिकाँश भाग को मैं चारपाई पर लेटा हुआ ही बिता देता था। खाने और व्यायाम को छोड़ कर और शायद ही किसी बात के लिए उठता हूँ। वार्डरों का हस्तक्षेप भी समाप्त हो गया था शायद इसलिए कि वे भी अब सोचने लगे थे कि मैं अब जेल में दो चार दिन से ज्यादा न रहूँगा।

३० अप्रैल को मेरी कोठरी का द्वार खुला और खुफिया पुलिस के दो सशस्त्र और वर्दी पहने व्यक्ति आ धमके। मुझको बिना कपड़े पहने ही एक कोने में खड़ा हो जाना पड़ा। उन्होंने बड़ी मुस्तैदी के साथ मेरी

कोठरी की तलाशी ली और मेरे कपड़ों को खोला हिलाया और मेरे पास जो किताब कागज और समाचारपत्र थे उनको उठा ले गए।

(४)

मई दिवस आया तो मैंने अपने आपको बड़ा बेचैन और चिन्तित पाया। उस तलाशी और पुस्तकापहरण से मेरा दिल दहलने लगा था। उधर वार्डरों ने मेरा दिन में सोना भी बन्द कर दिया था। अब मेरा मन और मस्तिष्क फिर सूना था। न पास में कोई चीज़ पढ़ने को थी और न लिखने को। दीवार पर गणित का अभ्यास करते रहने का साधन भी मुझसे छिन गया था। अब फिर दिन अनन्त काल का रूप धारण करने लगा। अपने जीवन के ऊपर आच्छादित इस नए रहस्य को जितना ही मैं भेदने का यत्न करता उतना ही उसको अभेद्य हुआ पाता। अचानक मेरे ऊपर जो यह प्रहार हुआ था उसका कोई कारण मेरी समझ में न आया।

तब एक दिन फिर अचानक पूछताछ का बुलावा आ गया। इस बार पोलेवेड्स्की के साथ एक आदमी और था जो ऐसी खाकी वर्दी पहने हुए था जिसको मैंने पहले कभी नहीं देखा था। इस व्यक्ति का सम्बन्ध खुफिया पुलिस से था अथवा सेना से यह मैं न तय कर पाया। पहले तो मैंने सोचा शायद यही सरकारी वकील है। वह छोटे भारी शरीर और लम्बे चौड़े कन्धों वाला मध्यम ऊँचाई का व्यक्ति था; उसकी खोपड़ी का आकार प्रकार मंगोल जाति की खोपड़ी के आकार प्रकार का था। सिर पर रगड़ कर उस्तरा फिरा हुआ था। कई बार ऐसा लगता था मानो उसके गर्दन ही नहीं है। किन्तु उसकी आकृति ताज़ी और स्वस्थ दिखाई देती थी; शरीर और मस्तिष्क की दृष्टि से वह पूर्णतया स्वस्थ

दिखाई देता था और कभी-कभी उसकी बातचीत में थोड़े हासप्रेम की झलक भी मिल जाती थी।

"एलेग्ज़ैण्डर सेमोनोविच बैठ जाओ;" पोलेवेड्स्की ने कहा। "यह कामरेड रायज़निकोफ़ हैं। आज से तुम्हारी देख रेख इन्हीं के जिम्मे है।" मुझको तो तुमने प्राय: समाप्त ही कर दिया है।

"किन्तु मैं तो समझा था कि आप कह रहे थे कि मेरी परीक्षा समाप्त हो गई;" मैंने तनिक विस्मय और चिंता के साथ कहा।

यह सुनकर उसका साथी बोल उठा "ऐसी बात नहीं है, एलेग्जैण्डर सेमोनोविच। वास्तव में परीक्षा का तो अब श्रीगणेश होगा। तुम्हारा मामला अब मेरे हाथ में है और एक बात मैं अभी से बताए देता हूँ कि जिस बात को मैं अन्त तक नहीं पहुँचा सकता उसको मैं हाथ में लेता ही नहीं—फिर अन्त कितना ही दुखद और कड़वा क्यों न हो। अब एलेग्ज़ैण्डर सेमोनोविच, तुमको बोलना ही पड़ेगा। चाहो तो तुम इस पर अपने जीवन की बाज़ी लगा सकते हो। मैं कठोर हृदय का व्यक्ति हूँ। चाहे मुझको तुम्हारे जीवन का अन्त ही क्यों न करना पड़े मैं निश्चय ही तुम्हारी ज़बान खोलवा कर छोड़ूंगा।"

"किन्तु इन्स्पैक्टर साहब", मैंने पोलेवेड्स्की को सम्बोधित करते हुए कहना शुरू किया, "मैंने सुन रखा था कि रूसी कानून के अनुसार प्रत्येक बंदी की परीक्षा दो मास के भीतर समाप्त हो जानी चाहिये। हाँ, सरकारी वकील इस अवधि को बढ़ा दे तो बात दूसरी है। किन्तु मेरे मामले में…"

मैं अपना वाक्य पूरा भी न कर पाया था कि मुझको जवाब मिला कि "एलेग्ज़ैण्डर सेमोनोविच, तुम्हारे मामले में अवधि बढ़ाने की आज्ञा मिल चुकी है।"

"क्या मैं उस लिखित आज्ञा को देख सकता हूँ ?"

पोलेवेड्स्की मेरे इस प्रश्न का उत्तर देना ही चाहता था कि उस दूसरे व्यक्ति ने इतने जोर से मेज़ पर घूँसा मारा कि उस पर रखी चीज़ें इधर उधर उछल पड़ीं।

"नहीं, बिल्कुल नहीं" उसने बड़े अधिकारपूर्ण ढंग से कहा। "तुम क्या यह समझते हो कि तुम किसी स्वास्थ्य शिविर में हो। जो मैं चाहूँगा वही तुम देख सकोगे। उसके अतिरिक्त और कोई चीज़ नहीं।"

"अभियुक्त होने की हैसियत से मैं यह माँग करने का अधिकार रखता हूँ कि मेरे विरुद्ध कोई स्वेच्छाचारिता न बर्ती जाय।"

अब पोलेवेड्स्की ने उत्तर दिया, "जब परीक्षा पूर्णतः समाप्त हो जायगी तो तुमको अपने मामले की फाइल में प्रत्येक चीज़ देखने का अवसर मिलेगा।"

जब पोलेवेड्स्की मुझको तनिक शिष्टतापूर्ण शब्दों में सलाह दे रहा था तो रायज़निकोफ़ का चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था। उससे रहा न गया। वह खड़ा हो गया और मेरी ओर घूरते हुए कहने लगा कि "तुम कुत्ते और वेश्या की औलाद हमको कानून सिखाने चले हो। तुम्हारी एक-एक हड्डी चकनाचूर करदी जायगी। अभी तक मालूम होता है तुमको काफी तजुर्बा नहीं हुआ है। कोई बात नहीं, अब हो जायगा। हां यदि अब भी तुम इकबाल कर लो और अपने गुट के विषय में सब बातें बता दो तो अब भी तुम्हारी भलाई हो सकती है। मैं यह प्रबंध कर सकता हूँ, कि तुम जो कुछ पढ़ने को मांगो वह तुमको मिल जाय तथा दूसरी समस्त कानूनी सुविधाएं प्राप्त हो जायँ। किन्तु जो व्यक्ति इस देश की पीठ में छुरा भोंकना चाहता हो और अपनी जद्दोजहद जारी रखना चाहता हो उसके लिए हमारे पास शक्ति के अतिरिक्त कोई उत्तर नहीं है। मेरा

मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही उसने दो सैन्डविच एक प्लेट में रख दीं और प्लेट मेरे सामने कर दी। घंटी बजी और चाय आगई। मेरा रोष भी कुछ शान्त हो चुका था सैन्डबिच और चाय अच्छी लगी। देर तक गरम रंगीन जल पीते-पीते चाय का स्वाद भी मैं भूल गया था।

भोजन समाप्त होने के पश्चात् रायजनिकोफ़ ने अपना सिगार जलाया और अपनी कुर्सी की पीठ से कमर लगा कर बैठ गया और कहने लगा "आज मैं तुमसे बात-चीत करके तुम्हारी वास्तविक स्थिति का कुछ अनुमान करना चाहता हूँ। अन्त में शक्ति ही निर्णयात्मक सिद्ध होती है। यदि तुम स्वेच्छा से वह काम नहीं करोगे जो हम कराना चाहते है तो तुम को विवश हो कर वैसा करना पड़ेगा। जिस संघर्ष में सफलता की कोई आशा न हो उसको चलाते रहने में कोई लाभ है क्या? बुद्धिमानी इसी में है कि जो हम कहते हैं वह करदो और अरुचिकर अनुभव से बच जाओ। अपने अपराध को स्वीकार कर लो तो तुम्हारे सामने एक नए जीवन के द्वार खुल जायंगे। कुछ थोड़े समय तक तुमको कारावास में रहना पड़ेगा उसके पश्चात् एक सम्मानित नागरिक की हैसियत से तुमको फिर सरकार की सेवा करने का अवसर मिलेगा।"

"नागरिक रायजनिकोफ़, आप भी मुझको कोई नई बात नहीं बता रहे हैं। ये सब बातें मैं पहले ही सुन चुका हूँ। यदि वास्तव में मैंने कोई सरकार विरोधी कार्य किया होता तो मैं अवश्य ही उसको स्वीकार कर लेता। अब यदि मैं किसी अपराध को स्वीकार करने का बहाना भी करूँ तो वह नितांत असत्य कपोलकल्पना ही होगी। एक वफ़ादार सोवियट नागरिक होने के नाते मेरा यह कर्तव्य है कि मैं सत्य को न छोड़ूं चाहे उस मार्ग में कितनी ही कठिनाइयाँ क्यों न हों। मैं नहीं समझ पाता कि मेरे झूठ बोलने से सोवियट सरकार का क्या लाभ हो जायगा।"

"हम यह नहीं चाहते कि तुम झूठ बोलो। हम तो सच ही की तलाश में हैं। हम तुमसे यह स्वीकार करवाना चाहते हैं कि तुम वास्तव में बुखारिन के अनुयायियों में से हो।"

"बुखारिन के अनुयायियों में से ?" मैंने आश्चर्य के साथ पूछा। "यह पहला अवसर है कि मैं इस सिलसिले में बुखारिन का नाम सुन रहा हूँ। अबतक तो आप लोग मुझको ट्राट्स्की का एजेंट बनाते आए थे।"

"अब तुम्हारे विषय में हमको अधिक पक्की जानकारी हो गई है। सारे कागज़ात मेरे पास हैं और प्रमुख गवाहों से मैं स्वयं बात कर चुका हूँ। अब हमको यह पक्का यकीन हो गया है कि तुम यूक्रेन में बुखारिन की ही ओर से षड़यंत्र रचे हुए थे।"

"मेरे विषय में किस तरह आपको यह आशंका हो गई इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता।"

"हमको आशंका नहीं है बल्कि निश्चय है। तुम्हारे संगठन की एक एक कड़ी का हमको पता है। तुम्हारे जितने साथी थे वे सभी गिरफ़्तार हो चुके हैं।"

बात उलझती जा रही थी। जो कुछ अब तक कहा जा रहा था उनमें भी पहले की तरह लेशमात्र सत्य न था।

रायज़निकोफ़ ने फिर कहना शुरू किया :

"तुमने और तुम्हारे मित्रों ने तो इस देश के लिए ऐसा भयंकर जाल फैलाया था कि इस देश का भविष्य ही खतरे में पड़ सकता था किन्तु अब तुम सब हमारी मुट्ठी में आगए हो।"

"जो बात दर्जनों बार मैं पहले कह चुका हूँ वही बात मैं फिर दोहराता हूँ कि मेरा ऐसी किसी बात से सम्बन्ध नहीं रहा।"

वह अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और एक फाइल उठा लाया और बोला कि "जब मैं इसमें रखे सब प्रमाणों पर दृष्टि डालता हूँ तो तुम्हारे निर्दोष होने के बहाना करने पर मुझे क्रोध आने लगता है। एलेग्जैण्डर सेमोनोविच, क्या अब भी तुम नहीं समझे कि यह ढोंग देर तक नहीं चलता रह सकता ?"

"मैं कोई ढोंग नहीं कर रहा हूँ, जनाब। जब मैं गिरफ़्तार किया गया था तो मुझसे कहा गया था कि मेरे विरुद्ध जितने प्रमाण हैं उनको मेरी गिरफ्तारी के पश्चात् मुझको दिखाया जायगा। अब दो महीने से मैं कैद में पड़ा हूँ किन्तु प्रमाण नाम की कोई भी चीज़ मुझको देखने को नहीं मिली। अब आप ही आखिर बता दीजिये कि वह कौनसा अपराध है जिसका मैं दोषी ठहराया जा रहा हूँ।"

"अच्छा अभियुक्त यही सही। मैं दिखलाऊँगा तुमको प्रमाण। किन्तु उससे पहले मैं तुमको एक अवसर और देना चाहता हूँ। प्रमाण और गवाहों का सामना करने के पहले अपना अपराध स्वीकार कर लो तो तुम्हारे लिए कहीं अधिक अच्छा होगा क्योंकि अब तुम्हारे साथ नरमी का बर्ताव हो सकता है। यह पेन्सिल कागज है। अपनी कोठरी वापस चले जाओ और खारकोफ़ की खुफिया पुलिस के अध्यक्ष के सामने अपने अपराध को साफ मन से स्वीकार कर लो। यदि तुमने ऐसा किया तो न केवल तुम्हारी रिहाई हो जायगी बल्कि तुमको एक ऐसा पद भी मिल जायगा जिसकी साधारणतः तुमको अपने जीवन में कभी आशा तक भी नहीं हो सकती थी। आखिर तुम्हारी योग्यता और प्रतिभा से तो कोई इनकार नहीं करता। तुम सोवियट राज्य में बड़े आदमी बन सकते हो। हमारी शर्त यही है कि तुम हमारे साथ पूरा पूरा सहयोग करो।"

मैं जवाब देने को ही था कि मेरे पास लिखने को कुछ नहीं है कि

पहरेदार कमरे में आ गया और मुझको अपने साथ उठा ले गया। काग़ज़ और पेन्सिल रायज़निकोफ़ ने उसी को दे दी और मैं अपनी कोठरी की ओर चल दिया। शाम को मुझको फिर रायज़निकोफ़ के यहां जाना पड़ा।

"तुमने अपना इकवालनामा लिख दिया ?" मेरे वहाँ पहुँचते ही रायज़निकोफ़ ने मुझसे पूछा।

"नहीं क्योंकि मैंने इकबाल करने के लिए कुछ नहीं किया है।"

"ऐसा मालूम होता है कि तुम हमारी उन कोठरियों में नहीं रहे जहाँ दण्ड दिया जाता है। कहीं तुमको यह ख्याल तो नहीं हो गया है कि चूंकि तुम एक विदेशी हो तो हमको तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव करना ही होगा। अगर तुम यह समझते हो तो यह तुम्हारी भूल है। विदेशी जासूसों से हमको कोई मोहब्बत नहीं। हमारे देश में हमारे ही कानून चलते हैं।"

यह कहते हुए रायज़निकोफ़ अपनी कुर्सी से उठा और झपट कर उसने अपनी मेज से अपना रिवाल्वर निकाला और मेरे ऊपर झपट पड़ा। वह रिवाल्वर हिलाता जा रहा था और मुझको गालियां देता जा रहा था। मैंने सोचा कि यह अवश्य रिवाल्वर का दस्ता मेरी खोपड़ी में मार देगा। पर शीघ्र ही वह थोड़ा शान्त दिखाई देने लगा।

"अभियुक्त क्या अब भी तुम यह समझते हो कि तुम निर्दोष हो ?"

"निस्संदेह"।

"अच्छा तब कान खोलकर सुन लो"।

उसने अपनी फाइल से एक काग़ज निकाला और पढ़ना शुरू किया। रूडाल्फ एंडर्स का वक्तव्य था वह। वह पढ़ने लगा :

"मैं एलेग्ज़ैण्डर वाइज़बर्ग से पहली वार बर्लिन में मिला था। जर्मनी की कम्यूनिस्ट पार्टी के दक्षिण पक्षी विरोधी दल के एक सदस्य कार्ल फ्रैंक

ने उससे मेरी भेंट कराई थी। हम बहुधा सोवियट रूस के बारे में बातें किया करते थे। वाइज़बर्ग किसानों द्वारा सम्मलित खेती कराये जाने और नित्यप्रति के जीवन में काम आने वाली मोटी मोटी वस्तुओं का राशनिंग प्रारंभ करने की सोवियट नीति का आलोचक था। वह सन् १९३२ ई० में भी राशनिंग हटाए जाने और वस्तुओं की कीमतों के नियंत्रण हटाए जाने के पक्ष में था। उसकी बात सुनकर मैंने यह अनुभव किया कि वह भी बुखारिन की भांति पार्टी-विरोधी और सोवियट-विरोधी विचार रखता है और मुझको भी अपने ही मत का बना लेना चाहता है। वह पार्टी और सोवियट सरकार की नीति के विरुद्ध प्रचार करता रहा है। मुझको यह विश्वास हो गया था कि वह पार्टी विरोधी बुखारिनवादी गुट का नेता है और यूक्रेन के फिज़िक्स इंस्टीट्यूट (Physics Institute) में अपना अड्डा बनाए हुए है...।"

"अब तो तुमको संतोष हो गया अभियुक्त या अभी मुझको और आगे भी पढ़ना पड़ेगा ?"

मैंने कहा, "इस काग़ज़ को मैं स्वयं ही पढ़ना चाहूँगा। मुझको यह विश्वास ही नहीं होता कि एंडर्स ऐसी बात लिख सकता है।" उसने कागज़ मेरे हाथ में दे दिया। हस्ताक्षर निस्संदेह रूडाल्फ एण्डर्स के थे।

"एलेक्ज़ैण्डर सेमोनोविच" अब रायज़ानिकोफ़ ने कहना शुरू किया, "अभी तो हमने तुमको एक नमूना भर दिखाया है। मैं अब भी कहता हूँ कि तुम अपनी कोठरी में वापस चले जाओ और अपना इक़बाल लिख डालो।"

अपने मित्र एण्डर्स का यह वक्तव्य देख कर मेरा दिल बैठने लगा और मैं खामोश ही बैठा रह गया। यंत्रवत मैंने पैन्सिलें और काग़ज़ उठाया और पहरेदार के पीछे पीछे अपनी कोठरी की ओर चल दिया।

अपनी कोठरी में पहुँच कर मैं चारपाई की पट्टी पर बैठ गया और विचार करने लगा। पर मैंने अपने आप को इतना घबड़ाया हुआ और उतावला पाया कि किसी भी बात पर दिमाग नहीं जमता था। मैं उसी प्रकार किंकर्तव्यविमूढ़ सा बैठा रहा। लगभग एका घन्टा इसी प्रकार बीत गया। तब वार्डर ने दरवाजे की खिड़की खोली और संकेत से मुझको अपनी ओर बुलाया। आज पहली बार उसने आवश्यकता से अधिक एक दो वाक्य बोले:

"क्या आप की तबीयत ठीक नहीं है ? पिछले एक घन्टे से मैं कई बार आप को देख चुका हूं किन्तु आप अपनी जगह से हिले तक नही। यदि आवश्यकता समझें तो आपकी तबीयत सुधारने के लिए कुछ ब्रोमाइड लादूं ?"

उसके मित्रतापूर्ण व्यवहार से मैं गद्‌गद् हो गया था और मैंने ब्रोमाइड के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। यह मुझको बाद में पता लगा कि यह सब कुछ रायजनिकोफ़ की ही कृपा थी।

लगभग एक घन्टा पश्चात् सूप आगया। मैंने सूप एक तरफ़ रख दिया। मेरी चिन्ताओं का कहीं ओरछोर नहीं दिखाई देता था। आखिर ये लोग क्या चाहते हैं मुझ से और इन सब का क्या परिणाम होगा ? यह एक प्रश्न था जो मैं बार बार अपने आप से पूछता था और उसका उत्तर पाने के यत्न में खोजाता था।

अगले दिन ठीक आधी रात मुझको फिर रायजनिकोफ़ के पास ले जाया गया। वह अपनी मेज पर अपने सामने एक कागज रखे हुए बैठा था।

"आज हम कुछ ठोस बातों का पता लगाना चाहते हैं। सबसे पहले हम यह जानना चाहते हैं कि तुम इस गुट में कब शामिल हुए ?"

मैं इसका मतलब बिल्कुल समझ गया था लेकिन जानबूझ कर मैंने ऐसा दिखाया मानो कि मैं उसका मतलब समझ ही नही पाया हूँ और मैं कहने लगा कि "मैं पहलीं मई सन १९२७ ई० को कम्यूनिस्ट पार्टी में भर्ती हुआ था। उससे पहले भी दो साल तक मैं पार्टी की ओर से आस्ट्रिया की समाजवादी पार्टी में काम करता रहा था।"

उसने क्षण भर के लिए मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे कि मैं उससे कोई मजाक कर रहा हूँ और तब बिगड़ कर बोला :

"जहन्नुम में जाय तुम्हारा आस्ट्रियन पार्टी में किया गया काम। मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं कि तुम कब किस भेष में क्या काम करते रहे हो। मैं तो केवल यही जानना चाहता हूँ कि तुम क्रान्तिविरोधी तथा गैर कानूनी गुट में कब शामिल हुए और किसने तुमको भर्ती किया।"

मैं चुप रहा

"तो अब भी तुम नही बोलोगे ?" यह सवाल करने के पश्चात् वह भयंकर भाषा का प्रयोग करने लगा और मैं ऐसे बैठा रहा जैसे कि उसकी बात सुन ही नहीं रहा हूँ। आखिर उस के अपशब्दों का ताँता टूटा और उसने बड़े गंभीर स्वर में मुझ से पूछा :

"अभियुक्त वाइजबर्ग, क्या तुम यह समझते हो कि तुम इस प्रकार अपनी इस परीक्षा को विफल कर दोगे ? क्या तुम कोई भी वक्तव्य नहीं देना चाहते ?"

"नहीं, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है और न ही मैं वक्तव्य देने से इनकार करता हूँ। किन्तु बिल्कुल यही प्रश्न कम से कम एक दर्जन बार मुझ से पहले भी पूछा जा चुका है और मेरा उत्तर आपके पास है। मैं अपने जीवन में कभी किसी गैरकानूनी अथवा क्रान्तिविरोधी संस्था का सदस्य नहीं रहा।"

"सुनलो वाट्ज़वर्ग मेरे पास अब इतनी सामग्री है कि मुझको अब तुम से अधिक पूछने की आवश्यकता नहीं। मैं इस सारी सामग्री को फौजी अदालत के सुपुर्द कर सकता हूं। पर यदि ऐसा मैंने किया तो एक मास से भी कम ही दिनों में तुम्हारा शव देखने को मिलेगा।"

"कुछ भी हो यह मेरे बस की बात तो है नहीं। आपको ऐसा करन से रोकता ही कौन है ?

"हम तुम्हारे बारे में बहुत कुछ जान चुके हैं। पर अब भी बहुत कुछ जानना बाकी है। हमको सम्भवत: तुम्हारे सौ कुकर्मों में से नव्वे का पता है पर पूरे सौ का तो तुमको ही पता है। अब हमको शेष दस की तलाश है।"

"तो आप अन्तिम रूप से मुझको यह बता क्यों नहीं देते कि अमुक अपराध है जो मैंने किया है ? यदि आप ऐसा करें तो मैं आपके भ्रम निवारण का प्रयत्न करूँगा।"

"परीक्षा तुम्हारी हो रही है इसलिए तुमको ही बताना पड़ेगा। इस देश में पूंजीवादी देशों की पद्धति नहीं चलती। जब तक हम प्रत्येक बात जान नहीं लेंगे तब तक हम तुमको कुछ नहीं बतायेंगे। यदि तुम अपना अपराध स्वीकार करो और तुमने जो सरकार विरोधी कार्यवाही की है उनमें से नव्वे प्रतिशत हमको बतादो तो हम समझेंगे कि तुम वास्तव में हमारे साथ हो गए हो।"

"यदि यही बात है तो मेरी परीक्षा का कभी अन्त ही नहीं होगा क्योंकि मेरे पास बताने को कुछ है नहीं और आप पूछना बंद नहीं करेंगे।"

"तो क्या तुम इस बात से इनकार करते हो कि एण्डर्स से तुम्हारी बातचीत हुई ?"

"नहीं, लेकिन उसके वक्तव्य में कोई ऐसी बात नहीं है जिससे मुझको क्रान्तिविरोधी समझा जाय। यह सत्य है कि मैंने जनता के रोजमर्रा के काम में आने वाली मोटी-मोटी चीज़ों का राशन किए जाने की आलोचना की थी पर मेरी उस आलोचना के पश्चात् तो स्वयं सोवियट सरकार ने राशनिंग की व्यवस्था तोड़ दी थी। इसलिए यह मैं नहीं समझ सकता कि मेरी आलोचना क्रान्तिविरोधी कैसे थी।"

"जिन विचारों से अभिप्रेरित होकर तुमने आलोचना की थी वे क्रान्ति विरोधी थें और बुखारिन का समर्थन करते थे। वे विचार तुमने स्वयं घड़ लिए ऐसी बात न थी। ये तुमको क्रान्तिविरोधी गुट के सदस्यों से ही प्राप्त हुए होंगे। हम विचारों को वास्तविकता को वैसाही प्रमाण मानते है जैसा जंगल में भटकने वाला यात्री क्षितिज पर छाए हुए धुंये को। धुंआ इन्सानी बस्ती का प्रतीक होता है उसी प्रकार जब कोई व्यक्ति क्रान्तिविरोधी विचार व्यक्त करता है तो उसके पीछे अवश्य ही कोई क्रान्तिविरोधी गुट भी होना चाहिए। विचारों का महत्व हमारे लिए निरा संयोगात्मक नहीं है।"

"पहले आप लोगों ने कहा कि मैं किसी विदेशी सरकार का जासूस हूँ। अब आप कहते हैं कि मैं कम्यूनिस्ट तो हूँ किन्तु पार्टी में जिन लोगों के हाथ में संचालनसूत्र है उनके विरोधियों में से हूँ।

"केवल कोई ढोंगी या मूर्ख ही इन दोनों बातों के पारस्परिक सम्बंध को समझने में असमर्थ रह सकता है। सवाल स्पष्ट है कि तुम हमको अपने गुट का पता बताओगे या नहीं ?"

"मेरा किसी गुट से परिचय नहीं है।"

"एलेग्जैण्डर सेमोनोविच, शायद तुम अब तक यह नहीं समझे कि रूस में गैर कानूनी संस्था की परिभाषा क्या है ?...."

जब वह इस प्रकार बोलता जा रहा था तो मुझको इसी बात पर आश्चर्य हो रहा था कि वह अपनी ही बातों को इतने भद्दे ढंग से क्यों काटता जारहा है। एक ओर वह मुझ से यह आग्रह करता था कि मैं उसकी अपने गुट का पता बता दूं तो दूसरी ओर वह यह भी कहने से न चूकता था कि मैं यह भी नहीं जानता कि गुट से अभिप्राय क्या है। वास्तव में दूसरी बात सच थी मुझको किसी गुट या क्रान्तिविरोधी संस्था की जानकारी न थी।

वह कहता ही गया कि "हमारे देश मे ऐसा तो कभी हो ही नहीं सकता कि कोई क्रान्तिविरोधी संस्था नियमित रूप से काम कर सके। इस देश में ऐसी संस्थाओं का न तो कोई अध्यक्ष होता है और न नियमित सदस्यता या सदस्यसूची।"

"तब फिर आप ही बताइए कि आप का क्रान्तिविरोधी संस्था से क्या अभिप्राय है।"

"तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर मैं देता हूँ। यदि तीन व्यक्ति किसी एक कमरे में बातचीत कर रहे हों और चौथे आदमी के आने पर अपनी बातचीत के विषय को बदल दें तो हम यह समझेंगे कि वे तीनों एक संस्था के सदस्य हैं और नवागंतुक उस संस्था का सदस्य नहीं है।"

"किन्तु क्या आप यह नहीं समझते कि ऐसा भी मौका आ सकता है कि व्यक्तिगत कारणों ही से कोई विषय परिवर्तन के लिए विवश हो जाय?"

"यदि बातचीत राजनीतिक विषय पर हो रही हो तो हम यह नहीं मानेंगे कि विषय परिवर्तन का कारण व्यक्तिगत था। सोवियट रूस के भले नागरिकों को अपनी कोई बात छुपाने की आवश्यकता नहीं।"

वह ऐसा क्यों कह रहा था यह बात धीरे-धीरे मेरी समझ में आने लगी। वह मेरे लिए अपने आप को क्रान्तिकारीविरोधी संगठन का सदस्य घोषित कर देने के लिए रास्ता साफ कर रहा था। यदि मैं उसकी क्रान्ति-विरोधी संगठन की परिभाषा को स्वीकार कर लेता तो मुझको यह कहने में भी कुछ कठिनाई न होती कि मैं और मेरे मित्र वास्तव में एक क्रान्ति-विरोधी षड़यंत्र रचते रहे थे क्योंकि यह तो स्पष्ट ही था कि हम आपस में जो विचार विमर्श करते थे उसमें प्रत्येक व्यक्ति को सम्मिलित होने की सुविधा नहीं थी।

रायजनिकोफ़ अब उत्तरोत्तर सद्भावना प्रदर्शित करता जा रहा था और इसी प्रकार प्रातः काल छः बजे तक मुझसे मेरे अतीत के जीवन के विषय में पूछताछ करता रहा। कई बार वह ऐसी बातें भी पूछता था जिनका हमारी इस समय की समस्या से कोई सम्बन्ध नहीं दिखाई देता था। जब मैं अपनी कोठरी में लौटा तो मैंने अपने आपको बहुत थका पाया।

उस पूछताछ से मेरा विचार तारतम्य तीव्र हो गया था और मैं एक वार फिर अपने आप से निम्न प्रश्न करने लगा :

१. क्या ये लोग वास्तव में मुझको अपराधी समझते हैं और क्या सत्य का पता लगाना ही उनका एक मात्र उद्देश्य है ?

२. या ये मुझसे एक झूठा वक्तव्य दिलाकर मुझको भी अन्य अभि-युक्तों की तरह ही अपने किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किसी प्रदर्शिनी का एक साधन मात्र वनाना चाहते हैं ? और

३. यदि वास्तव में ये मुझको अपराधी समझते हैं तो इनकी दृष्टि में क्या अपराध है मेरा ? क्या ये समझते हैं कि मैं जर्मनी की नात्सी सर-

कार की खुफिया पुलिस का आदमी हूँ ? या ये समझते हैं कि मैं कम्यू-निस्ट तो हूँ किन्तु जो दल शक्ति आरूढ़ है उसका विरोधी हूँ ?

रायज़निकोफ ने गैर-कानूनी संगठन की सदस्यता का विचार मेरे सामने इस प्रकार रखा था कि मैं उसको साधारण बात समझ कर उसकी सदस्यता स्वीकार कर लूं। इससे यह प्रतीत होता था कि ये मुझसे एक झूठा बयान लेना चाहते हैं। पर क्यों ? यदि इस प्रश्न का उत्तर यह दूं कि गैर कानूनी संस्थाओं का पता लगाना तो उनका काम ही हैं तो इससे मन को तुष्टि नहीं होती थी। कम से कम इससे उन लाखों आदमियों की गिरफ्तारी का रहस्य तो बिल्कुल ही समझ में नहीं आता था जो आए दिन पकड़े जा रहे थे। रूस के गांवों में भी कोई संकट नहीं दिखाई देता था। किसी भयंकर युद्ध के चिन्ह भी क्षितिज पर नहीं दिखाई दे रहे थे। वास्तव में स्थिति पहले की अपेक्षा कहीं अच्छी थी; कम से कम चार साल पहले की अपेक्षा तो अवश्य ही सुधरी हुई दिखाई देती थी। फिर गिरफ्तारियों का यह सिलसिला क्यों जारी था ?

अगली बार जब मुझको पुनः पूछताछ के लिए बुलाया गया तो यह रहस्य कुछ खुलता हुआ दिखाई दिया। इस बार रायज़निकोफ बड़ा भयं-कर रूप धारण किए हुए था और इस तरह मेरे साथ बर्ताव कर रहा था मानो कि उसको मेरे अपराध के विषय में तनिक भी संदेह नहीं है। आज वह रह रहकर यही जानना चाहता था कि रूस के बाहर ऐसे किन किन कम्यूनिस्टों के साथ मेरा सम्बन्ध रहा है जो पार्टी की नीति का विरोध करते हैं।

इसके पश्चात् उसने जितने प्रश्न किए उनका आशय यह था कि हमारे इंस्टीट्यूट में वास्तव में एक षड़यंत्रकारी गुट बना हुआ था और मैं उसका नेता था और हमारे गुट का उद्देश्य रूस की सरकार की

सैनिक तैयारियों में विघ्न उत्पन्न करना था। मैंने उसके इस आशय का खुलकर विरोध किया। इस पर वह चिल्लाने लगा और एक बार इतने रोष में आया कि मुझको अपने प्रश्नों की झड़ी के नीचे लगभग अठारह घंटे बैठाए रहा। पर मैं अब भी इनकार ही करता रहा। एक दिन शुक्रवार की शाम को उसने मुझको अपनी कोठरी में नहीं जाने दिया बल्कि अपने कमरे के गुसलखाने ही में बन्द करा दिया। फर्श पानी में डूबा हुआ था और बैठने के लिए कोई जगह न थी। एक कोने में पायदान पड़ा था, मैं उसी पर बैठ गया और चौदह घंटे तक इसी प्रकार बैठा रहा। बाहर निकाले जाने पर उसी पहले प्रश्न का मुझसे फिर उत्तर मांगा गया। जब मैंने फिर इनकार कर दिया तो उसने मुझको फिर गुसलखाने में बन्द करा दिया और अब वहाँ पायदान भी नहीं रहा था। फर्श पानी में डूबा हुआ था। उसी में मुझको खड़े रहना पड़ा। मुझको आशा थी कि शायद शाम तक मुझको अपनी कोठरी में फिर वापिस भेज दिया जायगा क्योंकि साधारणत: रविवार को कभी पूछताछ नहीं हुआ करती थी; किन्तु मुझको उसी स्थान पर उसी स्थिति में सोमवार की सुबह तक रहना पड़ा।

मैं पानी में लेट नहीं सकता था इसलिए खड़ा हो कर ही समय बिताना पड़ा। सोमवार की सुबह को जब मुझको रायजनिकोफ़ के पास ले जाया गया तो मेरी जो मनोदशा थी उसका उल्लेख नहीं किया जा सकता। सम्भवत: मेरे चेहरे ही से मेरी कष्टगाथा प्रकट होती थी। मेरे वहाँ पहुँचने पर रायजनिकोफ़ ने बड़ा दयार्द्र भाव दिखाते हुए मुझ से पूछा, "एलेग्ज़ेण्डर सेमोनोविच क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है? बीमार हो गए हो क्या?"

मैंने उत्तर दिया "नहीं तो। चालीस घंटे तक निरंतर जल में खड़े रहने वाला व्यक्ति इससे कुछ भिन्न दिखाई दे तभी आपको आश्चर्य होना चाहिए।"

" यह मैं क्या सुना रहा हूँ ; क्या तुमको शनिवार को तुम्हारी कोठरी में नहीं पहुँचाया गया था ?"

मैंने कहा, "नहीं ! बल्कि इतना ही नहीं मैंने जब दरवाज़ा खटखटा कर वार्डर को याद दिलाई तो उसने मुझको यही बताया कि उसको ऐसा कोई आदेश नहीं किया गया।"

"हां, अब मुझको याद आया। मैं भूल गया था। मुझको क्षमा कर दो एलेक्ज़ेण्डर सेमोनोविच।"

इसमें कोई सन्देह ही नहीं था कि जो कुछ हुआ था उसकी मर्ज़ी और जानकारी से हुआ था। अब वह सम्भवतः मेरा मजाक उड़ाना चाहता था। पर मैंने पराजय स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

मेरा पहला ही असंतोषजनक उत्तर पाकर रायज़निकोफ़ अपनी कुर्सी से उछल पड़ा। वह मेज को पीटने लगा और डाट गालियों की बौछार करने लगा। उसने मुझको कभी कुत्ता कहा; कभी किसी विदेशी सरकार द्वारा भेजा गया डाकू कहा; तो कभी देशद्रोही बताया।

"तुम समझते हो कि तुम मेरे दफ़्तर में बैठ कर भी क्रान्तिविरोधी आंदोलन करते रह सकते हो ! शायद उस गुसलखाने में आराम करने की फिर जी में है। तुम चाहो तो मैं तुमको वहां एक सप्ताह तक रख सकता हूँ।"

मैं चुप रहा। मेरा मन उदास था और शारीरिक शक्ति मानो समाप्त हो चुकी थी। अपनी कोठरी के स्थान पर अब फिर गुसलखाने में कालयापन करना पड़ेगा इसकी कल्पना करते ही मैं काँप उठा।

ठीक उसी समय दरवाजा खुला और एक लम्बा चौड़ा पुलिस अधि-

कारी अन्दर दाखिल हुआ। उसको देखते ही रायज़निकोफ़ तेजी से खड़ा हो गया। उसको देखकर मुझको भी खड़ा होना पड़ा। नवागंतुक कप्तान तोरनूएफ़ नाम का खुफ़िया पुलिस का एक उच्च अधिकारी था। अज़ाक चला गया था। उसी की जगह यह आया था। बाद में मुझको पता लगा कि खारकोफ़ की खुफ़िया पुलिस के अध्यक्ष मासो की आत्म-हत्या के पश्चात् कप्तान अज़ाक भी गिरफ्तारियों की लहर का शिकार हो गया था।

"कामरेड कप्तान, मैं आपसे विनम्रता पूर्वक यह बताना चाहता हूँ कि यह व्यक्ति जिसका नाम एलेग्ज़ेण्डर सेमोनोविच वाइज़बर्ग है ऐसा भयंकर हठी शत्रु है जिसका उदाहरण मेरे पास नहीं है। मैं नहीं जानता कि इसके साथ अब क्या बर्ताव किया जाय।"

"कामरेड लेफ्टीनेंट इसकी चिन्ता न कीजिए। आवश्यकता पड़ने पर हम इसकी हड्डिया भी पीस देंगे ऐसी मुझे आशा है।"

इस धमकी को देते समय उसके वाक्यों से तनिक भी कटुता या रोषकी ध्वनि नहीं आती थी। उसके चले जाने के पश्चात् स्वयं रायज़निकोफ़ विनम्र और सहृदय दिखाई देने लगा। मुझको सम्बोधित करते हुए उसनें कहा, "इस बात का पता तुमको बाद में लगेगा कि मैंने तुम्हारी कितनी सहा-यता की है। मैं तुमको एक भयंकर अनहोनी से बचाना चाहता हूँ लेकिन तुम हो कि अभी तक मुझको अपना शत्रु समझ रहे हो। खैर, अब तुम इस अवस्था में नहीं हो कि अपनी समस्या पर ठीक-ठीक विचार कर सको इसलिए मैं तुमको तुम्हारी कोठरी में वापस भिजवा रहा हूँ ताकि तुम कुछ आराम कर सको।"

रायज़निकोफ़ की रीतिनीति को समझना आसान बात न थी। कब वह क्या पैंतरा बदलेगा इसका अनुमान करना कठिन था। अब मुझको

प्रतीत होता था कि उसका अभीष्ट मेरे मित्रों को क्रान्ति के शत्रु घोषित कराना था। मैंने निश्चय किया कि अगली बार जब मैं उससे मिलूंगा तो उससे उसके मन की बात स्पष्ट रूप से जानना चाहूँगा। इस बार जब मैं उसके पास फिर ले जाया गया तो प्रकटत: वह बड़ी प्रसन्न मुद्रा में बैठा हुआ था।

मैंने जाते ही उससे प्रश्न किया कि, "क्या वास्तव में आप यह समझते हैं कि लेपुंसकी जनता का शत्रु है ?

उत्तर मिला, "निस्सन्देह। इतना ही नहीं वह बड़ा भयंकर शत्रु है।"

"तो फिर यह क्या बात है कि उसको नित नई उपाधियाँ मिलती रहती हैं और उसका इतना सम्मान होता है और वह अभी तक एकेडमी आफ सायन्स का सदस्य भी है ?"

"हमारे हाथों जबतक भंडा फोड़ नहीं होता तब तक पकड़े जाने वालों में बहुत से ऐसे भी आदमी होते हैं जो अपने सीने पर आर्डर आफ़ लेनिन के तमग़े लगाए घूमा करते थे किन्तु हमारे हाथ में आजाने के पश्चात् सिद्ध हो जाता है कि वास्तव में वे जनता और क्रान्ति के शत्रु थे। कई बार तो यहां तक हुआ है कि कल कारखाने के ऐसे अध्यक्ष जिनको राज्य की ओर से बड़ी बड़ी उपाधियां :मिलने वाली थीं हमको उन्हें भी उपाधि समारोह के पूर्व ही गिरफ्तार करना पड़ा।"

मेरे जी में तो आई कि कह दूं कि जिस राज्य के पुलिस विभाग और राजनीतिक नेतृत्व में परस्पर इतना भी तालमेल नहीं है उसको क्या समझा जाय। पर ऐसा कहा नहीं क्योंकि मेरी जो स्थिति थी उसमें इस प्रकार की टिप्पणी करना मेरे लिए श्रेयस्कर नहीं था। पर ऐसा लगा कि वह मेरे मन की बात भाँप गया है। इसीलिए बोला "इसमें कोई आश्चर्य

की बात नहीं है। हमारी खोज आदि के विषय में केवल हमारे उच्च अधिकारी ही जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और यह इसलिए कि हम लोगों के ऊपर राज्य की सुरक्षा का जो दायित्व है वह इसी प्रकार संतोष-जनक ढंग से सम्पादित किया जा सकता है। वास्तव में कब किसके विरुद्ध क्या कार्यवाही की जायगी इसकी सूचना हमारे विभाग के अध्यक्ष कामरेड निकोलाय आयनोविच येज्रोफ़ केवल कामरेड स्टालिन ही को देते हैं। इसलिए यह बिल्कुल सम्भव है—यद्यपि यह दुर्भाग्य की बात है—कि एक व्यक्ति सोवियट अधिकारियों को धोखा देकर बड़ी बड़ी उपाधियां प्राप्त कर ले और अन्तिम क्षण तक हमारे सिवा किसी और को उसके असल चरित्र और कारनामों का पता न लगे। लेकिन हम उसको कभी बच कर नहीं जाने देते। तुम खुद ही देख चुके हो कि कई बार हम अपराधी को ढील दिये रहते हैं और गिरफ्तार तक नहीं करते। हम उस पर कड़ी निगरानी रखते हैं ताकि उसके षड़यन्त्र की सब कड़ियों का पता लग सके। लेपुंसकी इसी श्रेणी में है। हम उस पर नज़र रखे हुए हैं।"

"इन्सपैक्टर साहब, इसमें मुझे कोई सन्देह नहीं कि आप अपने काम को जितनी अच्छी तरह जानते हैं उतना और कोई नहीं जान सकता किन्तु यदि इस राज्य के उच्चतम अधिकारी भी धोखा खा सकते हैं तो क्या यह सम्भव नहीं है कि मुझ जैसा साधारण व्यक्ति लेपुंसकी के वास्तविक चरित्र से अनभिज्ञ रहे ?"

मेरे इस प्रश्न से उसके मार्ग में कठिनाई उत्पन्न होती हुई दिखाई दी क्योंकि कुछ क्षण तक वह बोल नहीं पाया। फिर सम्भल कर बोला, "तुम तो लेपुंसकी के षड़यन्त्र में सहयोगी रहे हो। वह तुम्हारा दाहिना हाथ था या तुम उसके दाहिने हाथ थे। हाँ, हम यह मानते हैं कि हम अभी तक यह तय नहीं कर पाए कि तुम दोनों में प्रमुख कौन था।"

चारों ओर अंधकार सा छाता हुआ दिखाई दे रहा था। प्रत्येक प्रश्न पहले प्रश्न से अधिक कठोर और अधिक विषपूर्ण बनता जा रहा था। उधर रायज़निकोफ़ की भाषा में फिर अपशब्दों का प्राचुर्य हो चला था। पर अचानक ही उसने अपना स्वर फिर बदला :

"तुम शिकायत करते हो कि मैं तुमको यातनाओं में डाले हुए हूँ; तुमको सोने नहीं देता; आराम नहीं करने देता आदि आदि। सत्य यह है कि मैं तुम्हारे कारण यातनाएं भोग रहा हूँ। तुम्हारे जैसा कैदी मुझको कभी देखने को नहीं मिला। तुम्हारा व्यवहार साधारण मानवोचित नहीं है। मैं तुम्हारे साथ तर्क वितर्क करूँ, तुमको युक्तियाँ दूँ या तुम पर दबाव डालूं परिणाम सब का एक ही है। अब तीन मास से तुम अकेले एक कोठरी में बन्द हो। और कोई कैदी होता तो सम्भवतः उसका दिमाग़ खराब हो जाता। लेकिन तुम हो कि शिकायत तक भी नहीं करते।"

तब अचानक मुझको एक बात सूझी, "शिकायत करने का मुझको क्या अधिकार है ? अपने प्रति किए गए दुर्व्यवहार की शिकायत करना उतना ही निरर्थक है जितना अपनी गिरफ़्तारी के बारे में कुछ कहना।"

"गिरफ़्तारी की बात दूसरी है। सरकारी वकील ने तुम्हारी गिरफ़्तारी का हुकम दिया था। किन्तु तुमको अकेले किसी एक कोठरी में बन्द कर देना जेल के अनुशासन नियमों का ही एक अंग है और उसका दायित्व जेल विभाग के अध्यक्ष पर है। उदाहरण के लिए तुम चाहो तो कप्तान तोरनूएफ़ को चिट्ठी लिख कर यह प्रार्थना कर सकते हो कि तुमको तनहाई कोठरी से हटा कर किसी बड़ी कोठरी में बन्द कर दिया जाय ताकि तुमको बातचीत करने के लिए कुछ साथी मिल जाएं। बिल्कुल सम्भव है कि वह तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर लें। वास्तव में यदि बुद्धि से कामलो

और हमारे साथ सहयोग करो तो यह निश्चय ही है कि वह तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे।"

"मैंने कभी असहयोग नहीं किया। मैं तो केवल अपने निरपराध होने का ही आग्रह करता रहा हूँ और आप यह तो मानेंगे ही कि अपने सम्मान की रक्षा करना मेरा अधिकार है।"

"यह मेरी राय नहीं है। तुम चाहो तो कप्तान को लिख सकते हो इस मामले में तुम पूर्णतः स्वतन्त्र हो। मैं यह विश्वास अवश्य दिला सकता हूँ कि यदि मुझसे परामर्श लिया गया तो मैं कोई आपत्ति नहीं करूंगा। सम्भवतः अपनी कोठरी में अकेले पड़े हुए तुमको अपनी स्थिति का पूर्णतः आभास नहीं हो पाया है।"

मैंने कहा, "तो अच्छी बात है। यदि आप मुझको पैन्सिल और काग़ज़ दें तो मैं उनको चिट्ठी लिख दूंगा।"

उसने मुझको काग़ज़ और पैन्सिल मंगा दी। मैंने संक्षिप्त शब्दों में अपनी यह प्रार्थना लिखदी कि मुझको मेरी वर्तमान कोठरी से हटा कर दूसरे बंदियों के साथ किसी बड़ी कोठरी में रख दिया जाय। इसके पश्चात् मुझको मेरी कोठरी में वापस पहुँचा दिया गया। तीन दिन पश्चात् मुझको फिर निकाला गया। इस बीच में पूछ-ताछ बिल्कुल बन्द रही।

रायज़निकोफ़ ने मुझको सूचना दी कि "मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई है। आज शाम को तुम्हें दूसरे बंदियों के साथ रखा जायगा। मैं तुमको अभी चेतावनी दिए देता हूँ कि वहाँ रह कर क्रान्तिविरोधी वाद-विवाद न करना। यदि ऐसा किया तो तुमको न केवल तुम्हारी कोठरी में ही वापस भेज दिया जायगा बल्कि अदालत में भी पेश किया जायगा। अपनी पूछ-ताछ के दौरान में तुम कई ऐसी बातें कह चुके हो जिनको

सरकारी वकील यूक्रेन के ज़ाब्ता फ़ौजदारी की धारा १० उपधारा ५४ का उल्लंघन ठहरा सकता है। कितना अच्छा हो कि तुम अब भी यह समझ लो कि हमारे कानून विदेशियों पर भी वैसे ही लागू होते हैं जैसे कि इस देश के नागरिकों पर।"

अब उसने घंटी बजा कर पहरेदार को बुलाया !

पूछताछ समाप्त हुई।

एक बार फिर अपने ही जैसे प्राणियों के साथ मिलने-जुलने और उनके साथ बातचीत करने का अवसर मिलेगा, इस आशा में मैं फूला नहीं समाता था। कभी सोचता था कि इतने दिन बाद पहली बार मुझको फिर घटनाओं की जानकारी प्राप्त होगी ; दुनिया में क्या कुछ हो रहा है यह जान सकूँगा और सबसे बड़ी बात यह है कि अपने भाग्य के विषय में सहप्राणियों से विचार-विमर्श कर सकूँगा। जब कभी मुझसे पूछताछ होगी तो उसका उल्लेख मैं अपने साथियों से किया करूँगा। बंदी जीवन की उन अंधकारमय घड़ियों में यह एक प्रकाश रेखा थी जो मुझको आल्हादित किए हुए थी।

पर मन में एक सन्देह उत्पन्न हुआ। रायज़निकोफ़ ने यह सब कृपा क्यों की है ? मेरे कल्याण की उसको चिन्ता थी यह मैं मानने को तैयार नहीं था। कभी मुझको ख्याल आया कि रायज़निकोफ़ ने शायद मेरा तबादला कराने का फ़ैसला कर लिया है और इसको संयोग या दुर्घटना का रूप दिया जा रहा है। पर खुफ़िया पुलिस के अधिकारी तो कभी दुर्घटना होने नहीं दिया करते। अब शायद उन्हीं का रवैया अपना लेने में भलाई है। रायज़निकोफ़ मुझको मेरी कोठरी से हटवा रहा है इसके लिए उसका कुछ अपनाही कारण होगा। यह भी हो सकता है कि कप्तान तोरनूएफ़ को लिखाया गया पत्र आवरणमात्र है। मुझको यह निश्चय था कि

रायज़निकोफ़ चाहता तो स्वयं ही मुझको कोठरी से हटवा सकता था पर उसको आवरण की आवश्यकता पड़ी इसी कारण सन्देह होता था। सम्भवत: नये स्थान में मेरे पीछे कोई भेदिया लगा दिया जायगा। इन सब विचारों के कारण मेरे मन में परिवर्तन का समाचार पाकर जो प्रसन्नता हुई थी वह मिटती दिखाई दी।

उसी दिन दोपहर के बाद एक वार्डर को लेकर जेल के उपाध्यक्ष मेरी कोठरी में आए। मुझको सारे कपड़े उतार देने की आज्ञा हुई। दोनों ने बड़ी सावधानी से मेरे एक-एक कपड़े की देखभाल की। इसके पश्चात् मुझको अपने कपड़े पहनने की अनुमति और अपनी चीज़ों को बाँध लेने की आज्ञा मिली। अब मुझको ऊपर की मंज़िल में कारीडार की दूसरी तरफ़ की एक कोठरी में ले जाया गया। प्रकटत: इसमें और मेरी पुरानी कोठरी में कोई अन्तर न था। इसकी खिड़कियां जेल के बड़े सहन में खुलती थीं। हाँ चारपाइयां एक के बजाय तीन थीं। मेरे प्रवेश करने पर दो व्यक्तियों ने उठ कर मेरा अभिवादन किया।

उनमें से एक मझले कद का था। उसके बाल सुनहरे थे चेहरे पर चेचक के निशान थे। उसके हाथों को देखने से पता लगता था कि वह कोई मज़दूर रहा होगा। मुझको शीघ्र ही पता लग गया कि वह बिजली का काम करने वाला मिस्त्री था। आरंभ में मैं उससे मिलकर प्रसन्न नहीं हुआ और मैंने उससे सावधान रहने का निर्णय कर लिया। उसका नाम डेनिन था। दूसरा व्यक्ति प्रतिभाशाली प्रतीत हुआ। उसका क़द लम्बा था और शरीर सुदृढ़। किन्तु वह तनिक झुक कर चलता था। उसके चेहरे पर मांस नहीं था और उसका माथा ऊँचा था। उसके बाल काले और उसकी आंखें चमकदार थीं। मैंने उससे हाथ मिलाया और अपना नाम बता दिया। एक दो क्षण तक वह मेरा हाथ संभाले रहा और तब धीमे

स्वर में बोला : "रोज़िस्की"। हमारी दोनों की आंख एक दूसरे पर टिक गईं। उसकी आंखों में मुझको ऐसा आकर्षण लगा कि कुछ क्षण तक मैं जड़वत् हो गया। जब वह बोलने लगा तो मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं रहा कि उसकी आकृति और बुद्धि में कोई व्याघात नहीं है।

मैं एक-एक शब्द के वाक्यों में उत्तर दे रहा था। मेरे मस्तिष्क में इस समय सबसे बड़ा प्रश्न यह था कि इन दोनों में से कौनसा व्यक्ति पुलिस का भेदिया है। मैंने निश्चय सा कर लिया था कि सम्भवतः यह काम रोज़िस्की को ही सौंपा गया है। मैंने अपनी चीज़ें तीसरी चारपाई पर रख दीं। रोज़िस्की दीवार के सहारे कमर लगा कर बातें करने लगा। वह बहुत देर तक बोलता रहा। अँधेरा हो चला था। मैं खामोश था। सायंकाल को सदा ही जो सांत्वना मिला करती थी मैं उसी का अनुभव कर रहा था। किन्तु मेरी दृष्टि खिड़की के निकट पड़ने वाली परछाहीं पर जमी हुई थी।

आरंभ में वे दानों साथी बड़े सतर्क होकर बातचीत करते रहे। बातचीत के दौरान में किसी ने अपने मामले की ओर संकेत नहीं किया। किन्तु उनकी बातचीत के ढंग और कुछ शब्दों के प्रयोग से मुझको देश और विदेश की राजनीति के बिषय में बहुत कुछ जानकारी हो गई। अपने जीवन में मुझको जितने भी व्यक्ति मिले थे रोज़िस्की उनमें से सबसे अधिक विज्ञ और सुशिक्षित व्यक्तियों में से था। रूस में उस समय बहुत ही थोड़े ऐसे आदमी थे जिनको पाश्चात्य संस्कृति की जानकारी थी। जिनका जानकारी थी भी वे अधिकांशतः पुराने ढंग के वैज्ञानिक या कलाकार थे अथवा पार्टी के पुराने सदस्य। जहाँ तक पार्टी के सदस्यों का सम्बन्ध था वे पश्चिमी देशों की संस्कृति को मार्क्सवादी चश्मे ही से देखते थे। कला और साहित्य सम्बंधी प्रश्न उनकी पहुँच के बाहर

थे। रोज़िस्की भी मार्क्सवादी था किन्तु उसकी दिलचस्पी राजनीतिक और सामाजिक प्रश्नों ही तक सीमित न थी। किसी अंग्रेज़, फ्रांसीसी, जर्मन, अथवा इटालियन लेखक की सम्भवतः ऐसी कोई भी पुस्तक न थी जिसका मैंने उल्लेख किया हो और उसने न पढ़ी हो। जर्मनी के प्राचीन दर्शन शास्त्र, ब्रिटेन के राजनीतिक शास्त्र और फ्रांस के तर्क शास्त्र से भी उसका वैसा ही घनिष्ट परिचय था।

रोज़िस्की के पास पैसा नहीं था और बाहर से उसको कोई खाना भेजने वाला भी नहीं था इसलिए मुझको जो कुछ मिलता था उसको मैं उसके साथ बाँट लिया करता था।

रोजिस्की किस आरोप में वहाँ लाया गया था यह मुझको कभी न मालूम हो सका। वह स्वयं भी कभी इस विषय में कोई स्पष्टीकरण नहीं कर सका यद्यपि कभी भी उसने यह दावा नहीं किया कि वह सर्वथा निर्दोष था। जब कभी मैं उसके जेल में बन्द हो जाने के कारण के विषय में कोई बातचीत चलाता था तो यही पता लगता था कि उसने कभी किसी से या तो वादविवाद किया था या किसी वादविवाद विशेष के प्रति वाद-विवाद किया था। किन्तु किस विशिष्ट आरोप पर वह गिरफ़्तार किया गया यह कभी पता न चल सका—इस बात पर मुझको कोई आश्चर्य भी नहीं था। रोज़िस्की कभी एक शब्द भी शिकायत के तौर पर अपनी ज़बान पर नहीं लाया। उसके व्यवहार और झुकाव से ऐसा प्रतीत होता था कि वह अब भी पार्टी, सोवियट सरकार और समाजवाद का अनन्य भक्त था। स्वयं जेल में बंद था तिस पर भी वह सरकार के प्रत्येक कार्य का समर्थन करने के लिए युक्तियाँ देता रहता था। एक दिन जब मेरे मामले पर चर्चा छिड़ ही गई तो उसने मुझसे शांत स्वभाव से पूछा, "तुमने अपना कितना अपराध स्वीकार कर लिया है?"

मैंने उत्तर दिया "कितना भी नहीं। मैंने कोई ऐसा काम ही नहीं किय जिसको मैं अपराध समझूं और स्वीकार करूँ।"

उसने उसी प्रकार शान्त भाव से कहा, "तुम मेरा मतलब नहीं समझे। मैं पूछना चाहता हूँ कि तुम पर झूठा या सच्चा जो आरोप लगाया गया है उसके कितने भाग को तुमने स्वीकार कर लिया है ?"

"बिल्कुल नहीं ; मैं तुमसे कह क्या रहा हूँ ? मैं सर्वथा निर्दोष हूँ।"

यह सुनकर दोनों बड़े जोर से हंस पड़े और अब डेनिन ने बीच ही में बोलते हुए कहा, "और यहां अपराधी है कौन ? तुम्हारा क्या यह ख्याल है कि मैं दोषी हूँ ?"

"मेरी समझ में तुम्हारी बात नहीं आती। तो क्या मैं तुम्हारे कहने का मतलब यह समझूं कि तुमने झूठे ही आरोपों को अपना अपराध मान कर स्वीकार कर लिया है ?"

"निस्सन्देह; इसके अतिरिक्त मैं कर ही क्या सकता था ? यदि यहां से बाहर निकलने की आशा रखते हो तो उसका एक मात्र उपाय अपराधी बनना ही है।"

मैं उलझन सी में पड़ गया और रोजिस्की की ओर देखने लगा।

"अच्छा तुम बताओ, एलेग्जेंडर सेमोनोविच," उसने कहा, "तुम कब से यहां आये हुए हो ?"

"लगभग तीन मास से।"

"और अब भी तुम इतने भोले बनते हो !"

"शायद तुम सच ही कहते हो, पर मेरे भोलेपन और दोषी अथवा निर्दोष होने में परस्पर क्या सम्बन्ध है, यह मैं नहीं समझ पा रहा हूं।"

"एलेग्जेण्डर सेमोनोविच, क्या वास्तव में तुम यह समझते हो कि हम किसी अपराध के कारण जेल में पड़े हैं? फिर भी हम दोनों ने जो कुछ उन्होंने कहा स्वीकार कर लिया।"

"यही तो मैं नहीं समझ सकता! तुमने ऐसा क्यों किया?"

रोजिस्की और डेनिन में आंखों ही आंखों में कुछ बात हुई। इनके सिर हिलाने से मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वे मेरी हालत को बिल्कुल गई बीती समझते हैं।

"सुनो, कामरेड रोजिस्की" मैंने बड़े अनुरोध के साथ कहा, "तनिक बताओ तो यह सब क्या गोरखधन्धा है। तुम और डेनिन जैसे व्यक्ति क्यों अपने आप को झूठ ही अपराधी घोषित कर देते हैं?"

"तो क्या अभी तक तुमको किसी ने यह रहस्य नहीं बताया?"

"जिस दिन से मैं आया था उस दिन से अबतक तन्हाई कोठरी में रह कर ही घड़ियाँ काटनी पड़ी हैं।"

"निस्सन्देह, मैं यह भूल ही गया था। अच्छा सुन लो : मैं पार्टी का वफ़ादार सदस्य होने की हैसियत से अपना यह कर्तव्य समझता हूँ कि मुझको कैसा भी अपराध स्वीकार करने को कहा जाय तो उसको चुपचाप स्वीकार कर लूँ।"

"रोजिस्की या तो तुम पागल हो या मैं। पार्टी के प्रति यह कैसी वफादारी है कि कोई झूठे आरोप को भी स्वीकार कर लें?"

"सोवियट रूस में तुम कितने दिन से हो एलेग्जेण्डर सेमोनोविच?"

"छः साल से।"

"छः साल से यहाँ रह रहे हो, फिर भी ऐसी वहकी बहकी बातें करते हो। तुम पार्टी के सदस्य हो और फिर भी सत्य और झूठ के सम्बन्ध में पूंजीवादी धारणाओं के जाल में फंसे हो; सोवियट रूस की अवस्थाओं के विषय में तुम्हारी बुद्धि बिल्कुल भंग हुई मालूम होती है। खैर तुम जानो और तुम्हारा काम। अन्त में प्रत्येक व्यक्ति करता तो वही है जो उसका मन कहता है। पर मुझको यह देखकर आश्चर्य होता है कि अधिकारी अब तक कैसे तुम्हारे व्यवहार को बर्दाश्त करते रहे हैं।"

"वे और क्या करते ? मैंने किसी भी झूठे वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने से इनकार जो कर दिया था।"

दोनों मेरी ओर इस प्रकार देखने लगे जैसे कि वे मेरी बुद्धिहीनता पर आश्चर्य में पड़ गए हों। कुछ देर के पश्चात् रोज़िस्की बोला, "मैं यह तो नहीं जानता कि रूस के अधिकारी विदेशियों के साथ कैसा वर्ताव करते हैं किन्तु यह निश्चय है कि कोई भी सोवियट नागरिक तीन मास तक ऐसी हठ करते रहने का साहस नहीं कर सकता था।"

"किन्तु मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया जिसको अपराध कहा जा सके।"

"तुम बच्चों जैसी बातें करते हो। यदि तुम्हारी बात को ही मापदंड माना जाय तो हम में से कब किसने कोई अपराध किया था ? किन्तु कुछ राजनीतिक आवश्यकताएं हुआ करती हैं। पार्टी को अधिकार है कि वह अपने सदस्यों से इन आवश्यकताओं के महत्व को स्वीकार करने की आशा करें।"

मेरा सिर घूमने लगा था। मैं सोचने लगा कि क्या मेरे सामने भी वैसी हो अज्ञेय स्थिति उत्पन्न हो गई है जिसके विषय में मुझसे पहले

अभियुक्तों के सम्बन्ध में चर्चा रहा करती थी। पहले तो मैं यही नहीं समझ पाया कि आया रोजिस्की मुझको उत्तेजित करने का प्रयत्न कर रहा है किन्तु जब मैंने उसके चेहरे की ओर देखा तो मुझको उसकी सचाई पर सन्देह करने के लिए कोई कारण न दिखाई दिया।

मैंने पूछा, "कामरेड रोजिस्की क्या वास्तव में तुम्हारा विचार है कि कभी ऐसा समय भी आ सकता है कि पार्टी के सदस्य पार्टी के लिये झूठे आरोपों ही को अपना अपराध मानने को विवश हो जांय ?"

"मेरी तो यह धारणा है कि प्रत्येक स्थिति में पार्टी के सदस्यों को अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं को पार्टी के लिये कुरबान करने को तैयार रहना चाहिए।"

"यह तो कोई निश्चित बात न बनी। मैं तो केवल यही जानना चाहता हूँ कि जब मेरा किसी भी शत्रु से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है तो क्यों मैं पार्टी का शत्रु और देश का शत्रु होने के आरोप को स्वीकार करूँ ? साथ ही मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि मेरे इस प्रकार झूठ बोलने से पार्टी को क्या लाभ होगा ?"

"तुमको यह कहने की आवश्यकता नहीं कि तुम किसी के गुर्गे हो। मैंने अब तक जो कुछ सुना है उससे यह स्पष्ट है कि तुमसे अधिकारी किसी विदेशी शक्ति का एजेंट होने का इकबाल नहीं करवाना चाहते। तुम आसानी से जान सकते हो कि वे तुम से क्या चाहते हैं। यह जानने के बाद जो मुनासिब समझो वही स्वीकार करलो। ऐसा करोगे तो वे तुमको किसी विदेशी शक्ति का एजेंट होना स्वीकार करने के लिए वाध्य न करेंगे।"

"मुझको दुःख है, किन्तु मैं तो इसको निरा पागलपन ही मानता हूँ। मेरे पास इसके लिये और कोई शब्द नहीं"

"तब तो इस विषय में कुछ बात करना ही व्यर्थ है, एलेग्जेंडर सेमोनोविच। जैसा कि में पहिले भी कह चुका हूँ, मेरे लिये तो केवल एक ही उलझन है। अब तक अधिकारी तुम्हारे इस रवैये को कैसे सहन करते रहे हैं ?"

मैं रात को घण्टों तक आँखें खोले हुए लेटा रहा। नींद आती ही न थी। पर मैंने देखा कि रोजिस्की भी क्षण भर के लिए नहीं सोया। वह एक बार चुपके से अपनी जगह से उठा और मेरी चारपाई की पट्टी पर आ बैठा। अब हम आपस में कानाफूसी करने लगे।

"कामरेड रोजिस्की !" मैंने कहा, "डेनिन इस समय सोया हुआ है, और हमारी बातें नहीं सुन सकता। क्या जो कुछ तुमने मुझसे उस दिन कहा था क्या वास्तव में वह तुम्हारे मन की बात थी ?"

"निस्सन्देह। मैं ऐसे विषय पर मज़ाक कभी नहीं करता।"

'अच्छा तब मेरे झूठे आरोप को स्वीकार कर लेने से क्या लाभ ?"

"एलेग्जेंडर सेमोनोविच, हम में से कोई भी घटनाओं के पूर्ण महत्व को नहीं समझ सकता। क्रान्ति के पुराने रचयिता और प्रवर्तक बलिवेदी पर चढ़ाये जा रहे हैं। सन् १९१७ ई० से पहिले भी जो लोग पार्टी में थे, उनमें से सम्भवतः कोई भी जेल की हवा खाने या फांसी पर झूलने से नहीं बचा। इस संकट में फंसने वाले केवल विरोधी दल के सदस्य हों सो बात नहीं। जिन्होंने कभी खुले हृदय से क्रान्ति का समर्थन किया था, चाहे वे मेनशेविक दल के हों, समाजवादी क्रान्ति दल के, अराजकता वादी या स्वयं अपने ही दल के लोग, सभी का नम्बर आ गया मालूम होता है। समझिये कि एक राजनीतिक महामारी फैली हुई है। कभी तुमने तूफान से भी यह पूछा है कि वह कहाँ से उठा, क्यों उठा

और किधर को जायेगा ? और यदि तुम पूछने की धृष्टता भी कर बैठो तो क्या वह तुम्हारे इन प्रश्नों का उत्तर देगा ? बात तो यह है कि तुम ऐसा प्रश्न कभी पूछोगे नहीं । तूफ़ान के समय तुम्हारे सामने केवल एक हो समस्या होती है : इससे स्वयं किस प्रकार बचा जाय ? बड़े बड़े वृक्ष गिर जाते हैं; किन्तु सरकंडा जो अपना सिर झुकाना जानता है बच जाया करता है। तूफ़ान आता है और चला जाता है, घास और सरकंडे फिर अपना सिर ऊँचा कर के खड़े हो जाते हैं। अगर तुम मेरी बात मानो तो घास का अनुकरण करो। प्राण बचाने का इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।"

"सुनने में तो यह बात युक्तिसंगत मालूम होती है, किन्तु इसका क्या अभिप्राय है, वह मैं नहीं समझ पाया हूं।"

"हम इस समय क्रान्ति मार्ग के मोड़ पर आ खड़े हुए हैं। सामने क्या है, हम इस मोड़ के कारण यह नहीं देख पाते किन्तु कामरेड स्टालिन अवश्य देख सकते हैं। अगले मोड़ पर पहुँचने तक हम भी ऐसा करने में समर्थ हो सकेंगे।"

मैंने कोई टिप्पणी नहीं की। मैं उसी पर नजर जमाये बैठा रहा। वह सूख कर अस्थिपंजर मात्र रह गया था। यह भी हो सकता था कि वह क्षय रोग से पीड़ित था। यह निश्चय नहीं था कि वह अगले 'मोड़' को अपनी आंखों से देख सकेगा। मेरी विचार-शृंखला को जैसे उसने भांप लिया हो, बोला :

"एलेग्जेंडर सेमोनोविच; सम्भवत: मैं कभी जेल से बाहर न निकल सकूंगा। किन्तु अपने जीवन को मैं अपने आदर्श की भेंट चढ़ा रहा हूँ; यौवन में जो स्वप्न देखा था, जिस नक्षत्र को अपना पथप्रदर्शक मानकर

कदम बढ़ाया था, उसके प्रति मैं जीवन तक न्योछावर करने से नहीं चूका, यह जानकर मेरे मन में शान्ति है, और इस विश्वास की संवल लेकर कि हम अन्धकार में भी पथभ्रष्ट नहीं हो सकते मैं अपने मार्ग पर चला जा रहा हूँ, चला जा रहा हूँ। हमारा जो आदर्श था वह इतना महान् था कि उसपर युग युग में और देश देश में श्रेष्ठ श्रेणी के लाखों प्राणी भी जान देते रहें तो भी उसकी महानता में कोई कमी न आयेगी। हमारा आदर्श आज भी महान् है। तुम्हारी बात मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आती। हममें से कोई भी ऐसा नहीं है जो नदी के प्रवाह के प्रतिकूल बह सके। नदी के प्रवाह में बड़े कंकड़ पत्थर भी हैं; प्रवाह के प्रतिकूल बहने का प्रयत्न करने वाले उनसे कुचले भी जा सकते हैं। प्रवाह के साथ चलने हीं में कल्याण है। संभवत: एक दिन किनारे जा लगोगे।"

वह अपनी चारपाई पर वापिस चला गया। मैंने कुछ नहीं कहा। किन्तु मेरे मस्तिष्क में उथल पुथल मची थी। भला क्या है, बुरा क्या है असत्य क्या है, इस विषय में मेरी अब तक जो धारणाएं और मान्यताएं रहीं थीं वे रोजिस्की से वाद-विवाद करने के कारण ढीली सी पड़ गई थीं। अब मेरी निर्णयशक्ति और उसके आधार हिलने लगे थे। अब तक मेरा यह जो विश्वास रहा था कि मैं न्याय के पथ पर हूँ उसमें भी दुर्बलता सी आगई थी। यद्यपि मैं यह भी अनुभव कर रहा था कि इससे अधिक भयंकर बात और कोई नहीं हो सकती। रोजिस्की ने बूंद-बूंद करके मेरे मस्तिष्क में जो विष डाला था उसका सदा ही मैं विरोध करता रहा था किन्तु कई सप्ताह तक ऐसा अनुभव होते रहने के कारण मेरी निश्चयशक्ति उसके वाग्चातुर्य के समक्ष दुर्बल पड़ती जा रही थी।

उधर मैंने देखा कि अब पूछताछ के क्रम में भी काफी कठोरता आगई है। रायबनिकोफ उतावला और असन्तुष्ट दिखाई देने लगा था।

अब वह यदि कोई बात कहता था और मैं उसका प्रतिवाद करने का यत्न करता था तो वह बिगड़ जाया करता था। वह मेरी बात भी न सुनता था। चिल्लाना और कोसना उसका दैनिक कार्यक्रम बनगया था। अब मैं उसकी उपस्थिति में बैठ भी न सकता था। हर प्रकार से वह मेरे आत्मसम्मान को घायल करने पर तुला हुआ था। रोजिंस्की से वाद-विवाद करने के कुछ दिन पश्चात् मैंने क्या देखा कि ५ मार्च सन् १९३३ ई० को मैंने "जर्मन श्रमिक क्लब" में जो भाषण दिया था उसके विषय में अनेक प्रश्न किये जाने लगे हैं।

कुछ कागजों की ओर संकेत करते हुये उसने कहा कि, "हमारे पास यह रिपोर्ट हैं। इसके अनुसार तुमनें पार्टी और रूस की सरकार के विरुद्ध भाषण किया था। क्या तुम इससे इनकार करते हो ?"

"नहीं।"

"किसका पक्ष समर्थन करने के लिये तुमनें वह भाषण दिया था ?"

"क्लब के अधिकारियों ने मुझसे राजनीतिक स्थिति पर विचार प्रकट करने के लिए कहा था।"

"जान बूझ कर मूर्ख बनने से क्या लाभ ? मैं यह पूछना चाहता हूँ कि किस क्रान्ति विरोधी संस्था ने तुमको वह भाषण देने के लिये वहां भेजा था ?"

"किसी ने नहीं।"

मेरे उत्तर के प्रति रायजनिकोफ की जो प्रतिक्रिया हुई वह अत्यन्त अशिष्ट और असभ्य थी। अन्त में वह जोरसे चीख चीख कर कहने लगा, "मेरे सवाल का उत्तर देते हो या नहीं। तुम यह न समझो कि तुम अनन्त

काल तक हमारे साथ इसी प्रकार का व्यवहार करते रहोगे और हम कुछ भी न करेंगे। या तो तुरन्त उत्तर दो अन्यथा मैं तुरन्त ही तुमको दण्ड वाली कोठरी में बन्द करा दूंगा। तुमसे भी अधिक ढीठ व्यक्ति मेरे हाथ से निकल चुके हैं।"

मैं चुप बैठा रहा। यह देख कर उसने मुझको आज्ञा दी कि मैं दीवार की तरफ अपना मुंह करके खड़ा हो जाऊँ।

मैं दीवार की ओर मुंह करके खड़ा हो गया। मैं जब उस स्थिति में खड़ा था तब वह क्या कर रहा था यह ठीक ठीक नहीं कह सकता किन्तु मुझे ऐसा मालूम हो रहा था कि वह कुछ लिख रहा है। लगभग बीस मिनट तक मुझको उस स्थिति में रखने के बाद उसने मुझको आज्ञा दी कि अब मैं मुड़कर उसकी तरफ देखूं।

मैं मुड़ गया और उसने मेरे सामने एक कागज रख दिया और हस्ताक्षर करने को कहा। मैंने उसको पढ़ा, उसका आशय यह था कि मैंने जर्मन श्रमिक क्लब में जो भाषण दिया था वह क्रान्ति और सोवियट सरकार के विरुद्ध आन्दोलन को प्रोत्साहित करने के लिए दिया गया था और मैंने यह कार्य एक क्रान्ति विरोधी संस्था के आदेश पर किया था। मैंने कागज उसको वापस कर दिया और हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। उसने कागज के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और टुकड़ों को मेरे मुंह पर फेंक दिया। उस का चेहरा गुस्से से लाल हो गया था और वह चीख चीख कर मुझको गालियाँ और धमकी दे रहा था; "उस कागज पर तो क्या उससे भी अधिक खराब कागजों पर हस्ताक्षर करने पड़ेंगे तुमको तभी कहीं तुम अपना पिंड छुड़ा पाओगे। तुम खयाल करते होगे कि छोटी छोटी बातों में भी बड़ी बड़ी कठिनाइयां पैदा कर दोगे, किन्तु शीघ्र ही वह समय आने वाला है जब तुम घुटने टेक कर हमसे प्रार्थना करोगे

और चाहोगे कि हम तुम्हारा इकबालनामा स्वीकार कर लें। मेरे सामने से चले जाओ। मुझे तुम्हारी सूरत देख कर घृणा होती है।"

मैं उसके दफ्तर से बाहर निकला; मेरा सिर घूम रहा था, मैं समझा कि उसका आज का भयंकर उद्गार उसकी थकान का कारण था। अभी तक मैं यह नहीं जान सका था कि खुफिया पुलिस के सभी अधिकारियों को इस प्रकार की चालें सिखाई जाती हैं। कभी वे पागलों की तरह जोर जोर से बड़बड़ाते हैं तो कभी तीव्र आवेश का अभिनय करते हैं तो कभी आपके मित्र होने का ढोंग रचने लगते हैं।

जब मैंने अपनी कोठरी में प्रवेश किया तो रोजिस्की ने बड़े मित्रता-पूर्वक ढंग से मेरा स्वागत किया।

तनिक ममतापूर्ण धिक्कार के साथ मुझको सम्बोधित करते हुए उसने कहा, "ऐसा मालूम होता है कि तुम लकीर के फकीर ही बने रहोगे। जो कुछ तुम कर रहे हो वह न केवल पार्टी ही के विरुद्ध है वरन् बुद्धि के विरुद्ध भी है। अधिकारी तुमसे जो बात स्वीकार कराना चाहते हैं वह भी बड़े महत्व का रहस्य है क्या? वे तुमसे यही तो चाहते हैं कि तुम यह स्वीकार करलो कि तुमने सोवियट सरकार के विरुद्ध आन्दोलन किया था और इंस्टीट्यूट में जो युद्ध सम्बन्धी कार्य हो रहा है उसमें विघ्न डाला था। यदि हम में से कोई इतना सस्ता छूटता तो हमारे हर्ष की कोई सीमा न रहती।"

"सम्भवतः तुम्हारी बात ठीक है किन्तु मैंने कोई सोवियट-विरोधी कार्य किया ही नहीं तो मैं यह कैसे स्वीकार करलूँ कि मैं इंस्टीट्यूट के गुप्त कार्य में विघ्न डालता रहा हूँ। इसके प्रतिकूल मैंने भरसक यही

प्रयत्न किया है कि इंस्टीट्यूट का काम आगे बढ़े। मैं किसी झूठे वक्तव्य पर दस्तखत करने को तैयार नहीं हूँ।"

"तुम तो यह जानते ही हो कि इस विषय में मेरे विचार भिन्न हैं किन्तु अब मैं उस विषय पर कुछ न कहूँगा। किन्तु तुम्हारे अपने ही हित को दृष्टि में रखते हुए मैं यह सलाह अवश्य दूँगा कि तुम्हारा वर्तमान मार्ग श्रेयस्कर नहीं है। यह भी न भूलना कि ऐसी बातों में मेरा अनुभव तुम्हारे अनुभव की अपेक्षा कहीं अधिक विस्तृत है। यदि तुमने इस समय छोटे मोटे आरोपों को स्वीकार कर लिया और पूछताछ को समाप्त हो जाने दिया तो आसानी ही से काम बन जायगा। इसके प्रतिकूल यदि तुम अपनी जिद्द पर डटे रहे तो स्थिति अवश्य भयंकर हो जायगी। अधिकारियों की मांग बढ़ती ही जायगी; अभी तुम पर जासूसी और तोड़ फोड़ का आरोप है; देर होने पर देशद्रोह के अपराधी ठहरा लिए जाओगे। ऐसी स्थिति उत्पन्न न होने दो, बुद्धिमानी इसी में है।"

"वे जो चाहें मांग कर सकते है, मैं उनको उससे कैसे रोक सकता हूँ। किन्तु मेरी आत्मा मुझको झूठे वक्तव्यों पर हस्ताक्षर करने से रोकती है।"

"कठिनाई यह है कि तुम्हारे मन में सम्मान की बड़ी अतिरंजित भावना है। इसका अर्थ यह है कि तुम अभी तक अपने बचपन से छुटकारा नहीं पा सके हो। वे जो चाहें तुमसे करा सकते हैं। उनके पास साधनों की कमी नहीं है। तुम से भी अधिक शक्तिशाली व्यक्ति उनके हाथ में पड़ने पर आत्म-समर्पण करते देखे गए हैं।"

"तुम्हारा मतलब है कि वे अभियुक्तों को पीटते हैं, सताते हैं और यंत्रणा देते हैं?"

"इस प्रकार की बातें करने से लाभ ? बन्दियों के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जा सकता, कानून इसके विरुद्ध है किन्तु बन्दियों का मत परिवर्तन करने के और भी साधन हैं।"

"उदाहरण के लिए ?"

"सबसे आसान और प्रचलित साधन तो यह है कि तुमको एक सप्ताह तक या उससे अधिक तक भी सोने ही न दिया जाय, और या तुमको दण्ड वाली कोठरी नम्बर ३ में बन्द कर दिया जाय।"

"कोठरी नम्बर ३ क्या है ?"

"एक छोटी-सी कोठरी है जिसमें हर समय चूहे-इधर से उधर दौड़ते रहते हैं। वे तुम्हारे सब कपड़े उतार लेंगे और एक लकड़ी तुम्हारे हाथ में सम्भाल देंगे। तुम लेट न सकोगे। क्योंकि जैसे ही तुम लेटना चाहोगे चूहे तुम्हारे ऊपर चढ़ जायेंगे। तब हर समय चूहों को भगाते रहने में ही तुमको लगा रहना होगा।"

"भगवान के वास्ते सच तो बताइए कि क्या सोवियट राज्य में ऐसा भी होता है ! इंसानों के साथ इस प्रकार का बर्ताव नहीं होना चाहिये।"

"जो लोग सोवियट सरकार का विरोध करते हैं वे खुफ़िया पुलिस की नज़र में इंसान रहते ही नहीं। वह उनको शत्रु समझती है जिनको नष्ट भ्रष्ट करना वह अपना कर्तव्य मानती है।"

"किन्तु क्या केवल इसलिये कि मैं झूठ बोलने को तैयार नहीं हूँ मैं सोवियट राज्य का शत्रु हो गया ? झूठ से न तो मेरा और न सोवियट राज्य का ही कोई हित सम्पादित हो सकता है।"

"यह निर्णय करने के लिए कि किस बात में सोवियट राज्य का हित है और किस में नहीं खुफ़िया पुलिस नियुक्त की गई है। तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम उसका समर्थन करो। पार्टी के अच्छे सदस्यों को सोवियट राज्य इस समय जिस युद्ध में संलग्न हैं इंस्पैक्टर को उसका सेनानी मानना चाहिए और उसकी आज्ञा का अनुकरण करना चाहिए। यह सोच कर अपना कर्तव्य निर्धारित कर लो।"

"रोजिस्की तुम्हारा कथन सरासर निरर्थक है। उदाहरण के लिये सोवियट अधिकारी यह कैसे पता लगा सकते हैं कि मैं आतंकवादी हूँ या किसी विदेशी सरकार का जासूस या क्रान्ति विरोधी कार्यकर्त्ता या इन सब का एक पुंज ? मेरे वक्तव्य से तनिक भी यह आभास नहीं हो सकता कि मामला बनावटी है।"

"यह सोचना तुम्हारा काम नहीं है। महीनों तक तन्हाई कोठरी में बन्द रहने के पश्चात् तुम्हारी बुद्धि क्षीण पड़ गई है जिससे तुम स्थिति को ठीक ठीक समझ नहीं पा रहे हो। अभी तक हम तुम्हारे सिर्फ दो साथी हैं। पर जब तुम यहां से बदल कर खोलोदनाया गोरा के कारागार में भेजे जाओगे तो तुमको वहां तुम्हारे जैसे सैकड़ों और हज़ारों व्यक्ति मिलेंगे। वहां तुमको पता लगेगा कि तुम्हारी तरह वे लोग भी आरम्भ में हस्ताक्षर करने से आना कानी करते रहे थे पर अन्त में उन सब को ही आत्म-समर्पण करना पड़ा था। बहुत थोड़े ही ऐंसे व्यक्ति होते हैं जो एक मास से अधिक खड़े रह सकते हैं। इसके पश्चात् भी यदि कोई नहीं मानता तो फिर उसका नामोनिशान भी नहीं मिलता। फिर कोई तुम्हारी तरह से इस सबका मतलब पूछने का साहस नहीं करता। अब भी मान जाओ। यह सब हमारा काम नहीं है। हम सबको अपने आप को सोवियट सरकार के हाथ में सौंप देना चाहिए और यह

मान लेना चाहिए कि इसी में हमारा कल्याण है। तुम पर और मुझ पर जो बीत रही है ऐसी ही सोवियट रूस के लाखों नागरिकों पर बीत चुकी है। इस प्रकार बलिवेदी पर चढ़ने वाले लोगों में बहुत से ऐसे स्त्री पुरुष भी हैं जिन्होंने क्रान्ति के लिए, समाजवाद के लिए, तुम्हारी मेरी अपेक्षा कहीं अधिक काम किया था। इन कष्टभोगियों में ऐसे व्यक्ति भी हैं जिन्होंने गृह-युद्ध के दिनों में अपने प्राणों की बाजी लगा कर क्रान्ति की रक्षा की थी या क्रान्ति के पहले ज़ार के विरुद्ध संघर्ष करते रहने में अपनी जान जोखिम में डाली थी। इनमें वे कामरेड भी हैं जिन्होंने गृह-युद्ध के दिनों में क्रान्ति की अनन्य सेवा करके यूरोप और एशिया में बड़ा नाम कमाया था।"

उसके शब्द सुनकर मेरा मन उदास होने लगा था। मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि मैं कठोर हृदय का व्यक्ति हूँ; तिस पर भी मैं यह कह सकता हूँ कि मैं कमज़ोर तबीयत का भी नहीं हूँ। पर यदि यह बात सच थी कि क्रान्तिकारियों में जो कभी सर्व-प्रथम श्रेणी में रह चुके थे, वे ही आत्म-समर्पण करने को बाध्य हो गये, तो मुझसे साधारण व्यक्ति के मुकाबला करते रहने की क्या सम्भावना हो सकती थी! जो कुछ रोज़ेंस्की ने कहा था सच ही मालूम होता था। क्योंकि मुरालोफ़ और आचकाविस्की जैसे व्यक्ति भी जो अपनी शारीरिक शक्ति के लिये इतने प्रख्यात थे पुलिस के हथकंडों के सामने देर तक नहीं ठहरे रह सके थे।

पूछताछ का क्रम अब और भी कठोरतर होता जा रहा था। रायज़निकोफ़ ने प्रायः सभी प्रकार के साधनों का प्रयोग आरम्भ कर दिया था। दिन रात में मुझको अब छः छः बार पूछताछ के लिए बुलाया जाने लगा था। जब वह थक जाता तो मुझको अपने एक सहकारी को सौंप जाया करता था तब मेरी स्थिति और भी खराब हो जाया करती

"एलेग्ज़ेंडर सेमोनोविच, जो कुछ तुम कर रहे हो वह अपराध से भी अधिक भयंकर बात है। तुम आत्महत्या करने पर तुले हुये प्रतीत होते हो ! तुमको अब भी यह बात समझ लेनी चाहिये कि हमारे पास तुम्हारे विरुद्ध इतने प्रमाण हैं कि तुम बच नहीं सकते। तुम्हारे विरुद्ध जो प्रमाण हैं उनका अधिकांश भाग स्पष्ट है; एक दो बातें ही ऐसी हैं जिनका हम स्पष्टीकरण ढूंढ रहे हैं। उदाहरण के लिये हम यह स्पष्ट रूप से जान लेना चाहते हैं कि खारकोफ़ के कल कारखानों में तुमने क्या पथ-भ्रामक कार्यवाही की -"

"खारकोफ के काखानों में पथ-भ्रामक कार्यवाही ?" मैंने भय और विस्मय के साथ पूछा, "इससे आपका क्या तात्पर्य है ?"

"तुम्हारे विरुद्ध यह अभियोग है कि खारकोफ के बड़े-बड़े कल कारखानों में तुमने विदेशी श्रमिकों को पथ भ्रष्ट किया और उनको बिजली घरों और अन्य आवश्यक अंगों को तोड़-फोड़ने के लिए संगठित किया। अभी तक हमने इस अभियोग की विस्तार पूर्वक जांच नहीं की है। वास्तव में अभी तक हमको निर्विवाद रूप से यह भी निश्चय नहीं हो सका है कि यह आरोप सत्य है; किन्तु हम अब तक यहाँ जिस प्रकार का तुम्हारा व्यवहार देखते रहे हैं उससे सन्देह अवश्य होता है।"

"मेरे यहां के व्यवहार और मेरे ऊपर लगाए गए आरोप में परस्पर क्या सम्बन्ध है ?"

"यही कि तुम वास्तविकता से इनकार करते रहे हो। इससे यह स्पष्ट होता है कि तुम सिद्धान्त रूप से झूठे और राज्य के नृशंस शत्रु हो। इसका परिणाम यह हुआ है कि हम तुम पर लगाए जाने वाले प्रत्येक आरोप को सत्य मान लेना चाहते हैं, यहां तक कि उन आरोपों

को भी जो अभी तक निर्विवाद रूप से सिद्ध नहीं हो सके हैं। अब भी तुम मेरा मतलब समझे या नहीं ?"

उसका मतलब तो स्पष्ट ही होता जा रहा था।

मैंने उत्तर दिया, "फिर मैं कर ही क्या सकता हूँ। मैंने सोवियट राज्य के विरुद्ध कभी कोई कार्य नहीं किया इसलिए आप मेरे विरुद्ध कुछ भी सिद्ध नहीं कर सकते।"

मैं सत्य और त्याग के लिए लड़ रहा था ऐसी बात न थी। यदि मैं ऐसा करना भी चाहता तो उसके लिए अवसर ही कहां था। मैं तो केवल अपनी स्वतन्त्रता और सम्भवत: जीवन की रक्षा के लिए ही चिन्तित था। खुफिया पुलिस द्वारा सीमित एक क्षेत्र में रह कर ही मैं अपने इस संघर्ष को चलाता रह सकता था। रोजिस्की ने एक ओर मेरे मन को भीरु बनाने के लिए जो कार्यवाही जारी कर रखी थी और दूसरी ओर मेरी आत्म-रक्षा के लिए जो उत्तरोत्तर सीमित क्षेत्र रह गया था उसके कारण मेरी आत्मा में अब एक विचित्र दौर्बल्य का अनुभव होने लगा था, यद्यपि शारीरिक यंत्रणाओं का तो अभी श्रीगणेश ही हुआ था।

आज जब मैं अपनी कोठरी में वापस गया तो मैंने अपने आपको अपने भविष्य के विषय में नितान्त उदासीन पाया। मैं सोचने लगा कि किस प्रकार के अपराध को स्वीकार कर लूं कि मुझको इस अनन्त कष्ट से छुटकारा मिल जाय।

मन हार मान रहा था। रोजिस्की के धक्का देने भर की देर थी। अब जब मैं उन सब बातों को याद करता हूँ तो मुझे इस में तनिक भी संदेह नहीं रहता कि क्षण भर के लिए भी मैं रोजिस्की की इस नीति

को कि पार्टी के लिए झूठ बोलना और आत्म समर्पण करना आवश्यक है स्वीकार नहीं कर पाया था। सत्य तो यह है कि मैं कायर था, और कमजोर पड़ गया था। एक बात में रोजिंस्की ठीक था। जितना ही मैंने विरोध किया तो जैसा कि उसने कहा था, उतनी ही, पुलिस की मांग बढ़ती गई और उसके द्वारा लगाए गए आरोप अधिकाधिक भयंकर होते गए। एक समय केवल रूस विरोधी आन्दोलन करने के आरोप ही को अपराध मान लेता तो सम्भवतः काम चल सकता था। कुछ दिन बाद रायजनिकोफ सोवियट विरोधी आन्दोलन के साथ-साथ कल कारखानों में तोड़-फोड़ को भी स्वीकार करवाना चाहता था। जब मैं वह भी करने को तैयार न हुआ तो मुझ पर किसी बाहर के देश की ओर से जासूसी करने और श्रमिकों को कल कारखानों को तोड़ने के लिए पथभ्रष्ट करने का आरोप लगाया गया। यह सारा क्रम रोजिंस्की मुझको बता चुका था। पर अब मुझ से यह कैसे हो सकता था कि मैं अपने आपको जर्मनी के नात्सियों का गुरगा स्वीकार कर लूं? इसकी कल्पना ही से मेरा मन ऊब गया। मैंने सोचा इसके अतिरिक्त और कुछ भी करना पड़े वही मेरे लिए रुचिकर होगा सोवियट शक्ति के विरुद्ध आन्दोलन करना बेकार है। सोवियट रूस के बाहर किसी को भी यह समझने में कठिनाई न होगी कि आन्दोलन सोवियट रूस के विरुद्ध नहीं बल्कि स्टालिन के जुल्म के विरुद्ध रहा होगा। रही आतंकवाद के आरोप की बात तो सोवियट रूस में और सोवियट रूस के बाहर ऐसे बहुत से व्यक्ति हैं जो यह समाचार सुन कर खुश होंगे कि आखिर आततायी के विरुद्ध भी हाथ उठाने वाला कोई व्यक्ति मौजूद है। मैं इन आरोपों को यदि स्वीकार कर लूं तो मेरे सम्मान में कोई कमी नहीं आयेगी बल्कि हो सकता है कि सस्ते दामों में ही मुझको मानवी स्वतन्त्रता की लड़ाई में खेत रहे शहीद की ख्याति प्राप्त हो जाय। लेकिन किसी विदेशी राज्य की ओर से जासूसी करने के

आरोप को स्वीकार कर लेना अपने सम्मान और आत्मा को ठेस पहुँचाना है। श्रमिकों को पथ भ्रष्ट करके उत्पादन में विघ्न डालने का प्रयत्न काने का जो आरोप है यदि उसको मैं स्वीकार करू तो लोग यह समझेंगे कि मैं सोवियट रूस की आत्मरक्षा की योजनाओं को ऐसे समय में अस्त-व्यस्त करने में लगा हुआ था जब कि फासीस्ट उस पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहे थे। इससे बड़ा पाप और क्या हो सकता है? ऐसे कल्पित पाप को स्वीकार कर के मैं अपना मुंह काला नहीं करना चाहता था।

अब मैं यह भी सोचने लगा कि कोई ऐसी ही तरकीब क्यों न निकाली जाय कि रायज्ञनिकोफ़ से ही समझौता हो जाय। वह जिस तरह के वक्तव्यों पर मुझसे हस्ताक्षर कराने का प्रयत्न करता रहा है उनमें से कुछ को मैं अपना लूं। उदाहरण के लिए यदि मैं उससे कहूँ कि तुम्हारी यह बात सच है कि इंस्टीट्यूट में गुटबन्दी थी पर खानों के क्षेत्र में नहीं तो इससे मुझको और मेरे सम्मान को कोई बड़ी हानि नहीं होगी। और मैं यह भी स्वीकार करलूं तो क्या हर्ज है कि जर्मन श्रमिक क्लब में जो मैंने भाषण दिया था उसका अभिप्राय वास्तव में रूस विरोधी आन्दोलन को प्रोत्साहन देना था। सम्भव है कि वे इन बातों से सन्तुष्ट हो जाये। यह तो हो ही नहीं सकता कि वे कभी यह मान लेंगे कि वे किसी निर्दोष व्यक्ति को ही गिरफ्तार कर लाए थे। इसका मतलब यह है कि यदि मैं अपने आपको निर्दोष मनवाने का आग्रह करता ही गया तो मैं कभी उनके चंगुल से न छूट पाऊँगा। छोटी छोटी बातों में उनका ही कहना मान लेने में ही मेरी भलाई है, ऐसा मैं मेरा विचार बनने लगा।

एक दिन पूछताछ के सिलसिले में रायज्ञनिकोफ़ ने एक ऐसी बात कहदी जिससे मेरा मन बड़ा आशंकित होगया।

"हमको तुम्हारे विषय में नित्य नई जानकारी प्राप्त होती जा रही है। यदि तुम हठ न करते तो स्पष्ट रूप से कुछ बातों को स्वीकार कर लेते। आखिर हमलोग पशु तो हैं नहीं; हम भी तो अन्य मानव प्राणियों की तरह हृदय रखते है। यदि तुम स्पष्टता से काम लेते तो कई नई बातें जो इस समय भारी रहस्य बनती जा रही हैं, मिट जातीं। इस समय जो स्थिति है, उससे तो हम तुम्हारे विरुद्ध प्रत्येक आरोप को सच मानने को विवश होते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, हमारे पास तुम्हारे विषय में अब तक अन्तिम सूचना यह है कि तुम किसी विदेशी राज्य की ओर से इस देश में जासूसी करते रहे हो। यकीन करो, एलेग्जेंडर सेमोनोविच हमारे पास अब बहुत समय नहीं रह गया है। तुमको या तो शीघ्र ही हमारे साथ सहयोग करना होगा या अपने भविष्य और जीवन से हाथ धोने पड़ेंगे। तुमने देर की तो हम तुम्हारा मामला "ट्रोइका"* के हवाले कर देंगे। तब बिना कुछ अधिक पूछताछ किये ही तुमको प्राणदण्ड दे दिया जायगा, और २४ घंटे के अन्दर ही तुमको गोली मार दी जायगी।"

मृत्यु सभी के लिये भयानक चीज़ है, मेरे लिए भी थी; पर उस सयय मैं उससे इतना नहीं घबड़ाता था। मौत का डर मुझको इसके बाद होने लगा था। पर मुझको किसी विदेशी सरकार का जासूस होने के आरोप में गोली से उड़ाया जायगा यह कल्पना करके मैं थर्रा उठा।

इस समय मेरी सबसे बड़ी परेशानी यह थी कि मैं नहीं समझ पा रहा था कि ये लोग मुझसे किस अपराध का इकबाल करवाना चाहते हैं और किसका नहीं। क्या ये मुझको विरोधी दल का सदस्य कह कर बदनाम करना चाहेंगे या देशद्रोही बताकर मिटाना चाहेंगे? क्या ये लोग एक निर्दोष व्यक्ति से झूठे आरोपों को स्वीकार करवाकर संतुष्ट होना

---

* रूसी भाषा में इस शब्द का अर्थ तीन घोड़ों की गाड़ी है। किन्तु इस प्रसंग में इसका अर्थ तीन सैनिक अधिकारियों की फौजी अदालत है।

चाहते हैं या मुझको ऐसा व्यक्ति समझ कर जिसके विषय में कोई सन्देह हो स्थिति का स्पष्टीकरण मात्र करना चाहते हैं ? ऐसे प्रश्न थे जो मेरे मस्तिष्क में उठते जा रहे थे, और जिनका मैं उत्तर नहीं ढूंढ पा रहा था।

अब मैं अपना पुराना आत्म-विश्वास खोता जा रहा था। रोजिंस्की के कुप्रभाव और पुलिस के दबाव के कारण मेरी आत्म-शक्ति गिरती जा रही थी।। पूछताछ से छूटनें के बाद दिन रात में दो चार घंटे का जो समय मिलता था उसमें भी मैं न सो पाता था—शायद ही कोई रात गई हो जब मैं प्रायः सारे ही समय उनके प्रश्नों की झड़ी के नीचे न बैठा रहा हूँ। दिन में तो मुझको लेटे रहने की आज्ञा थी ही नहीं। मैं चारपाई पर बैठ सकता था किन्तु दीवार मे कमर लगा कर नहीं। यदि कभी ऊँघ जाता तो तुरन्त ही पुलिस का बुलावा आ जाता था। वार्डर को हिदायत थी कि जब भी मेरी आँख लगें तभी मुझको उठा कर पूछताछ के लिए पेश कर दिया जाय। वहाँ पहुँच कर मुझको बहुत देर तक रायज़निकोफ़ के दफ्तर के साथ वाले छोटे कमरे में रखा जाता था तब कहीं मुझको प्रश्नोत्तर के लिए बुलाया जाता था।

रायजनिकोफ़ को प्रकटतः कोई और अधिक ऊँचा पद मिल गया था। अब उसको एक नया दफ्तर मिल गया था जिसके साथ में एक छोटा कमरा लगा हुआ था। इस छोटे कमरे में शालिट और वाइज़वैंड नाम के दो व्यक्ति उसके सहायकों के रूप में काम करते थे। अब वाद विवाद प्रायः समाप्त हो चुका था। कभी कभी वे मुझ पर चिल्ला उठा करते थे और चिल्लाते ही रहते थे यहां तक कि मेरा सिर चक्कर खाने लगता था। मेरे उत्तर भी प्रायः "हाँ" और "नहीं" में हुआ करते थे—"हाँ" से अधिक "नहीं" में। अब मैंने किसी बात को समझने का यत्न करना छोड़ दिया था। मुझको अब यह कल्पना करके डर लगने लगता था कि शायद मैं यह

सब सहन करता न रह सकूं। साथ ही मन में यह भी आशंका बनी हुई थी कि अब इनकी माँग नित्यप्रति बढ़ती ही जायगी।

(५)

एक सप्ताह तक मैं किसी न किसी प्रकार अपनी स्थिति को बनाए रह सका। अब ये लोग मुझको अपनी कोठरी में भी वापस नहीं जाने देते थे। पूछताछ के बीच में ये लोग कभी कभी मुझको नीचे तहखाने में या गुसलखाने में ले जाया करते थे। जो लोग कभी जेल में नहीं रहे हैं वे कभी यह नहीं समझ सकते कि किस प्रकार कैदी को अपनी कोठरी ही में घर का सा आकर्षण दिखाई देने लगता है। जब कभी उसको कोठरी से अलग होना पड़ता है तो उसको वैसा ही दुख हुआ करता है जैसा कि किसी को अपना घर छोड़ने में। एक कोठरी छुड़ाकर दूसरी में ले जाये जाने की कल्पना मात्र ही बन्दी के लिए नितान्त अरुचिकर होती है। आगे चल कर मुझको ऐसी कोठरी में भी रहना पड़ा जो खचाखच भरी होती थी पर उसमे भी घर जैसा आकर्षण दिखाई देने लगा था। अपनी कोठरी से पूछताछ के लिए बन्दी को बाहर निकाले जाने और उसको वहाँ वापस न जाने देने में जिस कष्ट का अनुभव होता है उसकी साधारण व्यक्ति को कल्पना तक भी नहीं हो सकती। ऐसे भी बन्दी मैंने देखे हैं जो रात भर ठंडे फर्श पर एक दूसरे से सटे हुए पड़े रहते थे और जिनको पाँव तक फैलाने की जगह न थी पर वे भी अपनी कोठरी को "मेरी जगह" और "मेरा घर" कह कर पुकारते थे और यदि कोई उनको वहाँ से हटाने की बात करता था तो उनका हृदय निराशा से भर जाया करता था और उनके चेहरे पर उदासी छा जाया करती थी।

एक सप्ताह के 'वनवास' के पश्चात् उन्होंने मुझको अपनी कोठरी में वापस जाने दिया। यह रविवार की बात थी। और रविवार को

साधारणत: पूछताछ बन्द रहा करती थी। जब मैं अपनी कोठरी में पहुँचा तो रोज़िस्की के दर्शन हुए; मैं उस समय कैसा दिखाई दूंगा इसका मुझको पहले ही से कुछ आभास था। पर मेरी आकृति को देखकर वह कुछ सहम सा गया। यहाँ तक कि डेनिन ने भी आज मुझको अपनी सहानुभूति का पात्र समझा। जितने दिन मैं गैरहाज़िर रहा था उतने दिन मेरा राशन यथा पूर्व आता रहा था और इन लोगों ने मेरे लिए कुछ रोटी रख छोड़ी थी। किन्तु मुझको भूख ही कहां थी ? मैं कपड़े पहने ही अपनी चारपाई पर पड़ रहा और सो गया। यह वार्डर की दयालुता थी कि उस दिन उसने मुझको नहीं जगाया।

किस प्रकार इंच इंच करके मैं पतन के गर्त में गिरा वह सारी प्रक्रिया मेरे हृदय पर आज तक अंकित है। आरम्भ में मैं इंस्पैक्टर से समझौता करना चाहता था किन्तु अपने ईमान और सम्मान पर आंच न आने देने की जो आदत पड़ गई थी उसके कारण अर्से तक ऐसा न कर सका। मैं अब इस बात की खोज में था कि मुझको अपनी दुर्बलता का कोई मनोवैज्ञानिक कारण मिल जाय; रोजिस्की की कृपा से वह भी मिल गया। उसने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर देने को आध्यात्मिक दुर्बलता नहीं बल्कि पार्टी के प्रति अनुशासन-प्रेम बताया। एक बार जब मैं रोजिस्की द्वारा परिभाषित कर्तव्य, अनुशासन और क्रान्ति के प्रति श्रद्धा को स्वीकार कर चुका तो अब एक मात्र समस्या यही रह गई थी कि अपनी दुर्बलता को दुर्बलता न मान कर किसी मनोवैज्ञानिक सत्य के रूप में स्वीकर करलूं। वास्तव में बात इतनी सी थी कि मैं घबड़ा गया था और स्थिति का सामना करने का सामर्थ्य मुझ में न रह गया था। रोज़िस्की की कर्तव्य और वफ़ादारी की परिभाषा ने मानो मेरी भड़की हुई धमनियों को सहला दिया यद्यपि मैं अपने हृदय में यह बात भली भाँति जानता था कि इस प्रकार का तर्क निरी आत्मप्रपंचना है। संभवत:

ऐसी ही कोई प्रक्रिया होती है जिसका सहारा लेकर बहुत से अनीश्वर-वादी अपने नैतिक बल के गिर जाने के बाद किसी मठ में प्रवेश कर बैठते हैं। संक्षेप में बात यह है कि मैंने आत्मसमर्पण करने का निश्चय कर लिया।

अगली बार जब मुझको पूछताछ के लिए बुलाया गया तो मैंने जाते ही कहना शुरू किया, "इंस्पैक्टर साहब, यदि मेरे ऐसा करने से वास्तव में क्रान्ति की सेवा होती है तो आप जो कुछ भी कहें मैं करने को तैयार हूँ। कहिए, किस वक्तव्य पर आप हस्ताक्षर कराना चाहते हैं।"

किन्तु अब मुझको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रायजनिकोफ़ ने मेरी बात सुनकर ऐसा चेहरा बना लिया मानो कि वह मेरा मतलब ही न समझा हो।

'वाइजवर्ग, मैं तुम्हारा आशय समझा नहीं।"

"मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आप कुछ भी लिख लीजिये मैं उसी पर हस्ताक्षर करने को तैयार हूँ।"

"अच्छा तो अब तुम मुझको भड़काना चाहते हो। तुम समझते हो कि मैं बिना सच्ची बात जाने ही मान जाऊंगा? मुझको सत्य के अति-रिक्त और कुछ नहीं चाहिए, झूठ से मेरा काम नही चलेगा।"

उसकी यह बात सुनकर मैं स्तब्ध सा रह गया।

"किन्तु इंस्पैक्टर साहब," मैंने लड़खड़ाती ज़बान से कहना शुरू किया, "यदि वास्तव में आप सत्य ही की खोज में हैं तो सत्य तो यह है कि मैंने सोवियट सरकार के विरुद्ध कभी कोई कार्यवाही नहीं की।"

यह सुनकर वह फिर अपशब्दों का प्रयोग करने लगा। इस बार वह

इतना क्रोधित हुआ कि उसका मुंह मानो अपशब्दों और अश्लीलता का श्रोत बन गया था : "मैंने तो समझा था कि तुम्हारी अकल ठीक हो गई है, किन्तु मैं देखता हूँ कि तुम आत्म-समर्पण करने के स्थान में फ़ासीस्टों की भांति मुझको भड़काना चाहते हो।"

मुझको मेरी कोठरी में पहुँचाने की आज्ञा हुई और उसकी ओर से घोषणा की गई कि अब उसका धैर्य चरम सीमा पर पहुँच चुका है।

अपनी कोठरी में वापस जाकर जब मैंने रोज़िन्स्की को इस घटना का वृत्तान्त दिया तो वह भी मुझसे बिगड़ गया और कहने लगा, "तुम तो पागल हो गये हो, सेमोनोविच। रायज़निकोफ़ किस प्रकार तुम्हारे ऐसे वक्तव्य को स्वीकार कर सकता था जिसके बारे में तुम पहिले ही से यह कहते हो कि वह निरा झूठ है ? निस्सन्देह वे तुम से झूठ बुलवाना चाहते हैं किन्तु यह कोई ज़ोर से कहने की बात नहीं है । यह तो वे अपनी आत्मा को भी बताना नहीं चाहते कि वे झूठ बोलते या बुलवाते हैं। यदि कोई पुलिस अधिकारी कभी भूले भटके अपने मित्र या सहयोगी से भी यह स्वीकार करले कि उसने किसी से झूठा वक्तव्य ले लिया है तो अगले दिन प्रातःकाल ही वह गोली का शिकार हो सकता है। हैन्स एण्डरसन की वस्त्रहीन सम्राट् वाली कहानी तो मालूम ही है। उस कहानी में यद्यपि सम्राट् कोई वस्त्र पहने हुए नहीं होता उसके दरबारी उसको प्रसन्न करने के लिए न केवल यही कहते हैं कि सम्राट् वेशभूषा पहने हुए हैं बल्कि उसकी वेशभूषा की श्रेष्ठता की प्रशंसा भी करते नहीं अघाते। इस काल्पनिक वस्त्र-प्रशंसा में एक दरबारी दूसरे दरबारी को पीछे छोड़ने की कोशिश करता है। ऐसी ही बात इन पुलिस अधिकारियों की भी है। उन बेचारों को भी क्या दोष दें उनको अपनी ही जान की फिक्र है। तुमको न केवल अपने काल्पनिक अपराध ही को स्वीकार कर लेना चाहिए बल्कि स्वीकार करते समय यह भी दिखाना चाहिए कि तुमको

स्वयं उसकी सत्यता पर सन्देह नहीं है ताकि ये पुलिस अधिकारी अपने मन को बहला लें और यह मानने लगें कि वास्तव में इन्होंने सच्चा ही वक्तव्य प्राप्त किया है। नहीं तो यह सब सिरदर्दी किस लिए ?"

उसका तर्क बड़ा प्रभावशाली था पर मेरा मन उसके एक शब्द पर भी विश्वास नहीं करता था। दूसरे लोग मेरी इस कथा को सुनकर कैसे विश्वास करेंगे यह मैं स्वयं नहीं जानता। एक शक्तिशाली राष्ट्र की शासन पद्धति एक भयंकर और प्रकटतः निरर्थक झूठ के जाल में जकड़ी हुई कैसे हो सकती है, यह ऐसी पहेली है जिसका सुलझाना आसान नहीं था मेरे लिये।

मैं बहुत दुःखी था क्योंकि अपना नैतिक समर्पण करने के पश्चात् भी मुझको शान्ति प्राप्त नहीं हुई थी; किन्तु अब एक नई आशा मेरे हृदय में उठने लगी और मैं यह विश्वास सा करने लगा कि सम्भवतः ये लोग वास्तव में सत्य ही की खोज में हैं, और यह हो सकता है कि कभी न कभी किसी प्रकार इनको मेरे निर्दोष होने का विश्वास हो जायगा और मैं मुक्ति पा सकूंगा।

पूछताछ के लिए फिर रायज़निकोफ़ के दफ्तर में पहुँचा। रायज़निकोफ़ खड़ा हो गया।

"वाइज़बर्ग सीधे खड़े हो जाओ", मुझको आज्ञा हुई।

मैं खड़ा हो गया। उसने मेरी कुर्सी खींच ली और दरवाज़े की ओर तीन गज के फासले पर ले जा कर रख दी और मुझको आज्ञा दी कि मैं उस पर बैठ जाऊँ। "अब मैं तुमको तीन मिनट का समय देना चाहता हूँ," यह कहते हुए उसने बड़ी गम्भीर मुद्रा बना कर अपनी जेब से अपनी घड़ी निकाली।

"इन तीन मिनटों में तुमको अपने ही शब्दों में अपना अपराध स्वीकार करना होगा। तुम्हारे इस वक्तव्य के तैयार करने में हम कोई सहायता नहीं देंगे।"

मैं मन मसोस कर रह गया। मैं उसका आदेश नहीं मान सकता था। यदि वह मुझको किसी ऐसे वक्तव्य पर जो उसने स्वयं तैयार कर लिया होता हस्ताक्षर करने को कहता तो मेरी मनस्थिति ऐसी थी कि मैं हस्ताक्षर कर देता किन्तु पहले तो अपने सिर पर झूठ-मूठ आरोप थोपूं और फिर उसके समर्थन में स्वयं ही युक्तियाँ पाऊँ यह मुझसे नहीं हो सकता था। सैकिंड के बाद सैकिंड बीतते जा रहे थे, रायज़निकोफ़ अपनी घड़ी पर नजर जमाए बैठा था। तब बड़े गम्भीर स्वर में, मानों कि वह मुझको चेतावनी दे रहा हो, उसने कहा कि, "केवल पन्द्रह सैकिंड शेष हैं।"

"कामरेड रायज़निकोफ़," मैंने कहा, "यह निरा पागलपन है मैं सदा ही सोवियट राज्य का अचल समर्थक रहा हूँ। प्रत्येक ऐसे अवसर पर जब राज्य की ओर से कोई प्रगति होती दिखाई दी मैंने हृदय से उसका स्वागत किया है, तब किसलिये मैं इस राज्य की सेना के विरुद्ध षड़यन्त्र करता ? मेरे लिए और मेरे ही जैसे दूसरे व्यक्तियों के लिये लाल सेना विजयी क्रान्ति का प्रतीक रही है। मैं जब कभी सड़क में लाल सैनिकों को मार्च करते और गाते हुए देखता हूँ तो मेरा हृदय उत्साह से उछलने लगता है। आप मुझसे क्या कराना चाहते हैं ? मैं यह नहीं मान सकता कि आप वास्तव में यह विश्वास करते हैं कि मैंने इसी लालसेना के विरुद्ध षड़यन्त्र किया है।"

रायज़निकोफ़ खड़ा हो गया। उसने अपनी जेब से पिस्तौल निकाली और उसका सेफ्टी कैच खींच कर मेरी ओर बढ़ा; और बड़े भीषण

स्वर म कहने लगा; "तो अभी तक तुम यह नहीं समझे कि हमारे साथ बराबर मज़ाक करते रहना सम्भव नहीं है। तुम फासीस्टों के कुत्ते और विदेशियों द्वारा खरीदे गए देश द्रोही हो। बस अब इति हो चुकी। कल तुम्हारे साथ दूसरे प्रकार की भाषा में बातचीत होगी। तुम्हारे शरीर में कोई हड्डी बची न रहेगी।"

अब उसने मुझको मेरी कोठरी में वापस भेज दिया। कोठरी में पहुँच कर मैं अपनी चारपाई पर ऐसे गिर पड़ा मानों मेरे शरीर में जान नहीं है।

अगले दो सप्ताह में मेरे ऊपर जो कुछ बीती वह वर्णनानीत है। मेरा मस्तिष्क और हाथ पाँव जवाब दे गए थे। किसी भी बात में मन नहीं लगता था। किसी छोटी सी चीज़ को उठाने के लिए भी यदि मैं हाथ बढ़ाता था तो उसको अपनी पकड़ में लेने के लिए भारी प्रयत्न करना पड़ता था, जैसे कि मस्तिष्क और अवयवों में परस्पर कोई सम्बन्ध ही नहीं रह गया था। यदि मैं खड़ा होता था तो मेरे पाँव लड़खड़ाते थे और मुझको साथियों के कन्धे का सहारा लेना पड़ता था। जेल में देर तक रहने के पश्चात् प्राय: सभी बंदी 'सेक्स' सम्बन्धी विषयों पर असाधारण व्यवहार करने लगते हैं किन्तु मेरे मन में किसी प्रकार की 'सेक्स' भावना नहीं रह गई थी। मुझको यह पूरा-पूरा विश्वास हो गया था कि मुझ में पुंसत्व नाम की कोई चीज़ शेष नहीं रह गई है। यदि मैं कुछ खाता था या कभी सोता था तो भी कोई सांत्वना नहीं मिलती थी। जब मैं जगा होता था तो मेरा मन इधर उधर भटकने लगता था जैसे कि तर्क सदा के लिए मुझसे विदा ले गया हो। साधारण भाषा में जिसको अहं कहा जाता है और जो समस्त चेतना का केन्द्र माना जाता है वह पछाड़ खा चुका था। यह कहना गलत न होगा कि अब मेरा

अपना कोई व्यक्तित्व नहीं रह गया था; मैं मनोवैज्ञानिक पुंज न रह कर बिखरी हुई और परस्पर समन्वयहीन माँसपेशियों और हड्डियों क ढेर मात्र सा था। धारणा और निर्णय नाम के गुण मेरे शरीर से लुप्त हो गए थे।

धीरे धीरे मेरी शक्ति लौटने लगी यहाँ तक कि एक दिन जब कोठरी के अंदर गर्मी थी तो मुझको कुछ व्यायाम करने की भी सूझी। उस दिनसे मैं निरन्तर व्यायाम करने लगा।

मेरे नियमित रूप से व्यायाम प्रारम्भ करने के एक दिन पश्चात् जेल के अध्यक्ष निरीक्षण के लिये आए और उन्होंने मुझसे आनेक प्रश्न किए और मुझसे सम्बन्ध रखने वाली अन्य बातों को लिखा और मुझको अपना सामान बाँध लेने की आज्ञा दी। मैंने रोज़िस्की से पूछा कि इस सब का क्या मतलब है ?

"मेरे ख्याल में वे तुमको खोलोदनाया गोरा की साधारण जेल में भेज रहे हैं। तुम्हारे बन्दी जीवन का दूसरा चरण आरम्भ हो गया है। नमस्कार एलेग्ज़ेण्डर सेमोनोविच।"

ऊपर की मंजिल से नीचे पहुँचा तो मेरा सन्दूक तैयार रखा था और मुझको अकेले ही जेल की लारी में बैठा कर रवाना कर दिया गया। मेरे सामने की सीट पर खुफिया पुलिस का एक सशस्त्र पहरेदार बैठा था जिसकी जबान पर मानो ताला लगा हुआ था। मैंने उससे अनेक प्रश्न किए किन्तु उसने किसी का उत्तर नहीं दिया। लारी कोई दस मिनट तक चली होगी कि तब जैसा कि रोज़िस्की ने पहले ही कह दिया था मैंने अपने आपको खोलोदनाया गोरा के जेल द्वार पर खड़ा पाया।

खोलोदनाया गोरा खारकोफ़ नगर की सीमा पर स्थित थी। यह एक पुरानी जेल थी और जार ने बनवाई थी। हमारी लारी पहले एक

लोहे के दरवाजे में घुसी; उसके बाद मुझको गाड़ी से उतार लिया गया और एक पहरेदार के संरक्षण में अंदर ले जाया गया। जेल में मेरे लिए एक तेरह फीट लम्बी और छ: फीट चौड़ी कोठरी तैयार थी। मेरा खयाल है कि यह कोठरी नम्बर ३७ थी। ज़ार के राज्य में इसमें एक बन्दी रखा जाता था, अब तीन। एक दीवार के सहारे दो लोहे की चारपाइयां लगी थी जो सुबह होते ही उठाकर खड़ी कर दी जाती थीं। सामने की दीवार के सहारे एक चारपाई और थी। तीनों चारपाइयाँ जब बिछ जाती थीं तो उनके बीच में कोई एक फुट जगह रह जाती थी। खिड़की लगभग एक गज वर्ग की होगी और इतनी ऊँचाई पर थी कि बाहर देखने के लिए या तो मुझको उछल कर उसके सीखचों को पकड़ना पड़ता था या कुर्सी पर खड़ा होना पड़ता था। एक कोने में दो कुर्सियों के अलावा एक छोटी सी आल्मारी भी थी।

इस समय कोठरी में मैं अकेला ही था पर अब एकाकीपन से मुझे पहले जैसी घबड़ाहट नही होती थी। स्वास्थ्य मेरा सुधर रहा था और अब दिन में भी मुझको लेट जाने की आज्ञा थी जिससे वास्तव में मुझको बड़ी सहायता मिली। कुछ दिन के पश्चात् एक और बन्दी आ गया। मैं उसका नाम भूल गया हूँ किन्तु वह सोशल रिवोल्यूशनरी पार्टी का सदस्य रह चुका था।

कुछ दिन के पश्चात् एक दिन कोठरी का द्वार खुला और एक चिर परिचित व्यक्ति ने पदार्पण किया। यह प्रोफ़ेसर राशकोफ़ थे। सबसे पहिले मैं उनसे सन् १९३१ में मिला था। वह खारकोफ़ के हाई स्कूल में समाजशास्त्र के अतिरिक्त मार्क्सवाद और लेनिनवाद पढ़ाया करते थे और सन् १९१८ ई० से कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य थे, यद्यपि उससे पहले वह मैन्शेविक पार्टी के सदस्य हुआ करते थे। सम्भवत: यही कारण

था कि वह आज हमारे पास आ बैठे थे। हमने एक दूसरे का हृदय से अभिवादन किया।

राशकोफ़ के आगमन के कुछ दिन पश्चात् मुझको इस जेल में पहली बार पूछताछ के लिए निकाला गया पर अब मुझको जेल से लारी में बिठा कर खुफिया पुलिस के हैडक्वार्टर ले जाया गया। वहां पहुंचकर भी मुझको पूछताछ करने वाले अधिकारी के कमरे में एक दम नहीं ले जाया गया बल्कि पहले वहां के एक तहखाने की कोठरी में बंद किया गया। साधारणतः खोलोदनाया गोरा के बंदियों को शाम के सात या आठ बजे के दर्म्यान या उसके बाद में प्रश्नोत्तर के लिए ले जाया जाता था। वहां से निकालकर इन बंदियों को उनकी बारी आने तक तहखाने की कोठरियों में बंद कर दिया जाता था और सुबह छः बजे तक पूछताछ का क्रम जारी रहता था। तब बंदियों को लारी में भर कर वापस जेल में भिजवा दिया जाता था। जिन बंदियों की पूछताछ पहली रात में अधूरी रही समझी जाती थी उनको दिन में भी खुफिया पुलिस के हैडक्वार्टर के तहखाने की कोठरियों ही में बंद रहना पड़ता था। कभी कभी तो ऐसा भी होता था कि एक बंदी को लगातार एक मास वहीं रहना पड़ता था और "घर" वापस जाने का अवसर नहीं मिलता था। अधिकांश बंदियों को इस प्रकार के व्यवहार से असीम कष्ट का अनुभव हुआ करता था।

सन् १९३७ की ग्रीष्म ऋतु में ऐसा प्रकट होता था कि अधिकारी मुझको अन्य बंदियों से अलग ही रखना चाहते हैं। मेरे मामले पर अधिकारियों को बड़ा समय और शक्ति नष्ट करनी पड़ी थी। मैं उनकी नजर में बड़ा महत्वपूर्ण बंदी था इसीलिए जब कभी मुझको पूछताछ के लिए ले जाया जाता तो कोठरी में अकेला ही रखा जाता था। कुछ महीने पश्चात् ऐसा करना असम्भव होगया क्योंकि बंदियों की संख्या बहुत थी और जगह

थोड़ी। बहुत से बंदियों को तो खड़े खड़े ही रात बितानी पड़ती थी। उन दिनों कोठरियों को देखने से ऐसा लगता था मानों वे सार्डिन के डब्बे हैं। जब वार्डर किसी और बंदी को कोठरी में धकेलने की कोशिश करते थे तो द्वार बन्द करना मुश्किल हो जाया करता था। खुफिया पुलिस की इन कोठरियों को रूसी भाषा में 'ब्रिखालोवका' कहा जाता था जिसका साधारण अर्थ गपशप की दुकान होता है। खोलोदनाया गोरा की विभिन्न कोठरियों के बंदियों को वहां ही एक दूसरे से दो चार शब्द बोलने का अवसर मिलता था इसीलिए इन कोठरियों का यह नाम पड़ गया था। वैसे तो पुलिस अधिकारियों का यह प्रयत्न रहता था कि एक बंदी दूसरे बंदी से बात न कर सके पर बंदियों के इन 'गपशप की दुकानों' में पहुँचने पर यह प्रतिबंध प्रायः पूर्णतः टूट जाया करता था। इन कोठरियों की ही कृपा से सैकड़ों अलग अलग कोठरियों के निवासी अलग अलग व्यक्ति न रह कर बंदी जनता का सामूहिक रूप धारण कर लिया करते थे। जो लोग जेल से छूटने के बाद फिर दुबारा पकड़ कर ले आए जाते थे उनसे बाहर की दुनियां के समाचार प्राप्त करने के लिए बंदियों में अत्यन्त उत्कंठा रहा करती थी।

मैं रात भर के लिए अपनी कोठरी में बन्द रहा। अगले दिन दोपहर को मुझको रायज़निकोफ़ के पास ले जाया गया। उसने खड़े होकर मेरा स्वागत किया और कहने लगा कि "अभी अभी मुझको तुम्हारे विषय में लुगांस्क से समाचार मिला है। इसको पढ़कर मेरा तो रुधिर जम गया है। मुझको कभी भी यह न मालूम था कि तुम इतने भयंकर आदमी हो। मैं तो अब तक तुमको एक साधारण षडयंत्रकारी ही समझता रहा था। यह तो अब पता लगा है कि क्रान्तिविरोधी कार्य में तुमको जो दक्षता प्राप्त है वह दूसरे किसी को नहीं। तनिक यह पढ़ कर तो देखो"; यह कहते हुए उसने कुछ कागज़ मेरी ओर बढ़ा दिए।

"मुझको कभी ऐसा आदेश नहीं दिया गया।"

"सोवियट राज्य में तुमने देश विरोधी जितने गुट्ट और संगठन तैयार किये हम उनका पता चाहते हैं ।"

"मैंने कभी कोई ऐसा संगठन तैयार नहीं किया ।"

इसके पश्चात् जो कुछ देखने सुनने को मिला उससे मुझको एक नई रीति-नीति का पता लगा । वह बार बार चिल्ला चिल्ला कर पुराने ही सवालों को दोहराता रहा । पहले तो मैं भी अपने पुराने उत्तर दोह-राता रहा । अन्त में मैंने बोलना बन्द कर दिया । मैं सोचता था कि वह आखिर कब तक बोलता रहेगा, कभी न कभी तो थक ही जायगा । किंतु उसका कंठ अत्यन्त शक्तिशाली और अपशब्दों का अपरिमित भंडार था । चार घंटे तक निरन्तर वह ऐसे ही चिल्लाता रहा । अंत में उसने कहा कि "बस तुम पर अब समय गंवाने की आवश्यकता नहीं ।"

यह सुन कर मुझको कुछ तसल्ली सी हुई । पर अगले ही क्षण मैंने सुना कि "अब कामरेड वाइज़बैंड तुमसे पूछताछ जारी रखेंगे ।" यह सुनकर जैसे मेरा हृदय बैठ गया हो । पर वाइज़बैंड रायज़निकोफ़ के सहयोगियों में सब से कम धृष्ट और अशिष्ट था । उसने अपनी पूछताछ आरम्भ करते हुए ऐसा ढंग अपनाया मानों कि एक पिता अपने पथभ्रष्ट बच्चे को कुछ समझा रहा हो । उसने बड़े आग्रह के साथ मुझसे कहा कि यदि मैं उनकी बात मानलूं तो सारी गुत्थी बड़ी आसानी से सुलझ सकती है । जब उसके इस परामर्श का कोई असर होता दिखाई न दिया तो वह अपने प्रयत्न को छोड़ने सा लगा । उसने कभी कभी एक दो साधारण प्रश्न पूछे और अपना अखबार और फाइलें उलटने पलटने लगा । फिर उसने मुझसे बड़े ही साधारण ढंग से यह कहा कि "क्या यह सच नहीं है कि तुम लोग खारकोफ़ के ट्रैक्टर के कारखाने को बारूद से उड़ा देना चाहते

थे ?" किन्तु उसने यह गंभीर प्रश्न ऐसे ढंग से पूछा मानों कि वह मुझसे जानना चाहता था कि मैं अगली छुट्टियों में कहाँ जाने वाला हूँ।

इसी तरह की 'पूछताछ' होते होते शाम हो गई। मैं बहुत थक गया था और यह सोचने लगा था कि अब तो ये मुझको अवश्य ही 'घर' जाने देंगे। किन्तु यह मेरी भूल थी। रात के दस बजे उसने मुझको शालिट को सौंप दिया। अपनी इस कष्टकथा के दिनों में अनेक पुलिस अधिकारियों से मेरा वास्ता पड़ा था किन्तु शालिट को देखकर मेरे मन में जितनी घृणा होती थी उतनी किसी को देख कर न हुई थी। अपनी शिक्षा दीक्षा की दृष्टि से मैं मार्क्सवादी था और इसलिये यह मेरा प्रायः स्वभाव सा बन गया था कि मेरे सामने जो भी बात या घटना आए उसका निरपेक्षित ढंग से विश्लेषण करूँ और उससे सम्बन्धित व्यक्तियों के वास्तविक मन्तव्यों को खोज निकालूँ। मैं यह जानता था कि यह पुलिस अधिकारी डिक्टेटरी के भीमकाय यंत्र के छोटे छोटे पुर्जे मात्र हैं। मैं यह भी जानता था कि इनके पीछे भी कोई चाबुक लिए हुए है जिससे ये बेचारे दूसरों पर चाबुक चलाकर ही बचने की आशा रखते हैं। इसीलिए मैंने अपनी घृणा का केन्द्र डिक्टेटर और उसके सहायक उच्च पुलिस अधिकारियों ही को माना हुआ था। अब भी जब मैं उन सब घटनाओं को याद करता हूँ तो मेरे मन में छोटे पुलिस अधिकारियों के लिए लेश मात्र भी कटुता नहीं है। वास्तव में उनमें से कुछ को मैं तो चाहने भी लगा था। अज़ाक और तोरनुएफ़ इसके उदाहरण हैं। किन्तु शालिट अपवाद था।

शालिट के हाथ में जो बंदी पड़ते थे उनके शरीर और आत्मा को कुचलने ही में उसको आत्मोन्नति का मार्ग दिखाई देता था। अन्य अधिकारियों के प्रतिकूल वह अपने काम को बड़ी गम्भीरता से निभाता था।

यह मैं नहीं कह सकता कि आया वह वास्तव में इतना मूर्ख था कि बंदियों पर स्वयं जो अभियोग लगाता था उनको सत्य मानता हो किन्तु वह एक ऐसे भीषण तर्क और सलंग्नता से काम लेता था कि ऐसा प्रतीत होने लगता था कि वास्तव में वह अपने आरोपों को सच मान कर ही बन्दियों का पीछा कर रहा है। उसकी विशेषता यह थी कि वह छः छः घंटे तक एक ही प्रकार के प्रश्नों को दोहराता रहता था और तनिक भी थकता नज़र नहीं आता था। एक बार वह चार घंटे तक मेरे ऊपर एक ही बात को दोहराता हुआ चिल्लाता रहा था। उस समय हर दो मिनट के पश्चात् वह जिस बात को दोहराता रहा था इस प्रकार थी :

"मुझको उस क्रान्तिविरोधी, ट्राट्स्कीवादी, फासीस्ट, आतंकवादी पथभ्रामक और जासूसी षड़यन्त्र का पता चाहिए जो तुम लोगों ने सोवियट भूमि पर फैलाया हुआ था।"

इस आशा से कि वह किसी तरह अपने इस आदेश की निरर्थक शब्दावली में कुछ परिवर्तन करदे मैंने कई बार अपने उत्तर में हेर फेर किया क्योंकि उसके वाक्यांशों की एकरसता से मैं ऊब गया था। किन्तु मुझको सफलता नहीं मिली। उसने ठीक वैसी ही पुरानी भाषा और, वैसे ही पुराने ऊँचे स्वर में, वैसे ही पुराने हाव-भाव के साथ सैकड़ों बार नहीं बल्कि हज़ारों बार उसी बात को दोहराया। मैंने बड़ी सूझ बूझ से काम लिया, चाल भी चली परन्तु मेरा समस्त प्रयत्न विफल ही रहा। एक बार तो मैंने बड़ी गम्भीरता के साथ घोषणा की :

"श्रीमान्, मैं ठीक इसी प्रश्न का उत्तर जून मास के प्रारम्भ में दे चुका था।"

वह तनिक मुस्कराया और मेरे जाल में फंसता सा नज़र आया।

"उस समय तुम्हारा वक्तव्य किसने लिखा था ?" उसने मुझ से पूछा।

"लैफ़्टिनैंट रायज़निकोफ़ ने", मैंने उत्तर दिया।

"क्या कहा था तुमने अपने उस वक्तव्य में ?"

"मैंने यही कहा था कि मैंने सोवियट भूमि पर किसी क्रान्तिविरोधी, ट्राट्स्कीवादी, फासीस्ट, आतंकवादी, पथभ्रामक और जासूसी षड़यन्त्र की रचना नहीं की।"

छः घन्टे के "प्रश्नोत्तर" के पश्चात् शालिट अपनी जगह से खड़ा हो गया और उसने घंटी का बटन दबाया। मैंने सोचा था कि अब मुझको अपनी कोठरी में ले जाने का समय आगया है, किन्तु ऐसी बात न थी। कुछ मिनट पश्चात् रायजनिकोफ़ ने प्रवेश किया। वह अभी हजामत बनाकर आया था और बड़ा स्वस्थ और स्फूर्तियुक्त दिखाई दे रहा था। मेरी अवस्था अर्धमृत प्राणी जैसी थी। मैं चौदह घन्टे से बराबर एक ही स्टूल पर बैठा रहा था जहां से न मुझको खड़े होने की आज्ञा थी और न हाथ पांव हिलाने की। दीवार के सहारे घन्टों तक कमर लगा कर खड़े रहना काफी कष्टकर बात है किन्तु इस प्रकार बैठे रहना उससे भी कहीं अधिक दुखप्रद अनुभव था। खड़े रह कर आप कभी इस पांव पर कभी उस पांव पर अपना वजन सम्भालते रह सकते हैं किन्तु इस प्रकार बैठे रहने से कभी भी शारीरिक खिचाव में कमी नहीं हो सकती। इस प्रकार बैठे रहने से जांघ और धड़ के दोनों जोड़ों में सूजन सी आजाती है और तेज दर्द होने लगता है।

रायजनिकोफ़ ने मुझको अपने दफ्तर में चलने का आदेश दिया और मैं लड़खड़ाता हुआ उसके पीछे चल दिया।

"नागरिक रायजनिकोफ़ मेरे शरीर की अवस्था ऐसी नहीं रह गई है कि मैं अब इस अनन्त प्रश्नोत्तर के दबाव को सह सकूं। क्या आप कुछ समय के लिए रुक नहीं सकते ताकि मैं कुछ आराम कर लूं ?"

"नहीं," उसने तुरन्त उत्तर दिया। "पहले ही हम बहुत समय बेकार खो चुके हैं। हमें इस पूछताछ को शीघ्र ही किसी सन्तोषजनक परिणाम पर पहुँचाना है, किन्तु यदि तुम वक्तव्य पर हस्ताक्षर कर दो तो तुम्हारी छुट्टी हो चकती है।"

अब फिर वही पुराना क्रम दोहराया जाने लगा। दो घन्टें तक वह मेरे ऊपर चिल्लाता रहा यद्यपि मैं शायद ही कभी बोला हूँ। अगले दिन प्रातःकाल आठ बजे उसने घन्टी बजाई और पहरेदार आ पहुँचा। पहरेदार को आज्ञा हुई कि मुझको मेरी कोठरी में वापस पहुँचा दे। मैं पहरेदार के पीछे हो लिया। ऐसा लगता था जैसे मैं स्वप्न देख रहा हूँ पर मन ही मन में कृतज्ञता का अनुभव भी कर रहा था कि आखिरकार "घर" वापस जाने का अवसर तो मिला। मुझको नीचे तहखाने में ले जाया गया, जहाँ शौचादि से निवृत्ति पाने के लिये कुछ समय मिला। इसके बाद कुछ खाने को मिला। आज अन्य दिनों की अपेक्षा खाने की मात्रा तनिक अधिक थी। जब मैंने भोजन समाप्त किया तो कोठरी का दरवाज़ा फिर खुला—लगभग दस मिनट पश्चात्। पूछताछ तुरन्त ही फिर प्रारम्भ होगई।

मैं रायजनिकोफ़ के सामने पड़ी मेज के पास फिर उसी स्टूल पर बैठा दिया गया। इस बार मानो रायजनिकोफ को मेरे आगमन की सूचना तक न थी। उसने मेरी ओर देखा तक नहीं। उसके कुछ अनुचर आए। उनसे उसने कुछ बातें की। अनेक लोगों को टेलीफोन किया और वह अपनी फाइलें पढ़ता रहा। बीच बीच में कभी कभी बिना मेरी ओर

देखे ही वह मुझको एक दो गालियां और मेरे 'कुत्सित' इरादों को बेकार कर देने की धमकी भी देता जाता था।

जब वह मुझको सम्बोधित करता था तो मैं एक थके मांदे व्यक्ति की तरह अपना सिर धीरे से ऊपर उठा कर उसकी ओर देखने लगता था पर बोलता कभी न था। उसके अपशब्दों की बौछार समाप्त होने के पश्चात् मैं फिर अपना मुंह लटका लेता था। यदि कभी उसको सन्देह होने लगता था कि मैं ऊँघने लगा हूँ तो वह गरज कर मुझको जगा दिया करता था। ऐसे अवसर पर वह कहता था "जागो, क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो पुलिस अधिकारी के दफ्तर में सोने की धृष्टता करते हो ? क्या तुमको सोवियट शासन की शक्ति के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं है ? अब भी अपना अपराध स्वीकार लो तो छुट्टी मिल सकती है।"

मैंने कहा "श्रीमान्, यह कोई न्यायोचित पूछताछ तो है नहीं। मैं तो इसको गुंडाशाही ही समझता हूँ। मुझको कागज़ कलम दे दीजिये, मैं सरकारी वकील को चिट्ठी लिखना चाहता हूँ। मेरा यह शारीरिक उत्पीड़न न्याय सिद्धान्तों के प्रतिकूल है।"

"हम जब तुमसे पूछताछ कर रहे हैं तो हमारे प्रश्नों का उत्तर देना तुम्हारा कर्तव्य है। अपने इस कर्तव्य को पूरा करने के पश्चात् तुम चाहो तो सरकारी वकील को भी चिट्ठी लिख सकते हो ?"

"लेकिन मेरी यह परीक्षा कब समाप्त होगी ?"

"जैसे ही कि तुम अपना अपराध स्वीकार कर लोगे, उससे पहले नहीं।"

"जब मैं अपराधी नहीं हूँ तो कौनसे अपराध को स्वीकार कर लूँ।

तब क्या इसका अर्थ मैं यह समझूं कि यह पूछताछ कभी समाप्त ही नहीं होगी।"

"तुमने यह कैसे समझ लिया कि तुम अपना अपराध स्वीकार नहीं कर सकोगे? अभी तो तुम्हारी पूछताछ का वास्तविक चरण प्रारम्भ हुआ है। अब तुम्हारे विरुद्ध केवल यही अभियोग नहीं है कि तुमने शब्दों और वार्ताओं द्वारा सोवियट राज्य के विरुद्ध घृणा फैलाई बल्कि यह भी है कि तुमने आतंकवादी क्रियाएं कीं, उच्च अधिकारियों की जान लेने की साज़िश की, राजकीय कार्य करने वाले लोगों का पथभ्रष्ट किया और एक विदेशी सरकार की ओर से इस देश के विरुद्ध जासूसी की।

"मुझको इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि आपको मेरे विषय में जो सत्य है उससे पूर्ण परिचय हो चुका है। आप यह भी जानते हैं कि मेरे ऊपर लगाए गए आरोप आदि से अन्त तक सर्वथा मिथ्या हैं। आप लोग मुझसे झूठे वक्तव्यों पर हस्ताक्षर कराकर किसका लाभ करना चाहते हैं?"

मेरा यह प्रश्न सुन कर रायज़निकोफ़ आगबबूला हो गया। उसने ज़ोर से अपनी मेज को थपथपाना शुरू कर दिया और चीख चीख कर मुझको गालियाँ देने लगा, "सूअर" और "फासीस्ट एजेन्ट" आदि शब्दों की बौछार हो रही थी। "क्या तुम फिर सोवियट शक्ति को चुनौती देना चाहते हो? तुमको यह कहने का साहस कैसे होगया कि हम लोगों पर झूठे आरोप लगाते हैं? एक बार तुमने यह बात फिर दोहराई तो मैं चीफ से तुम्हारी रिपोर्ट कर दूंगा और तुमको दण्ड वाली कोठरी नं० ३ में डाल दिया जायगा।"

मैंने फिर कोई उत्तर नहीं दिया। इस कोठरी का उल्लेख पहले भी

में कई बार सुन चुका था। मैं अर्धमूर्छित सा हुआ उस स्टूल पर बैठा रहा और यह आशा लगाए हुए था कि जब शाम होगी, कम से कम उस समय तो ये मुझको जेल में वापस भेज ही देंगे। दिन में प्रत्येक चार घन्टे के पश्चात् प्रश्नकर्त्ता बदलते रहे। शाम को छः वजे दस मिनट के लिए मुझको फिर नीचे उतारा गया। तहखाने की कोठरियों का फर्श सीमैन्ट का था और किसी कोठरी में कोई चीज़ नजर न आती थी। जैसे ही द्वारा खुला मैं फर्श पर लम्बा लेट गया और एक ही मिनट में सो गया। खाना लाने वाले वार्डर ने मुझको जगा दिया। मैं खाना खाने के लिए इतना उत्सुक न था जितना नींद के लिए। अब उसने मुझको फर्श पर लेटने को भी मना कर दिया। उसकी आज्ञा मेरे लिए शिरोधार्य थी। अब तो किसी भी प्रकार की आज्ञा का विरोध करने का साहस मुझमें नहीं रह गया था। दस मिनट के उस अनिश्चित अवकाश के पश्चात् मुझको फिर रायज़निकोफ़ के सामने पेश कर दिया गया।

उस समय तक भी मेरे हृदय में यह आशा थी कि रात होने तक मेरी पूछताछ अवश्य ही स्थगित कर दी जायगी और मुझको सोने की आज्ञा मिल जायगी। मेरे मन में यह कल्पना तक भी न थी कि मेरी यह अग्निपरीक्षा उस समय तक जारी रहेगी जबतक कि मैं हस्ताक्षर करने को वाध्य न होजाऊँ। रोजिस्की के साथ कभी मेरी जो बातचीत हुई थी उसको याद करके मैं डर के मारे सिहर उठता था। मैं सोचता था कि यद्यपि यह सच है कि रोजिस्की खुफ़िया पुलिस का कठपुतला है, पर सम्भव है कि वह मेरी भलाई ही चाहता है। कुछ भी हो, उसने जो चेतावनी दी थी वह धीरे धीरे सच होती जारही थी। पहले तो ये लोग मुझ से साधारण अपराध ही स्वीकार कराना चाहते थे, अब सोवियट विरोधी आन्दोलन तथा इन्स्टीट्यूट के गुप्त कार्य में विघ्न डालने

के स्थान में मेरे ऊपर आतंकवाद, पथभ्रामक कार्यवाही और विदेशी सरकार की ओर से जासूसी करने का अभियोग लगाया जा रहा था। शायद मेरे लिये सब से अच्छी बात यही होती कि मैं रोजिस्की द्वारा बताये मार्ग को स्वीकार कर लेता और पुलिस अधिकारी जिस कागज पर भी हस्ताक्षर मांगते उसी पर हस्ताक्षर कर देता। पर अब क्या हो सकता था; बात हाथ से निकलने पर पश्चात्ताप करने से क्या लाभ? मुझ पर लोगों को पथभ्रष्ट करके सरकार-विरोधी कार्य करने और किसी विदेशी सरकार की जासूसी करने का जो आरोप लगाया जा रहा था उससे अधिक भयंकर बात मेरे लिये कोई भी नहीं हो सकती थी। अब इससे बड़ा आरोप भी कोई शेष नहीं रह गया था; इसलिए आत्मसमर्पण करने से भी क्या लाभ? ऐसा मैं सोचने लगा। अब सिर न झुकाने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं किया जा सकता था। सम्भवतः इसी मार्ग का अनुसरण करके अंत में मेरी मुक्ति हो जाय, ऐसी आशा मेरे मन को साहस प्रदान करने लगी।

आधी रात हुई; रायजनिकोफ़ का स्थान शालिट ने सम्भाल लिया। अब मुझको इसकी नीयत के बारे में कुछ भी सन्देह शेष नहीं रह गया था। निश्चय ही मेरी पूछताछ में एक नये चरण का प्रारम्भ हो चुका था। अब अनन्त 'प्रश्नोत्तर' ही मेरे भाग्य में लिखा था। आगे चलकर मुझको पता चला कि रूस की खुफिया पुलिस का यह सर्वप्रिय 'टेकनीक' था। अभागे बन्दी इस प्रक्रिया को 'कन्वेयर'—कारखानों में निरन्तर चलती रहने वाली 'पेटी' के अनुसार—कहा करते थे। जब तक कोई बन्दी आत्मसमर्पण न करता था तब तक उस पूछताछ से उसका पीछा नहीं छूटता था। जब तक मुझ पर स्वयं यह न बीती मैं यह विश्वास नहीं करता था कि केवल 'प्रश्नोत्तर' ही से किसी दृढ़निश्चयी व्यक्ति के विश्वास और निश्चय को कुचला जा सकता है। मुझको ऐसे कई लोगों से जानकारी थी जो

शारीरिक उत्पीड़न के बावजूद आत्मसमर्पण करने को बाधित नहीं किये जा सके थे। किन्तु मेरी जानकारी में कन्वेयर से बच निकलने वाला व्यक्ति केवल एक ही था।

यह प्रक्रिया मानों स्वतः ही निस्तब्ध ढंग से चलती रहती थी। कुछ दिन के पश्चात् बन्दी के अवयवों में सूजन आजाती थी। जाँघ और धड़ के जोड़ की माँस पेशियों पर भी ऐसा ही हो जाता था और उनमें बड़ा सख्त दर्द होने लगता था, यहाँ तक कि पाँव हिलाना दूभर हो जाया करता था। अधिकारियों को किसी बन्दी को इससे अधिक कष्ट देने की आवश्यकता ही न थी। शालिट को अपने हाथ पड़े व्यक्तियों पर निरन्तर चोट लगाते रहने में मानों आनन्द आता था इसलिए वह कभी उनको सांस लेने का भी समय नहीं देता था यद्यपि वास्तव में इस सब की आवश्यकता न थी। यदि पुलिस अधिकारी थोड़ा संतोष रखते तो इतने ही से काम चल सकता था। समय उन्हीं का साथी था। बेचारे बन्दी को कन्वेयर से छुटकारा पाने का कोई चारा न होता था यदि पुलिस अधिकारी इसमें तनिक ढील दे देते तो बन्दी की विरोधशक्ति पुनः पनप सकती थी। इसीलिए उसको कभी कोई ऐसा अवसर ही न दिया जाता था कि वह किसी प्रकार का शारीरिक या मानसिक विश्राम पा सके। बन्दी सोचने लगता था कि मैं एक रात, दो रात तीन रात विरोध करता रह सकता हूँ पर जब कष्ट का ओर छोर ही न दिखाई देता हो तो कैसे कोई खड़ा रह सकता है। खड़ा रहने से लाभ भी क्या था, अधिकारियों को इस कष्ट की प्रक्रिया का अन्त करने की कोई जल्दी नहीं थे। वे जब तक चाहें तब तक अभियुक्त को अपने चंगुल में जकड़े रह सकते थे। अंत में कोई भी शारीरिक ह्रास और पतन से नहीं बच सकता था।

दूसरी रात को शालिट निरन्तर आठ घंटे तक मेरे सिर चढ़ा

रहा। इससे पहले उसको भी अपने जीवन में इतना परिश्रम नहीं करना पड़ा होगा। मैंने उसके वाग्प्रवाह में कोई भी विघ्न डालने का यत्न नहीं किया और न उसके प्रश्न का कोई उत्तर ही दिया। मेरा सिर फटा जा रहा था और आँखें असीम कष्ट से जल सी रही थीं। यदि मेरे सिर पर लोहे की पत्ती जकड़ी हुई न होती तो शायद मेरी खोपड़ी ही फट जाती। शालिट पूरे चार घंटे तक रह रह कर अपने उसी पुराने आदेश को दोहराता रहा। उसको "ट्राट्स्कीवादी, फासीस्ट, क्रान्तिविरोधी, आंतकवादी पथभ्रामक और जासूसी षड़यंत्र" के पते की चिन्ता थी।

चार घंटे के पश्चात् मुझको वह एक पहरेदार के सुपुर्द करके कुछ देर के लिए कहीं चला गया—शायद वह शौचालय गया था। लौट कर उसने फिर वही राग प्रारम्भ कर दिया, किन्तु इसबार उसके शब्द कुछ भिन्न थे। वे क्या शब्द थे और किस क्रम में कहे गए थे यह तो मुझको याद नहीं किन्तु इतना मुझको याद है कि अब उसके साथ साथ वह मुझको सोवियट शक्ति का डर दिखाता और फ़ासीस्ट और कुत्ता भी कहता जाता था।

अगले दिन प्रातः काल आठ बजे जब शालिट का स्थान वाइज़बैण्ड ने लिया तो मैं प्रायः मूर्च्छित हो चुका था। वाइज़बैण्ड ने मुझको कुछ मिनट के लिए खड़ा होने की अनुमति देदी। कितने सुख का अनुमान हुआ मुझको उस नन्हीं सी अनुकम्पा से! मैं डाक्टर नहीं हूँ और शारीरिक रोगों और उनके निदान से मुझको बहुत कम परिचय है इसलिए मैं यह नहीं बता सकता कि कन्वेयर के समय कौन कौन से शारीरिक परिवर्तन हो जाया करते हैं। कुछ समय तक तो 'निश्चलता' का ही बड़ा दबाव रहता है; बाद में समस्त शरीर दुःखने लगता है। ऐसी स्थिति हो जाने पर साधारण स्थिति परिवर्तन से भी बड़ा आराम मिलता है।

मुझको ९ बजे तक खाने के लिये नीचे नहीं ले जाया गया। जब नीचे ले जाने का समय आया तो मुझसे कहा गया कि शौच हस्त-प्रक्षालन और भोजन सभी कुछ १० मिनट ही में समाप्त कर देना होगा। ऐसा ही हुआ। मैं फिर कन्वेयर पर चढ़ा दिया गया।

वाइज़बेंड ने मित्रतापूर्ण वाणी में मुझे सम्बोधित करना आरंभ किया और आत्मसमर्पण को मेरे अपने हित सम्पादित करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय बताया।

"एलेग्जेण्डर सेमोनोविच, आखिर तुम कब तक विरोध करते रहोगे ? इससे कोई लाभ नहीं। तुम्हारे रवैये का एक मात्र परिणाम यही होगा कि तुम अपने शरीर को नष्ट भ्रष्ट कर लोगे। एक न एक दिन आत्मसमर्पण तो तुमको करना ही पड़ेगा। शुभस्यशीघ्रम।"

"किन्तु नागरिक वाइज़बेंड मैं क्या कर सकता हूँ ? जो अपराध मैंने किया नहीं उसका मैं अपने आप को दोषी क्यों ठहराऊँ ? सोवियट सरकार को इस प्रकार धोखा देने से कोई लाभ ? इससे किसको लाभ होगा ?"

वाइज़बेंड ने मेरी युक्तियों का कोई उत्तर देने का यत्न नहीं किया जिससे मैं यह समझा कि वह मुझसे सहमत हैं। उसने भी अपने कर्तव्य का पालन किया और कम से कम जितनी यातना की आवश्यकता थी उतनी ही यातना दी। उसने मेरे साथ एक ऐसी बात भी की जो अब तक किसी ने न की थी और जो प्रकटतः उसको मिले आदेश के प्रतिकूल थी—उसने कभी कभी मुझको पांव सीधे करने के लिये खड़ा होने की अनुमति भी देदी जिससे मेरे शारीरिक कष्ट में कुछ आराम मिला।

दोपहर के बाद जब रायज़निकोफ़ आया तो बड़ा ही खुश

दिखाई दिया और जैसे कि मुझसे एक मित्र की भांति मज़ाक कर रहा हो, कहने लगा 'आखिर कब तक तुम हमको इस प्रकार सताते रहोगे ? तुम जानते ही हो कि हमको तो तुम जैसे लुटेरों के साथ भी सहिष्णुता का बर्ताव करना पड़ता है। कभी न कभी कुछ तो शान्ति मिलनी ही चाहिए। तो इसमें क्या तुम हमारे साथ सहयोग न करोगे ?

कन्वेयर की प्रक्रिया के तीसरे दिन मेरी शारीरिक अवस्था इतनी बिगड़ गई कि अब और दुख सहते रहना असम्भव हो गया। मेरी रीढ़ की हड्डी के नीचे के हिस्से में इतना दर्द था जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। दर्द दारुण वेदना बन गया था। कभी कभी मैं परिणाम की अवहेलना करके अपनी जगह से कूद भी पड़ा। दुख में एक स्थिति ऐसी भी आती है जब किसी की धमकी भी काम नहीं आती। जब कभी मैं इस प्रकार उछल पड़ा करता था तो मेरे उन तीनों ताड़कों में वाइज़बैंड ही केवल ऐसा था जो आपत्ति नहीं करता था और मुझको कुछ देर के लिए खड़ा रहने दिया करता था। एक दो बार जब मैं गिरने को हुआ तो रायज़निकोफ़ नें भी मुझ पर इस प्रकार की अनुकम्पा की थी।

कभी कभी जब मैं खाना खाता होता था तो रायज़निकोफ़ के विभाग के अध्यक्ष कप्तान तोरनुएफ़ वहां आजाया करते थे और मानों कि उनको मेरे स्वास्थ्य की बड़ी चिंता थी, मुझको सब चीज़ों को समाप्त करने की सलाह दिया करते थे। उनकी वाणी सुखद और स्नेहप्रद मालूम होती थी। "अपनी तश्तरी में कभी कोई चीज़ नहीं छोड़नी चाहिए" वह कहा करते थे। "यदि तुम स्वेच्छा से न खाओगे तो हमको तुम्हारे साथ जबर्दस्ती करनी पड़ेगी। मैं जानता हूँ कि तुम स्वयं ऐसी बात नहीं चाहते और हम तो चाहते ही नहीं।"

मैं यह सुनकर आश्चर्य करने लगा कि खाने के विषय में जबर्दस्ती करने की धमकी देने का क्या अभिप्राय हो सकता है। इस समय मुझ पर जो कुछ बीत रही थी उससे मेरी भूख सर्वथा नष्ट नहीं हुई थी। जो कुछ मुझको मिलता था उसको मैं चाव से खाता था। ऐसा करने का एक कारण यह भी था कि इस प्रकार उस अनन्त कन्वेयर प्रक्रिया में कुछ देर के लिए तो छुटकारा मिल जाता था। बाद में मुझको यह भी पता लग गया कि मेरे भोजन के विषय में इतनी चिन्ता क्यों थी। यदि बन्दी खाना पीना छोड़ दे तो उसको कष्ट निवारण का एक नया साधन मिल जाता है। एक दो दिन निराहार रहने के पश्चात वह स्टूल से गिर कर बेहोशी का सुख प्राप्त कर सकता है। मुझको उस समय अनशन का यह रूप न मालूम था नहीं तो आजमा कर ही देखता। अपने जेल जीवन में आगे चल कर तो कई बार मैंने भूख हड़ताल की पर वह छोटी छोटी सुविधाएं प्राप्त करने के लिए ही।

चौथी रात को मुझको ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि मेरा सारा शरीर किसी प्रकार के लकवे का शिकार हो गया है। मैं तनिक भी हिल जुल नहीं सकता था। मेरी यह अवस्था देख कर उस समय वाइजबैंड भी जिसकी उस समय ड्यूटी थी, घबड़ा गया। "क्या बात है एलेग्जेण्डर सेमोनोविच, क्या तुम्हारी तबीयत खराब है ?" उसने मुझसे पूछा। उत्तर में मैंने कहा था कि " मेरा खयाल है कि मैं मरने वाला हूं।"

"तो क्यों जिद पर अड़े हुए हो सेमोनोविच ? यह देखो हमारे पास व्लाख और दूसरे सभी लोगों के वक्तव्य आ चुके हैं। इनको पढ़ कर देखलो और जो कुछ कहना हो कप्तान तोरनुएफ़ को लिख दो। कागज पैन्सिल का प्रबंध मैं किए देता हूँ।"

उसने मुझको एक पैन्सिल और काग़ज दे दिया। मैंने इसको एक

सुअवसर समझा और एक अलग मेज कुर्सी पर बैठ कर अपने ऊपर लगाए गए आरोपों का विस्तार के साथ प्रतिवाद लिखना प्रारम्भ कर दिया। मुझको लिखते हुए अभी कोई तीस मिनट हुए होंगे, ठीक उस समय जबकि मेरी तबीयत कुछ सुधरने लगी थी, रायज़निकोफ़ आ धमका। उसको यह पता लगाने में देर नहीं लगी कि मैं क्या लिख रहा हूँ। उसने सारे कागज़ मेरे हाथ से छीन लिए और टुकड़े टुकड़े कर डाले और मुझको अपने पीछे चल देने की आज्ञा दी। हमको कमरे से बाहर जाता देखकर वाइज़बैंड बड़े आश्चर्य में डूबा नज़र आता था। अब हम रायज़निकोफ़ के कमरे में पहुँच गए।

रायज़निकोफ़ कन्वेयर का विशेषज्ञ माना जाता था। वह यह जानता था कि कारण कुछ भी हो यदि बन्दी को थोड़ी सी देर का आराम मिल जाय तो उससे अनुकूल परिणाम प्राप्त करने में कई दिनों का विलंब हो सकता है।

"सुनो वाइज़बर्ग," उसने कहा," यह बात नहीं है कि मैं इंसान नहीं हूँ किन्तु इस मामले को संतोषजनक परिणाम तक पहुँचाना मेरा कर्तव्य है। तुम्हारे साथ सबसे बड़ी कृपा यह हो सकती है कि तुम्हारे ऊपर डाले जाने वाले दबाव को और भी बढ़ा दिया जाय ताकि तुम जल्दी ही आत्मसमर्पण करदो और तुम्हारे कष्ट की अवधि कम हो जाय। हमारे लिए भी सबसे अच्छी बात यही है। जल्दी करो, अब अपराध स्वीकार करने में देर करने की आवश्यकता नहीं।"

मैंने उत्तर दिया "यह आप जानते ही हैं कि मैं निर्दोष हूँ। अब आप ग़ैर कानूनी दबाव डालकर मुझसे ऐसे अपराध स्वीकार करवाना चाहते हैं जो मैंने कभी नहीं किए।"

वह अपनी जगह से कूद पड़ा और ऐसी गालियां देने लगा जिस पर

किसी असभ्य सैनिक को भी झेंप आने लगे। पर अब तो मुझको इस प्रकार की भाषा से चिर परिचय हो चुका था। इसलिए मुझको ऐसी भाषा से डर नहीं लगता था।

उसने बड़े गंभीर स्वर में मुझको धमकी देते हुए कहा "तुम अपनी जान जोखिम में डाल रहे हो। तुम जान बूझ कर हमारी तहकीकात में विघ्न डालते हो। इस अपराध के लिए तुमको सरकारी आज्ञा से फाँसी पर लटकवाया जा सकता है।"

"आप जो कुछ मुझसे करवाना चाहते हैं उसका भी परिणाम मेरे लिए फांसी ही होगा।"

"तुम निरे मूर्ख हो। क्या हम सभी मूल्यवान् व्यक्तियों को गोली से उड़ाते रहते हैं? तुम एक विशेषज्ञ हो, हमारे बड़े काम आ सकते हो। तुम अपना अपराध स्वीकार कर लो तो केवल पाँच वर्ष का कारावास भुगतना पड़ेगा और जेल के दिनों में भी तुमसे अपना ही काम करवाया जायगा। यह भी हो सकता है कि तुमको दो वर्ष से अधिक समय जेल में न बिताना पड़े।

जिस प्रकार रायज़िन के साथ हुआ वैसे ही तुमसे भी शायद अधिकारियों की देखरेख में अपना ही काम करवाया जाय। रायज़िन ने खुली अदालत में अपना अपराध स्वीकार कर लिया था। अब वह सोवियट राज्य में बहुत बड़ा आदमी है।"

"पर यदि मैंने कोई अपराध किया हो तभी तो मैं स्वीकार कर सकता हूँ। मैंने तो कोई अपराध किया ही नहीं।"

"तुम वास्तव में बड़े दम्भी व्यक्ति हो वाइज़बर्ग, यह मैं तुमसे कह सकता हूँ", उसने कहना शुरू किया "तुम समझते हो कि तुम सबसे

अधिक चतुर हो। तुमको न जाने क्यों यह खयाल हो गया है कि इस समय तुम जिस बात से इनकार करते हो उसको कल स्वीकार ही न करोगे। इस मार्ग पर चल कर तुम्हारा कल्याण नहीं हो सकता। अब तुम पूरी तरह से हमारी पकड़ में हो और आत्मसमर्पण के अतिरिक्त तुम्हारे लिए कोई चारा नहीं रह गया है।"

अगले दिन मुझको सारे शरीर में भारी थकान और अकड़न का अनुभव होने लगा। मैंने आखें खुले हुए सोने की कोशिश की। लगभग पाँच मिनट के लिए मुझको सफलता भी मिली पर अचानक ही मेरा सिर मेरे सीने पर लुढ़क गया और झटके के साथ मेरी आँखें खुल गईं। शरीर में बड़ी दुर्बलता आगई थी। कभी कभी मुझको ऐसा लगा जैसे कि मैं स्टूल से गिर पड़ूँगा, किन्तु यह दुर्बलता भी इतनी भयावह न थी जितनी कि सायंकाल को होने वाली शारीरिक अकड़न। मेरे शरीर का एक एक अंग तीर की भाँति चुभने वाले दर्द का अनुभव कर रहा था और जांघें सूज गई थीं। मुझको ऐसा महसूस हो रहा था कि मेरी जांघों और धड़ के जोड़ों को किसी ने कस कर चिमटे से पकड़ रखा है और उसको कोई बराबर जोर से दबा रहा है। अब मुझको एक और आशंका होने लगी और वह यह थी कि यदि मैं बेहोश होकर स्टूल से नीचे गिर गया तो ये लोग किसी भी कागज पर मेरे हस्ताक्षर मेरे बिना जाने ही घसीट ले सकते हैं। इससे तो यह कहीं अच्छा है कि मैं जान बूझ करही इनकी बताई अनर्गल बातों को स्वीकार कर लूँ तो बाद में उनको झूठ कह कर प्रतिवाद तो कर सकूंगा। इसके प्रतिकूल यदि मेरे बेहोश होने पर इन लोगों ने मुझसे हस्ताक्षर लेलिए तो मेरे लिए ऐसा कोई अवसर नहीं रहेगा। इसी प्रकार के तर्क वितर्क में उलझा हुआ मैं आत्मसमर्पण की बात सोचने लगा।

आधी रात हुई और शालिट ने मुझको आ सम्भाला। वह मुझको हर प्रकार के कष्ट देने लगा। मुझको यह याद है कि उसका प्रत्येक वाक्य "वेश्या" शब्द से प्रारम्भ होता था और "संगठन" शब्द पर समाप्त होता था। अन्तिम शब्द पर पहुँचते हुए जैसे उसको बड़े ज़ोर की आवश्यकता पड़ती है। उस शब्द तक पहुँचते पहुँचते उसकी आवाज़ एक लम्बी चीख में बदल जाया करती थी।

शालिट कई घंटे तक निरंतर उसी वाक्य को दोहराता रहा। उस समय शायद सुबह के तीन बजे होंगे। मेरा शारीरिक कष्ट असह्य हो चला था। अब कुछ न कुछ कर बैठने के लिए मैं विवश था। मैं सोचने लगा कि ये लोग जो कुछ मेरे साथ कर रहे हैं सर्वथा अन्याय है। पर देखूं तो सही इसका खुलकर विरोध करने का क्या परिणाम होता है। मैं जोखिम उठाने को तैयार था।

"नागरिक परीक्षक, तनिक रुक जाइए, मैं इस समय अर्धचेतन अवस्था में हूँ और मैं इस स्थान पर अब क्षण भर भी नहीं बैठा रह सकता।"

"वेश्या दूत, फिर अपना अपराध स्वीकार क्यों नहीं कर लेते ?"

"इससे कोई लाभ नहीं, मैं अब यह बिलकुल सहन नहीं कर सकता ;" यह कह कर मैं स्टूल से उठा और साष्टांग फर्श पर लेट गया। शालिट ऐसा स्तम्भित हुआ कि उसकी समझ में न आया कि क्या करे। उसको मुझे छोड़ कर कहीं जाने की आज्ञा न थी और उसकी सहायता करने के लिए आस पास कोई न था। वह दरवाजे तक गया और किसी को पुकारने लगा पर कहीं से कोई उत्तर न मिला। अब वह लौट आया और उसने कमानडन्ट को टेलीफ़ोन किया। मुझको नहीं मालूम उसने क्या कहा पर उस समय फर्श पर लेटने में जो आनन्द मिला उसका वर्णन नहीं किया

जा सकता। वह चिल्ला रहा था और गालियाँ बक रहा था और मैं कोई ध्यान ही नहीं दे रहा था मानो कि मैं उसके अस्तित्व से ही अनभिज्ञ हूँ। मेरे शरीर का दर्द गायब हो गया था। घंटों में भी मुझको जितना आराम न मिलता उतना इन कुछ मिनटों ही में मिल गया ऐसा मैं अनुभव कर रहा था। उसने फिर आवाज लगाई और फिर कोई न आया। उसने फिर टेलीफ़ोन किया और उसको फिर कोई उत्तर न मिला। अब उसकी मेज़ पर पानी का जो बर्तन रखा था उसने वही मुझ पर उडेल दिया। ठंडा पानी शरीर पर पड़ने से बड़ी ताज़गी का अनुभव हुआ—सम्भवतः इस परिणाम की उसको बिल्कुल आशा न थी। पर तब मुझको कारीडोर में किसी के पांवों की आहट सुनाई दी और मैं उठ खड़ा हुआ।

तीन वार्डरों को लिए हुए कमानडन्ट कमरे में दाखिल हुआ। उनमें से दो के पास कोड़े थे और तीसरे के पास पागलों को पहनाई जाने वाली जाकट।

आते ही कमानडन्ट ने पूछा "क्या वन्दी अब भी विरोध करने पर तुला हुआ है?"

उसके प्रश्न का उत्तर शालिट देने भी न पाया था कि मैं बीच ही में बोल पड़ा, "तब इस कष्ट को सहते रहना मेरे सामर्थ्य के बाहर हो गया था, मैं अर्धचेतना में था। अब पहले से ठीक हूँ और फिर स्टूल पर बैठ सकता हूँ।"

कमानडन्ट ने जेल के नियमों का एक उद्धरण पढ़ कर सुनाया और मुझको शारीरिक हिंसा का डर दिखाया। इसके पश्चात् वे सब चले गए। शालिट मुझसे प्रश्नोत्तर करने के लिए फिर अकेला रह गया। अब शालिट बड़ा गर्वहृत दिखाई दे रहा था।

पूछताछ में थोड़ा अन्तर पड़ जाने से मैं पुनः स्फूर्तियुक्त सा हो गया था। यह सच है कि स्टूल पर कुछ देर बैठने के बाद मेरे शरीर में फिर दर्द होने लगा किन्तु मेरी साधारण अवस्था पहले से कहीं अच्छी थी। अब आत्मसमपर्ण की भावना मेरे मन से कोसों दूर थी। अब शालिट ने जब मुझसे पुनः मेरे कथित संगठन के विषय में प्रश्न दोहराया तो मैंने उसकी बात की यथार्थशून्यता का उल्लेख किया। किन्तु वह कोई भी युक्ति सुनने को तैयार न था और चिल्ला कर बोला, "दीवार की तरफ मुंह करके खड़े हो जाओ"।

मैंने उत्तर में कहा कि, "आप मुझसे चाहते हैं कि मैं यह स्वीकार करलूं कि अगस्त सन् १९३५ में मेरी ब्लाख से बात चीत हुई किन्तु उस महीने में मैं रूस के बाहर था।"

"अपना मुंह दीवार की ओर करके खड़े हो जाओ।"

मैं ने कहा, "सुनिए.........।"

इस पर उसने फिर मुझको दीवार की ओर मुंह करके खड़े होने का आदेश दिया।

मैं उसकी आज्ञा मानकर दीवार की ओर मुंह करके खड़ा हो गया और ज़ोर ज़ोर से दीवार को सम्बोधित करने लगा। शालिट चक्कर में पड़ गया। अब उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इसका प्रतिकार किस प्रकार करे। संभवतः उसके लिए स्थिति इतनी हास्यजनक हो गई थी कि वह अपनी हँसी को दबाने की कोशिश कर रहा था। कुछ भी हो इस घटना की बाद में सर्वत्र चर्चा हुई। कुछ महीने पश्चात् जब मैं एक रात को किसी दूसरे पुलिस परीक्षक के यहाँ ले जाया गया तो उसने मुझको देखते ही कहा था:

विचार करना असम्भव था किन्तु अपनी माँ की ओर संकेत होते ही न जाने क्यों मेरी आँखों में आँसू आ गए। यह देख कर शालिट को मेरे हृदय को दुर्बल बनाने के लिए एक नया साधन मिल गया। अगले कई घंटों तक उसने मेरी माँ के अतिरिक्त किसी और विषय पर चर्चा ही नहीं की। मेरे मन पर रोग सा छा गया था और साथ ही मैं बहुत क्रुद्ध भी था।

अभी हम यह बातचीत समाप्त भी न कर पाये थे कि बीच ही में कप्तान तोरनुएफ़ आ पहुँचा। उसने मुझको रुष्ट देख कर सहानुभूति के रूप में मेरी कमर थपथपाई। "चिन्ता न करो, इसका अन्त अच्छा ही होगा। तुम मेरे कमरे में चलो, अब मैं तुमसे एक बात करना चाहता हूँ" उसने कहा।

मैं उसके पीछे चल दिया। उसके कमरे से मुझको परिचय था ही, किसी समय वहाँ ही तो अभागे कप्तान अज़ाक से भेंट हुई थी। तोरनुएफ़ ने दो चाय लाने का आदेश किया और एक मित्र की भाँति मुझको आत्मसमर्पण का परामर्श देने लगा। "तुम्हारी स्थिति तो उस मछली जैसी है जो काँटे में फंस चुकी है। अब जितना अधिक छटपटाओगे तुमको उतना ही अधिक कष्ट होगा। हम यह नहीं चाहते कि तुम सभी अभियोगों को स्वीकार कर लो। उनमें से जिनको असत्य समझो, मत मानो।"

"किन्तु कप्तान साहब इनमें से तो कोई भी अभियोग सच नहीं है।"

"वाइज़बर्ग, बहाना करने से कोई लाभ नहीं। यह तो हो ही नहीं सकता कि जितने अभियोग तुम पर लगाए गए हैं वे सभी झूठ हैं। खुफ़िया पुलिस निर्दोष व्यक्तियों को तो गिरफ्तार करती ही नहीं। यदि

इतने लोग तुम्हारे विरुद्ध साक्षी करने को तैयार हैं ता निश्चय ही तुम अपराधी हो। कोई भी अदालत बीस गवाहों की बात मानेगी, तुम्हारी नहीं।"

"कप्तान साहब कुछ भी हो। मेरे विरुद्ध लगाए गए आरोप निराधार हैं। उनमें लेश मात्र सत्य नहीं।"

"इस प्रकार छुटकारा न पा सकोगे, एलेग्ज़ेण्डर सेमोनोविच, तुमको कुछ न कुछ तो अवश्य ही स्वीकार करना पड़ेगा। तुम बुद्धिमान व्यक्ति हो; जितना आवश्यक समझो स्वीकार कर लो। मैं इस बात का प्रयत्न करूँगा कि तुम्हारे साथ कोई अन्याय न हो।"

इस समय मैं चमड़े की आराम कुर्सी पर बैठा हुआ था और एक सुखद विश्राम का अनुभव कर रहा था। दुर्भाग्यवश चाय समाप्त होते ही वह मुझको फिर शालिट के पास ले गया और कमरे से निकलते हुए उसको सम्बोधित करके बोला, "वाइज़बर्ग अब बुद्धि से काम लेगा।"

यह सुनते ही शालिट ने कहा "तो लाऊँ कागज़ पैन्सिल ?"

मैंने कहा, "धन्यवाद, मुझको कागज़ पैन्सिल की आवश्यकता नहीं।"

अब यातना पुनः प्रारम्भ हुई। छः रातें बीत चुकी थीं। मेरे शरीर का दर्द बढ़ता जा रहा था और मेरी शक्ति घटती जा रही थी। शालिट का पुराना रवैया फिर लौट आया। गालियां और धिक्कार की बौछार होने लगी। उसका प्रत्येक शब्द चोट के समान मेरे सिर पर पड़ रहा था। मेरी आंखों के सामने रंग-बिरंगी रोशनी फेंकी जा रही थी। उस सबको मैं सहन कर सकता था किन्तु जांघों और धड़ के जोड़ों का दर्द मेरी जान निकाले दे रहा था। माँस पेशियों पर सूजन थी और यदि स्टूल पर बैठे हुए शरीर को तनिक ढील देने की कोशिश की जाती तो

गिर जाने का डर था। छः दिन और छः रात तक प्रायः एक ही स्थिति में बैठे रहने से मांस पेशियों और धमनियों में वर्णनातीत अकड़ आ गई थी। मेरा शरीर उस दर्द के विरुद्ध विद्रोह करना चाहता था। शरीर-विज्ञान के जानने वाले का क्या मत है यह मैं नहीं जानता किन्तु उस छटी रात को मेरी सहन-शक्ति प्रायः लुप्त हो गई थी। मुझको अब फिर यह डर लगने लगा था कि ऐसी भी घड़ी आ सकती है जब मैं बुरी से बुरी बात को स्वीकार करने के लिए बाधित हो जाऊँगा। आधी रात बीत जाने पर कप्तान तोरनुएफ़ फिर आ पहुँचा और शालिट से पूछने लगा; "इसने कुछ लिखा या नहीं ?"

"नहीं, यह हमको अब भी बेवकूफ बना रहा है।"

"मैंने सोचा था, इस पर दया का कुछ प्रभाव होगा। दया से काम नहीं चला तो दूसरे साधनों का प्रयोग करना ही होगा।"

यह भीषण वाक्य कह कर वह कमरे से बाहर चला गया।

"तुमने सुना कप्तान ने क्या कहा ?" शालिट ने मुझसे पूछा, "और क्या तुम उसका मतलब समझते हो ?"

"सुना था, किन्तु मैं उसका मतलब नहीं समझा।"

"नहीं समझे तो अब समझ जाओगे, पर मुझे डर है कि तब तुम कुछ न कर सकोगे। तुम्हारा शरीर मांस मज्जा का ढेर बन जायगा। तुम जैसे दुष्टों को सीधे मार्ग पर लाने के लिए हम बहुत सी तरकीबें जानते हैं। मुझे आशा है तुम अब भी अकल से काम लोगे। फैसला तुम्हारे हाथ में है क्योंकि यह तुम्हारे भविष्य का प्रश्न है मेरे नहीं।"

प्रश्नोत्तर के इस सुखद अन्तराय के पश्चात् पुरानी प्रक्रिया पुनः प्रारम्भ हुई।

जब वह चिल्ला रहा था मैं अपना मस्तिष्क किसी और बात पर लगाए हुए था। जब उसने देखा कि मैं उसकी बात सुन ही नहीं रहा हूँ तो उसने मुझको कंधा पकड़ कर जोर से हिला दिया। किन्तु उसके चीखने पुकारने और असीम शारीरिक कष्ट के बावजूद मैं अपने विषय में तर्कयुक्त विचार करने लगा : यह स्पष्ट है कि मेरी विरोध-शक्ति अब प्रायः समाप्त हो चुकी है पर तब भी मैं क्या कर सकता हूँ। यदि इनकी बात मान ली और डर के कारण मैंने इनके मन चाहे वक्तव्य पर हस्ताक्षर कर दिए तो शायद ये मेरे ऊपर दूसरों को पथभ्रष्ट करने और विदेशी सरकार की ओर से जासूसी करने के आरोप को हटालें क्योंकि ये लोग भी तो मेरे मामले को अनन्त काल तक बढ़ाते नहीं रह सकते। पर अब तक मैंने जो अनुभव प्राप्त किया है उसके आधार पर यह आशा करना कि यह मेरे प्रत्यक्ष समझौते के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेंगे गलत होगा। वास्तव में मेरी बात सुन कर वे बड़ा रोष प्रदर्शित करेंगे क्योंकि वे तो अपने आपको धोखा देना चाहते हैं कि मैं जो कुछ बताऊँ सच है। नहीं, इस दिशा में चल कर सौदा नहीं हो सकता। अगर मैं कह दूँ कि मैं जानता हूँ कि आप मुझसे जो स्वीकार करवाना चाहते हैं झूठ है फिर भी आपको तुष्ट करने के लिए मैं यह माने लेता हूँ कि मैं स्टालिन की हत्या तक करने को तैयार था तो स्पष्ट ही है कि वे सन्तुष्ट न होंगें। पर कोई स्टालिन की हत्या करने के आरोप को स्वीकार करले तो उसमें किसी प्रकार की मानहानि की आशंका नहीं। किसी दूसरे देश की ओर से जासूसी करना या श्रमिकों को पथभ्रष्ट करना ऐसे आरोप हैं जिनको स्वीकार करके अपने माथे पर कलंक का टीका लगाना होगा। इसलिए यदि मैं उनसे कह दूँ कि मैं तो केवल आतंकवादी ही था दूसरों को पथभ्रष्ट करने और जासूसी करने का काम हमारे संगठन में कुछ और लोग करते थे तो सम्भवतः काम बन जाय।

मेरे मन में इस प्रकार विचार-शृंखला बनती और बिगड़ती जारही थी। उसी विचार-शृंखला की कुछ अन्य कड़ियां इस प्रकार हैं :

किन्तु यदि मैंने ऐसा वक्तव्य दे दिया तो इसका अर्थ होगा कि मैं दूसरे निर्दोष व्यक्तियों को फँसा दूंगा। ये लोग मुझ से पूछते आये हैं कि मुझको किसने भर्ती किया था ? या मैंने किसको भर्ती किया था ? इस प्रश्न का उत्तर देकर मैं किसको फंसा सकता हूँ ? कैसा रहे यदि अपने पुराने शत्रु डेविडोविच और अपने व्यवस्थापक क्रावचैंको को फंसा दूं ? डेविडोविच खुफिया पुलिस का आदमी है। यदि उसका मैंने नाम ले दिया तो वे शायद समझेंगे कि मैं झूठ बोल कर इनको भ्रम में डाल रहा हूँ। तो फिर ऐसे व्यक्ति की बात सोची जाय जिसके विषय में सन्देह की थोड़ी बहुत गुंजायश तो हो। पर इन लोगों के पास ऐसे व्यक्तियों की अपनी ही सूची होगी जिनके विरुद्ध ये मुझसे बयान दिलाना चाहते हैं। यदि इनकी सूची में लेपुंसकी, शुबनिकोफ़ आदि विदेशी हुए तो ? नहीं नहीं ऐसा मुझ से नहीं हो सकता। एक बात और, यदि मैं यह स्वीकार करलूं कि वास्तव में मैंने एक गुप्त संगठन बना रखा था तो उस संगठन को किस विचारधारा का अनुयायी बताना चाहिए— बुखारिनवादी या ट्राट्स्कीवादी। एक समय बुखारिन से मेरी सहानुभूति रही थी तो इसलिए उसको बुखारिनवादी ही क्यों न कह दूं ? किन्तु तब......? तब यह प्रश्न करने पर अपनी विचार-शृंखला की कड़ियां फिर टूटती नजर आईं।

आधीरात के कुछ घन्टे पश्चात् वाइजबैंड ने शालिट का स्थान सम्भाल लिया। शालिट का चेहरा सफेद हो गया था और देखने से ऐसा मालूम होता था कि उसकी अवस्था भी मेरी अवस्था से अधिक अच्छी न थी। प्रकटतः उसके शरीर में भी इतनी शक्ति न थी कि निरंतर छः घन्टे तक

चिल्लाता और बड़बड़ाता रहे। मेरे दर्द में और भी वृद्धि हो रही थी पर अब कुछ देर के लिए मुझको फिर अपनी विचार-शृंखला को बिना किसी शोरोगुल के चलाते रहने का अवकाश मिल गया था। अब मैं सोचने लगा कि कैसा अच्छा हो कि मैं पूर्णमनन के पश्चात् आत्मसमर्पण करूँ न कि शारीरिक पतन के पश्चात् विवश होकर। फिलहाल जहाँ तक हो सके विरोध करते रहना चाहिए। प्रातः काल होने तक मैं आतंकवाद और क्रान्तिविरोधी आन्दोलन और इन्स्ट्रीट्यूट के कलह के आरोपों को स्वीकार करलूं और जासूसी और दूसरों को पथभ्रष्ट करने के अभियोग से इनकार कर दूँ ऐसा मैंने सोच रखा था। मैंने यह भी सोच लिया था कि मैं अपने आपको ट्राट्स्कीवादी नहीं अपितु बुखारिनवादी षड़यन्त्र का सदस्य बताऊँगा।

जिस प्रकार किसी प्यासे यात्री को रेगिस्तान में मृगतृष्णा का मोह हो जाता है उसी प्रकार हाथ पाँव फैलाने और चारपाई पर लेट कर आराम करने की कल्पना से मैं एक विचित्र सुख का अनुभव करने लगा और सोचने लगा कि रेगिस्तान के यात्री की और मेरी मृगतृष्णा में यह अन्तर है कि मैं चाहूँ तो इसको वास्तविकता का कलेवर दे सकता हूँ। बात वास्तव में यह थी कि मेरे मन में आत्मसमर्पण की भावना आने से मेरी शारीरिक शक्ति भी क्षीण होने लगी थी। मैं सोचने लगा था कि जब एक न एक दिन आत्मसमर्पण करना ही होगा तो अधिक देर करते रहने से क्या लाभ ?

अगले दिन प्रातः काल जब रायजनिकोफ आया तो उसका चेहरा बड़ा सुखी और स्फूर्तियुक्त दिखाई दिया। मैंने सोचा यही समय है जब मुझको पतन की नदिया में डुबकी लगा लेनी चाहिए।

"सुनिए इन्सपैक्टर साहब, मैं हार मानता हूँ। अब विरोध करते

रहना मेरे बस की बात नहीं। मैं जानता हूँ कि आपने मेरे ऊपर जो आरोप लगाए हैं वे सर्वथा सारहीन हैं किन्तु आप जो कुछ कहें मैं स्वीकार करने को तैयार हूँ।"

मेरे यह कहने पर मुझको जवाब मिला कि "जो मन में दुराव रख कर अपराध स्वीकार करते हैं उनकी बात नहीं सुनी जाती। यदि तुम अपने ऊपर लगाए गए अभियोगों को असत्य मानते हो तो उनको स्वीकार करने का तुमको कोई अधिकार नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि तुम सोवियट सरकार को गलत काम करने के लिए उत्तेजित करना चाहते हो। हम अब तक अपनी तहकीकात बड़े सभ्य ढंग से करते रहे हैं। अभी तक हमने तुम्हारे विरुद्ध हिंसा नहीं की। सत्य का पता लगाना ही हमारा एक मात्र ध्येय रहा है। जो तुमने वास्तव में सरकार के विरुद्ध किया है उसी को हम स्वीकार करवाना चाहते हैं। किसी शर्त के साथ की गई अपराध-स्वीकृति हमको मंजूर नहीं।"

उसके लिए इस प्रकार की बातें करना प्राय: स्वाभाविक ही था। अच्छी तरह सोने, स्नान और हजामत करने, और भरपेट नाश्ता करने के पश्चात् वह अब फिर दिन भर की जोर आजमाई के लिए तैयार था। इसके प्रतिकूल में पिछले १४० घन्टे से एक क्षण के लिए भी न सो सका था जिसके फलस्वरूप मेरा शरीर मानवी देह न रह कर संचित पीड़ा का पुंज सा बन गया था। उसको यह स्पष्ट हो गया था कि मेरे शरीर में उसका सामना करते रहने की शक्ति शेष न रह गई है। मांस और रुधिर से बनी यह देह आखिर कब तक ऐसी यातनाओं का सामना करती रह सकती थी? अब वह मुझ से कुछ भी करा सकता था। एक सप्ताह पहले वह शर्तिया इक़बाल से भी सन्तुष्ट हो सकता था। अब मैं बिल्कुल उसकी मुट्ठी में आ चुका था।

मैंने अपनी बची-खुची शक्ति को पुनः बटोर कर एक बार फिर विरोध करने का प्रयत्न किया किन्तु प्रयत्न व्यर्थ ही रहा। आत्मसमर्पण न करने का निश्चय करना एक बात है और शरीर में उत्तरोत्तर बढ़ती पीड़ा को सहन करते रहना बिल्कुल दूसरी बात। मैंने कभी कभी अपने बोझ को अपने हाथों पर सम्भाल कर पांव फैला कर अपने कष्ट में कमी करने की कोशिश की पर मैं अब इतना दुर्बल हो गया था कि अपने शरीर को दो चार क्षण से अधिक अपने हाथों पर नहीं सम्भाल सकता था। फिर एक दो बार तो रायजनिकोफ़ ने इस पर ध्यान नहीं दिया किन्तु जब उसने देखा कि मैं नियमपूर्वक ऐसा कर रहा हूँ तो उसने मेरी इस कार्यवाही को निषिद्ध घोषित कर दिया। यहां तक कि वाइजबैण्ड ने भी जो इसके बाद वहां आया मुझको ऐसा करने की अनुमति न दी। सम्भवतः उसको ऐसा आदेश कर दिया गया था। किसी आदमी पर यदि कोड़ों की बौछार हो तो उसमें भी उसको इतना कष्ट नहीं होता जितना कि अब मुझको हो रहा था क्योंकि कोड़े अनन्त काल तक पड़ते नहीं रह सकते और यदि पड़ते रह सकते हैं तो कोड़े खाने वाला व्यक्ति कुछ देर के बाद बेहोश हो जाता है जिससे पीड़ा का अनुभव होता ही नहीं। किन्तु दिन रात एक ही स्थिति में स्टूल पर बिना हिले जुले बैठे रहना बिल्कुल दूसरे ही प्रकार का अनुभव है। इसमें चेतनाहीन होने का कोई अवसर नहीं और इसलिए कष्ट में कोई कमी नहीं होती। मैं दर्द के मारे ऐंठ रहा था। मेरी दशा देख कर वाइजबैण्ड भी पिघल सा गया और मेरी ओर से मुंह फेर कर खिड़की की ओर देखने लगा। दोपहर हुआ और वाइजबैंण्ड का उत्तराधिकार शालिट को मिल गया। उसकी आकृति देखते ही मेरा हृदय कांप गया। उसके साधनों और यातनाओं को सहने की हिम्मत मुझ में न थी। मैं किसी प्रकार यत्न करके उठ खड़ा हुआ और लड़खड़ाता हुआ रायजनिकोफ़

के कमरे का ओर चल दिया। वह अपनी मेज पर बैठा कुछ कर रहा था। मुझे ऐसा लगता है कि उस समय मेरी बुद्धि भी भंग हो चुकी थी।

"इन्सपैक्टर साहब" मैंने बड़े आर्त्तभाव से रायजनिकोफ़ को सम्बोधित करते हुए कहा, "मुझको शालिट से बचाइए। आप जो कुछ भी करना चाहें, कीजिये। पूछताछ आप स्वयं ही कर लीजिए। शालिट को मेरे पास न आने दीजिये।"

मानो कि मेरे आर्त्तनाद के प्रति किसी सहानुभूति की आवश्यकता ही न थी, रायजनिकोफ़ ने वैसे ही बैठे हुए उत्तर दिया, "शालिट ठीक ठीक दबाव डालना जानता है और इसी बात की हमको आवश्यकता है। तुम कभी न कभी परास्त होगे यह मैं पहले ही कह चुका था। कमरे में वापस चले जाओ और अपने अपराधों का स्वीकृतिपत्र लिखदो।"

अब खुला विरोध करने का मुझमें साहस भी न रह गया था। पीड़ा और मानसिक अव्यवस्था के कारण मैं पागल सा हो गया था। शालिट के होंठों पर संतोष की मुस्कान थी और वह आत्मप्रशंसा की मुद्रा में बैठा हुआ था।

जैसे कि वह अपने आप को बधाई दे रहा हो मुझको देखते ही कहने लगा, "आखिर कब तक खड़े रह सकते थे तुम? यदि अब भी अपना अपराध स्वीकार करलो तो रात को मजे से सो सकते हो। अब यदि देर की तो हम फिर तुमको किसी दशा में भी न बख्शेंगे। तुम हमारे चरणों पर लेटे होगे और दया की भिक्षा मांगोगे और भिक्षा नहीं मिलेगी।"

उसने उस दिन मेरे साथ जिस प्रकार का व्यवहार किया उसको बताया नहीं जा सकता। जब उसको पता लग गया कि मैं अब

टूट चुका हूं तो उसने अपना दबाव और भी बढ़ाने की कोशिश की। उसको एक मात्र चिन्ता यह थी कि मेरे आत्मसमर्पण का श्रेय उसको ही मिले, उसके किसी अन्य सहयोगी को नहीं। जिस प्रकार बिल्ली अपना आखिरी पंजा मारने से पहले चूहे के साथ खेला करती है उसी प्रकार वह मेरे साथ भी क्रूर क्रीड़ा कर रहा था। यदि कभी उसको यह संदेह हो जाता था कि मैंने इधर उधर हिल जुल कर या पांव सीधे करके अपने दर्द को कम करने की कोशिश की है तो वह बाघ की तरह उछल पड़ता था और पूरे जोर से चिल्ला कर गालियां देने लगता था। एक बार मैंने उसके डराने धमकाने की अवहेलना की और अपने हाथों पर अपने शरीर को उठा लिया। वह अपनी जगह से उठा और उसने जोर से मेरे हाथ में लात मार दी। मैं उछल पड़ा और चीख चीख कर कहने लगा कि "आपको इस प्रकार शारीरिक दुर्व्यवहार करने का कोई अधिकार नहीं है। मैं जानता हूं कि मैं बहुत देर तक इन यातनाओं को नहीं सहता रह सकता और अन्त में मुझको किसी झूठे वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने ही पड़ेंगे, किन्तु यह तुम से मैं कहे देता हूँ, शालिट, कि मेरे आत्म-समर्पण का श्रेय तुमको कभी नहीं मिल सकता।"

मैंने उसके प्रति जो घृणा प्रकट की थी उसकी तो उसको चिन्ता ही क्या हो सकती थी किन्तु उसके मन में यह विचार आते ही कि अन्त में मैं रायजनिकोफ़ या वाइजबैण्ड के श्रेय में अभिवृद्धि कराऊँगा उसके चेहरे पर एक विचित्र पीलापन आगया। उस समय रायजनिकोफ दफ्तर में नहीं था। मैंने बड़े गम्भीर स्वर में कहा कि "मैं नागरिक रायजनि-कोफ़ से मिलना चाहता हूँ। तुमको मेरे एक शब्द से भी लाभ नहीं पहुँचेगा। मैं अपना वक्तव्य नागरिक रायजनिकोफ़ को ही देना चाहता हूँ।"

"आज शाम तक रायजनिकोफ़ यहाँ नहीं होंगे। इस समय तुमसे

पूछताछ करने का अधिकार सरकार की ओर से मुझको ही मिला हुआ है। तुमको अपने ट्राट्स्कीवादी, फ़ासीस्ट, जासूसी और दूसरों को पथभ्रष्ट करने वाले षड़यन्त्रकारी संगठन का पता मुझको ही देना होगा। कौन कौन हैं तुम्हारे सहयोगी षड़यन्त्रकारी ? किस किस की सहायता से तुम हमारे देश के विषय में शत्रुओं को खबर पहुँचाते रहे हो ? तुम्हारा सम्बन्ध जर्मनी के स्थानीय प्रतिनिधि से था या मास्को स्थित जर्मन राजदूत से ? कामरेड स्टालिन की हत्या करने के लिये तुम लोग जो प्रयत्न करने वाले थे, उसके लिये तुमको हथियार किसने दिये थे ?

"नागरिक शालिट, मैं कह चुका हूँ तुमको मैं एक शब्द भी न बताऊँगा।"

"यदि तुमने हमारी पूछताछ में विघ्न डाला तो हमें तुम्हारे विरुद्ध शक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा। कप्तान तोरनुएफ़ ने हमको ऐसा करने की पहिले ही से अनुमति दे रखी है।"

"मैं केवल रायजनिकोफ़ ही से बात करना चाहता हूँ।"

अब उसको भी यह अनुमान होने लगा था कि मेरे ऊपर आवश्यकता से अधिक दबाव डाला जा चुका है। इसलिए उसने मुझसे समझौता करने की सोची !

"अगर तुम मुझसे नहीं बोलते तो लो कागज पैंसिल और कप्तान तोरनुएफ़ के ही नाम एक पत्र लिख दो।"

इस पर मैंने कहा, "नहीं, मैं तो रायजनिकोफ़ से ही भेंट करना चाहता हूँ; उन्हीं को बुलवादो।"

"वह यहाँ नहीं है। मैं पहिले ही बता चुका हूँ। तुम गुण्डे हो, तुम रायजनिकोफ़ ही को अपना बयान देना चाहते हो तो उन्हीं को

दो। यह न समझो कि तुम अपनी मनमानी कर सकते हो। अभी थोड़ी देर में ही तुम्हारे मुंह से खून बहने वाला है। हम तुमको चूहों के हवाले कर देंगे।"

मैंने अब उसकी किसी बात पर न बोलने का फैसला कर लिया था। मेरी आंखों के सामने लाल रंग के वृत्त से बनते नजर आते थे और मेरा मस्तिष्क काम नहीं कर रहा था। मुझको लगता था जैसे कि कमरा घूम रहा हो। उस समय जितना दर्द था उतना पहले कभी न हुआ था। शरीर का कोई अंग ऐसा न था जो पीड़ा मुक्त हो। मैं जिस ओर भी गर्दन घुमाता था उसमें दर्द होता था। किन्तु वाइज़बैण्ड के आने तक मैंने शालिट की एक भी बात न मानी।

"एलेग्ज़ेण्डर सेमोनोविच" उसने मुझको बड़े सहानुभूति पूर्वक ढंग से सम्बोधित करते हुए कहा, "अब तुम्हारी कोशिश बेकार है। अपनी ज़िद्द पर और अड़े रहे तो तुम्हारा दिमाग़ और भी खराब हो जायगा।"

उत्तर देने की शक्ति मुझ में न थी। सारा कमरा आँखों से ओझल हुआ जा रहा था और कानों में सांय सांय की आवाज़ बढ़ती जा रही थी। बिजली की रोशनी से आंखों को इतना कष्ट होता था कि मैं उनको खुला न रख सका। मैं दो बार स्टूल से गिरा और दोनों बार वाइज़बैण्ड ने मुझको उठाया। जब मेरा कष्ट असह्य हो उठा तो मैंने टूटे फूटे शब्दों में वाइजबैण्ड से शौचालय जाने की अनुमति चाही। वाइज़बैण्ड मान गया यद्यपि कुछ ही देर पहले मैं वहाँ हो आया था। खड़ा होने से और शौचालय जाने आने से मुझको बड़ा आराम मिला यद्यपि स्टूल पर पुनः बैठते ही फिर असह्य दर्द उठने लगा। अब रायज़-निकोफ़ की बारी आने वाली थी और मैं उसी की प्रतीक्षा में था। तब

मैंने क्या देखा कि वाइज़बैण्ड को छुट्टी दिलाने के लिए रायज़निकोफ़ नहीं बल्कि शालिट ही आ धमका है।

उसने मुझसे व्यंग करते हुए कहा, "आज तो बंधुवर तुमको रात भर मेरे ही साथ रहना पड़ेगा और यदि तुमने अब भी अपने अपराध को स्पष्ट रूप से स्वीकार न किया तो आज तुमको बड़ा आनन्द मंगल कराने का निश्चय किया है मैंने।"

रात भर शालिट के पंजों में रहना पड़ेगा यह कल्पना करके मैं सिहर उठा। किन्तु मेरा पहला निश्चय अभी ज्यों का त्यों बना हुआ था। मैंने सोच रखा था कि यदि मेरी दोनों टांगें भी काट दी जायंगी तो भी मैं उसको वक्तव्य नहीं दूंगा। मैं स्टूल पर बैठा हुआ था और वह यथापूर्व मुझ पर धिक्कारों और अपशब्दों की वर्षा कर रहा था। वह वास्तव में जो कुछ कहता था मेरे मस्तिष्क तक न पहुँच पाता था। मेरे कान जवाब दे चुके थे और मैं मूर्च्छित सा होता जाता था। किसी भी वस्तु पर मेरी दृष्टि न ठहरती थी। शालिट भी मुझको अच्छी तरह दिखाई न देता था। हाँ मेरे सर पर भारी दबाव बढ़ता जा रहा था इसका ज्ञान मुझको था। वह गिद्ध की तरह मुझको ताक रहा था। प्रहार करने के अतिरिक्त उसने और कोई भी बात न उठा रखी थी। वह मेरे पीछे ऐसे पड़ा हुआ था मानों कि उसके हृदय में मेरे प्रति भयंकर घृणा की ज्वाला धधक रही हो। मैंने उसका विरोध करने का साहस किया यह सोच कर वह उन्मादी सा बन गया था। वह अब तक जो करता रहा था उससे मुझको परिचय था। किन्तु आज तो वह अपनी ख्याति को भी पीछे छोड़ चुका था। आज उसकी चिल्लाहट और बड़-बड़ाहट को सुनकर पास के दूसरे कमरों के अधिकारी भी हमारे कमरे में झाँकने लगे थे। उनकी भी समझ में न आ रहा था कि आज क्या

हो रहा है। मेरी शक्ति लुप्त हो चुकी थी। उसके प्रति मेरे हृदय में जो घृणा थी उसी के सहारे मैं उसका सामना किये जा रहा था। उसको भी यह पता लग गया था। इसीलिए वह क्षण प्रतिक्षण अधिकाधिक हिंस्र होता जा रहा था। आधी रात से कुछ मिनट पहले की बात है कि मेरी शक्ति का अन्त होता हुआ दिखाई दिया। मैंने टूटे फूटे शब्दों में शालिट से कहा, कि "नागरिक रायज़निकोफ़ को टेलीफोन कीजिए मुझको उनसे बड़े महत्व की बात कहनी है।"

"जब तक तुम हार न मान लोगे एसा नहीं हो सकता। पहले तुम्हारा वक्तव्य मुझको चाहिए। जो अपराध किए हैं स्पष्ट रूप से बता दो। अब उनको तुम अपने पेट में छुपाये नहीं रह सकते।"

मैं खड़ा हुआ और हिलने लगा। खड़ा होने पर ऐसा लगा मानों कमरा घूमने लगा है। मैं गिर पड़ा। शालिट झपटा और मुझको खींच कर खड़ा करने लगा। उस समय भी वह ज़ोर ज़ोर से चिल्ला रहा था। ठीक उसी समय कप्तान तोरनुएफ़ आ पहुँचा। आते ही उसने पूछा; "इतना शोर किस लिए हो रहा था ?"

उसके इस प्रश्न के उत्तर में शालिट ने कहा, "यह दुष्ट सोवियट शक्ति का मज़ाक बना रहा है। आप आज्ञा दें तो हम अभी इसका काम तमाम कर सकते हैं।"

मैंने निराशाभरी दृष्टि से तोरनुएफ़ की ओर देखा और उसको सम्बोधित करते हुए कहा कि, "मैं वक्तव्य देने को तैयार हूँ पर शालिट के सामने नहीं।" यह कहते हुए मेरा दम फूल गया।

तोरनुएफ़ ने मेरी बात सुनकर अपना मुँह शालिट की ओर किया। शालिट इस समय मानों कि सलाम करने के लिए खड़ा था। तोरनुएफ़ ने पूछा "लैफ्टिनैंट रायज़निकोफ़ कहाँ है ?"

"कप्तान साहब, रायज़निकोफ़ कुछ मिनट में ही यहाँ पहुँच जायेंगे," शालिट ने उत्तर दिया।

"उनके आने की प्रतीक्षा करो। जब वह आ जायें तब उनको और वाइज़बर्ग को लेकर मेरे कमरे में आना।"

"जैसी आपकी आज्ञा, कप्तान साहब," शालिट बोला।

तोरनुएफ़ के जाते ही रायज़निकोफ़ आ पहुँचा। शालिट ने उसको सारी कथा कह सुनाई।

"तो क्या अब तुम बयान देने को तैयार हो ?" उसने मुझसे पूछा।

"जी हाँ," मैंने उत्तर दिया।

मेरा उत्तर सुनकर उसने शालिट को आज्ञा दी कि मुझको वहाँ से हटाकर उसके कमरे में पहुँचा दे और आराम कुर्सी पर बैठने दे। रायज़-निकोफ़ को इस समय अपने बड़े अफ़सर से मिलने जाना था।

कुछ मिनट पश्चात् टेलीफ़ोन की घंटी बजी जिसका शालिट ने जवाब दिया। इसके पश्चात् उसने मुझको अपने पीछे चलने की आज्ञा दी। अब तो उसका स्वर ही बदल गया था। अब वह ऐसी बातें कर रहा था जैसे कि देर से मेरा मित्र रहा हो।

कन्वेयर में फंसे हुए मुझको सात दिन हो गए थे। जितना मुझसे हो सका मैंने विरोध किया किन्तु सातवें दिन की आधी रात होने तक मैं परास्त हो गया। आत्मसमर्पण और कल्पित अपराध-स्वीकृति के अति-रिक्त मेरे लिए कोई चारा नहीं रह गया था।

मैं तीन घंटे तक अपना वक्तव्य लिखाता रहा। उस समय मुझको बराबर एक ही चिन्ता लगी थी कि यदि ये लोग मुझसे सहषड्यन्त्र-

कारियों के नाम पूछ बैठे तो मैं क्या कहूँगा। कभी मन में यह आशा बंधती थी कि क्योंकि तोरनुएफ़ स्वयं भी थक चुका है इसलिए शायद मेरे आधे ही वक्तव्य से संतोष कर लेगा और मुझको सोने देगा। एक रात का सोना मिल जाय तो मैं और एक सप्ताह तक पूर्ववत फिर विरोध करता रह सकूंगा।

उस समय मेरा एक मात्र उद्देश्य कुछ समय पाना था। जर्मनी और आस्ट्रिया की कम्यूनिस्ट पार्टियों के इतिहास से मुझको पूरा परिचय था इसलिए मैं देर तक उनके आन्तरिक कलहों की कथा कहता रहा। उनकी केन्द्रीय समितियों में जो पारस्परिक विग्रह था उसका भी मैंने उल्लेख किया और जिन-जिन लोगों ने कभी कमिन्टर्न की नीति का विरोध किया था उनके नाम लिखा दिए। ऐसा करना आसान था और उससे किसी को कोई खतरा भी पैदा न होता था।

दो घंटे तक मेरा प्रवचन चलता रहा और एक बार भी मुझको वास्तविकता या सत्य का खंडन करने की आवश्यकता न पड़ी। जर्मनी के श्रमिक आंदोलन में विचारों का जो संघर्ष चल रहा था, अब तक का मेरा वक्तव्य उसका विवरण मात्र था और क्रान्ति-विरोध से उसका कोई सम्बन्ध न था। जर्मनी की पार्टी में पदासीन और पदविहीन दोनों ही दल क्रान्ति के समर्थक थे। उनमें परस्पर मतभेद साधनों के ही सम्बन्ध में था। दोनों ही दल सोवियट रूस के और समाजवाद के समर्थक थे। लेकिन तोरनुएफ़ और उसके निम्नाधिकारियों के लिए पदासीन दल और कमिन्टर्न का विरोध करना ही क्रान्ति का विरोध करना था क्योंकि कमिन्टर्न और स्टालिन उनकी भाषा में पर्यायवाची शब्द थे। अपनी कहानी कहते कहते मैंने अपने मस्तिष्क पर रोजिस्की द्वारा फैलाए गए जादू का भी असर लुप्त होता पाया। अब मैं साधारण तर्क और बुद्धि को सर्वोपरि मानता था। अपनी अपराध-स्वीकृति के प्रथम भाग में मेरा मस्तिष्क

ठीक ठीक काम कर रहा था और प्रत्येक विषय का मैं तर्कसंगत विश्लेषण कर सकता था। आराम कुर्सी पर बैठ कर जो आराम मिला था उससे मेरी थकान जाती रही थी।

वास्तव में मुझको यह जान कर प्रसन्नता हो रही थी कि ऐसी जगह बैठ कर, रूस की खुफ़िया पुलिस के गढ़ में वक्तव्य देकर, मैं जर्मनी के उन कम्यूनिस्टों की विचारव्यवस्था का प्रतिपादन कर सका जो मार्क्सवादी होते हुए भी रूसी कम्यूनिज़्म के आलोचक थे और जिनसे मेरी सहानुभूति रही थी। तोरनुएफ़ स्वयं मेरे वक्तव्य को लिख रहा था। दो घंटे की निरंतर कलम घिसाई के पश्चात् उसने कुछ देर के लिए रुकना चाहा और मुझसे कहा कि, "एलेग्जेण्डर सेमोनोविच अब तुमको कुछ खा लेना चाहिए। उसके पश्चात् हम तुम्हारे वक्तव्य के दूसरे भाग को लिख लेंगे। दूसरे भाग से मेरा मतलब तुम्हारी व्यक्तिगत कार्यवाहियों से है।"

खाना खाने के पश्चात् मैंने अपनी "अपराध कहानी" पुनः प्रारंभ कर दी।

अन्त में तोरनुएफ़ ने कहा, "आज इतना ही काफी है। तुम्हारे वक्तव्य के अन्त में मैं एक वाक्य जोड़ देता हूँ जो इस प्रकार है: 'दूसरों को पथ भ्रष्ट करने और विदेशी सरकार की ओर से जासूसी करने के लिए बनाए गए गुप्त संगठन में मैंने जो कुछ किया उसका उल्लेख मैं कल करूँगा।' यहाँ तुम हस्ताक्षर कर दो।"

उसने मुझको कलम दे दिया। मैं एक बड़ी द्विधा में फंस गया। अब मैं क्या करूँ ? विरोध करूँ या मौन रह कर इस पर हस्ताक्षर कर दूँ ? यदि विरोध किया तो वही पुराना क्रम पुनः प्रारम्भ हो सकता है।

निद्रा के स्थान में कन्वेयर से पाला पड़ेगा। तुरंत ही फिर विरोध प्रारंभ करने की शक्ति मुझ में न थी।

एक सप्ताह के विरोध के लिए एक रात की अबाध निद्रा आवश्यक थी। इन सब बातों को सोच कर मैंने हस्ताक्षर कर दिए।

तोरनुएफ़ खड़ा हो गया और उसने शालिट को आज्ञा दी कि वह मेरे लिए एक गिलास शराब और ले आये।

"एलेग्ज़ेण्डर सेमोनोविच, पिओ, तुम इसके अधिकारी हो; तुमने आज हमारी बड़ी सहायता की है;" तोरनुएफ़ ने मुझको प्रोत्साहित करते हुए कहा। उसकी मुद्रा बड़ी प्रसन्न दिखाई देती थी।

"पर मुझ पर अब क्या बीतने वाली है, क्या मुझको अब गोली से उड़ा दिया जायगा ?"

"गोली से उड़ा दिए जाओगे ? ऐसी निरर्थक बातों से कोई लाभ नहीं। बस अधिक से अधिक यह होगा कि तुमको कुछ वर्ष तक कारावास में रहना पड़ेगा। लौट कर आओगे तो अपने आपको बहुत बड़ा आदमी पाओगे। रोजिस्की का उदाहरण तुम्हारे सामने है।"

"रोजिस्की की क्या बात है ?"

"उसको तीन वर्ष का दंड मिला है और वह अपने निश्चित कारावास के लिए चल भी पड़ा है, किन्तु वह शीघ्र ही वापस आ जायगा।"

दो वर्ष बीत जाने पर मुझको यह पता लगा कि रोजिस्की उस समय खारकोफ़ की आन्तरिक जेल ही में बन्द था।

रायज़निकोफ़ मेरे साथ खोलोदनाया गोरा की जेल तक गया। जब मैं अपनी कोठरी में पहुँचा तो देखा वह खाली पड़ी थी। मैंने जूते उतारे और कपड़े पहने हुए ही चारपाई पर पड़ रहा। आधी रात को खिड़की खुली और किसी की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। वह मुझसे पूछ रहा था, "क्या नाम है तुम्हारा ?"

"वाइज़बर्ग," मैंने उत्तर दिया।

"तुम्हारी पूछताछ अभी बाकी है।"

यह सुन कर मेरा हृदय बैठने लगा। अब रायज़निकोफ़ से मैं क्या कहूँगा ? अब वह क्या करने वाला है ? ये प्रश्न मेरे मन में उठने लगे। पर इनका उत्तर मैं न सोच पाता था यद्यपि उनका उत्तर मुझको सोचना ही चाहिए था।

मुझको आन्तरिक जेल में ले जाया गया। वहाँ तहखाने की एक कोठरी में रखा गया। कुछ देर प्रतीक्षा करने के पश्चात् मुझको रायज़निकोफ़ का सन्देश मिल गया।

रायज़निकोफ़ के कमरे में जब मैं पहुँचा तो मेरे बैठते ही उसने कहना शुरू किया "सबसे पहले हम तुम्हारी पथ-भ्रामक कार्यवाहियों के विषय में जानना चाहते हैं। समय मिला तो फिर जासूसी के विषय में पूछताछ होगी।"

मैंने अपने समस्त साहस को बटोर कर कहा कि, "क्या वास्तव में आपको यह विश्वास हो गया है कि मैंने जिस वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए हैं उसका एक शब्द भी सत्य है ?"

पहले तो उसने मेरी बात को सुन कर भी अनसुना कर दिया। पर

कुछ देर बाद वह बोला, "मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा, अपना मतलब साफ़ साफ़ क्यों नहीं बताते ?"

"कल मैंने जो वक्तव्य दिया था वह आद्योयान्त झूठ है। एक सप्ताह की निरंतर यातनाएं सहते सहते और निद्रा अभाव के कारण धीरज खोकर मैं उस पर हस्ताक्षर करने को विवश हो गया था। अब मैं अपने वक्तव्य को वापस लेना चाहता हूँ।"

"क्या कहा तुमने ! कुत्ते ! हरामज़ादे ! क्रान्तिविरोधी गुंडे ! तो तुम सोवियट राष्ट्र के साथ ताक़त आजमाई करना चाहते हो ! और मेरे सामने ही तुम ऐसी बात कहो इतनी धृष्टता तुम में हो गई ! हम तुमको पागल कुत्ते की तरह गोली से उड़ा देंगे।"

"आपके जो जी में आए कीजिए। मैंने कभी क्रान्ति का विरोध नहीं किया। रूस की सरकार के विरुद्ध भी मैंने कुछ नहीं किया। सारी कहानी कपोलकल्पना है। मेरे शरीर में तुम्हारा मुकाबला करने की शक्ति न रह गई थी इसलिए विवश होकर मैंने इस वक्तव्य पर हस्ताक्षर कर दिए। आपने ग़ैर कानूनी दबाव डाल कर मुझसे बयान दिलवा लिया।"

रायज़निकोफ़ उठा और अपनी मेज़ का चक्कर काट कर मेरे पास आ पहुँचा।

"तुम इतने बड़े धूर्त हो, इसका मुझको पता न था ? तुम्हारा यह साहस कि तुम मुझ पर यह आरोप लगाओ कि मैंने दबाव डालकर तुमसे झूठे वक्तव्य पर हस्ताक्षर करवा लिए। तुमने अपराध इसलिए स्वीकार किया कि तुम्हारा भंडाफोड़ हो चुका था और अब अधिक देर तक झूठ को छिपाए रखने की शक्ति तुम में नहीं रह गई थी। किन्तु मुझको यह

न मालूम था कि तुम इतने बड़े दुष्ट हो, नहीं तो मैं तुमको अभी और कुछ दिन स्टूल पर बैठाए रख कर तुम्हारे सारे अपराधों को एक एक करके उगलवा देता। किन्तु अब भी क्या बिगड़ा है? हमारे पास समय है। अब हर एक बात तुम अपने हाथ से लिखोगे और इतना लिखोगे कि तुम्हारी उंगलियाँ भी न हिल सकेंगी। येजोफ़ ने हमको यह मंत्र सिखा रखा है। अच्छी बात है एक बार हम धोखा खा गए, दूसरी बार ऐसा न होगा।"

× × ×

फिर कन्वेयर का कार्यक्रम शुरू हुआ पर मुझको संतोष था कि किसी प्रकार आराम करने के लिए एक दिन तो पा सका। अब फिर वही दौर शुरू हुआ। रायज़निकोफ़ का स्थान शालिट लेता था तो शालिट का स्थान वाइज़बैण्ड। शालिट पहले की तरह अपना वही पुराना राग अलापता रहा। मेरे जांघ और धड़ के जोड़ों में फिर दर्द शुरू हो गया और चौबीस घंटे ही में फिर सूजन आगई। तीसरे दिन मैंने कागज़ और पैन्सिल माँगा और तोरनुएफ़ को चिट्ठी लिखने का इरादा ज़ाहिर किया। इन लोगों ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

मैंने अपनी चिट्ठी में लिखा "नागरिक कप्तान मैं निर्दोष हूँ किन्तु जब मेरा शरीर यातनाएं सहने में असमर्थ होकर हार मान लेगा तो मैं फिर किसी झूठे वक्तव्य पर हस्ताक्षर कर दूंगा, जिसको एक दिन बाद फिर वापस ले लूँगा। दुनिया की कोई शक्ति नहीं जो मुझको सरकारी वकील और अदालत के सामने झूठ बोलने को मजबूर कर सके।"

रायज़निकोफ़ ने मेरी चिट्ठी पढ़ी।

"इससे तुमको क्या मदद मिलेगी? तुमको अवश्य ही झुकना पड़ेगा। फिर तुम यह कैसे समझ गए कि हम तुमको किसी अदालत के सामने

पेश करेंगे। तुम जैसे लोगों का निबटारा करने के लिए सैनिक ट्रिब्यूनल जो है।"

कन्वेयर के दूसरे दौर को मैं उतनी देर तक न सह सका जितनी देर तक पहले सह चुका था। चौथे दिन दोपहर के बाद मैंने काग़ज़ और पैन्सिल माँगी और एक नया "अपराध-स्वीकृति-पत्र" लिख दिया। अब मुझको याद नहीं रहा कि इस बार मैंने कौनसे अपराध को स्वीकार किया था। शालिट मुझको एक दूसरे कमरे में ले गया जहाँ कोई एक नया ही अधिकारी काम कर रहा था। मुझको कुछ देर तक वहां ठहरना पड़ा और इस बीच में मेरी बुद्धि फिर से काम करने लगी। जब रायज़निकोफ़ लौट कर आया तो मैंने उससे अपना काग़ज़ वापस माँगा और जो कुछ उसमें लिखा था उससे इनकार करने की इच्छा प्रकट की। मैंने बड़े आग्रह के साथ रायज़निकोफ़ से कहा, "जो कुछ मैंने लिखा है बिल्कुल झूठ है; शुरू से लेकर आखिर तक निरा मनगढ़न्त है। मेरे लिखने का वास्तविक अर्थ यही है कि मैं शारीरिक दंड को सहन नहीं कर सकता। स्टूल पर बैठे रहना मेरे लिए असह्य हो गया है। इसके कारण मैं किसी भी काग़ज पर हस्ताक्षर कर सकता हूँ पर जब भी मुझको खड़ा होने का अवसर मिलेगा मैं अपने लिखे से इनकार कर दूँगा। मेरा वक्तव्य मुझको वापस दे दो। यह सरासर झूठ है।"

उसके मुख पर इस समय जो भावना दिखाई दी उसकी छाप अभी तक मेरे मन पर मौजूद है। मेरा हस्ताक्षर किया हुआ काग़ज़ उसके हाथ में था। बिना कुछ कहे ही उसने सिर हिलाया और बड़ी सावधानी से उस पर्चे को अपने बैग में रख लिया। यह करने के पश्चात् वह मुझको अपने कमरे में ले गया और कहने लगा कि, "हमको जितने काग़ज़ों की आवश्यकता थी वह हमको प्राप्त हो गए हैं, गवाहों के बयान हैं, तुम्हारे

अपने अपराधस्वीकृति पत्र हैं और इनके अतिरिक्त एक दो चीज़ें और भी हैं। हमारे पास इतना प्रमाण है कि उसके आधार पर तो हम तुमको फ़ौजी अदालत के सामने पेश कर सकते हैं, जहाँ बात की बात में तुमको दंड मिल जायगा। अब यदि शीघ्र ही तुमने प्रायश्चित न किया तो तुम्हारे साथ यही होने वाला है। अपना बयान देकर उससे मुकर जाना अगर कुछ देर और जारी रहा तो यह समझ लो कि कुछ दिन में तुम ज़िन्दा नहीं बचोगे। अब मैं एक ही प्रश्न तुमसे पूछना चाहता हूँ: "तुम अपने वक्तव्य को स्वीकार करते हो या नहीं ?"

"नहीं, रायज़निकोफ़ साहब, कभी नहीं;" मैंने उत्तर दिया।

इस पर रायज़निकोफ़ ने कहा कि, "अपने वक्तव्य को वापस लेने की तुम्हारी बात हमको ही मालूम है। यदि हमने तुम्हारे इन वक्तव्यों को फ़ौजी अदालत के सामने भेज दिया तो उतना ही काफ़ी है। तुमसे अब वह कोई प्रश्न नहीं पूछेगी। वह इसी के आधार पर तुमको दंड दे देगी। बोलो क्या अब भी तुम अपने वक्तव्य को वापस लेना चाहते हो ?"

"हाँ, अवश्य।"

"तो फिर मरो और सड़ो उसी स्टूल पर बैठ कर। तुम अपने आप को क्या समझते हो जो इस प्रकार हमारा समय गंवाते रहोगे ? तुम्हारे शरीर का कोई भी अंग सुरक्षित नहीं रह सकेगा। वह समय दूर नहीं जब तुम हमारे सामने जानवरों की तरह रेंगते होगे और अपराध स्वीकार करने की प्रार्थना करोगे और हम तुम्हारी बात न सुनेंगे।"

रायज़निकोफ़ ने बड़े गुस्से में आकर मुझको कमरे के अन्दर धकेल दिया। शालिट वहाँ पहले ही से मेरी प्रतीक्षा में बैठा था। अब दो दो तीन तीन और कभी चार चार व्यक्ति एक साथ मिलकर मुझ पर

चिल्लाते थे। शालिट अपनी सहायता के लिए अपने एक मित्र को बुला लाया था। अगले चौबीस घंटे में कम से कम बारह आदमियों ने अपनी अक़्ल और ज़ोर की आज़माइश की पर मुझ पर किसी का प्रभाव न हुआ। मैं अपने दर्द को दबाए बैठा रहा और घायल जानवर की तरह अपने आखेटकों का सामना करता रहा। चार दिन बीत गए; पांचवाँ दिन आया और मैं उस दिन भी लड़ता रहा। इस बार मैंने अपने मन में यह धारणा पक्की करली थी कि चाहे कुछ भी हो मैं इनके सामने सिर न झुकाऊँगा। अब मुझको ऐसा लग रहा था जैसे कि मैं किसी भी बात से नहीं डरता हूँ।

पाँचवें दिन की बात है। दोपहर बीत चुका था। एक पहरेदार कमरे में आया और उसने शालिट के हाथ में एक परचा दिया। वह परचा पढ़कर अपनी जगह से खड़ा हो गया। मेरी ओर देख कर उसने कहा, "अब तुम्हारे ऊपर नए साधनों का प्रयोग किया जायगा।"

यह बड़ी विचित्र बात थी कि जिस समय शालिट मुझको यह धमकी दे रहा था उसकी वाणी में अनिश्चितता की ध्वनि थी। चलते हुए उसने मुझको वहाँ से उठा ले जाने का आदेश दिया।

मैंने सोचा कि जिस प्रकार अन्य दिन ये लोग मुझको शौच और भोजन आदि के लिए निकालते रहे थे वैसी ही कोई बात आज भी है। वास्तव में मुझको नीचे खड़ी लारी में ले जाया गया और लारी खोलोदनाया गोरा की ओर चल दी। कन्वेयर की अन्तेष्टि हो चुकी थी।

(६)

कन्वेयर के दिनों में मेरा स्वास्थ्य बहुत गिर गया था। मुझको गुर्दे के दर्द की पीड़ा रहती थी जो दिन पर दिन उग्ररूप धारण करती जा

रही थी। दुर्भाग्यवश उन्हीं दिनों बहुधा गोभी का खट्टा सूप पीना पड़ता था। मुझको दस्त लग गए। प्रतिदिन कम से कम एक दर्जन बार शौचालय जाना पड़ता था। अब वार्डर भी मेरी इस आदत से नाराज़ से रहने लगे थे इसलिए मैंने अपनी बीमारी का एलान कर दिया। एक डाक्टर आया जिसने मेरी परीक्षा करके मुझको बीमारों के घेरे में पहुँचवा दिया। वहां पड़े हुए कई दिन हो गए। कोई भी सुधार न हुआ।

मेरे पेट की अवस्था अब पहिले से अधिक खराब थी। डाक्टर की सलाह पर अधिकारी मेरे विषय में कुछ कर रहे हैं इसका कहीं कोई लक्षण दिखाई न देता था। अब कोई भी चीज खाना मेरे लिए नामुमकिन था। मुझको जो रोटी मिलती थी उसको मैं अपने अन्य दो रोगी साथियों को दे देता था। सूप के खट्टेपन से मेरी कठिनाई और भी बढ़ गई थी। अन्त में एक दिन मुझको जेल के गवर्नर से भेंट करने का अवसर मिल ही गया। मैंने अपनी दुख-गाथा उससे कह सुनाई पर "बिना पुलिस अधिकारियों की आज्ञा के मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ" ऐसा कह कर वह चला गया। उस दिन शाम को छः बजे तक कोई सुनवाई न हुई। इसपर औपचारिक रूप से मैंने भूख हड़ताल का एलान कर दिया। तब रात को ग्यारह बजे मुझको वहां से हटा कर दूसरी जगह पहुँचा दिया गया।

यह नई जगह कितनी गंदी थी यह देख कर मुझको आश्चर्य हुआ। दस्तों के वहां और भी बहुत से बीमार थे और हम सब को थोड़ी थोड़ी मात्रा में बेलेडोना दिया जा रहा था। यहां का खाना अपेक्षतया अच्छा था। मेरी तबीयत सुधरने लगी किन्तु तीन सप्ताह से पहले मुझको वहाँ से नहीं निकाला गया।

मैं लगभग पन्द्रह दिन के बाद ही पुनः स्वस्थ हो गया था। एक

सप्ताह और वहां रह सका इसके लिए मैं डाक्टर का आभारी था। इसके पश्चात् तो मुझको वापस जेल में भेज दिया गया।

अगस्त का महीना समाप्त हो चुका था। पुलिस अधिकारियों की ओर से कोई समाचार न मिला था। बहुत दिन से किसी को पूछताछ के लिए नहीं बुलाया गया था। तब अचानक एक दिन मेकडन नामक मेरे सहबन्दी को बुलावा आगया। तीन दिन बाद जब वह लौटा तो अत्यन्त थका मांदा दिखाई देता था। ऐसा मालूम हुआ कि इन तीन दिनों में उसको आन्तरिक जेल की किसी कोठरी में बन्द रखा गया था जहां से किसी ने उसको एक प्रश्न करने के लिए भी नहीं बुलाया। पहले तो वह बताता ही न था कि उस पर क्या बीती पर कुछ दिन के पश्चात् उसकी जबान खुली, वह मेरी चारपाई पर आ बैठा और बड़े धीमे स्वर में कहने लगा,

"एलेग्जेण्डर सेमोनोविच, बड़ी भयंकर बातें होती हैं वहां।"

"भयंकर बातों से तुम्हारा मतलब मेकडन ?" मैंने पूछा।

"आंतरिक जेल में कोई सो नहीं सकता। प्रायः दिन रात वहां स्त्रियों के पीटे जाने और रोने का कोलाहल मचा रहता है।"

"स्त्रियों के पीटे जाने का ?" मैंने पूछा "मैंने तो इससे पहिले कभी न सुना था कि वहां स्त्रियां भी हैं।"

"मैं सच कहता हूँ। प्रातःकाल छः बजे तक मैं स्त्रियों के पीटे जाने और कराहने का शोर सुनता रहा था। जब मैं उस करुणाक्रन्दन को सहन न कर सका तो मैंने रोटी के टुकड़ों से अपने कान बन्द कर लिये थे।"

"किन्तु केवल स्त्रियों ही को क्यों पीटा जा रहा था ?" मैंने अब भी अविश्वास की ध्वनि से पूछा।

"बात वास्तव में यह है कि पिटते तो आदमी भी हैं किन्तु वे ऐसे चिल्लाते नहीं।"

"कितने दिन से यह काण्ड रचा जा रहा है ? मैं जब वहाँ था तो ऐसी कोई बात सुनने को न मिली थी।"

मुझको वहां के कुछ लोगों ने बताया था कि पिछले एक पखवाड़े से यह दुष्काण्ड होता आ रहा है। स्मिरनोफ़ नाम का एक व्यक्ति मुझको मिला था। वह मास्को से आया है। डुबोवाय के विरुद्ध गवाही देने के लिये उसको वहाँ लाया गया है। वह कहता था कि मास्को में भी उसी दिन—१८ अगस्त—को यह पिटाई शुरू हुई थी। ऐसा मालूम होता है कि सब जगह ऊपर से ही ऐसी आज्ञा आई है।

"इस बात पर विश्वास नहीं होता, क्या तुमने अपनी आँख से किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जो पीटा गया हो ?"

"एक ही नहीं, न जाने कितने व्यक्तियों को। कल ही एक ऐसे व्यक्ति को देखा था मैंने, जो पिटाई के कारण चल भी न सकता था !"

"मेकडन कहीं तुम मुझको यों ही बहका तो नहीं रहे ?"

मेरे ऐसा कहने पर उसने अपने आपको अपमानित हुआ अनुभव किया और झल्ला कर बोला, "हाथ कंगन को आरसी क्या, तुमको स्वयं ही मेरी बात की सचाई का अनुभव हो जायगा।"

"वह सच्चे मन से ही ये सब बातें बता रहा था; पर मैंने सुन रखा था कि मेकडन झूठ भी बोलता है। इसलिये उसकी बात पर मुझको

उस समय भरोसा नहीं हुआ। मैंने यह तो सुन रखा था कि कुछ विशेष व्यक्तियों के साथ वे शारीरिक दुर्व्यवहार भी करते हैं; पर रोजिस्की ने मुझको विश्वास दिलाया था कि ऐसा करने के लिये पुलिस अधिकारियों को सरकार से विशेष आज्ञा प्राप्त करनी होती है। साथ ही, यदि मेकडन के कथन को सच माना जाय तो प्रायः प्रत्येक बंदी ही को पीटा जाने लगा था।

उस समय किसानों की धर पकड़ इतने जोर से हो रही थी कि ज़ारशाही के दिनों में जिन कोठरियों में एक व्यक्ति और बोलशेविकों के प्रारम्भिक शासन काल में जहाँ तीन व्यक्तियों को बन्द किया जाता था वहां अब १४-१४ व्यक्तियों को धकेल दिया जाने लगा था। अब कोठरी की चारपाइयों को दीवार के साथ लगा रखने की आज्ञा होगई थी और प्रत्येक बन्दी को जमीन पर सोना पड़ता था। जो कैदी पुराने हो चुके थे, जैसे कि मैं, उनके पास अभी तक चटाइयाँ थीं जिनको जमीन पर बिछा कर वे लेट रहा करते थे। इतनी चटाइयां कहां थीं जो प्रत्येक बन्दी को दे दी जातीं ?

आंतरिक जेल में बड़े कष्टकर दिन बिताने पड़े। कभी यदि किसी कोठरी में फर्श पर पड़ने के लिए जगह भी मिल जाती थी तो भी किसी को नींद न आती थी। सामने के कमरे में किसी न किसी बन्दी पर जुल्म होता ही रहता था और अधिकारियों के चिल्लाने और बन्दियों के कराहने के कारण किसी की भी आंखें नहीं लग पाती थीं। सब से अधिक शोरोगुल स्त्रियों की कोठरियों से आया करता था। कभी कभी हम लोगों ने अपनी कोठरियों की खिड़कियों को बन्द करके इस नारकीय कोलाहल से बचने की कोशिश की। पर कुछ देर बाद ही कोठरियों में साँस लेना मुश्किल होगया। इसके अतिरिक्त प्रायः हर

समय किसी न किसी कारण कोठरी का द्वार खुलता ही रहता था—कभी किसी बन्दी को वापस लाया जाता था तो कभी किसी को निकाला जाता था। फिर कोई भी बन्दी अपने आपको क्षण भर के लिये भी चिन्ता से मुक्त न पाता था—न जाने कब मेरी बारी आ जाय यह डर उसको बराबर सताता रहता था।

लगभग एक साल के पश्चात् हमको देश की प्रायः सभी जेलों के कैदियों से मिलने का अवसर मिला। कभी किसी को किसी के विरुद्ध गवाही देने को लाया जाता था तो कभी किसी को किसी का सामना करने के लिये यहां घसीट लाया जाता था। इसी प्रकार दूसरी जेलों से कैदियों का एक तांता सा लगा रहता था। प्रायः सभी बन्दियों का यह विश्वास था कि जेलों में बन्दियों की पिटाई का काण्ड १७ या १८ अगस्त ही से शुरू हुआ था। विभिन्न जेलों से आये बन्दियों की कहानी सुनकर यही परिणाम निकालना पड़ता था कि इस विषय में अवश्य ही कोई केन्द्रीय आदेश जारी किया जा चुका है।

२९ सितम्बर से मेरी परीक्षा फिर शुरू हो गई। इस बार मुझको कमरे नम्बर २२२ में नहीं ले जाया गया। वह कमरा रायज़निकोफ़ का था। अब मुझको तोनु एफ़ के कमरे में जाना पड़ा। कप्तान के कमरे में खुफ़िया पुलिस का एक और व्यक्ति था जो साधारण नागरिकों जैसे कपड़े पहिने हुए था। उसकी सूरत से मृगी के रोगी को देखने का आभास होता था; उसकी आंखें लाल लाल और अत्यन्त डरावनी थीं। कुछ देर तक वे आपस में ऐसे बातें करते रहे जैसे कि उनको पता ही न था कि मैं भी कमरे में हूँ। कुछ देर के पश्चात् वह नवागुंतक मेरी ओर बढ़ा।

"तुम्हारी अभी तक पिटाई हुई है या नहीं," उसने मुझसे आते ही पूछा।

मैंने कोई उत्तर न दिया। इस पर उसने आज्ञा दी कि मैं आगे बढ़ूं। मैं एक कदम आगे बढ़ गया।

"अभी और आगे आओ।"

मैं और आगे बढ़ गया। उसने भेड़िये की तरह मुझको ताक कर देखा। मैंने भी आँखें नहीं हटाईं और उसी प्रकार निश्चयात्मक दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा।

"अब भी तुम अपना अपराध स्वीकार करोगे या नहीं ?"

"मैंने कुछ भी ऐसा नहीं........"। मैं अपना वाक्य समाप्त भी न कर पाया था कि बड़े जोर से एक घूंसा मेरे चेहरे पर आ गया। मैं लड़खड़ा गया। इसके बाद दूसरा घूंसा पड़ा और मैं जमीन पर गिर पड़ा। अभी मैं ज़मीन पर ही पड़ा हुआ था कि उसने मुझ पर लात तानी। मैं यह देखकर तेजी से खड़ा होगया। मेरा डर भाग चुका था; मैं अब रोष में था। मैं ज़ोर ज़ोर से उसको धिक्कारता जा रहा था, जबकि हाथों से मैं उसके प्रहारों को सम्भालता जाता था।

"आपको मुझे पीटने का कोई अधिकार नहीं है। आप ऐसी ग़ैर-कानूनी कार्यवाही कैसे कर सकते हैं ?"

"अपने हाथ नीचे करलो; और मेरे नजदीक आओ," वह चिल्ला चिल्लाकर मुझको आदेश करने लगा।

वह बार बार मेरे ऊपर घूंसा चलाता था, और मैं हर बार उसको अपने हाथों पर सम्भालता जाता था। उस समय मैंने देखा कि कप्तान तोर्नुएफ खिड़की के पास खड़ा होकर बाहर की ओर देख रहा है। सम्भवत: वह इस काण्ड को नहीं देखते रह सकता था। मुझको अन्य

कैदियों ने बता रखा था कि यदि कभी आप पर पुलिस अधिकारी ऐसा प्रहार करें तो सबसे अच्छी नीति यह है कि खूब ज़ोर से शोर मचाया जाय ... । मैंने भी वैसा ही किया...... आततायी को शायद यह अच्छा नहीं लग रहा था। उसने अब एक बड़ी बेंत उठाई और मेरी भुजाओं पर बौछार शुरू करदी मैं दौड़कर खिड़की के पास चला गया और इतने जोर से शोर मचाने लगा कि सामने की सड़क पर आवाज़ पहुँच जाय। अब कप्तान तोर्नुएफ से न देखा गया। उसने दूसरे व्यक्ति को कमरे से चले जाने की आज्ञा देदी।

उसके चले जाने के बाद कप्तान तोरनुएफ़ ने मुझसे कहना शुरू किया, "एलेग्ज़ेंडर सेमोनोविच, तुम ऐसे दृश्य कराने पर क्यों तुले हुए हो ? अब तो बस करो। क्यों नहीं अपने अपराध को स्वीकार कर लेते ?"

मैंने फिर दोहराया "मैंने किया ही क्या है जिसको मैं स्वीकार करूँ ?"

यह सुनकर उसने बड़े ज़ोर से मेरी कलाई पकड़ ली और उसको इतने ज़ोर से ऐंठा कि मैं जमीन पर गिर पड़ा। लेकिन मैंने देखा कि वह अपने मन से ऐसा नहीं करना चाहता था। उसके चेहरे से दिखाई देता था कि उसको अपनी इस नई कार्यवाही पर खेद है। दूसरा व्यक्ति तो जन्म ही से क्रूरता-प्रेमी दिखाई देता था। तोरनुएफ़ को मुझसे कोई व्यक्तिगत बैर न था। उसने कुछ देर पश्चात् ही मुझको छोड़ दिया और मुझको वहाँ से एक दूसरे कमरे में ले जाने की आज्ञा दी। अब मैं जिस कमरे में पहुँचा उसमें तीन व्यक्ति एक मेज़ पर बैठे हुए थे।

मुझको दीवार की तरफ़ कमर करके खड़ा किया गया। मैं वहाँ कुछ मिनट ही खड़ा रहा हूँगा कि रायज़निकोफ़ आ पहुँचा। वह मुझको देखकर जोर से हँसा।

मुझको बड़े हास्यपूर्ण ढंग से सम्बोधित करते हुए रायज़निकोफ़ ने पूछा, "कैसे हो तुम ? क्या अभी तक तुम्हारी परीक्षा समाप्त नहीं हुई ?"

मैं उसके इस प्रश्न का उत्तर ही क्या देता।

"देखो, इस प्रकार अशिष्टता दिखाना उचित नहीं। अब मैं तुम्हारा परीक्षक नहीं हूँ। अब तुम मेरे हाथ में नहीं रहे। इस पर मुझको कोई खेद नहीं है।"

"तो किसके हाथ में हूँ अब मैं ?"

"किसी के हाथ में नहीं अभी। तुम तो उन लोगों में से हो जिन पर किसी का भी बस चलना मुश्किल है। अब तुम जानो और कप्तान जाने। शायद शालिट कप्तान के साथ और रहेगा।"

"यह तो बड़ा शुभ समाचार है।"

"हाँ, शायद इतना अशुभ भी न हो। हम कोई निरे पशु तो हैं नहीं। साथ ही हमको तुम्हारी बड़ी आवश्यकता भी है, तुम एक विषेशज्ञ जो ठहरे।"

मैं समझ नहीं पाया था कि रायज़निकोफ़ उस दिन से क्यों मेरा परीक्षक नहीं रहा और क्यों वह इतने मित्रतापूर्ण ढंग से बातें करने लगा था। कुछ भी हो उस दिन उसकी बातों से मुझको बड़ा प्रोत्साहन मिला। शायद यही उसका उद्देश्य भी था। वह अपने उत्तराधिकारी के लिए चुपके से कुछ कठिनाइयाँ पैदा करना चाहता था।

कुछ महीने पश्चात् रायज़निकोफ़ का पता ही न रहा। बहुत दिन बाद मुझको एक कैदी मिला जिसने मुझको बताया कि रायज़निकोफ़ उस

को आरकेंजिल की जेल में मिला था और वह भी हमारी तरह एक कैदी ही था।

इन लोगों ने मुझको तमाम रात और तमाम दिन दीवार के साथ खड़ा रखा। अगले दिन आधी रात को शालिट मुझको लेने के लिए आया। हम एक कारीडोर से होकर चले। कारीडोर के दोनों ओर के कमरों से चिल्लाने और कराहने की आवाजें आ रही थीं। मैं कह नहीं सकता कि आया वास्तव में उन कमरों में कैदियों को शारीरिक यातनाएं दी जा रही थीं या मुझ जैसे व्यक्तियों को डराने के लिए ही कोई स्वांग रचा जा रहा था। शालिट का कमरा कारीडोर के आखीर में दूसरी तरफ था। चीत्कार और आर्त्तनाद के बीच चलते हुए मुझको ऐसा अनुभव हो रहा था कि मानों यह कारीडोर अनन्त है। शालिट अब तरक्की पा चुका था सहकारी से वह अब मुख्य परीक्षक बन गया था। शालिट के कमरे में एक ओर दीवार के सहारे एक कुर्सी रखी थी जिसमें तली न थी। शालिट ने हाथ से इशारा करके मुझको उसी में बैठ जाने को कहा। मैं बैठ गया। कुर्सी की दोनों तरफ की लकड़ियों मेरी जांघों में घाव सा करने लगीं। रीतिनीति की दृष्टि से पुलिस अधिकारियों की दृष्टि में यह एक सुधार था। ऐसी कुर्सी में बैठे रह कर कितनी देर कोई कन्वेयर प्रक्रिया को सहन करते रह सकता था ?

मुझको सम्बोधित करते हुए शालिट ने कहा, "सुनो यह आखिरी प्रश्न है, तुम अपना अपराध स्वीकार करते हो या नहीं ?"

मैंने उत्तर दिया, "यदि मैंने कोई अपराध किया होता तो उसको बहुत पहले ही स्वीकार कर लेता। इसके अतिरिक्त एक बात और भी है। जब तक मैं सरकारी वकील से भेंट न कर लूंगा तब तक मैं आपके किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दूंगा।"

मेरा यह कहना था कि शालिट झपट कर अपनी मेज की ओर बढ़ा और वहाँ से लोहे के किनारे वाला एक रूल उठा लाया जो उसने मेरे सिर पर मारना शुरू किया। वह मुझ पर प्रहार तो कर रहा था पर उसके मन में मेरे प्रति जो डर था वह उसके चेहरे से स्पष्ट दिखाई देता था। मैं आकार प्रकार में उससे बड़ा था और स्पष्टत: मेरी शारीरिक शक्ति भी उसकी शक्ति से अधिक थी। तिस पर भी मैंने प्रहारों के उत्तर में प्रहार नहीं किया। मैं उसकी चोटों से अपने आप को बचाने की कोशिश ही करता रहा। कुछ देर के पश्चात् खुफ़िया पुलिस के चार अधिकारी और आ गए उन्हों ने मुझको पकड़ लिया और स्वस्तिका जड़ी एक पागल टोपी मेरे सिर पर पहना दी और एक बड़ा स्वस्तिका मेरे सीने पर टेप दिया। इस प्रकार मुझ को मूर्ख बना कर वे पीछे हट गए और ज़ोर ज़ोर से हंसने लगे। मैं क्रोध से उछल पड़ा और मैंने नात्सी पार्टी के उन आपत्तिजनक चिन्हों को फाड़ डाला।

मैंने कहा, "आप सीमा से बाहर जा चुके हैं। आप यह नहीं कह सकते कि पार्टी के आदेश पर आप स्वस्तिका चिन्ह बनाते रहे हैं।"

शालिट ने अपने रूलर को चपटी तरफ़ से मेरी खोपड़ी पर जड़ दिया किन्तु मैंने जो कुछ कहा था उसका असर अवश्य हुआ। यह सोच कर कि शायद पार्टी इस प्रकार के मज़ाक को पसन्द न करे उन्होंने अपनी हास्यप्रियता के प्रदर्शन में कुछ कमी कर दी। उसके बाद स्वस्तिका वाला मज़ाक फिर मेरे साथ कभी नहीं हुआ। वे कमरा छोड़ कर चले गए।

(७)

अब मेरी कन्वेयर परीक्षा का तीसरा और अन्तिम चरण प्रारम्भ हुआ। अब उन्होंने मुझको पीटना बिल्कुल बन्द कर दिया। मुझको कभी

याब होता दिखाई न देता था। प्राय: सभी अभियुक्त अपने आप को अप-राधी मानते थे। देश में इस समय जो मनोवैज्ञानिक पागलपन फैला हुआ था उससे संम्भवतः ये अभियुक्त भी अछूते न रह गए थे। न केवल ये लोग अपने काल्पनिक अपराधों ही को स्वीकार कर लेते थे बल्कि अपने वक्तव्यों पर अनर्गल विस्तृत विवरण का रंग भी चढ़ा देते थे। यह देख कर कि रूस की क्रान्ति में जिन लोगों ने नाम कमाया था और जिनको उसके संगठन और प्रेरणा का श्रेय था वे सभी अब जेल में बन्द थे इन अभियुक्तों को एक विशेष प्रकार की सांत्वना मिला करती थी जिससे उनकी कल्पना-शक्ति और भी अधिक उर्वर हो उठी थी। अपने विषय में कोई जितनी ही खराब बात कहे उतनी वह उसके लिए श्रेयस्कर समझी जाती थी। एक बार जब साधारण जीवन का यह नियम बन गया तो सेना के, आर्थिक संगठन के, विज्ञान के, राजनीति और उद्योग के क्षेत्रों में से बड़े से बड़े लोगों को फँसाने और दण्ड दिलवाने ही में बहुत से लोगों को एक विशेष आनन्द आने लगा। शायद त्रस्त जनता के पास डिक्टेटर से बदला लेने का इसके सिवा कोई चारा भी न रह गया था। क्योंकि कोई जितने ही अधिक अविश्वसनीय और अनर्गल अभियोग को स्वीकार करता था तो डिक्टेटर उतना ही अधिक मूर्ख दिखाई देता था।

अब किसी को यह कहते हुए कि उसने स्टालिन की हत्या करने का प्रयत्न किया था कोई डर न मालूम होता था क्योंकि इसी प्रकार की बात कहने वाले असंख्य अन्य लोग जो थे। अब किसी को यह कहते हुए भी शरम न आती थी कि वह हिटलर का एजेंट था क्योंकि यदि इन दिनों चलाये गए मुकदमों के सरकारी पक्ष को सही माना जाता या खुफ़िया पुलिस के अधिकारियों ने जितने लोगों को इस अभियोग में पकड़ रखा था उनकी संख्या पर ध्यान दिया जाता तो यह भी मानना ही पड़ता

कि रूस में हिटलर के लाखों जासूस हैं। कैसा कटु व्यंग था यह कि दिन में जो लोग—विज्ञानवेत्ता, अर्थशास्त्रज्ञ और इंजीनियर—खून पसीना एक करके इस प्रयत्न में जुटे रहते थे कि किस प्रकार सोवियट रूस को पूंजीवादी देशों की तरह उन्नत और समृद्ध बनाया जाय, वे ही लोग रात को अपने परिश्रम के फल को नष्ट करने का प्रयत्न करें! वास्तव में उस समय समस्त देश में खुफ़िया पुलिस के अधिकारियों के अतिरिक्त शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो इस प्रकार के काल्पनिक अपराध दमन का शिकार बनने से न डरता हो।

आरम्भ में खुफ़िया पुलिस का मार्ग साफ़ था। उसको अपना अभीष्ट सिद्ध करने में किसी विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता था। किन्तु आगे चल कर प्रतियोगिता का नैसर्गिक नियम अपना प्रभाव दिखाने लगा। खुफ़िया पुलिस का प्रत्येक अधिकारी इस चिन्ता में रहने लगा कि कहीं उसका प्रतिद्वन्द्वी उससे आगे न बढ़ जाय। यह प्रतिस्पर्धा व्यक्तियों तक ही सीमित रही हो ऐसी बात नहीं थी। खुफ़िया पुलिस के विभिन्न विभाग भी एक दूसरे से होड़ और वैमनस्य रखने लगे। कौन-सा विभाग कितने आदमियों को पकड़ता है यही प्रश्न न था बल्कि उनके सामने इससे भी महत्वपूर्ण प्रश्न यह था कि कौन कितने बड़े आदमियों को पकड़ता है और कौन किस प्रकार के अपराध स्वीकार करवाता है। कोई जितना ही अधिक निकृष्ट अभियोग स्वीकार करता था अधिकारियों के लिए वह उतना ही लाभप्रद सिद्ध होता था। उन्नति करने या अपने पद को बनाये रहने के लिए पुलिस अधिकारियों को यह आवश्यक हो गया था कि वे आये दिन किसी न किसी षड़यन्त्र का आडम्बर रचते रहें। कभी वे किसी कारखाने को नष्ट करने के षड़यन्त्र का पता लगाने का दावा करते थे; तो कभी किसी खलिहान में आग लगाने की बात कहते थे; कभी रेलगाड़ियों को उलटने की साज़िश बताई जाती थी

तो कभी कभी ऐसे षड़यन्त्रों की बात भी सुनने को मिलती थी जिनका अभिप्राय लाल सेना की समूची टुकड़ियों को जहर देना बताया जाता था। कुछ दिन के पश्चात् देखा गया कि पुलिस अधिकारियों का इससे भी पेट नहीं भरा। अब वे क्रान्तिविरोधी कार्यों, गुटों, और समितियों की खोज करने लगे। अभियुक्त बेचारे क्या करते ? वास्तविक उपद्रवों और काण्डों के अभाव की पूर्ति निरे शब्दों और कथित इरादों ही से तो नहीं हो सकती थी इसलिए जब कि अनेक अभियुक्त यह स्वीकार कर लेते थे कि वे किसी की हत्या करने का इरादा कर रहे थे हत्या वास्तव में किसी की भी हुई थी ऐसा सिद्ध न हो पाता था। ऐसे भी अनेक अभियुक्त थे जिन्होंने यह "स्वीकार" कर लिया था कि उन्होंने बहुत से अस्त्र शस्त्र जमा कर रखे थे पर अदालत में गवाही के रूप में पेश किए जाने के लिए टूटी फूटी बन्दूकें भी कहीं से बरामद न की जा सकीं थी।

अभियोग-स्वीकृति और प्रमाण के इस पारस्परिक विरोधाभास का कारण रूसी समाज की वस्तुस्थिति थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रूस में ऐसे लाखों व्यक्ति थे जो डिक्टेटर से घृणा करते थे किन्तु सारे देश में कहीं भी कोई गुप्त संगठन न था; न कभी विप्लव हुआ, न कहीं अस्त्र शस्त्र मिले और न कहीं स्टालिन या उसके प्रमुख पिट्ठुओं की हत्या का कोई प्रयत्न हुआ। रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी की पालिटब्यूरो के सदस्य ऐसे भोले तो थे नहीं जो पुलिस को विश्वसनीय प्रमाण प्राप्त कराने के लिए अपने ऊपर गोली चलवा लेते !

क्योंकि खुफ़िया पुलिस वास्तविक क्रान्तिविरोधी कृत्यों का पता लगाने में असमर्थ थी इसलिए उसको क्रान्तिविरोधी भावनाओं ही से संतुष्ट रहना पड़ा। इन कथित क्रान्तिविरोधी भावनाओं का उसने जिस पैमाने पर भंडाफोड़ किया वह तर्क और कल्पना के बाहर की बात है।

प्राप्त की थी। अब इनकी आयु पचास वर्ष से ऊपर थी। जिस प्रिय देश के पुनर्निर्माण और जनता के लिए, जिस उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए, उन्होंने सब प्रकार का बलिदान किया उसको वे अब अपने मन में चिंता और दुःख भरे नष्ट होता हुआ देख रहे थे। वे उन युवक बंदियों से सहमत न थे जो यह कहते थे कि देश पर झूठे मुकदमों की ढाई हुई विपत्ति केवल खुफ़िया पुलिस ही का काम है और उसमें डिक्टेटर का हाथ नहीं है। वे यह भी न मानते थे कि डिक्टेटर ने जिस विनाश-यंत्र को तैयार किया था और जिसका अब इतने निर्मम ढंग से संचालन किया जा रहा था वह आगे चल कर अपने आप ही को नष्ट कर लेगा। यही लोग थे जिनको हड़प जाने के लिए खुफ़िया पुलिस अपने दांत पैने कर रही थी। इन्हीं के दमन और विनाश के लिए खुफ़िया पुलिस ने इतने बड़े आतंक को रचा था। इनमें से बहुत से शारीरिक यातनाएं सहते सहते मर गए परन्तु उनमें से किसी नें भी "अपराध" स्वीकार नहीं किया।

अपनी गिरफ़्तारी के महीनों पहले ही उनमें से बहुतसों को ऐसा आभास मिल गया था कि उनकी स्वाधीनता के चन्द्रमा को डिक्टेटरी का राहू निगल जाने वाला है। जब अन्त में उनकी गिरफ़्तारी हुई तो उनको कोई आश्चर्य नहीं हुआ। गिरफ़्तारी के पहले उनके मन पर एक बोझ सा रहता था। गिरफ़्तारी से वह बोझ हट गया और अब उनकी जिव्हा खुल गई। उनके हृदय में पीड़ा थी, जो बोलने से कुछ शान्त सी हो जाया करती थी।

उनकी ज़बानी हमने जो कुछ सुना उसको कुछ दिन पहले हम अविश्वसनीय समझ कर भुला सकते थे। उदाहरण के लिए हमको पता लगा कि रूस की कम्यूनिस्ट पार्टी की प्रत्येक शाखा के सेक्रेटरी सदस्यों से यह

हिसाब माँगा करते थे कि अमुक समय में उन्होंने कितने "देशद्रोहियों" को पकड़वाया। यदि कोई अभागा सदस्य यह कह बैठता था कि मैं किसी देशद्रोही को जानता ही नहीं तो उससे अनिवार्य रूप से यह कहा जाता था कि "इसका तो मतलब यह हुआ कि तुम्हारी जान पहचान के लोगों में कोई देशद्रोही है ही नहीं या इसका केवल अर्थ यही है कि स्टालिन का 'क्रांतिकारी सतर्कता' का सिद्धान्त तुम पर लागू नहीं होता। खैर इसी में है कि तुम जल्दी से जल्दी देशद्रोहियों को गिरफ़्तार करा दो।" यदि इस पर भी कोई व्यक्ति किसी निर्दोष नागरिक को गिरफ़्तार कराने से चूक जाता था तो उसको पार्टी से निकाल दिया जाता था, जो उसकी गिरफ़्तारी की दिशा में एक कदम मात्र ही सिद्ध होता था। साधारणतया, पार्टी से निकाले जाने के अगले दिन ही ख़ुफ़िया पुलिस उसको उठा ले जाती थी और जेल में बंद कर दिया करती थी।

दिन बीतते जाते थे, और गिरफ़्तारियाँ और कारावास की कहानियाँ बढ़ती जाती थीं; नित्य प्रति नये नये अभियुक्तों की जबानी सारे देश में फैले आतंक के समाचार मिलते रहते थे। अल्पसंख्यक जातियों वाले प्रदेशों की तथाकथित स्वशासित सरकारें एक एक करके गायब होती जा रहीं थीं। श्वेत-रूसी प्रजातंत्र के अध्यक्ष चेरवियाकोफ़ की "आत्महत्या" के दिन से जो क्रम शुरू हुआ था वह समाप्त होता नज़र न आता था। चेरवियाकोफ़ की "आत्महत्या" के एक सप्ताह बाद ही उसके सारे सहयोगियों को गिरफ़्तार कर लिया गया था। युक्रेन में भी ऐसा ही हुआ—हाँ वहाँ एक ही मंत्रिमंडल की बरख्वास्तगी और गिरफ़्तारी न हुई; वहाँ ख़ुफ़िया पुलिस के हस्तक्षेप के कारण कई मंत्रि-मंडल बने, बिगड़े और कारावास में ठूंस दिये गये। उन सबके नामों का यहाँ उल्लेख करना आवश्यक नहीं। रूस के बाहर किसको मालूम था कि युक्रेन के मंत्रिमंडल का अध्यक्ष लुवचेंको नामक एक व्यक्ति था।

नीप्रोपेट्रोवस्क ज़िला कमेटी का सेक्रेट्री शास्टायेविच था, यह भी बाहर के लोगों को क्या मालूम था ! किन्तु हम बन्दियों के लिये इन सभी नामों का भारी महत्व था। उन दिनों की धर-पकड़ के पहिले ज़िला कमेटी का सेक्रेट्री ज़िले में सब से अधिक सम्मानित और शक्ति-शाली व्यक्ति हुआ करता था; अब वह शक्ति जिले की खुफ़िया पुलिस के अध्यक्ष को मिल गई थी। देश में शायद ही ऐसा कोई ज़िला सेक्रेट्री रहा हो जिसको पुलिस ने गिरफ़्तार न किया हो। शास्टायेविच की गिरफ़्तारी की खबर सुनकर हम सभी कांप गये थे। शास्टायेविच न केवल ज़िला-कमेटो का सेक्रेट्री ही था, वरन् वह एक ऐसा सम्भ्रान्त व्यक्ति था जो दिल और दिमाग़ दोनों ही के गुणों के लिये प्रसिद्ध था। खारकोव जिला पार्टी का सेक्रेट्रीं डेमचेंको भी गिरफ़्तार हो चुका था। उसकी गिरफ़्तारी का समाचार सुनकर हम उदासीन ही रहे थे; किन्तु उसके पूर्वाधिकारी पोस्टीचेक की गिरफ़्तारी का हम पर इसके प्रतिकूल प्रभाव हुआ था। युक्रेन में वह अग्रगण्य व्यक्ति था। स्टालिन ने उसको आदेश दिया था कि युक्रेन की पार्टी और सरकार में जो भी ऐसा व्यक्ति मिले जो युक्रेन के हितों को प्रधानता देने की बात करे उसको खत्म कर दिया जाय। श्रेपनिक की "आत्महत्या" के पश्चात् उसने बड़े उत्साह और शक्ति के साथ यह काम शुरू कर दिया था। श्रेपनिक भी एक पुराना क्रान्तिकारी और कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का सदस्य था। पहिले तो यह सुना गया था कि उसको वोल्गा भेज दिया गया है—जब कोई बरख्वास्त होता था तो उसको पहिले वहां ही भेजा जाया करता था। कुछ दिन के पश्चात् समाचार मिला कि वह भी गिरफ़्तार हो चुका है। वह ही एक ऐसा व्यक्ति था जो थोड़े से दिनों ही में युक्रेन में इतना लोकप्रिय हो गया था। मई दिवस पर जब लोग सलामी के चबूतरे के पास से होकर निकला करते थे तो सब से

अधिक ध्यान और श्रद्धा का पात्र उसी को समझा करते थे। उसकी लोकप्रियता ही उसके विनाश का कारण बन गई। डिक्टेटर अपने अतिरिक्त किसी दूसरे व्यक्ति को लोकप्रिय होता हुआ नहीं देख सकता।

जून का महीना था; गरमी पड़ रही थी।

हम में से तीस बन्दियों को एक छोटी सी दंड वाली कोठरी में ठूंस दिया गया। कोठरी में केवल इतना ही स्थान था कि हम सब कठिनाई से खड़े रहें। गर्मी जोर से पड़ रही थी, तिस पर भी खिड़की कस कर बन्द कर दी गई थी। अन्दर गरमी तेजी से बढ़ती जा रही थी और इस दर्जे पर पहुँच गई थी कि उसको सहन करना आसान न था। उस समय तक मैं इस बात पर विचार नहीं कर सका था कि इंसान का शरीर ही अपने चारों ओर गर्मी फैलाने का एक अद्‌भुत यंत्र है। कोठरी में इस समय जो वातावरण था उसकी तुलना "टर्किश बाथ" से की जा सकती है। जिन लोगों को इन कोठरियों में बन्द किया जाता था उनको दोपहर या शाम को खाना नहीं मिलता था। जो रोटी साधारणतः दी जाती उसका राशन भी घटा कर आधा कर दिया जाता था। यह बात नहीं थी कि यदि ऐसा न होता तो जीवन में कोई अन्तर पड़ जाता क्योंकि कोठरी में जितनी गर्मी थी उसमें यदि खाना मिलता भी तो भी खाया न जा सकता था। हम सब वहां वस्त्रहीन खड़े हुए थे और हम सब के शरीरों से पसीना टपक रहा था। कई बार हम में से कुछ लोगों ने यह भी सोचा कि खिड़की ही क्यों न तोड़ दी जाय। कुछ दिन इसी प्रकार उस कोठरी में खड़े रहे और फर्श पर पसीने के कारण कीच हो गई थी। हम सब का दम फूला सा रहता था।

प्रातःकाल हमको हाथ मुँह धोने के लिए उस कमरे में ले जाया

जाता था जहाँ एक कतार में चार वाश बेसिन (हाथ मुँह धोने के नल वाले बर्तन) लगे हुए थे। वहाँ पहुँच कर हम में प्रत्येक व्यक्ति कुछ देर के लिए चारों वाश बेसिनों पर लेट जाता था और सब नलों को खोल लिया करता था। इस सुख प्राप्ति के लिए हरेक के लिए आधे मिनट से अधिक समय न मिलता था। हम सभी का यह विचार था कि ऐसा करने से हमको अवश्य निमोनिया हो जायगा और इस तरह से शायद कोठरी से छुटकारा मिल जायगा। पर निमोनिया तो क्या किसी को जुकाम तक भी न हुआ।

एक सप्ताह तक उस कोठरी में रखे जाने के पश्चात् मुझको पुन: साधारण कोठरी में वापस भेज दिया गया। इसी बीच में हमारी कोठरी में छ: कैदी और दाखिल कर दिए गए थे और इस प्रकार हमारी संख्या अब चौदह हो गई थी। उस दिन उन छ: व्यक्तियों के आने के तुरन्त पश्चात् ही फिर द्वार खुला और उनके पीछे कुछ कैदी और धकेल दिए गए। इस प्रकार अब हम तेईस हो गए। अब किसी के लिए भी आराम करने का स्थान शेष न रह गया।

मैंने वार्डर को पुकार कर कहा कि अब तो फर्श पर भी पांव रखने को जगह नहीं रह गई है अब हम लोग सोयेंगे कहाँ? वार्डर ने उत्तर दिया, "थोड़ी ही सी देर की बात है," और दरवाजा बन्द कर दिया।

हम दो घंटे तक व्यर्थ ही प्रतीक्षा करते रहे। छ: बजे रात वाला वार्डर आया। हम बार बार दरवाजा खटखटा कर उससे प्रार्थना करते रहे कि किसी तरह उन नए नौ प्राणियों को कहीं और स्थान दिया जाय। लगभग एक घंटे के पश्चात् कोठरी का दरवाजा खुला और हमने ठंडी साँस ली। किन्तु उन नौ प्राणियों को निकालना तो दूर रहा दस नए कैदी और उसमें डाल दिए गए। पहले हमने सोचा था कि शायद एक

दो घंटे के पश्चात् नवागंतुकों को वहाँ से निकाल लिया जायगा। जब दो घंटे बीत गए तो हमने सोचा कि शायद उनको सुबह निकाला जायगा। किन्तु उनको दया न आई और ढाई मास तक हमको उसी अवस्था में रहना पड़ा। उधर भगवान भी अधिकारियों की अपेक्षा कुछ अधिक दयावान था ऐसा दिखाई न दिया। शायद वर्षों से इतनी गर्मी कभी न हुई थी।

हमारे साथियों में से एक किसी समय घोड़ों के बेचने खरीदने का काम किया करता था। एक दिन वह कहने लगा "इंसान भी घास-फूस की तरह हैं। उनको मारिये काटिये फिर भी जीवित रहते हैं। मैं जानता हूँ कि यदि घोड़ों के साथ ऐसा बर्ताव किया जाता तो वे निश्चय ही मर जाते।"

उन दिनों भावी परिवर्तनों की नित्य चर्चा रहा करती थी। हम लोग जिस असह्य अवस्था में थे और जेलें जिस प्रकार खचाखच भर गई थी केवल उसी के कारण हम लोग ऐसी बात सोचते थे ऐसा न था। बाहर से इस आशय के समाचार भी आते रहते थे। हमको समाचार मिला था कि पहली बार जनता में हलचल मच गई है और कहीं कहीं विरोध-प्रदर्शन भी हो चुका है। जिन रेलवे कर्मचारियों के साथ धंधा-धुंधी हुई थी और जिनको अकारण ही जेलों में डाल दिया गया था उनकी पत्नियां एक शिष्टमंडल लेकर रेलवे मंत्री कगानोविच से मिल चुकी थीं। पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय में भी प्रार्थनापत्रों की बाढ़ आ गई थी। सरकारी वकील, प्रेसीडियम और सुप्रीमकोर्ट तक चीत्कार पहुँच चुका था। यह तो बताने की आवश्यकता ही नहीं कि इस प्रकार विरोध-प्रदर्शन करने वालों में से किसी एक ने भी खुफ़िया पुलिस पर निर्दोष प्राणियों को गिरफ्तार करने का अभियोग नहीं लगाया था। प्रायः सभी

प्रार्थनापत्रों में खेदजनक भूलों के निराकरण की ही आवश्यकता पर जोर दिया गया था। पर प्रार्थनापत्रों की संख्या और गति इतनी बढ़ गई थी कि उसको देख कर एक भीषण आन्दोलन का आभास होता था। बहुत से कल कारखाने तो इसलिए बन्द हो गए थे कि उनको चलाने वाला कोई भी इंजीनियर या कुशल कारीगर जेल से बचा न रह गया था। चारों ओर गड़बड़ और अव्यवस्था का वातावरण था। दिशा संचालन या नेतृत्व में कहीं भी एकता या निरंतरता देखने को न मिलती थी। लाल सेना के प्रायः सभी उच्च अधिकारी गिरफ़्तार हो चुके थे। प्रातःकाल जब मजदूर अपने काम के लिए निकला करते थे तो अपने साथ बहुत सी सूखी रोटी भी ले जाया करते थे क्योंकि उनको भी अपने अपने बारे में गिरफ़्तारी का डर लगा रहता था। ऐसा लगता था कि सारा देश आत्माहीन होकर एक भयंकर गर्त में जा पड़ा है। शायद इस अवस्था की हल्की सी लहर शासकों तक भी पहुँच गई थी। उच्चतम अधिकारी भी जनता के सम्पर्क में आए बिना न रहते थे। कमीसारों की पत्नियां अपने नौकरों की अवस्था से परिचित थीं; कमीसारों को अपने शोफ़रों की बातें सुनने को मिलती थीं और फिर स्वयं कमीसार भी तो इस संकट से सर्वथा मुक्त न थे। बड़े बड़े अधिकारी गिरफ़्तार हो रहे थे। किसी को भी यह यकीन न था कि उसकी बारी न आएगी। साधारण स्त्री-पुरुषों की तो बात ही क्या पालिटब्यूरो के सदस्य तक भी इस दमनचक्र से सुरक्षित न थे। चूबर, पोस्टीचैफ, आइख और कोसियोर पर जो कुछ बीती थी उसका सभी को ज्ञान था। वातावरण इतना बिगड़ गया था और राज्य के अन्तर्गत खिचाव इतना बढ़ गया था कि उस अद्वितीय तानाशाही के गढ़ रूसी-खुफ़िया पुलिस के हृदय ही में एक भयंकर विस्फोट होने की आशंका उत्पन्न हो गई थी। आर्थिक व्यवस्था सड़ने लगी थी। कोई किसी काम की जिम्मेदारी लेने को

तैयार न था। प्रत्येक स्त्री पुरुष की यही कोशिश रहती थी कि जहाँ तक हो सके किसी से सम्पर्क न हो जाए। कारखानों के व्यवस्थापक और इंजीनियर इतने भयभीत हो गए थे कि खुफ़िया पुलिस से बचने के लिए उन्होंने अब फ़ार्म और खरीते भरने की कागज़ी कार्यवाही इतनी फैलादी थी कि किसी को भी यह पता न लग सकता था कि अमुक काम की जिम्मेदारी किस पर है। कागज़ों के पुलन्दों में उत्पादन योजनाएं घुट कर रह गईं थीं। जो नए कैदी आए थे उन्होंने हमको बताया कि अनेक नगरों में गिरफ़्तार व्यक्तियों की स्त्रियां निराशा और रोष के कारण जेल के दरवाज़ों पर या स्थानीय सरकारी वकीलों के दफ़्तरों के सामने आ खड़ी हुआ करती थीं। हम सभी सोचते थे कि कोई भी राजव्यवस्था इस प्रकार के आन्तरिक तनाव को देर तक सहती नहीं रह सकती है।

स्टालिन को भी किसी न किसी तरह जनता की सच्ची भावनाओं का पता लग ही गया होगा। उसी ने तो धरपकड़ की आज्ञा दी थी और इस काम के लिए येज़ोफ़ को अपना हथियार बनाया था यद्यपि आज्ञा देते समय उसको यह कल्पना न हो सकी होगी कि दमन चरम-सीमा पर पहुँच जायगा। येज़ोफ़ ने अपने स्वामी की आज्ञा का इस उत्साह और तत्परता से पालन किया कि सारा देश ही विनाश के गर्त्त के निकट आ पहुँचा। स्टालिन ने एक बार पहले भी बात हाथ से निकल जाने से पूर्व ही अपनी भूल को मान लिया था। अब भी अवस्था उतनी ही भयंकर थी। तो क्या अब वह अपनी भूल को न समझ सकेगा? यह एक प्रश्न था जो हम एक दूसरे से बार बार पूछा करते थे।

कोठरी नामक उस चूल्हे में ढाई मास बिताने के पश्चात् मैंने अपने आपको बड़ी जर्जरित अवस्था में पाया।

सितम्बर के प्रारंभ में एक रात को मैं ऊपर की चारपाई पर लेटा

हुआ था; गर्मी के कारण नींद नहीं आ रही थी। मैं अपने रूमाल से अपने चेहरे को कुछ ठंडी हवा—या यह कहूँ अपेक्षतया कम गर्म हवा—पहुँचाने की कोशिश कर रहा था। मेरे ऐसा करने से नीचे के लोग रुष्ट हो गए क्योंकि उनको और भी अधिक गर्मी का अनुभव होने लगा था। मेरे रूमाल घुमाने से अपेक्षतया ठंडी हवा मेरी ओर और गर्म हवा उनकी ओर जाने लगी थी। मुझको ऊपर की चारपाई इसलिए मिली थी कि मैं अपने साथियों की इस शर्त को मान गया था कि ऊपर चाहे कितनी ही गर्मी हो मैं उसको सह लूंगा। अब उसी शर्त को उन्होंने याद दिलाया। उनकी आपत्ति का मैं विरोध नहीं कर सकता था; निराश होकर दीवार की ओर मुंह फेर कर पड़ रहा।

आधी रात हो गई। कोठरी का द्वार खुला और वार्डर की आवाज़ सुनाई दी।

"अक्षर व"

मेरे नाम का प्रथम अक्षर "व" था और मैं उसके मतलब को भी समझ गया था किन्तु मैं ऐसे पड़ा रहा जैसे मैंने सुना ही न हो। पिछले एक वर्ष से मुझको पूछताछ के लिए बुलावा नहीं आया था। मैं सोचने लगा था कि अब जब तक उनकी नीति में कोई बड़ा परिवर्तन न होगा वे मुझको न बुलायेंगे।

मेरे दोनों साथियों के नाम भी "व" अक्षर से ही प्रारम्भ होते थे इसलिए उन दोनों ही ने यह समझा कि शायद उन्हीं में से किसी एक को बुलावा है। किन्तु वार्डर ने दोनों ही को एक ओर बैठे रहने का इशारा किया। तब बड़े आश्चर्य और विस्मय के साथ मैंने पूछा ?

"क्या मुझसे मतलब है ? क्या मेरी परीक्षा फिर प्रारम्भ होने वाली है ?" उत्तर मिला, "अपना सामान लेकर मेरे साथ आजाओ।"

मेरे हृदय ने एक झटका सा खाया। सामान के साथ ! इसका मतलब जेल है या स्वतन्त्रता ? शायद इस कोठरी से बदल कर किसी दूसरी कोठरी में ले जा रहे हैं। यह सोचकर मैं नीचे उतरा और अपनी चीजें इकट्ठी करने लगा।

मेरे दोनों साथी जगे हुए थे और आंखें फाड़-फाड़ कर मेरी ओर देख रहे थे। मुझको बुलावा आया, यह उनके लिए बड़ी सनसनीपूर्ण बात थी। मैंने सबको नमस्कार किया और विदा ली। कोठरी की छोटी सी दुनिया में मुझको विशेष प्रकार की प्रमुखता प्राप्त हो गई थी जिसके कारण कई बार मुझको उनके पारस्परिक झगड़ों को तय करना पड़ा था। कभी मेरा निर्णय एक के पक्ष में होता था तो कभी दूसरे के; किन्तु सदा ही मैंने निष्पक्ष रहने की कोशिश की थी और वे भी इस बात से परिचित हो गए थे। इसलिए सभी के साथ मेरे अच्छे सम्बन्ध थे। वास्तव में पिछले दो मास में जबकि हम सब उस भट्टी में कष्ट पा रहे थे मेरे अधिकार में और भी वृद्धि हो गई थी। इसलिए यद्यपि इस कोठरी में मैं अनेक कष्ट पा चुका था इसको छोड़ते हुए मेरे मन में मिश्रित भावनाएं उठीं। मैं इसको छोड़ने पर प्रसन्न भी था और दुखी भी। बन्दियों को सदा ही परिवर्तन से डर लगा करता है।

मैं वार्डर के पीछे चल दिया। हम एक लोहे के छोटे दरवाजे से निकल कर जेल के उस हिस्से में पहुँचे जहाँ बड़ी बड़ी कोठरियाँ थीं। जीने से उतर कर नीचे की मंजिल में पहुँचने पर वार्डर ने पहले नम्बर की कोठरी का ताला खोल दिया। कोठरी खाली पड़ी थी और इतनी बड़ी थी कि उसकी बाहर की दीवार में पाँच खिड़कियाँ थीं। वहाँ पहुँचते ही मैं ठंड के मारे काँपने लगा।

पहले तो मैंने सोचा कि यहाँ मुझको थोड़ी देर के लिए ही रखा जा

रहा है और उसके बाद अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए मैं कहीं और ले जाया जाऊँगा। किन्तु लगभग एक घंटे के पश्चात् वहां दो कैदी और पहुँचा दिए गए। यह देखकर मैंने कोठरी का एक कोना संभाल लिया और लेट रहा। दीवारों पर इतने खटमल थे कि उनका रंग ही बदल गया था। कुछ दर्जन खटमलों को मारने के पश्चात् मैंने प्रयत्न छोड़ दिया। कब तक मारता रह सकता था मैं उनको !

रात हुई और एक सौ से अधिक कैदी और आ पहुँचे। अब मेरे जेल जीवन में एक नया दौर शुरू हो गया।

पहले नम्बर की कोठरी में मुझको कुल एक सप्ताह ही रहना पड़ा। बाद में मुझको वहाँ से हटा कर कोठरी नम्बर चार में भेज दिया गया जो पहली मंजिल पर थी। खोलोदनाया गोरा में यह सर्वश्रेष्ठ कोठरी समझी जाती थी। इसका फर्श लकड़ी का था और इसका क्षेत्रफल पहले नम्बर की कोठरी के बराबर था। इस कोठरी के प्रमुख ने निश्चय किया कि हम अपनी अपनी जगह पहचान लें और हमेशा वहीं रहें। मेरे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात थी क्योंकि जिस समय उसने यह निश्चय किया था उस समय मैं इस कोठरी के सबसे अच्छे हिस्से पर कब्जा किए हुए था।

इसमें कोई सन्देह नहीं था कि इस कोठरी में अवस्थाएं पुरानी कोठरी की अपेक्षा कहीं अच्छी थीं। पर उनको आदर्श मानना भूल होगी। हमारी संख्या बढ़ते बढ़ते एक सौ साठ हो गई, यहां तक कि अब हम सब फर्श पर एक करवट ही लेट सकते थे। हम एक दूसरे से सटे हुए लेटे होते थे और कई बार एक दूसरे के द्वारा पीसे जाने का अनुभव भी करते थे। तब भी सांस लेने के लिए ताजा हवा की कमी न थी। कोठरी की पाँचों खिड़कियाँ खुली रहती थीं। प्रत्येक दिन सायंकाल नौ बजे हम सोने की तैयारी करने लगते थे। नींद आने से पहले लगभग पन्द्रह

मिनट तक एक दूसरे से झगड़ लिया करते थे। हरेक अपने पड़ौसी से कुछ कहना झगड़ना चाहता था जिसका परिणाम यह होता था कि एक ही कतार में बनी हमारी बारह कोठरियों से ऐसा अव्यस्थित नाद उठने लगता था जैसे कि कहीं कोई झरना गिर रहा हो। अब पहलीं बार मैं जाना कि जिस धीमे धीमे शोर का हम ज़िक्र सुना करते थे वह क्या होता है।

एक दिन मैं अपनी जगह लेटा हुआ अपने सहबन्दियों का मूल्यांकन करने लगा। मुझको एक बात बड़ी विचित्र लगी। हम में से बहुत ही कम रूस या युक्रेन के निवासी थे। किन्तु खारकोफ़ में जितनी अल्पसंख्यक जातियाँ रहती थीं उन सभी का यहाँ समुचित प्रतिनिधित्व था। हमारी कोठरी में कुल मिला कर बाईस जातियों के प्रतिनिधि थे जिनमें पोल थे, आर्मीनियन थे, जार्जियन थे, लैंट थे, लिथुआनियन थे, यहूदी थे, जर्मन थे, फ़िन थे, असीरियन थे, चीनी थे, यूनानी थे, टर्क थे, मेसीडोनियन थे, बल्गेरियन थे, कोरियन थे, हंगेरियन थे, तारतार थें, बश्कीर थे और श्वेत रूसी थे।

जेल का भोजन बड़े वैज्ञानिक ढंग से आयोजित किया जाता था। यदि कोई बन्दी दिन भर लेटा रहता और अनावश्यक चलना फिरना और उठना बैठना न करता तो उसको केवल इतना ही भोजन मिलता था जिससे कि उसका जीवन-पखेरू उसके शरीर में अटका रहे। सभी कैदियों का वजन गिर जाया करता था पर वे मरते नहीं थे। उदाहरण के लिए मेरा वजन चवालीस पौंड कम हो गया था। अब क्योंकि बाहर से किसी प्रकार की सहायता मिलने की आशा न थी मैं अपनी शारीरिक शक्ति का सोच विचार कर प्रयोग करता था। अपने बन्दी जीवन के प्रारम्भिक दिनों में मैं नियमित रूप से व्यायाम किया करता था। अब ऐसा करना छोड़ दिया था। कभी कोठरी से बाहर निकलने

का अवसर मिलता भी था तो मैं एक कोने में बैठकर ताज़ी हवा में लम्बे लम्बे सांस लेकर और आकाश की ओर देखकर ही संतोष कर लिया करता था। प्रायः सभी वार्डर यह जान गये थे कि मैं जेल का सब से पुराना अधिवासी हूँ। जेल में "पुरानेपन" की जितनी क़द्र होती इतनी और कहीं नहीं।

अब पहले की अपेक्षा कैदियों की पिटाई कम होने लगी थी और कन्वेयर की प्रक्रिया भी बहुत कम देखने को मिलती थी। किन्तु अब एक नये प्रकार की यातना देखने में आने लगी थी। पुलिस के अधिकारी कभी कभी कैदियों को अड़तालीस घंटे के लिए अलमारी में वन्द कर दिया करते थे ताकि वे न तो बैठ सकें और न लेट सकें। हमारी कोठरी में दो चीनी युवक थे और उनको बार बार पूछताछ के [illegible] था। उन पर जासूसी करने का आरोप था। ये बेचारे जासूसी के अभियोग को स्वीकार करने को तैयार थे किन्तु रूसी अधिकारी उनसे इतनी ही वात सुनकर संतुष्ट नहीं होना चाहते थे। वे चाहते थे कि ये चीनी युवक यह भी स्वीकार करलें कि वे जापान की ओर से जासूसी करते थे। देशभक्त होने के कारण वे ऐसा मानने को तैयार न थे। जापान से उन दिनों चीन का भयंकर युद्ध चल रहा था। उन्होंने एक दिन अपनी सारी कथा मुझको सुनाई। वे कहने लगे कि जापान और रूस में परस्पर वैमनस्य है और दोनों में अक्सर मुठभेड़ हो जाया करती है किन्तु चीन और रूस तो इस समय परस्पर मित्र हैं। भाषा अच्छी तरह न जानने के कारण वे चीन और रूस के पारस्परिक सम्वन्धों को इंगित करने के लिये अपने दोनों हाथों की उंगलियों को एक दूसरे से जोड़ लिया करते थे जिसका अभिप्राय यह था कि जिस प्रकार उनके हाथों की उंगलियों को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता उसी प्रकार चीन और रूस भी एक दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते।

हममें सब से अधिक मनोरंजक व्यक्ति ब्रुएड नाम का एक आदमी था। मैंने उसको १८ मास पहिले एक दिन रायजनिकोफ के यहां देखा था। सन् १९३८ ई० में वह स्वयं ही गिरफ़्तार होकर हमारी कोठरी में आ पहुँचा। वहाँ एक पुराने कैदी ने जिसके साथ उसने कभी सख्ती की थी पहिचान लिया और उस पर बदला लेने के लिये प्रहार कर दिया। तब अन्य कैदियों ने मध्यस्थता करके उनको एक दूसरे से छुड़ा दिया। बाद में मैंने अपनी जगह बदल ली और उसके निकट आ गया। उसकी आकृति लाल सी थी, बाल सुनहरे; शरीर उसका छोटा और सुघड़ था।

मैंने उससे एक दिन पूछा, "तुमने उस कैदी को मारा क्यों था ? क्या वास्तव में तुम यह समझते थे कि वह जासूस था।"

"क्या मैं मूर्ख था जो ऐसी बात समझता ? मैंने उसको कभी जासूस नहीं समझा था।"

"फिर तुमने उसको पीटा क्यों ?"

इसका उसने कोई उत्तर न दिया। इस पर मैंने अपने सवाल को फिर दोहराया। तब वह बोला :

"मैं यहाँ आने के लिये उत्सुक न था। जेल में बन्द होना किसको अच्छा लगता है ?"

"तो क्या तुमको किसी ने उसको पीटने का आदेश दिया था ?"

"मूर्खों वाली बात करने से कोई लाभ नहीं। ऐसा करने के लिए किसी आदेश की आवश्यकता नहीं। कानून किसी बन्दी के प्रति दुर्व्यवहार करने की आज्ञा नहीं देता।"

"तुम्हारी बात सुनकर तो मैं और भी भ्रम में पड़ गया हूँ। अगर तुम उसको न पीटते तो क्या होता ?"

"कुछ नहीं, बस वह अपना अपराध स्वीकार न करता।"

"किन्तु जब तुम जानते थे कि वह निर्दोष है तो तुम उसको एक कल्पित अपराध को स्वीकार करने के लिये क्यों विवश कर रहे थे ?"

"मैं नहीं चाहता हूँ कि वह झूठे आरोप को स्वीकार करे। ऐसी इच्छा तो दूसरे लोगों की थी। कुछ भी हो तुम्हारी इस जिज्ञासा से मैं तंग हो गया हूँ। मुझको शान्ति के साथ समय काट लेने दो।"

कुछ समय के पश्चात् मैंने उसी विषय को फिर छेड़ा।

"यदि वह अपना कल्पित दोष स्वीकार न करता तो क्या हो जाता ?"

"कोई विशेष बात नहीं। बस मुझको यह लिखने के लिए बाध्य होना पड़ता कि बन्दी निर्दोष है।"

"तो इससे तुम्हारा क्या बिगड़ जाता ?"

"वह जेल से छूट जाता।"

"फिर तुमने ऐसी रिपोर्ट क्यों नहीं लिखी ?"

"उसके प्रति मैं ऐसा विशेष व्यवहार करता इसका कोई कारण दिखाई नहीं देता था। मेरे हाथों में उस समय उसी की तरह के बीस और व्यक्ति थे और सभी निर्दोष थे।"

"यदि तुम यह लिख देते कि वे सब ही निर्दोष है तो क्या तुमको कोई व्यक्तिगत हानि हो जाती ?"

वह हँस पड़ा और कहने लगा; "इतनी दूर बात पहुँचती इसमें संदेह था। ले देकर पहला ही आदमी छूट पाता। दूसरे आदमी का मामला मेरे हाथ से लेकर किसी और को दे दिया जाता। तीसरे व्यक्ति का नम्बर आने तक मैं दण्ड के लिए तैयार हो गया होता। चौथा व्यक्ति छूट जाता तो मैं सरकारी कार्य में विघ्न डालने के अपराध में गिरफ्तार कर लिया जाता। जान बूझ कर गिरफ्तारी कराने का मेरा कोई इरादा न था इसलिए उन सब से अपराध स्वीकृतिपत्र प्राप्त करना मेरे लिए आवश्यक था। और यह निश्चय ही था कि जबतक उनको कष्ट और यातनाएं न मिलतीं तब तक उनमें से कोई भी हस्ताक्षर करने को तैयार न होता। लगभग एक साल तक कन्वेयर प्रक्रिया को चलाते रहने का अवकाश हमको न था।"

हमारी कोठरी में उस समय जिस प्रकार जीवन चल रहा था वह बौद्धिक दृष्टि से यद्यपि मनोरंजक था किन्तु शारीरिक दृष्टि से क्लान्तिपूर्ण था। यदि रात्रि के समय हम में से किसी को नैसर्गिक आवश्यकता के कारण उठना पड़ता था तो उसको संभल संभल कर पांव रखना होता था। बीस आदमियों के ऊपर से होकर निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचना आसान काम न था। बहुधा हमको उस ओर जाने के लिए हाथ और पाँव दोनों का ही सहारा लेना पड़ता था। सर्दी की रात्रि में जबकि सभी लोग अपने कपड़ों में लिपटे पड़े रहते थे यह यात्रा और भी कष्टकर होजाती थी। किसी न किसी के शरीर पर चढ़ जाने का हमेशा खतरा रहता था। यदि भूल से किसी पर पांव पड़ गया तो अपशब्दों और अभिशापों की भी कुछ कमी न रहती थी। कई बार ऐसा भी हुआ कि ऐसी भूल होजाने के कारण कोठरी में दंगा प्रारम्भ हो गया। स्थिति यहां तक खराब हो गई कि हम लोग विवश होकर इसके निराकरण का कोई उपाय सोचने लगे। एक बार हम सब ने

निश्चय किया कि हम वार्डर से यह कह छोड़ें कि किसी को आवश्यकता हो या न हो वह सभी को हर दो घंटे के बाद उठा दिया करे। ऐसा हुआ भी। कोठरी के एक कोने में ही निवृति का प्रबन्ध था इसलिए एक व्यक्ति वहां गया होता था तो शेष लोग कोठरी के प्रमुख के कहने पर उल्टे होकर आँखें बन्द करके लेटे रहा करते थे या दूसरी दिशा में मुंह फेर लिया करते थे। इस विधि से हमने एक साथ दो समस्याओं का समाधान कर लिया था। रात भर एक ही करवट लेटे रहना प्रायः असम्भव था, अब दो दो घंटे के बाद कम से कम करवट बदलने का अवसर तो मिल जाता था।

उन्हीं दिनों की बात है कि मैं बीमार पड़ गया। मेरे दांत खराब हो गए थे और हिलने लगे थे और मेरे शरीर के नीचे के भाग में सूजन आ गई थी और पीव सा पड़ गया था। अब मैं करवट से नहीं लेट सकता था इसलिए हमारे कोठरी प्रमुख ने मुझको थोड़ी और जगह दिला दी ताकि मैं सीधा लेट सकूं। हमारा प्रमुख जाति से यूनानी था, लाल सेना में कप्तान रह चुका था और वास्तव में उसको हमारे हितों की बहुत चिन्ता रहती थी। उसने मेरे विषय में डाक्टर से भी रिपोर्ट की किन्तु ऐसा मालूम होता था कि उस समय उपचार-गृह में कोई स्थान न था। मेरी अवस्था दिन प्रतिदिन बिगड़ती गई और विवश होकर मैंने भूख हड़ताल करने का निश्चय कर लिया। तब तुरन्त ही मेरे लिए उपचार-गृह में प्रबन्ध होगया। मुझको छः महीने पहली उस भूख हड़ताल की याद आई जो विफल हो गई थी। इस बार केवल छः घंटे ही में विजय प्राप्त होगई।

जेल का डाक्टर जब अपने दौरे पर आया करता था तो बड़ी सावधानी और ध्यान के साथ मेरे दुख दर्द की बात पूछता था और मेरे साथ काफी

समय बिताया करता था। यह एक दूसरी बात थी जिसकी छः महीने पहिले कल्पना भी न की जा सकती थी। इससे यह आशा और भी पक्की होगई थी कि सरकार की नीति में अवश्य ही कुछ न कुछ परिवर्तन हो गया है या होने वाला है।

मैं दो सप्ताह तक उपचार-गृह में रहा। जब मैं अपनी कोठरी में वापिस लौटा तो जो कल तक आशा मात्र थी मैंने उसको अब निश्चय में बदला पाया। सभी को यह पूर्ण विश्वास था कि अवश्य ही कोई बड़ा परिवर्तन आने वाला है। पुलिस द्वारा की जाने वाली पूछताछ बन्द हो चुकी थी; हरेक प्राणी बड़ी उत्कण्ठा से यह प्रतीक्षा कर रहा था कि कब इस परिवर्तन का वास्तविक रूप मालूम होगा।

इस समय हमारी कोठरी में छः बंदी ऐसे थे जो किसी समय खुफिया पुलिस के बड़े अधिकारी रह चुके थे। किन्तु उनसे कोई काम की बात न मालूम हो सकी। उनमें से एक का नाम आइनगार्न था। यह जेल में रहते हुए भी अपने आपको खुफिया पुलिस ही का एक अंग मानता था; और बात बात में अपने भूतपूर्व विभाग के अनुशासन की याद कराता रहता था। दूसरा एक व्यक्ति लिसोवस्की नाम का था जो सदा विज्ञान और कला ही की बातें करता रहता था। वह हर समय घबड़ाया सा रहता था; उसको सदा ही यह डर लगा रहता था कि कहीं मुंह से कोई ऐसी बात न निकल जाय जिस पर आगे चलकर पश्चाताप करना पड़े। मैं रूसी भाषा में पत्रादि लिखते समय कुछ भूलें कर बैठा करता था इसलिए एक बार मैंने उससे अपना एक प्रार्थनापत्र लिखने को कहा। पहले तो उसने साफ इनकार कर दिया पर कुछ सोचने के बाद वह मुझको मेरे प्रार्थनापत्र का मजमून लिखवा देने को तैयार हो गया। उसको यह चिन्ता थी कि कहीं ऐसा न हो कि उसकी हस्तलिपि मेरी फाइल में दाखिल होजाय।

जब दिसम्बर के अन्त में पूछताछ का क्रम पुनः जारी हुआ तो हम सभी को आश्चर्य हुआ। हम लोग बड़ी व्यग्रता से 'ब्रिखलोवका' से आने वाले लोगों की प्रतीक्षा करने लगे। जब वहाँ से कुछ लोग लौट कर आए तो उनसे हमारा पहला प्रश्न यह था कि क्या वहाँ अब भी येज़ोफ़ के चित्र ज्यों के त्यों लगे हुए हैं ? उत्तर मिला कि येज़ोफ़ के चित्रों के स्थान और आकार प्रकार में कोई अन्तर नहीं आया है। हां यह बात सभी ने कही कि अब पूछताछ के वातावरण में परिवर्तन अवश्य आ गया है। अब किसी को मार नहीं पड़ती। कई अभियुक्तों ने अपने वक्तव्यों को वापस ले लिया है, फिर भी उनको इस प्रकार साहस दिखलाने से कोई जोखिम नहीं उठानी पड़ी है। ऐसे अभियुक्तों से पूछताछ करने वाले अधिकारियों ने पहले वक्तव्यों के देने के कारण मात्र पूछ कर संतोष कर लिया है। ऐसा भी देखा गया है कि बहुत से अभियुक्त असली कारण बताते हुए डरते थे। उनमें यह कहने का साहस न था कि खुफ़िया पुलिस की मारपीट के कारण उन्होंने ऐसे वक्तव्य दे दिए थे। किन्तु अन्त में पुलिस द्वारा दी जाने वाली यातनाओं की कहानी छुपी न रह सकी। आश्चर्य की बात यह है कि तिस पर भी अब पुलिस अधिकारी क्रुद्ध नहीं होते। स्थिति में यहां तक परिवर्तन हो गया है कि अब प्रायः सभी कैदी अपने पूर्व वक्तव्यों का प्रतिवाद लिखने के लिए कागज़ कलम मांगने लगे हैं। इस प्रकार की बातें सुनने के पश्चात् अब हम लोग 'ब्रिखलोवका' से लौटने वाले व्यक्तियों से प्रायः यही प्रश्न किया करते थे कि "तुमने अपने वक्तव्य का प्रतिवाद किया या नहीं ?" इससे पहले हमारा साधारण प्रश्न यह हुआ करता था कि "तुमने वक्तव्य दिया है या नहीं ?"

अभी तक बहुत से अभियुक्त अपने वक्तव्यों के विषय में उधेड़ बुन में पड़े हुए थे। उनमें से बहुतों को यह भी याद न रहा था कि उनसे

पुलिस नें किस अपराध को स्वीकार करवा लिया था। उनमें से एक ने एक बार अपनी मर्म-कथा इस प्रकार कही थी :

"यदि वास्तव में ये लोग यह समझते थे कि हम राजनीतिक दृष्टि से खतरनाक लोग हैं तो इसका सीधा उपाय यह था कि ये हमको साइबेरिया भेज देते तो किस्सा ही खत्म हो जाता। तब इन्होंने हम से ऐसे मूर्खतापूर्ण वक्तव्यों पर क्यों हस्ताक्षर कराए जिनको कोई और तो क्या ये स्वयं भी सच नहीं मानते हैं ? यदि ये लोग हमको इसलिए कैदी बनाना चाहते थे कि इनको मुफ्त मजदूरी करने के लिए आदमी मिल जाएं तो उसका दूसरा भी उपाय हो सकता था। यह सब ढोंग क्यों ? इस प्रकार के वक्तव्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार को कम से कम एक लाख पुलिस अधिकारी और कई लाख पहरेदार और वार्डर रखने पड़े होंगे। इस सबका परिणाम क्या हुआ ? यही न कि लाखों भले आदमियों को उनके काम से महीनों तक वंचित रखा गया।"

हम में से जो विभिन्न घटनाओं का सावधानी के साथ विश्लेषण कर सकते थे उनसे इस प्रक्रिया के लौह-तर्क को छुपाया नहीं जा सकता था। यदि खुफ़िया पुलिस के अधिकारी अस्सी लाख नर नारियों को मिटाने पर तुले हुए थे तो इसके अतिरिक्त और उसका कोई तरीका नहीं था। यदि खुफ़िया पुलिस के अधिकारी सबसे पहले गिरफ़्तार होने वाले व्यक्तियों से झूठा बयान न लेते तो बाद में गिरफ़्तार होने वाले लोगों को किस बहाने से गिरफ्तार किया जाता और उनसे बाद में गिरफ्तार होने वाले लोगों को किस बहाने से गिरफ्तार किया जाता। एक बार खुफ़िया पुलिस ने जिस तर्क को अपना लिया था उसका यही क्रम हो सकता था। झूठ की शृंखला में यदि नित्य नई कड़ियां न जुड़तीं तो उसके टूट जाने का डर था। वास्तव में स्टालिन को इस प्रकार के

नर-संहार की आवश्यकता न थी। यह नर-संहार न होता तो देश कहीं अधिक स्वस्थ और सुखी होता। लाल सेना अपने अभ्यस्त अनुभवशील अधिकारियों से हाथ न धोती और हिटलर से युद्ध छिड़ जाने के पश्चात् उसको स्टालिनग्राड तक जो निरंतर पीछे हटना पड़ा उस दुर्भाग्य से ही न बच जाती बल्कि वह सीधे विजयध्वजा लेकर बर्लिन पर आक्रमण कर सकती थी। किन्तु यदि वह सीधे मार्ग को अपनाता तो उसको स्टालिन ही कौन कहता। जिस मार्ग को सोवियट रूस की खेती बाड़ी को सुधारने के लिए ग्रहण करना चाहिए था उस पर अब उसकी वक्र-नीति के कारण एक करोड़ दस लाख किसानों की लाशें बिछ गईं। जिस मार्ग को अपना कर जर्मन फासीज़्म का तख्ता उलटा जा सकता था उस मार्ग पर अब उन लोगों की लाशों को पाटा गया जो अपने फासीज़्म-विरोध के कारण अब रूस की जेलों में मरे खपे।

१५ फरवरी सन् १६३६ ई० को वार्डर ने हमारी कोठरी का द्वार खोला और मेरा नाम लेकर पुकारा और घोषणा की कि अब मेरी पूछताछ फिर शुरू होने वाली है।

उसकी इस घोषणा को सुनकर मानों सारे कैदियों को सांप सूंघ गया। घोषणा निश्चय ही मेरे विषय में थी। मुझको कोठरी से निकाल कर अन्दर की जेल में ले जाया गया। वहाँ के वातावरण में भी परिवर्तन हो गया है ऐसा मुझको लगा। पुरानी तहखानों वाली कोठरियों के स्थान में अब पूछताछ के लिए नए कमरों का प्रयोग होने लगा था। अब जेल की प्रत्येक मंज़िल में ऐसे बड़े बड़े कमरे थे जिनमें कैदियों को ले जाकर बैठा दिया जाता था ताकि वे अपनी बारी आने की प्रतीक्षा कर सकें।

अब मेरी जो परीक्षा शुरू हुई उसका कोई विशेष महत्व था यह मैं

न समझ पाया। अब पुलिस अधिकारियों में कोई भी पुरानी सूरत नज़र न आती थी। वे प्राय: सभी हमारी ही तरह कैदी बने पड़े थे। अब मुझको एक ऐसे आदमी के सामने पेश किया गया जिसका मैंने कभी नाम भी न सुना था। उसने बड़े शान्त मन से मुझसे पूछा कि क्या मैं अब भी अपनी पुरानी बात पर अड़ा हुआ हूँ। जब मैंने उससे कहा कि मैंने कभी कोई अपराध नहीं किया तो वह क्रोधित नहीं हुआ, उसने बस मेरा उत्तर ही लिख लिया। इसके बाद उसने मेरी तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दिया यहां तक कि एक बार तो वह मुझको कमरे में अकेला ही छोड़ कर कहीं बाहर चला गया। किसी समय इस प्रकार की घटना की कल्पना तक भी नहीं की जा सकती थी।

मैं फिर खोलोदनाया गोरा की जेल में वापस आ गया। इस दर्म्यान में मेरी बुद्धि या जानकारी में कोई वृद्धि हुई इसकी मुझको याद नहीं। बल्कि लौटकर आने के पश्चात् मैं कई दिन तक इसी आश्चर्य में पड़ा रहा कि न जाने अब मेरे साथ क्या होने वाला है। तब एक दिन अचानक ही मुझको अपनी चीजों का पुलंदा बांध कर तैयार हो जाने का आदेश मिल गया। नीचे उतरा तो जो एक लम्बा पिंजड़ा सा रखा था उसमें मुझको धकेल दिया गया। जिन कैदियों को प्रतीक्षा में रखा जाता था उनको इस प्रकार के पिंजड़ों में बन्द करने का रिवाज सा पड़ गया था। मैं भी चार घंटे तक उसी पिंजड़े में बन्द रखा गया। उससे मुक्ति मिली तो मुझको एक दूसरे दरवाजे से निकाल कर जेल के छोटे सहन को पार करके जेल के दफ़्तर में ले जाया गया। हमको दो कमरों में से गुजरना पड़ा। तीसरे कमरे में पहुँच कर मुझको अकेला छोड़ दिया गया। मैं वहाँ बैठा हुआ अपने भविष्य की रेखाओं को चीन्हने का प्रयास करने लगा। क्या वास्तव में मैं छूटने वाला हूँ ? यह प्रश्न मेरे मन में जैसे ही उठा मैंने उसको वैसे ही दबा दिया। अब मैं अपने हृदय में किसी आशा को

जगा कर निराशा का धक्का खाने को तैयार न था। किन्तु दिखाई यही दे रहा था कि मैं छूटने वाला हूँ। अब आगे चल कर क्या होने वाला है इस विषय में उस समय मेरे मन में कुछ भी कल्पना क्यों न रही हो उत्तेजना और आशा न थी। पर यदि मैं छूट ही गया तो यहाँ से कहाँ जाऊँगा ? यह एक प्रश्न था जो कभी कभी मन में अवश्य उठता था।

प्रातःकाल वे मुझको लेने आ गए और मुझे एक दूसरे कमरे में ले गए जहाँ बड़े ग़ौर से मेरी और मेरे सामान की तलाशी ली गई। इसके बाद उन्होंने मुझसे मेरे अपने माता पिता और पितामहों के विषय में विशद पूछताछ की। पर तब उनको पता लगा, कि मेरी फ़ाइल ही कहीं खो गई है। लगभग दो घंटे तक वे मेरे मामले के काग़ज़ों को ढूंढ़ते रहे पर कोई सफलता न मिली। आखिर उनमें से एक ने कहा, "कोई बात नहीं, हम इसकी फ़ाइल को बाद में भेज देंगे।"

"भेज देंगे ? कहाँ ?" मैंने पूछा।

उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। बात यह छोटी सी थी पर इसी से मुझको पूरी तरह पता चल गया कि मेरी रिहाई नहीं होने वाली है। इस पर मुझको तनिक भी निराशा नहीं हुई। वास्तव में मुझको तो डर लग रहा था कि यदि कहीं कारावास से अचानक मुक्ति प्राप्त हो गई तो मैं क्या करूँगा।

अन्त में खुफ़िया पुलिस के सशस्त्र पहरेदार आए और मुझको अपने साथ लेकर चले गए। हमारी कार एक एकाकी रेलवे स्टेशन पर जाकर रुक गई जहाँ हम एक रेलगाड़ी में सवार हो गए। सारे डिब्बे में हमारे अतिरिक्त कोई न था। अंधेरा हो चुका था और मैं नक्षत्रों को देख कर यह पता नहीं लगा सकता था कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। बारह

घंटे तक हमारी रेलगाड़ी चलती रही; मुझको मालूम था कि तेज रेल-गाड़ी से मास्को जाने में सतरह घंटे लगते हैं इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि हम सम्भवतः कीएफ़ (Kiev) के रेलवे स्टेशन पर आ पहुँचे हैं।

मुझको रेलगाड़ी से उतार लिया गया और एक कार में सवार कर दिया गया। कार तेजी से चल पड़ी और कुछ ही समय पश्चात् जेल के दरवाजे पर जा पहुँची। इस जेल में मुझको जो कोठरी मिली उसमें अच्छी चारपाइयाँ थीं और बिस्तरों पर साफ़ चादरें बिछी हुई थीं। जब मैंने कोठरी में पाँव रखा तो दूसरे बन्दी जाग गए।

मैंने उनको सम्बोधित करते हुए कहा, "क्षमा करना बन्धुवर, मुझको सूझ नहीं पड़ रहा है कि मैं कहाँ हूँ। क्या आप बता सकेंगे?"

"कीएफ़ के आन्तरिक कारागार में", उत्तर मिला।

कई सप्ताह तक मुझको किसी ने नहीं छेड़ा जिससे मुझको यह विश्वास होने लगा कि शायद मेरा संकट काल समाप्त हो गया है। मैं यह भी आशा करने लगा कि अब या तो मैं छूट जाऊँगा या निर्वासित कर दिया जाऊँगा। साथ ही मन में प्रश्न उठता था कि फिर ये लोग इतना देर क्यों लगा रहे हैं।

मैं सूख कर कांटा हो गया था; मुझको हमेशा भूख लगती रहती थी। हमको सुबह छः बजे रोटी का राशन मिला करता था। मैं अपनी डबल रोटी पर चार निशान लगा लिया करता था ताकि निश्चित समय पर पाँच बार कुछ खा लिया करूँ। किन्तु मैंने देखा कि सारी रोटी दोप-हर से पहले ही समाप्त हो जाया करती थी। पेट में भूख की ज्वाला धधकती हो तो रोटी के टुकड़े बचा कर रखने की क्षमता किसमें हो

सकती हैं ? एक बार रोटी समाप्त हो जाय तो एक प्रकार का संघर्ष भी समाप्त हो जाता है; शेष रह जाती है तो केवल क्षुधा की पीड़ा।

शाम होने तक मैं भूख से बड़ा दुर्बल हो जाया करता था और दीवार से कमर लगा कर बैठने के कारण अधिकारियों से झगड़ा मोल लेना पड़ता था। किन्तु शारीरिक दौर्बल्य के कारण ग्यारह बजे तक बैठने की शक्ति मुझमें न रह गई थी। वार्डर मुझसे व्यक्तिगत बैर रखता था ऐसी बात न थी, किन्तु वह अनुशासन नियमों का अक्षरश: पालन कराने का आग्रह करता रहता था। समय समय पर वह द्वार खोल कर मेरी ओर ताकता था और दीवार से दूर रहने का आदेश कर जाया करता था। ऐसा करते समय वह बोलता बिल्कुल न था; इशारे ही से काम लिया करता था।

कीएफ़ में रहते हुए मन ऊब गया था। दिन के सतरह घंटे बिना कुछ किए बैठे रहना बड़ा कष्टकर अनुभव था। खोलोदनाया गोरा की जेल में जिस प्रकार का जीवन रह चुका था उससे इस प्रकार की निष्कर्मण्यता को सह सकने की आदत हो न रही थी।

जुलाई के अन्त में मुझको पूछताछ के लिए फिर निकाला गया किन्तु इस बार जिस अधिकारी से मुझको वास्ता पड़ा वह भिन्न ही प्रकार का व्यक्ति था। पीत वर्ण और बीस बाईस वर्ष की आयु। वातावरण में एक बार भी कटुता न दिखाई दी। उसने मुझको डराने धमकाने की ज़रा भी कोशिश नहीं की। जो कुछ मैं जानता था उसको बताने में मैंने कुछ छुपाया नहीं। ऐसा प्रतीत होता था कि उसको यह पद मिले बहुत दिन नहीं हुए हैं। प्रत्येक स्थान पर हस्ताक्षर करने के पहले वह अपने विभाग के अध्यक्ष के पास दौड़ जाया करता था। यह युवा अधिकारी मेरे द्वारा बताई गई सभी बातों को लिखता रहता था। कई बार ऐसा ही हुआ।

कुछ दिन पश्चात् उसका स्थान एक और युवक अधिकारी ने ले लिया। प्रत्येक बात में वह पहले जैसा ही व्यक्ति था; उतना ही अनुभवशून्य और उतना ही अल्हड़। आगे चल कर इस प्रकार के कई व्यक्तियों से मेरी मुठभेड़ हुई। खुफ़िया पुलिस के अधिकारियों में अब शायद ही कोई बुद्धिजीवी कहलाने लायक व्यक्ति रह गया हो। अब कोई यहूदी भी दिखाई न देता था यद्यपि एक समय पुलिस के अधिकारियों में अनेक व्यक्ति उसी जाति के थे। नवागंतुकों में अधिकांश व्यक्ति कल कार-खानों और स्कूलों से निकले हुए छोकड़े ही थे जिनको अपने पद और कर्तव्य के विषय में भी अभी तक पर्याप्त जानकारी न हो पाई थी।

कुछ दिन के बाद मुझको फिर बाहर निकाला गया। इस बार भी मेरा परीक्षक एक युवक ही था। मेरे वहाँ पहुँचते ही उसने पूछना शुरू किया, "क्या ऐसा कोई भी अपराध नहीं जिसको तुम स्वीकार करना चाहते हो?"

मैंने कहा, "बिल्कुल नहीं।

"तुम्हारे विरुद्ध आतंकवाद का अभियोग है।

"आतंकवाद से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं ?"

"और जासूसी से ?"

"उससे भी नहीं।"

"लोगों को पथभ्रष्ट करने से ?"

"मैं सर्वथा निर्दोष हूँ।"

"रूस की सरकार के विरुद्ध आन्दोलन करते रहने के विषय में तुमको क्या कहना है ?"

"सुनिए साहब, यदि कोई व्यक्ति तनिक सी भी आलोचना कर बैठता है तो उसीको आप लोग सोवियट राज्य विरोधी आंदोलन मान बैठते हैं। इस दृष्टि से हम सभी अपराधी हैं।"

"क्या तुमने सार्वजनिक रूप से किसी सरकारी काम की आलोचना की है ?"

"हाँ, उदाहरण के लिए उस बार जब कि सरकार गर्भपात के लिए स्त्रियों को दी गई स्वाधीनता को मिटा देना चाहती थी मैंने उसका विरोध किया था। बाद में जब सरकार ने इस विषय में कानून बना दिया, तब भी मैंने अपने विरोध को वापस नहीं लिया था यद्यपि पार्टी के सेक्रेटरी गार्बर ने मुझसे ऐसा करने को कहा था।"

मेरी बात सुन कर वह गद्‌गद् हो गया। शायद इसलिये कि उसको कुछ तो प्राप्ति हुई। मैंने अपने ऊपर लगाए गए दूसरे आरोपों के विरुद्ध युक्तियाँ देने का प्रयत्न किया और उसको यह बताना चाहा कि मुझ जैसे व्यक्ति पर सन्देह करना कैसी मूर्खता है किन्तु उसने ऐसी किसी बात की आज्ञा न दी।

कुछ दिन के पश्चात् मेरी कोठरी का द्वार एक दिन फिर खुला। यह देख कर मेरे आश्चर्य की सीमा न रही कि वार्डर मेरे लिए एक सफ़ेद कमीज़ और टाई लाया है।

"पहनो इनको" उसने मुझको आज्ञा दी।

जब मैं इस नई कमीज़ को अपने तन पर डालने का यत्न कर रहा था और काँपती हुई अनभ्यस्त उंगलियों से टाई लगाने की कोशिश में था मेरे साथी मुझको घेरे हुए खड़े थे। वे बड़े उत्तेजित थे और यह विश्वास कर बैठे थे कि मैं अवश्य ही छोड़ा जाने वाला हूँ। कोई दस

मिनट पश्चात् वार्डर फिर वापस आ गया । इस बार वह मुझको हजामत बनवाने और फ़ोटो उतरवाने के लिए ले गया । मेरे तीन विभिन्न 'पोज़' लिए गए । इसके पश्चात् मुझको न केवल अपनी पुरानी कोठरी में वापस पहुँचाया गया बल्कि मुझसे कमीज़ और टाई भी उतरवा ली गई । इस पर भी मुझको कोई निराशा न हुई । हम लोग इस रहस्यपूर्ण घटना पर आपस में वादविवाद करके इस परिणाम पर पहुँचे कि सम्भवत: विदेश में किसी ने मेरे मामले में दिलचस्पी दिखाई है जिसको ये लोग मेरा चित्र दिखा कर मेरे जीवित होने का आश्वासन देना चाहते हैं ।

सितम्बर के आरम्भ में मुझको अपने वक्तव्य का अन्तिम भाग पूर्ण करने के लिए कहा गया । मेरे परीक्षक ने मुझको दण्ड विधान की धारा २०४ दिखाई और मुझको बताया कि मेरे मामले की सारी फ़ाइल पूरी हो चुकी है । साथ ही उसने यह भी बताया कि मैं चाहूँ तो अपने सम्बंध में किसी भी प्रमाण विशेष अथवा वक्तव्य को देख सकता हूँ और जहाँ उचित समझूं संशोधन करने का सुझाव पेश कर सकता हूँ । यह कहते हुए उसने लगभग आठ सौ पृष्ठ की फ़ाइल मेरे सामने रख दी । मैंने उसको पढ़ना शुरू किया और जहाँ उचित समझा संशोधन का सुझाव भी किया । पर मैंने देखा कि जब कभी भी मैंने किसी ग़लती को सही कराने की प्रार्थना की तो उस अधिकारी ने बड़ा तीव्र विरोध किया । इस सारी फ़ाइल में शायद ही कोई ऐसा वाक्य था जिसमें झूठ न हो । साधारण बातों के विवरण में भी ऐसे शब्दों और शैली को अपनाया गया था कि उसको पढ़कर किसी के मन में सन्देह उत्पन्न होना स्वाभाविक था । आठ घंटे तक कठोर परिश्रम करने के पश्चात् मैं इसके पांचवें हिस्से को ही देख पाया ।

"वाइज़बर्ग, तुम अपनी परीक्षा में विघ्न डालकर हमारे धैर्य का अनुचित लाभ उठा रहे हो ।"

किन्तु मुझको शाम तक डिब्बे से नहीं उतारा गया। अंधेरा होने पर मैं मास्को की केन्द्रीय जेल में दाखिल हुआ। इस जेल का नाम 'बुटिरका' था। पीटर महान के समय में यह एक क़िला था अब इसको राजनीतिक बन्दियों को बन्द रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। सोवियट रूस में शायद साजसज्जा की दृष्टि से इससे बड़ी दूसरी कोई जेल नहीं है। जेल में प्रवेश करते ही हम एक बड़े हाल में पहुँचे। आकार-प्रकार में यह हाल किसी बड़े रेलवे स्टेशन के मुसाफ़िरखाने जैसा था। हाल की दोनों ओर की लम्बी दीवारों के साथ साथ कुछ ऐसी छोटी छोटी कोठरियाँ सी बनीं थीं जो देखने में टेलीफ़ोन 'बूथ' जान पड़ती थीं। मुझको उन्हीं में से एक में बन्द किया गया। अब कई घंटे तक कोई भी मेरा हाल चाल पूछने न आया। अन्त में जब मुझको व्यक्तिगत कारणों से इस प्रकार बन्द रहना असह्य हो गया तो मैंने ज़ोर ज़ोर से दरवाज़ा पीटना शुरू किया। एक वार्डर आया और मुझको कुछ देर के लिए बाहर निकाल दिया गया। पर इस वार्डर ने मुझको यह चेतावनी दी कि मुझको जो कुछ भी कहना हो दबी ज़बान ही से कहना चाहिए।

आधी रात बीते बहुत देर हो चुकी थी तब मुझको उस चूहेदान से निकाला गया और एक नियमित कोठरी में रख दिया गया। उस कोठरी में उस समय मैं अकेला ही था। मैं मास्को के सभी होटलों से परिचित हूँ। मेरी राय से ओखोटनी रियाद के नये होटल को छोड़ कर शायद ही मास्को में कोई ऐसा होटल हो जिसके कमरे, सफ़ाई और आराम की दृष्टि से, इस जेल की कोठरियों से अच्छे हों। मेरी कोठरी का फ़र्श दर्पण की भांति चमकता था। खिड़कियां बड़ी थी; और उन पर लोहे या किसी और धातु का परदा भी नहीं चढ़ा हुआ था। खिड़की के शीशों ही में लोहे के तार ढले हुये थे। खिड़कियों को थोड़ा सा खोला भी जा सकता था। वैसे बाहर लोहे की शलाखें लगी ही हुई थीं। कोठरी में एक

और एक छोटी सी अल्मारी थी, एक कुर्सी, और एक चारपाई जिस पर साफ़ चादर बिछी हुई थी। मुझको स्नान करने की अनुमति मिल गई और पहनने को साफ़ कपड़े जो हर चौदहवें दिन बाद बदले जाने थे। मेरी अपनी जो चीजें थीं उनमें कुछ ही को कोठरी में रखने की आज्ञा थी यहाँ तक कि अब तकिया और उसका गिलाफ़ भी जो दर्जनों कोठरियों में मेरे साथ रह चुके थे मुझसे ले लिये गये।

जेल के नियमों की एक प्रति दीवार पर टंगी हुई थी। मैंने बड़े ध्यान से उसका अध्ययन किया।

यहां कुछ किताबें भी पढ़ने को मिल जाती थीं और शतरंज और डोमिनो आदि खेल खेलने की सुविधा भी प्राप्त थी। सप्ताह में एक बार हमलोग प्रार्थनापत्र आदि भी लिख सकते थे। खोलोदनाया गोरा में जिन परिस्थितियों में मुझको रहना पड़ा था उनसे यहां की अवस्थाओं की तुलना करने पर जिस विषमता का आभास होता था उसका अनुमान करना कठिन है। मैं कभी कभी सोचता था कि क्या वास्तव में यहां नये दौर के बाद से यह परिवर्तन हुआ है या विदेशियों को भ्रम में डालने के लिये इस जेल को एक आदर्श जेल के तौर पर तैयार किया गया है?

मुझको सदा ही भूख सताती रहती थी। एक मास के पश्चात् मैंने तंग आकर गृहमंत्री को एक प्रार्थनापत्र लिख भेजा। मैंने अपने प्रार्थना पत्र में बताया कि मैं लगभग तीन साल से पुलिस की हिरासत में पड़ा हुआ सड़ता रहा हूँ। खाने को जो कुछ मिलता है, उससे मेरा काम नहीं चलता। मैंने अपनी तनख्वाह से बचाकर कुछ पैसे कभी जोड़े थे जो एक बैंक में जमा हैं, यदि उचित समझें तो मेरी उस रकम में से कुछ थोड़ा सा रुपया मेरे जेल के हिसाब में जमा करा दें ताकि मैं जेल के राशन की कमी को पूरा करने के लिये अपने उस रुपये में से कुछ बाहर से खरीद मंगाया करूँ।

मेरी इस प्रार्थना का कभी कोई उत्तर नहीं आया।

मैं दिन पर दिन कमज़ोर होता जा रहा था। अब मेरे लिये पढ़ते रहना भी कष्टकर हो चला था। कई कई दिन मैं अपने बिस्तरे पर पड़ा हुआ जागृत अवस्था में भी स्वप्न से देखता रहा करता था।

मैं बहुत ही दुर्बल होगया था, किन्तु न जाने किस चमत्कार के कारण बीमार कभी न हुआ। एक ओर मैं अब यह आशा लगाये हुए था कि मेरी रिहाई की घड़ी शीघ्र ही आने वाली है तो दूसरी ओर मैं अपनी शारीरिक अवस्था को देखकर दुःखी रहने लगा था। अब मैंने देखा कि मुझको खांसी भी रहने लगी है। मैंने एक बार फिर गृहमंत्री को एक प्रार्थनापत्र भेजा; इस बार फिर पहली बार की तरह मुझको कोई उत्तर न मिला। जब से इस जेल में आया था तबसे मुझसे कोई पूछताछ करने वाला भी न आया था; इसलिये कोई भी ऐसा मौका न रहा था कि मैं अपनी प्रार्थना अन्य किसी मार्ग से अधिकारियों तक पहुँचा सकूं। अब चारों ओर से निराश होकर मैंने एक गम्भीर कदम उठाने का फैसला कर लिया। मैंने जेल के अध्यक्ष को निम्न पत्र लिखा:

"कृपया मुझसे पूछताछ करने का कोई प्रबन्ध कीजिये। मैं पिछले तीन साल से हिरासत में रहता चला आया हूँ। सोवियट रूस में मेरा ऐसा कोई सगा सम्बन्धी नहीं है जिससे मैं जेल के नियमों के अनुसार राशन की कमी पूर्ति के लिये ५० रूबल मासिक प्राप्त कर सकूं। खारकोफ़ सेविंग्स बैंक में मेरा हिसाब है, और उस हिसाब में मेरा कुछ रुपया जमा है। मैंने अनेक बार यह प्रार्थना की है कि इस रकम में से कुछ मेरे जेल के हिसाब में जमा कर दी जाय ताकि मैं उससे ही कुछ खाद्य सामग्री खरीद कर अपनी राशन की कमी को पूरा कर सकूं, किन्तु किसी ने सुनवाई नहीं

की। यदि मेरी इस प्रार्थना पर भी कोई ध्यान नहीं दिया गया तो मुझको विवश होकर अगले तीन दिन में भूख हड़ताल करनी पड़ेगी।"

उसी दिन शाम को जेल के अध्यक्ष स्वयं मेरी कोठरी में आये और मुझसे कहने लगे :

"मैंने तुम्हारा पत्र आगे भेज दिया है। मुझको आशा है कि शीघ्र ही पूछताछ के लिये तुमको बाहर निकाला जायगा। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं इस मामले में इससे अधिक कुछ नहीं कर सकता। पर मैं तुमको इतनी सलाह अवश्य दूंगा कि भूख हड़ताल करने से कोई लाभ नहीं है। बल्कि इसको सोवियट राज्य विरोधी प्रदर्शन ही माना जायगा।"

"इससे कोई लाभ नहीं," मैंने उत्तर दिया, "मेरे शरीर में शक्ति शेष नहीं रह गई। जिन लोगों के शरीर में पहले ही से कुछ शक्ति जमा है, उनके लिये यहां मिलने वाला खाना शायद पर्याप्त हो। किन्तु आप स्वयं ही मेरे ऊपर एक नजर डाल कर देखें। यदि किसी व्यक्ति को बिना बाहरी सहायता के जेल ही के खाने पर बरसों तक रहना पड़े तो कब तक जीवित रह सकता है वह ?"

"तुमको उत्तर अवश्य मिलेगा, किन्तु भूख हड़ताल का दबाव दिखा कर तुमको कुछ भी लाभ न होगा, यह मैं स्पष्ट रूप से कह सकता हूँ," अध्यक्ष ने मेरी बात पर टिप्पणी करते हुए कहा।

"मैं किसी विशेष सुविधा की प्रार्थना तो नहीं कर रहा हूँ। कानून जिस बात की मुझको आज्ञा देता है, वही मैं चाहता हूँ। नहीं तो क्या मैं इंच इंच करके आत्महत्या कर लूं ?"

अन्त में मुझको पूछताछ के लिये बाहर जाने का आदेश आ गया।

मुझसे प्रश्न करने वाले पुलिस अधिकारी ने मेरे वक्तव्य का अन्तिम भाग विस्तार पूर्वक लिखा। वह मुझसे प्रश्न करे और मैं उत्तर दू और उसको वह लिखे अब ऐसी बात न थी। अब उसने मेरे मामले के विषय में मेरे वक्तव्य को साधारण संक्षिप्त विवरण के तौर पर ही लिखना शुरू कर दिया। जब इस विवरण के लिखने में वह मेरे ऊपर लगाये गये जासूसी के अभियोग पर पहुँचा तो मैंने उसकी निरर्थकता को समझाने का यत्न करना चाहा। उसने मुझको तुरन्त ही रोक दिया :

"तुम क्या हमको निरे मूर्ख समझते हो ?" वह कहने लगा, "क्या तुमको वास्तव में यह विश्वास हो गया था कि हम तुमको सच्चे मन से जासूस समझते आये हैं ? तुम किस प्रकार की जासूसी करने लायक थे ?"

उसकी इस बात पर तनिक उलझन दिखाते हुए मैंने कहा "तब आप लोग मुझको छोड़ क्यों नहीं देते ?"

"इतनी जल्दी करने की क्या आवश्यकता है ? तुम्हारी बारी तो आने ही वाली है। तुम इस प्रकार अपने आपको गवाँ बैठो यह कैसे हो सकता है। पर जो कुछ भी बात होनी है नियमित ढंग से ही होगी।"

"नागरिक परीक्षक, मुझको अब यह विश्वास होता जा रहा है कि आप लोग मुझको छोड़ने की तैयारी कर रहे हैं। क्या आप यह बता सकेंगे कि जेल से छूटने के बाद में कुछ दिन इस देश में रह सकूंगा या तुरन्त ही निर्वासित कर दिया जाऊँगा ?"

"इसकी चिन्ता तुम क्यों करते हो ?", पुलिस अधिकारी ने मुझसे कहा, "गृहमन्त्री ऐसी सब बातों का समुचित प्रबन्ध कर देंगे। कोई तुम अकेले ही व्यक्ति तो हो नहीं जिसका ऐसा मामला है। तुम्हारे जैसे न जाने कितने व्यक्ति हमारे हाथों में हैं।"

मैंने कागजों पर हस्ताक्षर कर दिए और मुझको अपनी कोठरी में वापस कर दिया गया। कुछ दिन के पश्चात् मुझको एक दूसरी कोठरी में पहुँचा दिया गया। उसके बीच में एक लम्बी मेज़ पड़ी थी जिस पर अनेक प्रकार के खेलों का सामान था और बहुतसी किताबें भी थीं। लगभग एक कोड़ी कुर्सियाँ सजी हुई थीं और फिर भी उसमें काफी जगह खाली पड़ी रह गई थी। खाने की भी वहां कोई कमी नहीं दिखाई देती थी। मैं आश्चर्य करने लगा कि यह सब क्या गोरखधंधा है ? एक साथी ने उत्तर दिया "ये लोग शायद हमको छोड़ना चाहते हैं और हम शीघ्र ही जर्मनी में होंगे।"

"तो क्या इस कोठरी में बन्द होने वाले सभी लोग जर्मनी के हैं ?"

"हाँ, क्या तुम नहीं हो ?"

"नहीं, मैं तो आस्ट्रिया का रहने वाला हूँ।"

"पर आस्ट्रिया का तो अस्तित्व ही मिट चुका है। कानूनी दृष्टि से तुम भी जर्मन ही हो।"

"शायद आपकी बात सच हो किन्तु मैं तो यहूदी हूँ। ये लोग क्या मेरी हत्या कराना चाहते हैं जो मुझको जर्मनी भेजेंगे ? मेरी राय में तो ये हमको अपने मन चाहे देश जाने की अनुमति दे देंगे।"

"तुम्हारी कल्पनाशक्ति बड़ी तीव्र है, कामरेड ! तुमको भी हमारे साथ बर्लिन ही जाना होगा समझे ! यहां जो कुछ तुम पर बीती है उससे अधिक खराब तो तुम्हारी स्थिति वहाँ हो ही नहीं सकती। गनीमत है कि तुम यहाँ से बाहर तो निकल रहे हो।"

"अच्छा यहाँ खाना कैसा मिलता है ?"

"बहुत बढ़िया। नाश्ते के लिए प्रतिदिन जितना चाहो उतना कोको और जितने चाहो उतने अंडे मिलते हैं।"

"क्या यह भी व्यंग करने का कोई समय है ? पहले क्या मुझ पर कुछ कम बीत चुकी हैं जो आप लोग इस प्रकार तंग करना चाहते हैं ?"

"हमने तुमको तंग करने के लिए कोई बात नहीं कही। जो वस्तु-स्थिति है वही बताई है। जेल में तो क्या जेल के बाहर भी हमको इतना अच्छा खाना इससे पहले कभी नहीं मिला। बहस की क्या आवश्यकता है तुम स्वयं हीं देख लोगे। चाहो तो कुछ 'हैम' लाऊँ ?"

मैंने सोचा सम्भवतः ये महाशय भी उन्हीं व्यक्तियों में से हैं जिनको ग़लत मौके पर मजाक सूझा करता है। पर तब मानों कि वे मेरे सन्देह को भांप गए थे वे कुछ अंडे, हैम और अन्य कई खाद्यपदार्थ निकाल लाए। इतना ही नहीं तब एलब्रेल्ट नामक एक व्यक्ति ने, जो इस कोठरी का मुखिया था, मुझको सो रहने को भी कहा। एलब्रेल्ट बवेरिया की कम्यूनिस्ट पार्टी का सदस्य रह चुका था।

पहली रात को इन लोगों से जो कुछ भी सुना था उसके बावजूद सुबह सोते उठ कर मैंने जो कुछ देखा उस पर आखों को विश्वास नहीं होता था। खाने पीने की विविध वस्तुओं से लदी हुई एक 'ट्राली' सामने खड़ी थी; जिस प्रकार का दृश्य दोपहर के बाद चाय के समय किसी बड़े घराने में देखने को मिलता हैं वैसा ही दृश्य था यह ! 'ट्राली' पर खाद्य सामग्री की तह पर तह जमी हुई थी। हम में से हरेक को सफेद रोटी, दो दो अंडे, मक्खन, 'हैम' और कोको मिला !

मैंने एलब्रेल्ट से पूछा "हमारे साथ किये जाने वाले इस आदर सत्कार का कारण ?"

"ताकि बाहर जाने पर हम भूखे नरकंकाल न दिखाई दें। जानते हो इसका कितना खराब असर हो सकता है बाहर ?"

३१ दिसम्बर को हम प्रातःकाल ६ बजे उठा दिये गये; तुरन्त स्नानागार में जाने का आदेश मिला—अपने अपने सामान के साथ तैयार रहने की आज्ञा भी हो गई। स्नानागार तहखाने में था। 'बुटिका' के तहखाने एक मायाजाल थे; वहां बड़े बड़े हाल थे जिनके सतून लम्बे चौड़े थे; स्नानागरों में स्नान के सभी साधन उपलब्ध थे; ठंडे और गरम पानी के नल, शावर आदि सभी कुछ। दो घन्टे तक हम लोग साबुन और गरम पानी का आनन्द लेते रहे। उधर हमारा सामान बड़ी साव-धानी के साथ बाँधा जा रहा था और उसको कीटाणुओं से मुक्त करने का आयोजन किया जा रहा था। जब हम लोग स्नान के पश्चात् वस्त्रादि पहन कर तैयार होगये तो हमको कमरों और कारीडोरों की भूलभुलैंया से निकाल कर जेल के दूसरे भाग में पहुँचा दिया गया जहाँ नाई हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। नाई बड़ा सिद्धहस्त कारीगर था और बड़ी सफाई के साथ काम करता था। उसने तीन घन्टे में ३६ आदमियों की हजामत बनादी। हजामत बन जाने के पश्चात् हमको दूसरे उन कैदियों के पास लेजाया गया जो हमारी तरह ही निर्वासित किए जाने की तैयारी में थे। वहाँ से हम सब को एक बड़े वस्त्रभंडार में ले जाया गया। जिसने जो चीज़ पसन्द की वही उसको दे दी गई। मेरे तो अपने ही कपड़े काफी थे किन्तु जिनको ऐसी सुविधा उपलब्ध न थी उनकी बात ही दूसरी थी।

वेश भूषा के उपरान्त हम एक बड़े हाल में पहुँचा दिए गए। दूसरी कोठरी के जितने भी आदमी थे वे सब ही सुदूर उत्तर की जेलों से लाए गए थे। सन् १९३९ ई० के अगस्त मास के आरम्भ में नात्सी जर्मनी

और रूस का जो समझौता हुआ था उसके पश्चात् रूस की विभिन्न जेलों में जितने जर्मन और आस्ट्रिया वासी बन्दी थे खुफिया पुलिस की आज्ञा से उन सभी को इस जेल में लाकर रख दिया गया था। उनमें बहुत से ऐसे व्यक्ति थे जिनको पहले तो मृत्यु दण्ड दिया गया था किन्तु बाद में उसको घटा कर २५-२५ वर्ष के कारावास में परिवर्तित कर दिया गया था। एक दो प्राणी ऐसे भी थे जिनको साधारणतः कुछ समय बाद ही फाँसी लगा दी जाती।

रूस की खुफ़िया पुलिस को इस बात की तनिक भी चिन्ता न थी कि हम में से उन लोगों का क्या होगा जो या तो जर्मनी की कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य रह चुके थे या हिटलर-विरोधी क्रान्तिकारी संस्थाओं में काम कर चुके थे या जन्म से यहूदी थे। हममें से ब्लोख नाम का एक ऐसा व्यक्ति भी था जो सन् १६१६ ई० की क्रान्ति के असफल होने के पश्चात् हंगरी से भाग कर जर्मनी में झूठा पासपोर्ट बनवा कर आ बसा था। बाद में जर्मनी से भाग कर वह सोवियट रूस आ गया था। अब केवल इसी कारण और अपने विरोध करते रहने के बावजूद उसको हिटलर के हवाले किया जा रहा था।

दोपहर के पश्चात् नामों के अक्षरक्रम के अनुसार हमको चार-चार की टुकड़ियों में बुलाया गया। कुछ देर कार्यालय में रहने के पश्चात् लोग अपना अपना सामान लेने के लिए वापस आने लगे।

"हम लोगों को गृह मन्त्रालय की एक आज्ञा दिखाई गई है और उस पर हमारे हस्ताक्षर ले लिए गए हैं। हम सभी को आज सायंकाल जर्मनी के लिए प्रस्थान करना होगा।"

कार्यालय से लौट कर आने वालों के मुंह से यह बात सुन कर मानो मेरा दिल बैठ गया। तो अब जर्मनी जाना ही मेरे भाग्य में लिखा है,

"किन्तु मैं तो जर्मनी नहीं जाना चाहता। मेरा जर्मनी से न तो कोई सम्बन्ध है और न मैं जर्मन फासीज्म के सम्पर्क ही में आना चाहता हूं। मेरी प्रार्थना है कि मुझको स्वीडन जाने दिया जाय।"

"जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है, तुमको जर्मनी ही जाना होगा। वहां पहुँच कर जर्मन सरकार ही से क्यों न ऐसी अनुमति मांग लेना ?"

मानों कि वहाँ पहुँच कर मैं अपना कल्याण करने के योग्य रह जाता !

मैंने अपनी निर्वासन आज्ञा पर फिर नजर डाली।

"अवांछनीय विदेशी" वाक्यांश पर मेरी आँखें आकर टिक गईं।

"नागरिक लेफ्टिनेंट, जब मैंने आपकी सरकार को 'नाइट्रोजन' उद्योग की स्थापना और विकास में मदद दी थी तब तो मैं 'अवांच्छनीय विदेशी' नहीं था।"

वह अपने कन्धों को सिकोड़ कर मूर्तिवत बैठा रहा।

"क्या आप मुझको अपनी सरकार के पास एक प्रार्थना-पत्र भेजने की अनुमति देंगे। मैं चाहता हूँ निर्वासित होने से पहिले एक बार उससे अपने मन की बात तो कह लूं।"

"यह मेरे अधिकार से बाहर की बात है। मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ ?"

मैं अपना धैर्य खो चुका था। अब मैं बड़े जोर से चिल्लाने लगा—इससे पहिले शायद ही कोई साधारण व्यक्ति रूस की खुफिया पुलिस के कार्यालय में इस ढंग से बोला होगा।

"आप कम्यूनिस्ट हैं, कम से कम ऐसा मैं मानता हूँ। आप यह भी जानते हैं कि मैं यहूदी हूँ। फिर आप क्यों मुझको जीवित ही नाजियों की खुफिया पुलिस के हवाले कर देने पर तुले हुए हैं ? अगर आप नहीं चाहते कि मैं आपके देश में रहूँ तो कोई बात नहीं, पर मुझ को तब ऐसे देश में क्यों नहीं जाने देते जहाँ कम से कम मेरी जान तो बची रह सकती है ? उससे आपका क्या बिगड़ जायगा ? आप मुझको जान बूझकर नाजियों का शिकार बनवाना चाहते हैं इस पर आपको लज्जित होना चाहिये।"

"तुम्हारे इस प्रकार शोर मचाने और उत्तेजित होने से कोई लाभ नहीं। मैं तो अपने उच्चाधिकारियों की आज्ञा का ही पालन कर रहा हूँ। अगर तुम गृहमन्त्री को पत्र लिखना चाहते हो तो लिख दो मैं उसको आगे भेज दूँगा, पर उससे तुम्हारा निर्वासन स्थगित नहीं हो सकता। तुमको इसपर हस्ताक्षर करने ही होंगे।"

"यदि मैंने हस्ताक्षर न किये तो क्या करेंगे आप ?"

"तुम्हारे हस्ताक्षर करने और न करने से तुम्हारे भविष्य के विषय में कोई अन्तर नहीं आयेगा। मैं दो गवाह बुलाकर उनसे इस आशय के वक्तव्य पर हस्ताक्षर करा लूँगा कि यह आज्ञा तुमको पढ़कर सुनाई गई थी और तुमने इस पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया है। तुम्हारे हस्ताक्षर करने न करने से कोई विशेष अन्तर नहीं आयेगा।

"तो क्या मेरे हस्ताक्षर का केवल यही अर्थ है कि आपसे मैंने अपने विषय में इस आज्ञा को सुन लिया ?"

"निस्संदेह यही, नागरिक।"

"यदि इतनी ही सी बात है तो मैं हस्ताक्षर कर दूँगा।"

रूस की खुफिया पुलिस के जिन असंख्य खरीतों पर मैंने हस्ताक्षर किये थे, उनमें यह अन्तिम खरीता था।

जब मैं वहाँ से लौटा तो अन्य सभी लोग अपना अपना सामान बांध-कर तैयार हो गये थे। मैंने भी एक चादर में अपनी चीजें बाँध ली—मेरा सन्दूक मुझको कभी वापिस नहीं मिला था—और उसको फेंचे की तरह तैयार किया ताकि आवश्यकता पड़े तो कंधे पर डालकर चल सकूं।

अब हम सब लोग फिर बड़े हाल में पहुँचा दिये गये। वहां प्रतीक्षा करते रहने के अतिरिक्त कुछ करते रहने को नहीं था। बैठे बैठे आधी रात हो गई। तब हमको सहन में पहुँचा दिया गया जहां बहुत सी मोटर लारियाँ खड़ी हुई थीं। हम उनमें सवार हो गये और तेजी से रेलवे स्टेशन पहुँचा दिये गये। रेलगाड़ी में लेट रहने के लिये काफी जगह थी; पर सब दरवाजों पर ताले डाल दिये गये थे और प्लेटफार्म की तरफ़ की सब खिड़कियाँ बन्द कर दी गई थीं।

थोड़ी सी देर बाद अचानक स्त्रियों की आवाज सुनाई देने लगी। हमारी इस गाड़ी में कुछ जर्मन महिलायें थीं; उनको भी हमारे साथ निर्वासित किया जा रहा था। उनकी आवाज सुनकर हम सभी लोगों में एक विचित्र उद्विग्नता दिखाई दी। बरसों से जेल में रहते रहते स्त्रियों की सूरत तक भी हम लोग भूलते जा रहे थे। अब हमारी ही गाड़ी में, हमारी अपनी भाषा बोलने वाली स्त्रियाँ, और हमारी जैसी ही परिस्थि-तियों में पड़ी स्त्रियां, मौजूद थीं!

कुछ देर के बाद गाड़ी चल पड़ी। यह पहिली जनवरी सन् १९४० ई० की बात है। अपने शरीरों और आत्माओं में घाव लिये हुये हम ५०

व्यक्ति वापिस जा रहे थे—एक ऐसे देश से जिसकी हमने अपनी मातृ-भूमि से भी अधिक सेवा करने की कोशिश की थी, पर जिसने हमारा तिरस्कार कर दिया था; और हम जा रहे थे ऐसे देश को जो कहने को तो हमारा अपना था, पर जिसकी सरकार हमको अपना शत्रु समझती थी। दोनों देशों में से किसी में भी हमारे लिये पांव रखने को ठाँव न थी!

हम रूस से निकल कर ध्वस्त पोलैंड में होते हुए ब्रेस्टलिटोस्क की ओर बढ़े चले जा रहे थे। बुग नदी के पुल के उस पार एक दूसरी तानाशाही के प्रतिनिधि—खुफ़िया पुलिस के अधिकारी—हमारी प्रतीक्षा में खड़े थे।

(८)

अब तक पाठक मेरे साथ रूस की प्रख्यात धड़-पकड़ और नर हत्या की भूल भुलैयाँ में भटकता रहा है; मैं उसको अपने साथ इस कष्टगाथा में घसीटता रहा हूँ; पर अभी तक मैंने उसको उन दिनों की उन वर्णनातीत घटनाओं का स्पष्टीकरण नहीं दिया। किन्तु पाठक के मन में जिस प्रकार के प्रश्न उठते आये होंगे, उनसे में पूर्णतः अनभिज्ञ नहीं रहा हूँ। उसके कुछ प्रश्नों का उत्तर देने का यह स्वल्प प्रयास है।

कोई सरकार अपने शत्रुओं को कुचल डाले तो उस पर किसी को इतना आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं जितना कि किसी को अपने ही समर्थकों पर कुठाराघात करते देखकर होता है। स्टालिन किस कारण अपने ही समर्थकों और प्रशंसकों को नष्ट कर रहा था? यह एक प्रश्न है जिसका उत्तर मिलना ही चाहिये। ऐसा ही दूसरा प्रश्न जिसने पाठक के मन को आन्दोलित किया होगा यह है कि "विरोधियों ने क्यों झूठे आरोपों को अपने अपराध के रूप में स्वीकार कर लिया?"

सोवियट सरकार ऐसे लाखों स्त्री पुरुषों को जिनके विषय में उसको किसी प्रकार की आशंका थी कहीं दूर बीहड़ जंगल में मरने खपने के लिये ला पटकती तो भी बात समझ में आ सकती थी; उसके लिये उसकी एक आज्ञा भर काफी हो सकती थी ? किन्तु अपने ऐसे उद्देश्य को पूरा करने के लिये उसको पूछताछ और मुकदमों के काण्ड रचने की क्या अवाश्यकता थी ? क्यों उसने बर्बतापूर्ण साधनों का प्रयोग करके अभियुक्तों से झूठे वक्तव्य प्राप्त किये ?

रूस अभी तक गृहयुद्ध के घावों को भी न भर पाया था; तब स्टालिन ने क्यों उन घावों को और भी चौड़ा करने की कोशिश की; क्यों रूस को तब रुग्णता से उठने नहीं दिया ?

रूस में जो सबसे अच्छे व्यवस्थापक विशेषज्ञ और वैज्ञानिक थे उनमें से अधिकांश व्यक्ति उस भीषण धरपकड़ और नरसंहार के शिकार हो चुके थे। प्रश्न यह है कि रूस के शासकों ने अपने देश के आर्थिक, औद्योगिक और वैज्ञानिक जीवन पर जान बूझ कर क्यों कुठाराघात किया ?

लेनिन की मृत्यु सन् १९२४ ई० के जनवरी मास में हुई थी किन्तु रुग्णता के कारण सन् १९२३ ई० के आरम्भ ही से उसने राजकीय दायित्व प्राय: छोड़ दिया था। तबसे स्टालिन संगठित रूप से देश और पार्टी के नेतृत्व को हथिया लेने की कोशिश में था। उस समय वह कम्यूनिस्ट पार्टी का प्रधान मंत्री था। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं था कि वह केवल अपनी उस स्थिति ही के कारण आगे चलकर रूस का एक मात्र शासक भी बन सकता था। उस स्थिति में होने के कारण वह पार्टी के संगठन के प्रमुख स्थानों पर अपने आदमियों को बैठा सका। पार्टी के दूसरे नेताओं के मुकाबले उसका कार्यक्रम अधिक अच्छा था यह बात भी न थी। वास्तव

में उसने अपना कार्यक्रम निर्धारित ही न किया था। विचारों की पवित्रता आदि विषयों में उसको कोई दिलचस्पी न थी। उसका एक मात्र अभीष्ट राजकीय शक्ति प्राप्त करना था।

व्यक्तिगत दृष्टि से, स्टालिन औसत दर्जे की समझ और औसत दर्जे से कम शिक्षा का व्यक्ति था। उसकी वक्तृताओं के पढ़ने से उसकी कल्पनाशून्य शैली और शब्द सम्बन्धी अज्ञानता का पता चलता है। उसकी शैली में न तो कोई ओज है और न कोई विविधता। तिस पर भी उसमें कुछ ऐसे गुण थे जिनके बल पर वह इतनी बड़ी तानाशाही की स्थापना कर सका जिसकी कि चंगेज़ खाँ जैसे व्यक्ति भी कभी कल्पना न कर सकते थे।

उसका लौह-निश्चय और शारीरिक क्षमता अपरिमित थी। यदि वह खामोश रहने को आवश्यक समझता था तो संसार की कोई शक्ति उससे एक शब्द भी न बुलवा सकती थी; आवश्यकता पड़ने पर और अपनी मनोकामना को सिद्ध करने के लिये वह कुछ भी करने को तैयार-हो सकता था।

उसके जीवन का एक ही मूलमंत्र रहा था; संगठन को एक यंत्र में परिणत करके वह उसको ठीक ठीक इस्तेमाल करने की बेमिसाल काबलियत रखता था। उसने मार्क्सवाद को अवश्य पढ़ा था किन्तु उसने उस के सिद्धान्त को अपनी आकांक्षाओं और कार्यवाहियों के लिये कभी बाधा नहीं बनने दिया। मार्क्सवाद उसके हाथ में एक यंत्र सा था। जब कभी मार्क्सवाद उसके मार्ग में बाधा बनकर आया तो उसने उसको एक ओर फेंक देने में देर न की।

स्टालिन का एकमात्र उद्देश्य शक्ति प्राप्त करना था—असीमित

शक्ति। वह एक ऐसी अमर्यादित शक्ति की खोज में था जिससे आवश्यकता पड़ने पर बात की बात में रूस की जनता को, एशिया के पददलित जनसाधारण को, यूरोप के क्रान्तिकारी श्रमिकों को वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए मशीन की तरह इस्तेमाल कर सके। उसके विचारों अथवा उसके इरादों पर किसी दूसरे का नियंत्रण हो यह उसको कभी पसन्द न था। बुखारिन और ट्राट्स्की जैसे व्यक्ति उसकी कार्यवाहियों का विवरण अथवा स्पष्टीकरण माँगे इससे अधिक उत्तेजनात्मक बात उसके लिए कोई न थी। किसी से विचारधारा सम्बन्धी वाद-विवाद या तर्क-वितर्क करना उसके स्वभाव के विरुद्ध था, विशेषत: ऐसी अवस्था में जब कि उसके प्रतिद्वंदी उससे कहीं अधिक बुद्धिमान और प्रतिभाशाली थे। अपने लिए सम्पूर्ण स्वाधीनता और दूसरों के लिए स्वाधीनता का पूर्ण अभाव उसके हृदय की सर्वोपरि प्रेरणा थी। उसके पास अपने इस उद्देश्य को पूरा करने का केवल एक ही मार्ग था : वह था रूसी जनता को पुन: दासता की शृंखलाओं में जकड़ लेना।

उसने अपना इरादा पूरा कर लिया। रूस में सोलह करोड़ दास और एक स्वतन्त्र व्यक्ति रहने लगे। प्रकटत: यही समझना चाहिए कि उन सोलह करोड़ कहलाने वाले प्राणियों ने अपनी स्वाधीनता उसके चरणों पर अर्पित कर दी। कुछ भी हो इस सबका परिणाम यह हुआ कि नैतिकता, सामान्य कर्तव्य और परम्परा का रूस में कोई प्रभाव शेष न रह गया।

ट्राट्स्की स्टालिन पर यह आरोप लगाया करता था कि उसने कम्यूनिज़्म को तिलांजलि दे दी है और सैद्धान्तिक दृष्टि से जो वर्ग कम्यूनिज़्म के शत्रु हैं उन्हींसे गठबन्धन कर लिया है। यह आरोप सर्वथा निराधार था। स्टालिन ने उन समृद्ध किसानों को समूल नष्ट कर दिया जिनको ट्राट्स्की स्टालिन का मित्र बताता था। रही नौकरशाही से

मित्रता करने के आरोप की बात; स्टालिन जिस समय शक्ति आरूढ़ हुआ, उस समय रूस में नौकरशाही नाम की कोई व्यवस्था न थी; नौकरशाही को उसने जन्म दिया, न कि नौकरशाही ने उसका पृष्ठपोषण किया।

स्टालिन अपने विचारों के प्रति अवश्य ही वफ़ादार रहा है। वह कम्यूनिज़्म की स्थापना चाहता था, इसमें सन्देह नहीं। उत्पादन के सभी साधन सरकार के हाथ में हों, यह उसकी मनोकामना थी; संभवत: यह उसका विश्वास था कि एक बार सारी उत्पादन शक्ति सरकार के हाथ में चले जाने पर शोषण प्रथा का भी अंत हो जायगा।

वह सारे संसार में ऐसी ही व्यवस्था की स्थापना करना चाहता था, इसमें भी कोई सन्देह नहीं है। इस अभीष्ट को पूरा करने का एक मात्र साधन उसने सोच रखा था अपनी अनियंत्रित व्यक्तिगत शक्ति को। अपनी शक्ति को प्रभावान्वित करने के लिये उसने तैयार की थी एक मशीन—जिसको कम्यूनिस्ट पार्टी के नाम से आभूषित किया गया था।

सैद्धान्तिक दृष्टि से पार्टी के आकार प्रकार के विषय में लेनिन का विचार भी पश्चिमी यूरोप की मज़दूर पार्टियों के विचार से भिन्न था। लेनिन के मतानुसार पार्टी ऐसे क्रान्तिकारियों का गुप्त षड़यंत्र होती है जो क्रान्ति ही को अपना पेशा समझते हैं और इसी उद्देश्य से उसके लौह अनुशासन को स्वीकार कर लेते हैं। ऐसे संगठन में ये क्रान्तिकारी न केवल अपने सामान्य ऐतिहासिक ध्येय के कारण ही मिलजुल कर रहते हैं बल्कि एक सामान्य विचारधारा को अपना लेने के कारण ऐसे विशिष्ट अनुशासन को भी स्वीकार कर लेते हैं जिसको भंग करना पाप समझा जाता है। लेनिन के समय के सभी कम्यूनिस्टों का यह विश्वास था कि उन्होंने प्रगति के एतिहासिक नियमों को खोज निकाला है। उनके लिए मार्क्सवाद एक ऐसा वैज्ञानिक यंत्र था जिसको प्रत्येक

स्थिति और स्तर पर चतुराई से प्रयोग करके वे नए स्तर और नई स्थितियों का सामना करने के लिए सदैव तैयार रह सकते थे। मार्क्स-वाद को अपना इष्टदेव मानकर वे यह धारणा बना चुके थे कि वे इतिहास की आवश्यकता को पूरा करने के साधन मात्र हैं। इसी आस्था से उनको बड़ा गहरा संतोष और विश्वास मिलता था। उनका एक मात्र कर्तव्य उसका स्पष्टीकरण करना था न कि सृजनात्मक कार्यवाही द्वारा उसका अभिवर्द्धन करना। इस लिए प्रत्येक मार्क्सवादी का यह कर्तव्य माना जाता था कि वह प्रत्येक स्थिति में मार्क्सवाद के वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर चले।

एक बार जब कोई यह मान लेता है कि समस्त सत्य उसी के अधि-कार में है और उसी को उसका पूर्ण ज्ञान है तो उसका दूसरा कर्तव्य यह भी हो जाता है कि वह उस तथाकथित सत्य को स्वीकार करने के लिये दूसरों को बाधित करे। लेनिन के पार्टी सबंधी सिद्धान्त का यही आधार था; और इसी आधार पर वह अपने अनुयायियों से पूर्ण अनुशासन और श्रद्धा की अपेक्षा करता था।

तिस पर भी लेनिन का यह मत न था कि सत्य किसी पैगम्बर या पुराण की देन है या उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। यदि अनुभव परिवर्तन या हेर फेर की आवश्यकता सिद्ध करे तो उसके लिये नियम कोई ऐसा दैवी मंत्र न था जिसमें कोई परिवर्तन लाया ही न जा सकता हो। किन्तु उसको और उसके अनुयायियों को मार्क्सवादी सत्य पर चलने हुए जो अनुभव हो केवल उसी पर विचारविमर्श करने की स्वाधीनता मार्क्सवादीयों को थी।

लेनिन के मरने के पश्चात् लेनिन का पार्टी सम्बन्धी सिद्धान्त अनुभव के संघर्ष में आया। स्टालिन तिस पर भी लेनिन के सिद्धान्त में कोई शंका

नहीं देखता था बल्कि घटनाओं ही को गलत मानता था। इसलिए अनुभव पर विचार विमर्श करने की स्वाधीनता को ही मिटा देना उसने आवश्यक समझा और अनुशासन के लौह नियमों को नृशंस ढंग से कार्यान्वित किया। सारी पार्टी की एक ही विचारधारा हो, लेनिन की भाँति स्टालिन भी यही मानता था। किन्तु अन्तर यह था कि स्टालिन अनुभव के आधार पर किए जाने वाले विचार विमर्श के परिणाम को विचारधारा न मान कर अपनी इच्छा ही को विचारधारा के रूप में पार्टीपर लाद देना चाहता था। लेनिन के समय में पार्टी को अनुशासन में रखनेके लिए यदि सामान्य विचारधारा ही काम कर जाती थी तो अब उसके स्थान पर स्टालिन का डर ही काम करता था। स्टालिन पार्टी के सदस्यों को आतंकित कर सकता था तो साथ ही वह कुछ लोगों को पुरस्कृत भी कर सकता था। इन दो नई बातों के कारण अब पार्टी और पार्टी को नियंत्रण में रखने वाली मशीन में उत्तरोत्तर अंतर बढ़ता गया। सन् १९३१ ई० में मास्को में पार्टी के सदस्यों में एक मज़ाक सुनने को मिला करता था जिसको पार्टी के नेता लोग बिल्कुल पंसद न करते थे। यह कहा जाता था कि एक वार खुफ़िया पुलिस के अध्यक्ष यागोडा ने स्टालिन से निम्न प्रश्न पूछा था :

"कामरेड स्टालिन, यदि पार्टी में एक ओर कुछ ऐसे सदस्य हों जो आपके प्रति धारणावश वफ़ादार हों और दूसरी ओर कुछ ऐसे व्यक्ति हों जो डर के कारण आपके भक्त हों तो उन दोनों प्रकार के लोगों में आप किनको अच्छा समझेंगें ?" स्टालिन ने जवाव दिया था "उन लोगों को जो डर के कारण मेरे साथ हैं, क्योंकि धारणा में परिवर्तन आ सकता है, डर में कभी नहीं।"

सम्भवत: यह कहानी एक निरी किम्बदन्ति ही है—विशेषत: इस-लिये कि स्टालिन कभी भी अपने प्रति हास्यप्रद दृष्टिकोण नहीं अपना

सकता था। तिस पर भी इस कहानी में स्टालिन युग का जितना बड़ा तथ्य सन्निहित है, उतना बड़े ग्रंथों में भी नहीं मिल सकता। स्टालिन के प्रति श्रद्धा रखने वाले स्त्री पुरुष चाहे पार्टी में हों, सरकारी नौकरियों में या खुफ़िया पुलिस में, उन सब को एकता-सूत्र में आबद्ध रखने के लिये दो ही बातें थीं—स्टालिन का डर और उससे पुरस्कार प्राप्ति की आशा। सोवियट रूस में विचारधारा का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व बहुत पहले ही से नहीं रहा था। किसी कम्यूनिस्ट की व्यक्तिगत धारणायें और मान्यतायें कुछ भी क्यों न रही हों, उसके कार्य पर या उसके निश्चयों पर उनका कोई प्रभाव नहीं हो सकता था। वास्तव में उसको अपने आप किसी विषय पर मत बताने या निर्णय करने की स्वाधीनता समाप्त हो चुकी थी; अब तो वह ऊपर से आने वाली आज्ञाओं को शिरोधार्य समझ कर ही अपने आप को कृतकार्य मानने लगा था। यदि कभी किसी के मुंह से कोई ऐसा शब्द निकल जाता जिससे करने वाले के मन की बात और सरकारी आज्ञा में विरोधाभास की झलक आती तो उसी के आधार पर उस अभागे व्यक्ति का सर्वनाश हो सकता था। पार्टी की आन्तरिक मशीन में जो लोग काम करते थे, वे जानते थे कि जब तक वे स्टालिन की प्रत्येक बात का अनुसरण करते रहेंगे उनका भविष्य सुरक्षित रहेगा। नित्यप्रति इस नीति को बरतते रहने के कारण उनको अनेक सुविधायें और पुरस्कार मिलते रहते थे, जिससे उनका चरित्र भी भ्रष्ट होता जा रहा था, ये लोग एक विशेष सुविधा प्राप्त वर्ग के सदस्य बन गये थे और अपनी सुविधाओं को जोखिम में नहीं डालना चाहते थे।

लेनिन के समय में भी पार्टी सदस्य पार्टी से बहिष्कृत हो जाने सम्भावना से डरा करते थे; परन्तु उस समय उनका डर ऐसा ही था जैसा कि धर्म-भीरु प्राणियों को धर्मभ्रष्ट हो जाने पर हुआ है। लेनिन जब जीवित था तब तक पार्टी से बहिष्कृत होने के कारण

को जेलकी हवा खानी पड़ेगी या अन्य भौतिक कष्टों को सहन करना पड़ेगा, ऐसा कोई डर न था। स्टालिन के राज्य में पार्टी से बहिष्कृत होने का अर्थ आध्यात्मिक और शारीरिक विनाश ही था।

स्टालिन का यह विश्वास था कि एक सुसंगठित पार्टी मशीन के हाथ में होने से वह विश्व इतिहास के नियमों का भी उल्लंघन कर दे तो भी उसका कुछ न बिगड़ेगा। पाँच साल तक विरोधी दल के कम्यूनिस्टों से संघर्ष करते रहने के पश्चात् उसने एक ऐसी मशीन पर कब्जा कर लिया था जिसकी प्रबलता और प्रभाव का अनुमान करना कठिन है। सन् १९२८ ई० तक उसने अपनी स्थिति इतनी सुदृढ़ कर ली थी और अपने हाथों में इतनी शक्ति ग्रहण करली थी कि अब उसका सफल विरोध करने की ताक़त किसी में न रह गई थी। वह अपना अभीष्ट सिद्ध कर चुका था।

अनियन्त्रित स्वाधीनता और शक्ति प्राप्त कर लेने के कारण स्टालिन दो ऐसी भयंकर भूलें कर बैठा जिनका विश्व इतिहास के लिये काफी महत्व है। उसकी किसानों सम्बन्धी नीति के कारण सोवियट रूस की कृषि का आधार खतरे में पड़ गया और एक करोड़ दस लाख किसानों को भुखमरी का शिकार होना पड़ा। उसकी कमिन्टर्न सम्बन्धी नीति के कारण जर्मनी में फ़ासीज्म की विजय हो गई, जिसका नतीजा यह हुआ कि संसार को द्वितीय महायुद्ध का शोणित स्नान करना पड़ा।

आगे चल कर उसने अपनी दोनों ही नीतियों में काफी परिवर्तन किया, किन्तु बहुत देर हो जाने के बाद। पर उसने पार्टी और पार्टी की आन्तरिक मशीन के रूप में जिस शस्त्र का निर्माण किया था, उससे दोनों ही दिशाओं में उसको सहायता मिली और सोवियट रूस सम्पूर्ण विनाश के गर्त से किसी प्रकार बच गया।

को जेलकी हवा खानी पड़ेगी या अन्य भौतिक कष्टों को सहन करना पड़ेगा, ऐसा कोई डर न था। स्टालिन के राज्य में पार्टी से बहिष्कृत होने का अर्थ आध्यात्मिक और शारीरिक विनाश ही था।

स्टालिन का यह विश्वास था कि एक सुसंगठित पार्टी मशीन के हाथ में होने से वह विश्व इतिहास के नियमों का भी उल्लंघन कर दे तो भी उसका कुछ न बिगड़ेगा। पाँच साल तक विरोधी दल के कम्यूनिस्टों से संघर्ष करते रहने के पश्चात् उसने एक ऐसी मशीन पर कब्जा कर लिया था जिसकी प्रबलता और प्रभाव का अनुमान करना कठिन है। सन् १९२८ ई० तक उसने अपनी स्थिति इतनी सुदृढ़ कर ली थी और अपने हाथों में इतनी शक्ति ग्रहण करली थी कि अब उसका सफल विरोध करने की ताक़त किसी में न रह गई थी। वह अपना अभीष्ट सिद्ध कर चुका था।

अनियन्त्रित स्वाधीनता और शक्ति प्राप्त कर लेने के कारण स्टालिन दो ऐसी भयंकर भूलें कर बैठा जिनका विश्व इतिहास के लिये काफी महत्व है। उसकी किसानों सम्बन्धी नीति के कारण सोवियट रूस की कृषि का आधार खतरे में पड़ गया और एक करोड़ दस लाख किसानों को भुखमरी का शिकार होना पड़ा। उसकी कमिन्टर्न सम्बन्धी नीति के कारण जर्मनी में फ़ासीज्म की विजय हो गई, जिसका नतीजा यह हुआ कि संसार को द्वितीय महायुद्ध का शोणित स्नान करना पड़ा।

आगे चल कर उसने अपनी दोनों ही नीतियों में काफी परिवर्तन किया, किन्तु बहुत देर हो जाने के बाद। पर उसने पार्टी और पार्टी की आन्तरिक मशीन के रूप में जिस शस्त्र का निर्माण किया था, उससे दोनों ही दिशाओं में उसको सहायता मिली और सोवियट रूस सम्पूर्ण विनाश के गर्त से किसी प्रकार बच गया।

सन् १९३३ ई० के जनवरी मास में उसने पार्टी को आज्ञा दी कि वह कृषि सम्बन्धी अपनी पुरानी नीति में परिवर्तन कर ले; उसके इस नीति परिवर्तन के कारण रूस में उस वर्ष जितनी अच्छी फसल हुई उतनी उससे पहिले कभी न हुई थी।

सन् १९३५ ई० के अगस्त मास में उसने स्वयं अपनी उस आत्म-हत्यात्मक नीति को तिलांजलि दे दी जो वह तब तक जर्मनी के कम्यू-निस्टों पर थोपता आया था। संयुक्त मोरचे की नई नीति के कारण पश्चिमी यूरोप में कम्यूनिस्टों की शक्ति और प्रभाव में काफी वृद्धि हो गई।

इन दोनों परिवर्तनों के बल पर उसकी विजय हुई और उसका और रूस का विनाश होते होते रह गया। जनता अपने जीवन और आत्मा में जो घाव खा चुकी थी, वे फिर से भर गये। तानाशाही के जुल्म में भी कुछ कमी होती दिखाई देने लगी। कुछ समय तक स्टालिन चुप रहा और सोचता रहा कि अगला प्रहार करे या नहीं।

अब उसके सामने प्रश्न यह था कि क्या वास्तव में जनता पुरानी बातों को भूल गई है? या केवल डर के कारण ही इतनी निस्तब्ध दिखाई देती है? उसने उसकी आजमाइश का साधन ढूंढ़ निकाला। किसानों को पददलित करने के पश्चात् उसने उनके लिये अनेक सुविधाओं की घोषणा की; एक नये विधान की प्रतिज्ञा की। पहिले ऊंची पढ़ाई केवल कुछ ही लोगों को उपलब्ध थी, इस सोवियट कानून को अब उसने बदल दिया और इस विषय की पाबंदी को हटा दिया गया। साथ ही उसने पुराने उच्च वर्गीय माता पिताओं की संतान को सताते रहने की नीति को छोड़ दिये जाने का ऐलान भी कर दिया। अब "बाप के पापों का दायित्व संतान पर नहीं" यह नियम स्वीकार कर लिया गया। खुफ़िया

पुलिस को आज्ञा देदी गई कि जब कोई व्यक्ति एक प्रकार का काम छोड़कर दूसरा काम करना चाहे तो उसपर संदेह करने की आवश्यकता नहीं। अब वह एक जनतन्त्रता प्रेमी शासक की भाँति "मानव प्राणी" और "मानव जाति" के कल्याण के प्रति दिलचस्पी दिखाने लगा—और मानव प्राणी ही संसार की सर्वश्रेष्ठ विभूति है, इस सिद्धान्त का उद्‌घोष करने लगा। इसी प्रकार की अन्य बातें भी उस समय सुनने को मिलीं।

अपनी इन नई घोषणाओं के प्रति जनता की क्या प्रतिक्रिया है, इसके विषय में वह चुपके-चुपके अपनी पार्टी की मशीन और खुफ़िया पुलिस से जानकारी बटोरने लगा। जनता खामोश थी, मौन रहने ही में बुद्धि-मानी है, इस तर्कवश कुछ बोलती ही न थी; जासूस और भेदिये अपना काम निरंतर करते जा रहे थे। तानाशाह के लिये यह स्थिति अधिक रुचिकर न थी।

अब उसने जनता को उत्तेजित करके अपने मनोरथ की सिद्ध का प्रयत्न किया। सन् १९३६ ई० की वसंत ऋतु तक यदि कोई सोवियट नारी अपने आपको संतानोत्पत्ति के आयोग्य या असमर्थ पाती थी, तो उसको कानून द्वारा गर्भपात का अधिकार प्राप्त था। स्टालिन के आदेशा-नुसार अब इस विषय पर सारे देश के कलकारखानों दफतरों और फ़ार्मों में वाद-विवाद शुरू हो गया। कम्यूनिस्ट पार्टी ही ने इस वाद-विवाद का श्रीगणेश किया। जनता मूकभाव से सब कुछ सुनती रही; वास्तव में कम्यूनिस्ट पार्टी के उन सदस्यों के अतिरिक्त जो स्त्रियों को मिली उस स्वाधीनता का विरोध करते थे कोई बोलता ही न था। इस दिशा में असावधानी दिखाने का क्या परिणाम हो सकता है, यह जनता अच्छी तरह जानती थी। पर स्टालिन की तरफ से कहा गया कि

वह वास्तव में स्वतंत्र विचार विमर्श का पक्षपाती है। पार्टी के सदस्यों को यह आदेश भी कर दिया गया कि वह जनता का मत जानने से पहिले अपना मत प्रकट न करें। इसका प्ररिणाम यह हुआ कि अब बहुत से लोग इस नई स्वाधीनता को वास्तविक स्वाधीनता मानकर अपने स्वतंत्र विचार प्रकट करने लगे—कुछ ने नई नीति को ठीक समझा तो कुछ ने उसका विरोध किया।

सरकारी मत के प्रतिकूल भी मतप्र कट जा किया सकता है—यह घटना वरसों के बाद पहिली बार देखने को मिली थी। जनता भी वादविवाद में भाग लेनी लगी। देश में एक नया तूफ़ान सा आगया। अधिकांश स्त्रियों सरकार की नई नीति पर रोष प्रकट करने लगीं। उनकी इच्छा यह न थी कि बच्चे पैदा न किये जांय बल्कि वे बच्चा पैदा करने से पहले उपयुक्त सुविधायें चाहती थीं।

"इस समय हमारे पास रहने के लिये मकान तक नहीं, काम पर जाँय तो हमारे पीछें बच्चों की देख भाल का कोई प्रबंध नहीं; जो कुछ मिलता है उससे जितने बच्चे हैं उन्हीं का लालन पालन कठिन है, इस लिये और बच्चे पैदा करके हम अपना और अपने बच्चों का भविष्य क्यों खराब करें? कभी न कभी तो हम मानव देहधारियों का जीवन प्राप्त कर सकेंगे।"

यदि उस समय जनगणना होती तो अधिकांश स्त्री पुरुष सरकार की नई नीति का विरोध करते। पर स्टालिन ने बहुमत की अवहेलना की और कानून पास कर दिया। सामूहिक खेती की प्रथा लागू करने से जिन लाखों किसानों को मृत्यु के घाट उतार दिया गया था, नये कानून द्वारा उन्हीं की क्षतिपूर्ति का प्रयत्न किया जा रहा था।

स्टालिन ने उस स्वल्प स्वधीनता के परीक्षण से यह निश्चित

परिणाम निकाल लिया था कि रूस की जनता को स्वतंत्र रहने देना खतरे से खाली नहीं। इस लिये किसी भी दशा में स्वाधीनता की स्थापना नहीं होनी चाहिये। उसके मन में जो भावनायें और आकांक्षायें उमड़ रही थी अभी तक जनता उनको पहिले ही से भाप लेने की क्षमता न रखती थीं। उसने तो समझा था कि यदि आज पांव रखने को ठौर मिल सकता है तो कल सिर ढकने की सुविधा भी मिल सकेगी। इसके प्रतिकूल स्टालिन को भय था कि तनिक सी भी स्वाधीनता दी तो जनता उंगली पकड़ कर पांवचा ही पकड़ सकती है। किन्तु यह सम्भव है कि यदि रूसी जनसाधारण को स्वतंत्र रूप से विचार विमर्श करने की सुविधा मिल जाती तो वह स्टालिन की पुरानी भूलों और कुकृत्यों को भुला देती। अभी तक उसके दामन पर पुराने क्रान्तिकारियों के खून के धब्बे नही चढ़े थे। यह निश्चय था कि स्टालिन ने जिस झूठ का सहारा लेकर शक्तिसूत्र पर पंजा जमा लिया था, उसको कोई भी अनंतकाल तक सहन नहीं करते रह सकता था।

लेकिन स्टालिन तो इतिहास को अपना स्तुति-पुराण बनाने पर तुला हुआ था। उसने अपने विषय में जो मिथ्या प्रचार कर रखा था उसी को वह ऐतिहासिक सत्य के रूप में अपनी शक्ति के जोर से मनवाने का निश्चय कर चुका था। उसके शासन काल में न कभी कोई पराजय हुई थी न किसी क्षेत्र में कोई अवनति। यह ढकोसला था जिसको वह आने वाली सन्तानों से गूढ़ सत्य के रूप में अंगीकार करवाना चाहता था। उसके राज्यकाल में ऐसा महान अकाल पड़ा जिसका उदाहरण संसार के इतिहास में दूसरा नहीं है; उसी के राज्यकाल में और उसी के नेतृत्व में जर्मनी और चीन के श्रमिकों ने भारी पराजय देखी। इन सब की स्मृति किसी को न रह पाए इस प्रकार का इतिहास तैयार करने की उसको आवश्यकता थी।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसके पास उपयुक्त साधन था रूस की खुफ़िया पुलिस का अद्वितीय भयंकर संगठन। अब उसी को यह काम सौंपा गया कि जहां कहीं और किसी भी दिशा में राष्ट्रीय चेतना का अवशेष दिखाई दे उसको समूल नष्ट कर दिया जाय। ऐसा मालूम होता था जैसे कि स्टालिन ने यह सोच रखा है कि "इस देश में लाखों ही ऐसे प्राणी होंगे जो मुझसे घृणा करते हैं। जिन स्त्री पुरुषों ने किसी समय मेरे साथ कन्धे से कन्धा भिड़ा कर आततायी जारशाही का अन्त किया वह मेरा आततायी बनना स्वीकार न कर सकेंगे। नए इतिहास की रचना में पुराने सहयोगियों का विनाश आवश्यक है।"

यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुका है कि स्टालिन ने स्वयं खुफ़िया पुलिस के अध्यक्ष येजोफ़ को उस भीषण धर-पकड़ और नर-संहार की आज्ञा दी थी। उसी ने स्वयं पुलिस को यह भी बता दिया था कि किन लोगों को जेल में डालना अथवा विनष्ट करना चाहिए। निम्नांकित समुदायों को नष्ट किये जाने की आज्ञा दी गई थी :

१. ट्राट्स्की, जिनोवीयफ़ और बुखारिन से सहमत होने वाले वे सब लोग जो किसी न किसी विषय पर और कभी न कभी स्टालिन से मतभेद रख चुके थे।

२. सन् १९१७ ई० की राज्यक्रान्ति के पहले के जितने भी पुराने बोल्शेविक थे वे सब।

३. क्रान्ति और गृहयुद्ध के दिनों में क्रान्तिकारियों का साथ देने वाले प्रमुख व्यक्ति।

४. क्रान्ति के पहले जितने भी लोग उग्रवादी राजनीति में हिस्सा ले चुके थे वे सब।

५. वे सब लोग जो किसी समय रूस से बाहर रह चुके थे और युद्ध के पहले के इतिहास से परिचित थे अथवा जिनके मित्र और सम्बन्धी अभी तक देश के बाहर रहते थे और जो विदेशियों से पत्रव्यवहार करते रहते थे। इस श्रेणी में वे लोग भी शामिल कर लिए गए थे जो विभिन्न देशों के स्टाम्प एकत्रित करने में रुचि रखते थे अथवा विदेशी भाषाएं सीखने का चाव रखते थे।

६. वे सब पुराने राजनीतिक कार्यकर्त्ता जो ज़ारशाही से तंग आकर अपना देश छोड़ कर बाहर चले गए थे और क्रान्ति के बाद रूस वापस चले आए थे। इन लोगों में उन व्यक्तियों को भी शामिल कर लिया गया था जो किसी समय राजकीय कार्य से ही विदेश हो आए थे।

७. सोवियट रूस में आकर बस रहने वाले विदेशी कम्यूनिस्ट।

८. रूसी सेना अथवा खुफ़िया पुलिस की ओर से जो लोग किसी समय विदेशों में जासूसी कर चुके थे।

(उपरोक्त श्रेणियों के व्यक्ति वास्तविकता से परिचित थे और इस-लिए स्टालिन द्वारा इतिहास को आत्मस्तुति पुराण में परिवर्तित कराने के प्रयत्न को स्वीकार नहीं कर सकते थे। इन लोगों ने उदार समाचार पत्रों का अवलोकन किया था और ट्राट्स्की की पुस्तकों का अध्ययन किया था, इसलिए वे स्टालिन राज्य और स्टालिन गाथा के लिए खतरनाक साबित हो सकते थे।)

९. अल्पसंख्यक जातियों के प्रमुख सदस्य।

१०. विभिन्न धर्मों के प्रमुख प्रतिपादक।

(उपरोक्त दोनों श्रेणियों के व्यक्ति साधारणतः बड़े एकता-प्रिय

होते हैं जिसके कारण खुफ़िया पुलिस का उनमें प्रवेश करना सहज काम न था। इसीलिए उनकी गतिविधि पर पूरा पूरा नियन्त्रण रखना कठिन था।)

११. पार्टी के वे सब सदस्य जो किसी न किसी समय पार्टी से निकाल दिए गए थे।

१२. वे व्यक्ति जो किसी न किसी कारण सोवियट सरकार के हाथों सज़ा पा चुके थे।

१३. स्टालिन से मतभेद रखने वाले प्रमुख कम्यूनिस्टों के सगे सम्बन्धी।

१४. वे सब लोग जो स्टालिन की कृपा के बिना लोकप्रिय हो चले थे। मार्शल टुखाचेविस्की और जनरल याकीर इसके दो ज्वलंत उदाहरण हैं। ऐसे लोगों से सार्वजनिक विद्रोह या सैनिक विप्लव के नेतृत्व करने की आशंका हो सकती थी।

१५. वे सब उच्च पदासीन व्यक्ति जिन्होंने इस धर-पकड़ और नर-संहार के प्रति असन्तोष प्रकट किया था और डिक्टेटर को ऐसा न करने की सलाह दी थी। इन व्यक्तियों में कई तो पालिट ब्यूरो के सदस्य भी थे—उदाहरण के लिए कोसियोर, पोस्टिचैफ़ और आइख़।

१६. खुफ़िया पुलिस के वे प्रमुख अधिकारी जिन्होंने स्टालिन की आज्ञा से किसी समय झूठे मुकदमे संगठित किए और धर-पकड़ की। इन लोगों को आवश्यकता से अधिक वास्तविकता से परिचय था। साथ ही इनके विरुद्ध कार्यवाही करने का एक बड़ा लाभ यह भी था कि जनता अपने कष्टों के लिए उन्हीं को उत्तरदायी समझकर डिक्टेटर के जुल्मों को भूल सकती थी।

स्टालिन के मस्तिष्क में वह जो कुछ चाहता था उसका स्पष्ट चित्र था। उस बड़ी धर-पकड़ का मुख्य उद्देश्य यह था कि देश पुरानी बातों को भूल जाय। स्टालिन का विचार था कि इसके पश्चात् कोई भी स्कूल जाने वाला छात्र यह याद न रख सकेगा कि ट्राट्स्की नाम का भी कोई क्रान्तिकारी था और मेरी ही कृषिनीति के कारण लाखों किसान भुखमरी के शिकार हो गए थे। इस प्रकार मेरा अतीत उज्ज्वल हो जायगा और इतिहास में मेरा नाम एक महान विजेता के रूप में याद किया जायगा।

खुफ़िया पुलिस ने स्टालिन की आज्ञाओं को कार्यान्वित किया। फाइलें तैयार होने लगीं और लाखों स्त्री पुरुषों की गिरफ्तारियां शुरू हो गईं। पर स्टालिन और येजोफ़ को इतने ही से कब सन्तोष होने वाला था ?

खुफ़िया पुलिस को यह जानने में देर न लगी कि जब कोई कैदी यातनाओं के कारण हार मान जाता है तो वह अपना पिण्ड छुड़ाने के लिए उन सभी व्यक्तियों का नाम बता सकता है जो उससे सहमत थे। इस प्रकार नए नामों का पता लगने के पश्चात् गिरफ्तारियों की नई प्रक्रिया आरम्भ हुई और नई प्रक्रिया से फिर नई प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। प्राय: प्रत्येक अभियुक्त कुछ नए नाम बता दिया करता था और इस प्रकार धर-पकड़ का, "देश के शत्रुओं" के विरुद्ध की जाने वाली कार्य-ाहियों का, वृत्त बढ़ता ही गया। यही स्टालिन की इच्छा भी थी।

किन्तु कभी अधिक चतुर होने से भी हानि हो जाया करती है। -पकड़ और काल्पनिक शत्रुओं के संहार की प्रक्रिया इतनी व्यापक हो कि विचार धारा नाम की वस्तु प्राय: लुप्त होने लगी यहाँ तक कि राजबन्दियों में वास्तविक विद्रोह की भावना भी जागृत हो गई।

उन पर सख्तियाँ होती, ज़ुल्म किये जाते, फिर भी वे अपने मित्रों के नाम न बताते। जब उनकी यातनायें असह्य हो जातीं और वे कल्पित अपराधों को स्वीकार करने को विवश हो जाते तो अवश्य नाम बताने लगते थे किन्तु अपने मित्रों और सहयोगियों के नहीं वरन् स्टालिन के मित्रों और समर्थकों के। इसका परिणाम यह हुआ कि गिरफ़्तारियों की संख्या इतनी बढ़ गई कि उनका हिसाब रखना ही प्रायः असम्भव होगया। जो लाखों नर नारी अब डिक्टेटर की जेल में बन्द थे वे उनसे अधिक अपराधी नहीं थे जो करोड़ों नर-नारी अभी तक जेलों और गुलामखानों की दीवारों के बाहर थे। स्टालिन का प्रारम्भ में सम्भवतः यह अनुमान था कि पहले जिन लोगों को गिरफ़्तार किया जायगा वे दूसरों की गिरफ़्तारी का जाल बिछा सकेंगे। किन्तु यह जाल कहीं टूट गया और दस वर्ष के भीतर ही एक बार फिर सारा देश लुढ़कते लुढ़कते विनाश के खड्ड के निकट पहुँच गया।

स्टालिन अपने इस कटु अनुभव से डरा हो इसका कोई लक्षण न दिखाई दिया। उसका दमन-चक्र चलता ही रहा। लोग तड़पते ही रहे, सिसकते ही रहे, और मरते ही रहे। अन्त में उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन करने वाला कोई व्यक्ति शेष न रह गया। विश्व के इतिहास में किसी दूसरे व्यक्ति को कभी इतनी अनियन्त्रित शक्ति प्राप्त हुई थी यह कहना कठिन है। पर बावजूद इस शक्ति के एक बात ऐसी रह गई जिसमें उसको सफलता न मिल सकी। वह रूसी जनता की स्मरणशक्ति को न मिटा सका। राख के ढेर में कहीं नीचे अब भी स्वतन्त्रता की चिंगारी चमकती रह गई।

बहुत से आलोचकों ने मेरे स्पष्टीकरण को अस्वीकार किया है। इन आलोचकों में प्रमुख स्थान परम्परा-प्रेमी मार्क्सवादियों का है।

उनका तर्क इस प्रकार रहा है : "वास्तव में स्टालिन द्वारा की जाने वाली धर-पकड़ एक विशालकाय जन-आन्दोलन था। लाखों आदमी इसमें सम्मिलित हुए जिससे क्रान्तिकारी इतिहास का मार्ग ही बदल गया। प्रत्येक जन-आन्दोलन गहरे सामाजिक कारणों का अभिव्यक्ति मात्र होता है। जन-आन्दोलन को किसी एक व्यक्ति विशेष की आकांक्षा, प्रतिशोध, अत्याचार, अथवा अमरत्व प्राप्त करने की लालसा का परिणाम समझना इतिहास के भौतिकवादी दृष्टिकोण के विरुद्ध है।"

यहाँ मैं न तो मार्क्सवाद की प्रशंसा करना चाहता हूँ और नहीं उसकी आलोचना। किन्तु यह मैं जानता हूँ कि श्रद्धालु मार्क्सवादी भी अब यह मानने लगे हैं कि मार्क्सवाद वेद-वाक्य नहीं है। आंकड़ों और संख्याओं के सहारे मार्क्सवाद केवल कुछ प्रवृत्तियों की ओर संकेत कर सकता है किन्तु यह प्रवृत्तियाँ इसके द्वारा अपनाए गये साधनों में निहित न होकर उस सामग्री ही का स्वभाव मात्र हैं जिसके द्वारा यह अपने आप को चरितार्थ करने का यत्न करता है। इसलिये इसमें किसी को तनिक भी सन्देह नहीं होना चाहिए कि यदि मार्क्सवाद के द्वारा किन्हीं विशिष्ट प्रवृत्तियों का पता लग सकता है तो केवल उन्हीं सामाजिक व्यवस्थाओं में जहाँ विचार विमर्श और प्रकाशन सम्बन्धी स्वाधीनता उपलब्ध है। किन्तु स्टालिनवादी युग में रूस में इस प्रकार के वातावरण की कोई संभावना न थी। यदि डिक्टेटर की इच्छा न हो तो लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा भी नहीं कर सकते। ऐसी सामाजिक व्यवस्था में समाज शास्त्र के नियम किस काम आ सकते हैं जिसमें समस्त समाज की स्वाधीनता केवल एक व्यक्ति ही में केन्द्रीभूत हो गई हो?

पदार्थ विज्ञान को समस्त विज्ञानों में सर्वश्रेष्ठ विज्ञान माना जाता है। पिछले पाँच सौ वर्षों में इसके द्वारा मानव जाति के ज्ञान-भण्डार में

असाधारण वृद्धि हुई है किन्तु इसकी ओर से भी कभी यह दावा नहीं किया गया कि आंकड़ों द्वारा प्राप्त होने वाली जानकारी से इससे कुछ अधिक बात भी सिद्ध की जा सकती है। पर पिछले सौ साल में, जिस दिन से कि मार्क्स ने अपने नए मठ की स्थापना की थी, पदार्थ विज्ञान ने उसकी एक दो मान्यताओं ही को सही ठहराया है।

किन्तु मार्क्सवादी दृष्टिकोण से मेरे विचारों की आलोचना करने वाले कुछ थोड़े ही लोग हैं। दूसरे आलोचक मेरे मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण के आधार को स्वीकार करते हुए भी मेरी समस्त तर्क शैली को स्वीकार करने में अपने आप को असमर्थ पाते हैं।

मुझको यह मानने में तनिक भी कठिनाई नहीं होती कि मेरी धारणा में बहुत बड़ा भाग अनुमान का है। पर स्टालिनवादी व्यवस्था के विषय में कोई अनुमान से काम न ले यह कैसे हो सकता है? उसके विषय में सही आंकड़ों का पता तो डिक्टेटर के मित्रों तक को भी नहीं हो सकता।

हमको सत्य का पूरी पूरी तरह पता लगे इसके लिये यह आवश्यक है कि पहले इस विषय में प्रचलित धारणाओं की विवेचना कर ली जाय।

आर्कटिक के हिमवर्तीय प्रदेश में सरकार की ओर से जो कल कारखानों और भवनों का निर्माण कार्य हो रहा था, उसके लिये स्टालिन को सस्ती मज़दूरी की आवश्यकता थी इसमें कोई सन्देह नहीं। किन्तु इसके लिये सोवियट शासन प्रणाली में अब तक जिनका प्रमुख स्थान रहा था उनको चुना जाना तर्क संगत बात नहीं जान पड़ती यद्यपि स्टालिन द्वारा आदेशित धर-पकड़ का सूत्रपात इसी प्रकार हुआ था। उसकी आज्ञा से प्रमुख विज्ञानवेत्ता और इंजीनियर

गिरफ़्तार किये गये, लालसेना के नेताओं को बेड़ियाँ पहिना दी गईं, रूस के प्रादेशिक मंत्रिमण्डलों को बरख्वास्त करके कारागार में डाल दिया गया, तो केवल इसीलिये नहीं कि स्टालिन को साइबेरिया में काम करने के लिये वेतन और प्रतिकार के विना प्राप्त होने वाले मजदूरों की आवश्यकता थी। यदि वह ऐसा करता तो मूर्ख कहलाता क्योंकि उस काम के लिये यह असाधारण कीमत होती। मेरा यह स्पष्ट मत है कि यदि स्टालिन ने कभी ऐसी बात सोची भी होगी तो गौण रूप से ही। उसका सर्वोपरि मन्तव्य कुछ और ही रहा होगा।

कुछ समय तक कुछ भोले लोग यह भी कहा करते थे कि रूसी क्रान्ति की रक्षा ही के लिये "जनता-विरोधियों" का विनाश किया गया था। अब कोई समझदार व्यक्ति ऐसे स्पष्टीकरण से संतुष्ट नहीं हो सकता। इस विषय में धर-पकड़ की तारीखों को याद रखना नितान्त आवश्यक है। स्टालिन का यह काण्ड सन् १९३२ या १९३३ ई० में नहीं, अपितु सन् १९३६ ई० में रचा गया था। उस समय देश को ऐसा कोई खतरा न था। इसके प्रतिकूल सन् १९३२-३३ ई० में किसानों को सामूहिक खेती में धकेलने की सरकारी नीति के कारण सारे देश में खलबली मची हुई थी और राज्य की नींव तक हिल गई थी। उस समय अनेक आदमियों की यह स्पष्ट धारणा थी कि सरकार को बदल देना ही एकमात्र उपाय रह गया है। सन् १९३६ ई० में तो रूस के गाँवों में स्टालिन को चुनौती देने के लिये कोई भी न रह गया था; वह विजेता के रूप में पूर्णतः अपनी प्रतिष्ठा प्रस्थापित कर चुका था। उस समय कोई इस बात की कल्पना भी न कर सकता था कि स्टालिन के विरुद्ध विद्रोह करके सफलता प्राप्त की जा सकती है।

जिन श्रेणियों के लोगों को गिरफ़्तार किया गया उनका विश्लेषण

करने से एक बात स्पष्ट हो जाती है : उस धर-पकड़ और नर-संहार के शिकार होने वालों में समाजवादी क्रान्ति के शत्रु न थे। यह कहना भी गलत होगा कि स्टालिन का प्रहार जिन पर पड़ा वे उसके पुराने राजनीतिक विरोधी ही थे। जितनी श्रेणियों के लोग पकड़े गए उन सब की एक ही सामान्य विशेषता थी और वह यह कि उन सभी को स्वतन्त्रता के दिनों की अब भी याद थी। इस विषय में एक बात ऐसी है जिसे किसी अवस्था में भी नहीं भूलना चाहिए। स्टालिन के दमन और तानाशाही को जिन्होंने देखा और जिनको लेनिन के शासन-काल ही नहीं बल्कि जारशाही के समय के वातावरण की भी याद थी वे सभी उन दिनों को इस नए आतंककाल से तुलना करने पर स्वर्णयुग मानते थे।

जब स्टालिन का दमन-चक्र चलना शुरू हुआ तो उसकी पहली लपेट में जो लोग आए उन पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय रूसी तानाशाह का एक मात्र उद्देश्य स्वाधीनता की दीपशिखा को बुझा देना ही था। किसी समय सम्राट-समर्थकों और श्वेत सेनानायकों ने क्रान्ति का विरोध किया था। वे ही क्रान्ति के परम्परागत बैरी माने जाते थे। किन्तु इस धर-पकड़ और नर-संहार में उनको आँच न आई। वास्तव में अतीत काल की तानाशाही के उन समर्थकों को जान बूझ कर सुरक्षित रखा गया। मुझको अपने लम्बे कारावास के जीवन में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसका ज़ारशाही या श्वेत क्रान्ति विरोधियों से कभी कोई सम्बन्ध रहा हो।

स्टालिन ने केवल दो ही प्रकार के लोगों को अपना आखेट बनाया। एक श्रेणी में वे लोग थे जो अपने स्वाधीनता-प्रेम के लिए प्रसिद्ध थे; दूसरी श्रेणी उनकी थी जिनसे स्टालिन और उसकी खुफ़िया पुलिस को

यह आशंका थी कि वे अवसर आने पर स्वाधीनता-समर्थकों की संख्या में अभिवृद्धि कर देंगे। इनकी संख्या पहली श्रेणी के लोगों से कहीं अधिक थी।

मैंने रूस की खुफ़िया पुलिस की कोठरियों में तीन साल बिताए हैं। उन दिनों में मुझको असंख्य अभागे व्यक्तियों से परिचय हुआ। अपने उस अनुभव तथा उन अन्य असंख्य व्यक्तियों की दारुण कथा का जब मैं विश्लेषण करता हूँ तो मेरे लिए उपरोक्त परिणाम अनिवार्य हो जाता है।